श्री 'म' दर्शन

भारतीय संस्कृति व आत्मज्ञान का पथप्रदर्शक

श्री श्री रामकृष्ण पार्षद

श्री म का कथामृत

[चतुर्थ भाग]

ग्रन्थकार

स्वामी नित्यात्मानन्द

अनुवादिका

ईश्वरदेवी गुप्ता

सहायक

डॉ॰ नौबतराम भारद्वाज

एम.ए., पीएच. डी.

श्री म ट्रस्ट

श्री रामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट

579, सैक्टर 18 बी, चण्डीगढ़–160018

फोन : 28536

सूची

●★●

श्री रामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट

(श्री म ट्रस्ट)

संक्षिप्त परिचय

यह धर्मार्थ संस्था 12 दिसम्बर, 1969 को परम पूज्य श्रीमत् स्वामी नित्यात्मानन्द जी के पुण्य संरक्षण में स्थापित हुई। इसका मुख्य उद्देश्य है जनता जनार्दन की सेवा और ऋषियों तथा महापुरुषों के दर्शाए पथ पर चलकर जन जीवनका नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पुनरुद्धार करना।

इस ट्रस्ट ने श्री रामकृष्ण के परम प्रिय पार्षद तथा अन्तरंग भक्त श्री महेन्द्र नाथ गुप्त (श्री म) के प्रवचनों को मूल दैनन्दिनी से संकलित करके प्रकाशित करने का एक विशाल ज्ञानयज्ञ प्रारम्भ किया है। इसके अन्तर्गत 'श्री म दर्शन' शीर्षक से बंगला में एक से सोलह भाग तथा हिन्दी में एक से चार भाग, और अंग्रेजी में— 'M.'—The Apostle and the Evangelist शीर्षक से प्रथम चार भाग प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त Sri Sri Ramakrishna Kathamrita Centenary Memorial' तथा 'A Short Life of Sri 'M.' भी प्रकाशित हो चुके हैं। बंगला में 'श्री श्री रामकृष्ण कथामृत' के प्रथम भाग का हिन्दी संस्करण भी ठाकुर कृपा से शीघ्र ही भक्तों को उपलब्ध होगा।

यह ट्रस्ट नियमानुसार रजिस्टर्ड है और इसका मुख्य कार्यालय 579, सैक्टर 18 बी में स्थित है। सैक्टर 19 डी में स्थित 'श्री श्री रामकृष्ण कथामृत पीठ' नाम से इसी ट्रस्ट के अपने भवन में एक ध्यानकक्ष तथा पुस्तकालय एवं वाचनालय की व्यवस्था की गई है। यह ट्रस्ट आयकर विभाग से मान्यता प्राप्त है और इसे दिए गए दान पर आयकर की छूट है। श्री रामकृष्ण देव जी के भक्तों तथा ट्रस्ट के बन्धुओं और प्रशंसकों द्वारा दिए चन्दे से ही ट्रस्ट के उक्त कार्य सम्पन्न हो पाते हैं।

'श्री म दर्शन' के पवित्र सागर संगम में अवगाहन कर प्रतिदिन असंख्य दुःखसंतप्त मानव— विशेषतः गृहस्थ— नवचेतना, सन्तोष, धैर्य और प्रकाश पा रहे हैं।

ट्रस्ट की बहुमुखी गतिविधियों के विकास के लिए किसी प्रकार का भी दान सादर स्वीकृत होता है।

★ सम्पादकीय प्रार्थना ★

हे कल्याणमय एवं स्नेहमय परम पिता ठाकुर ! आज हम जगत् के सभी दु:ख सन्तप्त मनुष्यों के लिए शान्ति तथा आनन्दस्वरूप आपकी अमृतमय वाणी का विनम्र भाव से प्रचार एवं प्रसार करने के उद्देश्य से इस "श्री रामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट" (श्री म ट्रस्ट) की स्थापना करते हैं। स्वामी विवेकानन्द, आचार्य श्री म आदि अपने सांगोपांग पार्षदों तथा श्री श्री मां के साथ ही आप हमें आशीर्वाद दें, हमारे साथ नित्य वास करें और मंगलमय दिशा में हमारा सदा मार्ग प्रशस्त करते रहें।

इस निष्काम कर्म तथा निस्स्वार्थ सेवाभाव से आपके वस्तु-स्वरूप— नरदेह में अवतीर्ण साक्षात् ईश्वर स्वरूप— को हम सतत अनुभव करें।

हमें वास्तविक शांति तथा आनन्द की प्राप्ति हो ! समस्त ब्रह्माण्ड के सकल जीव प्रशान्त एवं आनन्दमय हों— समग्र ब्रह्माण्ड में शाश्वत तथा अनन्त सुख-शान्ति का चिरस्थायी निवास रहे !! ॐ तत् सत् !!!

आपकी विनम्र सेवक सन्तान,

सिविल लाइन्ज, रोहतक।
स्वामी नित्यात्मानन्द

20 दिसम्बर, 1967

शुभाशीर्वाद

परमकल्याणीया श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता,

देवि, देवार्चना के अर्घ्यस्वरूप आपका श्री म दर्शन का हिन्दी अनुवाद हुआ है अति सुन्दर, सरल औ' सावलील। वैसा ही वह हुआ प्रांजल, भावव्यंजक औ' मूल की छवि।

अनुवाद कार्य ही नीरस। किन्तु ग्रन्थ के मूल विषय-वस्तु के साथ आपकी एकात्मता-जन्य ही यह अनुवाद हुआ है अति सरस और सुरुचि-सम्पन्न।

भग्नस्वास्थ्य होते हुए भी बंगला भाषा की शिक्षा लेकर दैनन्दिन जीवन में आचरणीय वैदान्तिक-ग्रन्थ हिन्दी में अनुवाद करना है सुकठिन कार्य।

श्री म दर्शन का मूलविषय ही यह है— सुखदुःखमय इस संसार में रहकर किस प्रकार से वेदवर्णित देवजीवन लाभ संभव, इसी का पथ निर्दिष्ट है इसमें।

वेदमूर्ति युगावतार श्री रामकृष्ण की शिक्षा से वर्तमान जड़-सभ्यता के युग में आचार्य श्री म ने वन के वेदान्त को घर में लाकर मूर्त्त किया— अपने जीवन में इसी ऊनविंश-विंश शताब्दी में, ठीक जैसा मूर्त्त हुआ वैदिक युग में तपोवन में ऋषियों के जीवन में।

श्री म दर्शन है महर्षि श्री म के जीवन का एक जीवन्त आलेख्य। और फिर है श्रीरामकृष्ण-लीला प्रकाशक, वर्तमान विज्ञान सम्मत, श्री म कथित, प्रामाणिक महाग्रन्थ 'श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत' का मनोमुग्धकर सजीव और सटीक वार्त्तिक वा भाष्य।

आपने यह परम उपादेय-ग्रन्थ हिन्दी भाषा-भाषी भक्तों के करकमलों में सप्रेम परिवेशन करके एक सुमहत् ज्ञानयज्ञ का अनुष्ठान किया है ।

देवि, आपकी यह महती प्रचेष्टा देखकर स्वतः ही मन में उदय हो रहा है— भगवान् श्रीश्रीरामकृष्ण आपके हृदय मन पर अधिकार कर बैठे हुए हैं।

उनके श्रीचरणों में हैं आन्तरिक विनीत प्रार्थना, वे प्रेरणा देकर आपके द्वारा श्री म दर्शन के अवशिष्ट चतुर्दश खण्डों का भी इसी प्रकार सरल, सुमिष्ट, हृदयग्राही अनुवाद करवा लें।

इससे आपका जीवन होगा अधिकतर धन्य औ' मधुमय, और समाजजीवन होगा निश्चय ही उन्नत औ' देवभाव-मण्डित ॥ इति !

शुभानुध्यायी,
स्वामी नित्यात्मानन्द

श्रीरामकृष्ण मठ,
ऋषिकेश, हिमालय ।
दुर्गा नवरात्रि, 1965 ई० ।

—युगावतार भगवान श्री रामकृष्ण परमहंस—

'प्रतिज्ञा करके कहता हूं, जो मेरा चिन्तन करेगा, वह मेरा ऐश्वर्यलाभ करेगा; जैसे पिता का ऐश्वर्य पुत्र लाभ करता है। मेरा ऐश्वर्य है—ज्ञान-भक्ति, विवेक-वैराग्य, प्रेम-समाधि।'

—श्री रामकृष्ण परमहंस
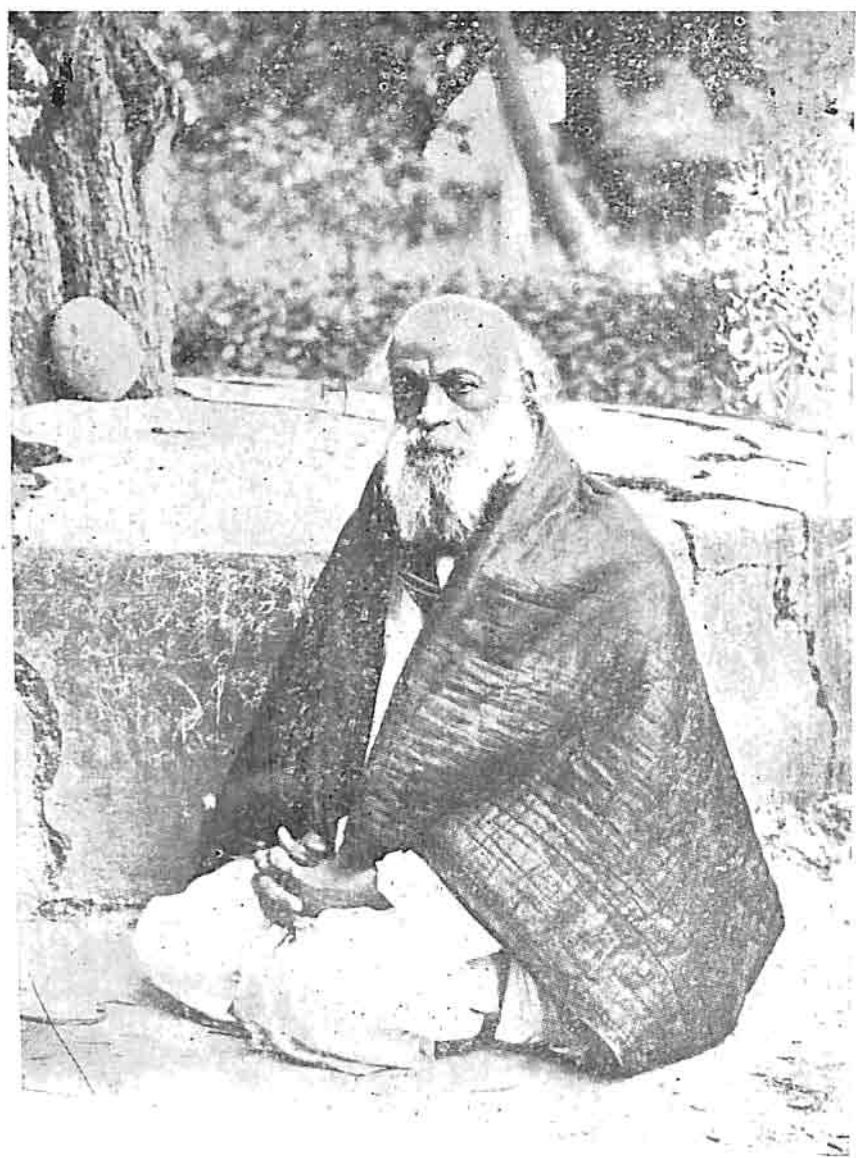
–आचार्य श्री 'म'–

"मैं तो एक तुच्छ जन हूं। परन्तु समुद्र के पास रहता हूं, और अपने पास समुद्र-जल के कुछ घड़े रखता हूं। जब भी कोई मेरे पास आते हैं, इसी से उनका सत्कार करता हूं। गुरुवचन सिवा और मेरे पास है भी क्या देने को?"

—'म'

निवेदन

भगवान् श्री रामकृष्ण परमहंसदेव जी की असीम कृपा से अनेक बाधाओं के पश्चात् यह श्री म दर्शन का चतुर्थ भाग प्रकाशित हो पाया है। इस 'श्री म दर्शन ग्रन्थमाला के 16 पुष्प-स्तवक हैं। श्री म दर्शन प्रथम भाग के रूप में प्रथम स्तवक 1965 में, दूसरा द्वितीय भाग के रूप में 1971 में प्रकाशित हुआ। तृतीय भाग तो सद्यः ही प्रकाशित हुआ है।

इस डायरी में परमहंसदेव जी के अन्तरंग पार्षद गृही शिष्य श्री 'म' (श्री महेन्द्रनाथ गुप्त) की ठाकुर प्रेमियों के साथ हुई बातें तथा शिक्षाएं लिपिबद्ध की गई हैं। ये शिक्षाएं श्री म की सेवक-सन्तान स्वामी नित्यात्मानन्द जी महराज द्वारा 5000 से भी अधिक हस्तलिखित पृष्ठों में लिपिबद्ध की गई थीं। बंगला में यह सभी सामग्री 16 भागों में छप चुकी है। कुछ भागों के तो चतुर्थ संस्करण भी प्रकाशित हो गए हैं। श्री म दर्शन ग्रन्थमाला का प्रकाशन कार्य बंगला, हिन्दी और अंग्रेजी— इन तीन भाषाओं में चल रहा है।

1958 में पूज्य स्वामी नित्यात्मानन्द जी के प्रथम दर्शन का शुभ अवसर मिला। इस समय से भी 25-30 वर्ष पहले से मन में यह भाव उठ रहा था कि आज के युग में प्राचीनकाल के ऋषियों की भांति गृहस्थ आश्रम में किस प्रकार परमानन्द में रहा जा सकता है। दैव-क्रम से युगावतार श्री रामकृष्ण के संन्यासी सेवक स्वामी नित्यात्मानन्द जी का प्रवचन सुनने का सुयोग मिला। इसी प्रवचन के प्रसंग में श्री 'म' (श्री महेन्द्रनाथ गुप्त) का नाम भी सुना।

श्री 'म' बंगला में श्री श्री रामकृष्ण कथामृत, अंग्रेजी में 'The Gospel of Sri Ramakrishna' तथा हिन्दी में 'श्री श्री रामकृष्ण वचनामृत' के जगद्विख्यात लेखक हैं। गुरुदेव श्री श्री ठाकुर के आदेशानुसार गृहस्थ आश्रम में ही रहते हुए आजीवन शिक्षा

व्रती होकर उन्होंने वैदिक ऋषियों की भांति जीवन यापन किया। "मनुष्य— जीवन का सर्वश्रेष्ठ आदर्श ईश्वर-दर्शन है," यह वाणी भी मेरे हृदय में श्री 'म' का जीवनचरित सुनकर ही प्रविष्ट हुई।

स्वामी नित्यात्मानन्द जी ने बंगला श्री म दर्शन से श्री म की जीवन का कुछ अंश मुझे हिन्दी अनुवाद करके सुनाया। इसी पाठ को सुनकर मन में धारणा हुई कि श्री 'म' गृहस्थ आश्रम में रहकर भी संसारी सकल कार्य सम्पन्न करके भी भृगु, वशिष्ठ आदि प्राचीन ऋषियों की भांति आत्मज्ञ और विदेही थे। उसी समय श्री 'म' के देवजीवन के विषय में अधिकतर जानने की आकांक्षा तीव्र हुई। उसी समय, ही इसी आकांक्षा ने मुझे बंगला भाषा सीखने में व्रती किया। भाषा सीखकर श्री म दर्शन के प्रकाशित दो भाग पढ़े और कुछ पांडुलिपि भी देखी। श्री म की जोवनी और वाणी के साथ और भी घनिष्ठ परिचय करने के लिए मैंने हिन्दी भाषा में श्री 'म' दर्शन का अनुवाद रूप व्रत लिया। इस विषय में कई साधु, महात्माओं और भक्तों ने उत्साहित किया।

पहली जनवरी 1965, श्री कल्पतरु दिवस को वृन्दावन के सेक्रेटरी स्वामी कृपानन्द जी ने ईश्वरदेवी से प्रश्न किया, "श्रीमती गुप्ता, आपने जगबन्धु महाराज (स्वामी नित्यात्मानन्द) को कैसे बांध लिया? उन्हें तो उनका इतना बड़ा समृद्धशाली अपना घर भी नहीं बांध सका, और संन्यासी बनने के पश्चात् रामकृष्ण मठ और मिशन भी जन सेवा के लिए अपने यहां नहीं रोक सका, हम सब बड़े हैरान हैं कि बात क्या है?" करबद्धा श्रीमती गुप्ता ने कुछ चिन्ता करके सविनय कहा, "महाराज, एक कहानी याद आ गई। एक राजकुमार को एक राक्षस का विनाश करके एक फूल लाने का आदेश हुआ था जिसके परिणाम में उसको अपनी मनोवांछित वस्तु मिलनी थी। राजकुमार जब अनेक विघ्नबाधाओं को पार करके उस राक्षस के राज्य में पहुंचा ना उसे वहां एक सुन्दरी वृद्धा जादूगरनी मिली। उस जादूगरनी ने राजकुमार को दिखाया कि सामने पिंजरे में जो तोता है, उसमें उस भयंकर राक्षस के प्राण हैं। तुम इस तोते की गरदन

मरोड़ दोगे तो तुम्हें अनायास ही फूल मिल जाएगा। राजकुमार ने जादूगरनी के बताए तरीके से उस तोते की गरदन मरोड़ दी और वाँछित फूल तथा राक्षस का सारा राज्य-वैभव पा लिया। महाराज मुझे तो लगता है, श्री गुरु महराज के प्राण 'श्री म दर्शन' में हैं। श्री म दर्शन को श्री श्री ठाकुर ने अपनी असीम कृपा द्वारा मुझे पकड़वा दिया है, तभी महाराज यहां अटके हुए हैं।"

'श्री म दर्शन' के प्रकाशन का मुख्य प्रयोजन अपने हिन्दी भाषा-भाषी बहन-भाइयों के हाथों में यह अमूल्य सम्पद् देना है। इसका मूल विषय एवं उद्देश्य है, सुख-दुःखमय इस गृहस्थ में रहकर भी किस प्रकार वेद-वर्णित शान्त दैव-जीवन मनुष्यमात्र को लाभ हो तथा प्राचीन ऋषियों की भांति गृहस्थाश्रम में भी परम सुख, परम शान्ति तथा परमानन्द में रहा जा सके।

बड़े हर्ष की बात है कि पूज्य महाराज जी ने भक्तों की मांग को स्वीकार किया और श्री म ट्रस्ट को शुभाशीर्वाद सहित श्री म दर्शन ग्रन्थमाला के प्रकाशन और प्रचार करने की सानुग्रह अनुमति प्रदान कर दी।

अब यह शरीर सेवा करने के लिए धीरे-धीरे असमर्थ होता जा रहा है। श्री गुरु स्वामी नित्यात्मानन्द जी ने 1975 में अपनी महासमाधि से पूर्व विश्वास दिलाया था..........."मैं सर्वदा तुम्हारे साथ रहूँगा.........जब बुलाओगी तभी आ जाऊंगा।" मैंने कहा, "महाराज गीत में तो है—'सम्भव है झंझटों में मैं तुम को भूल जाऊं, पर नाथ कहीं तुम भी मुझको न भुला देना।' यहां तो साधक में थोड़ा विश्वास है कि वह नहीं भूलेगा। भी 'सम्भव' कहा, किन्तु महाराज मैं तो निश्चय ही झंझटों में भगवान् को पुकारना भूल जाऊंगी। आपने सर्वदा हमारे पास रहने का वायदा किया है। एक कार्य और भी करना, सर्वदा हमें भगवान् को पुकारना, स्मरण रखना न भूलने देना।" अब, उन्हें अशरीरी हुए प्रायः दस वर्ष हो गये हैं। किन्तु वे अपनी कृपा सर्वदा ही वर्षण करते रहे हैं।

इस ग्रन्थमाला के तथा श्री म दर्शन के इस चतुर्थ पुष्प-स्तवक की रचना, प्रचार और प्रकाश जिन्होंने जिस प्रकार की भी सहायता की है और कर रहे हैं, मैं श्री म ट्रस्ट की ओर से उन सबके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

अन्तर्यामी श्री भगवान् के श्रीचरणों में इस दीन सेविका की एकान्त प्रार्थना है कि इस ग्रन्थ का पाठ करके और इसका अनुकरण करके सब भाई बहनों का भगवान् में भक्ति और विश्वास बढ़े और संसार में परम सुख, परम शान्ति, परमानन्द लाभ हो।

विनीता,
ईश्वरदेवी गुप्ता
प्रेजीडेंट

श्री म ट्रस्ट
579, सेक्टर 18 बी,
चण्डीगढ़—160018.
श्री श्री मां शारदादेवी जन्मतिथि, 1984.

भूमिका

इस बार का नैवेद्य है चतुर्थ कुसुम-स्तवक। पंचदश कुसुम-स्तवकों से ग्रथित श्री म दर्शन रूप है सम्पूर्ण नैवेद्य।

पूर्व तीन स्तवकों की न्याईं इस बार का स्तवक भी चार प्रकार के सुन्दर सुवासित पुष्पों से है ग्रथित।

प्रथम प्रसून इसका— श्री श्री रामकृष्ण धर्मपरिवार के ठाकुर, मां, स्वामी जी प्रभृति की वाणी और जीवन का संस्पर्श। द्वितीय प्रसून है— उपनिषद् और गीता, पुराण और तंत्र, बाइबल और कुरान शरीफ आदि शास्त्रों की श्री रामकृष्ण भाव-सम्मत व्याख्या। 'कथामृत'कार द्वारा कथामृत का भाष्य इसका तीसरा प्रसून है— और चतुर्थ प्रसून है— श्री रामकृष्ण के अन्यतम पार्षद स्वामी अभेदानन्द महाराज के गभीर पाण्डित्यपूर्ण प्रवचन और कथोपकथन।

श्री भगवान बार बार जीव के सुख-शांति विधान के लिए नर-कलेवर में अवतीर्ण होते हैं। और कालोपयोगी शांति-सुख आनन्द लाभ का उपाय उद्भावन करते हैं।

इस बार का उपाय है **शरणागति**। कारण, बहु द्रव्य और परिश्रम-साध्य पूर्व की भांति के उपाय इस समय अनुपयोगी हैं। अब मनुष्य की आयु कम है, फिर अन्नगत प्राण हैं, और मन चंचल एवं पार्थिव विषय भोग में सन्निविष्ट है।

इस समय जभी भगवान श्री रामकृष्ण ने फीवर मिक्स्चर का विधान दिया है। दशमूल पाचन है अब अचल। वह फीवर-मिक्स्चर ही है श्री रामकृष्ण की महावाणी— निर्जने गोपने व्याकुल होकर क्रन्दन करो, बालक जैसे मां के लिए व्याकुल होकर क्रन्दन करता है। बोलो, 'प्रभु, मैं साधनहीन, भजनहीन, विवेकहीन, वैराग्यहीन हूं। आप अपने श्री चरणों में आश्रय दीजिए।'

वेदादि शास्त्रों का सार है — **'जीव शिव'**। किसी भी प्रकार से जीव का अपने इस शिवत्व की स्थापना करना ही कार्य है। श्री रामकृष्ण ने नाना भावों से जीव के भीतर से इसी शिवत्व को ही खींच कर बाहर किया है— 'मुंजादिवेषीकाम्'।

जिस सहज उपाय से शिवत्व प्रतिष्ठा की है वह ही सबके लिए अवलम्बनीय है— 'निर्जने गोपने व्याकुल क्रन्दन'। तपस्या बिना शिवत्व विकसित नहीं होता। जभी तो इस बार की तपस्या लोकालय में है हिमालय में नहीं— दक्षिणेश्वर के मन्दिर उद्यान में, दण्डकारण्य में नहीं।

श्री रामकृष्ण की प्रचेष्टा है, **'वन के वेदान्त को घर में लाना'**। जभी तपस्या का यह स्थान परिवर्तन। वन के वेदान्त को घर में लाने में वे किस प्रकार कृतकार्य हुए हैं उसका उदाहरण उनके ही रचित कुसुमकुंज के एक सरस सुन्दर सुवासित कुसुम श्री म का देवजीवन है। श्री म दर्शन श्री म की कथामृत का नूतन भण्डार है।

वर्तमान जगत भर में जड़ सभ्यता के ताण्डव नृत्य से विभ्रान्तमना अनीश्वरवादी जनगण के लिए श्री रामकृष्ण की प्रीति ठीक वैसी ही है, जैसी भगवद्विश्वासी भक्त की प्रीति उनके प्रति है।

प्रेममय पिता की न्याईं अनीश्वरवादी अशांत अविनीत सन्तान को भी वे मधुर हितोपदेश देते हैं—

'इस संसार— ज्वलन्त अग्निकुण्ड—में यदि शांति सुख आनन्द का कोई भी पथ न देख पाओ, और दिन पर दिन झुलसित होओ, तब कहिओ— इस जगत् के पीछे यदि कोई रहता है तो मेरे सहाय होओ। वे अवश्य आएंगे। तब सुख-शांति आनन्द लाभ करोगे।'

'श्री श्री रामकृष्ण कथामृत' और उसकी भाष्य-सन्तान 'श्री म दर्शन' श्री रामकृष्ण के शांति-सुख-आनन्द का उपाय और वाणी वहन करता है।

जीव के शिवत्व स्थापन की प्रचेष्टा के संग क्या वर्तमान वैज्ञानिक उन्नति का कोई विरोध है?— नहीं, बिल्कुल नहीं। वरं एक दूसरे का परिपूरक है।

विज्ञान material truth, जड़-सत्य लेकर व्यस्त है। और जीव की शिवत्व स्थापन-प्रचेष्टा व्यस्त है spiritual truth— पारमार्थिक सत्य लेकर। Matter, mind और spirit जड़वस्तु, मन और आत्मा ये तीनों ही सत्य हैं। एक की अपेक्षा अन्य अधिकतर सत्य है। मूल में यदि विरोध न रहे, तब बहिर्विकास में क्यों विरोध रहेगा ?

भारतीय अध्यात्म-विज्ञानविद्गणों ने देखा है, इस एक ही मनुष्य के भीतर ये तीन सत्य निहित हैं। यह एक मनुष्य ही प्रकार-भेद से तीनों ही शरीरों में विन्यस्त है— The material body, the mental body, the spiritual body— स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर।

प्रत्येक मनुष्य यदि चक्षु के सम्मुख ये तीनों ही सत्य रखकर चले तो फिर कोई भी विरोध नहीं रहता। किन्तु यदि तीनों सत्यों को भिन्न एवं विरुद्ध सत्य जानकर ग्रहण करे तो उससे ही फिर जितना भी विरोध, विपर्यय और विश्रृंखला जगत् में उपस्थित होती है।

श्री रामकृष्ण ने अपने जीवन में इन तीनों सत्यों का समन्वय उसी प्रकार किया है, जिस प्रकार सब धर्मों का समन्वय कठोर साधन 'यतो मत तत पथ' द्वारा करके इस सनातन महासत्य 'एकं सत् विप्राः बहुधा वदन्ति'— का आविष्कार किया था।

प्राचीन भारत में इन तीनों ही सत्यों का समन्वय पूर्णरूप से साधित हुआ था। भीष्म और द्रोण, कर्ण और अर्जुन आदि वीरों के जीवन में स्थूल-सूक्ष्म-कारण का समन्वय हुआ था। वे जड़ विद्या में जैसे धुरन्धर थे, वैसे ही थे अध्यात्म विद्या में विशारद—ब्रह्मज्ञानी।

वर्तमान जगत् में यदि दृष्टि डाली जाए— matter, mind and soul— स्थूल, सूक्ष्म, कारण ये तीनों ही पर पर सत्य हैं— ये तीनों ही एक ब्रह्म सत्य के निम्नांग सत्य हैं, तब तो फिर वर्तमान समय में मनुष्य समाज की वर्तमान अशांति और परस्पर अविश्वास विदूरित होकर जगन्मय शांत स्वरूप भगवान का एक शांतिमय राज्य वा समाज गठित हो सकता है।

श्री रामकृष्ण के पदप्रान्त में जैसे अध्यात्मविज्ञानविद्गण उपस्थित हुए थे वैसे ही जड़विज्ञानविद्गण ने भी स्थान पाया था।

जैसे दैवी मनुष्य केशवचन्द्र सेन श्री रामकृष्ण के स्नेहपीयूष से धन्य हुए थे वैसे ही धन्य हुए थे भारत के जड़ विज्ञान के जनक श्रेष्ठ आचार्य महेन्द्रनाथ सरकार।

और फिर मनोराज्य के उपासक महामनीषी दया के सागर विद्यासागर और बंकिमचन्द्र, नाट्यसम्राट् महाकवि गिरीशचन्द्र और अद्भुत प्रतिभावान विवेकानन्द भी समान भाव से श्रीरामकृष्ण के दैवी संस्पर्श से धन्य हैं!

दुरन्त कैन्सर रोग में आक्रान्त, ईश्वरीय भाव में आविष्ट श्री राककृष्ण जब देहज्ञान विसर्जन करके अध्यात्म विज्ञान के चरम पर आरोहण करके क्रमागत छः-सात-घण्टा-व्यापी ईश्वरीय नामगुणकीर्तन एवं ईश्वर के संग एकात्मता लाभ से समाधिस्थ होकर रहते, तब उनका प्रस्फुटित ज्योतिर्मय मुख मण्डल दर्शन से, जड़ विज्ञान के एकनिष्ठ पुजारी डाक्टर सरकार स्तम्भित हो जाते। व्युत्थित होकर श्री रामकृष्ण सस्नेह उपहास करके कहते, क्यों जी, तुम्हारी 'सायन्स' में लगता है यह बात नहीं है? जड़ विज्ञान के उपासक डाक्टर सरकार निर्वाक्!

भारतीय विज्ञानविद्गण, मनीषीगण एवं अध्यात्म विज्ञानविद्गण यदि यही दृष्टि रखकर एक योग से नव भारत संगठन में व्रती हों तो फिर तो इन तीनों सत्यों के समावेश से सुख-शांति-आनन्द में पूर्ण बिकास हो सकता है, उनके निज जीवन में एवं समाज जीवन में।

और जगत् के अन्य देशों में भी यही महासमन्वय की अमिय वाणी वितरण करके एक शांति, सुख और आनन्द के नवजगत् की सृष्टि कर सकते हैं। ॐ शान्तिः शान्तिः प्रशान्तिः!

विनीत,
ग्रन्थकार

श्री रामकृष्ण मठ (तुलसीमठ)
ऋषिकेश, हिमालय, 1966 ई०।
श्रावण पूर्णिमा, 1373 (बं०) साल।
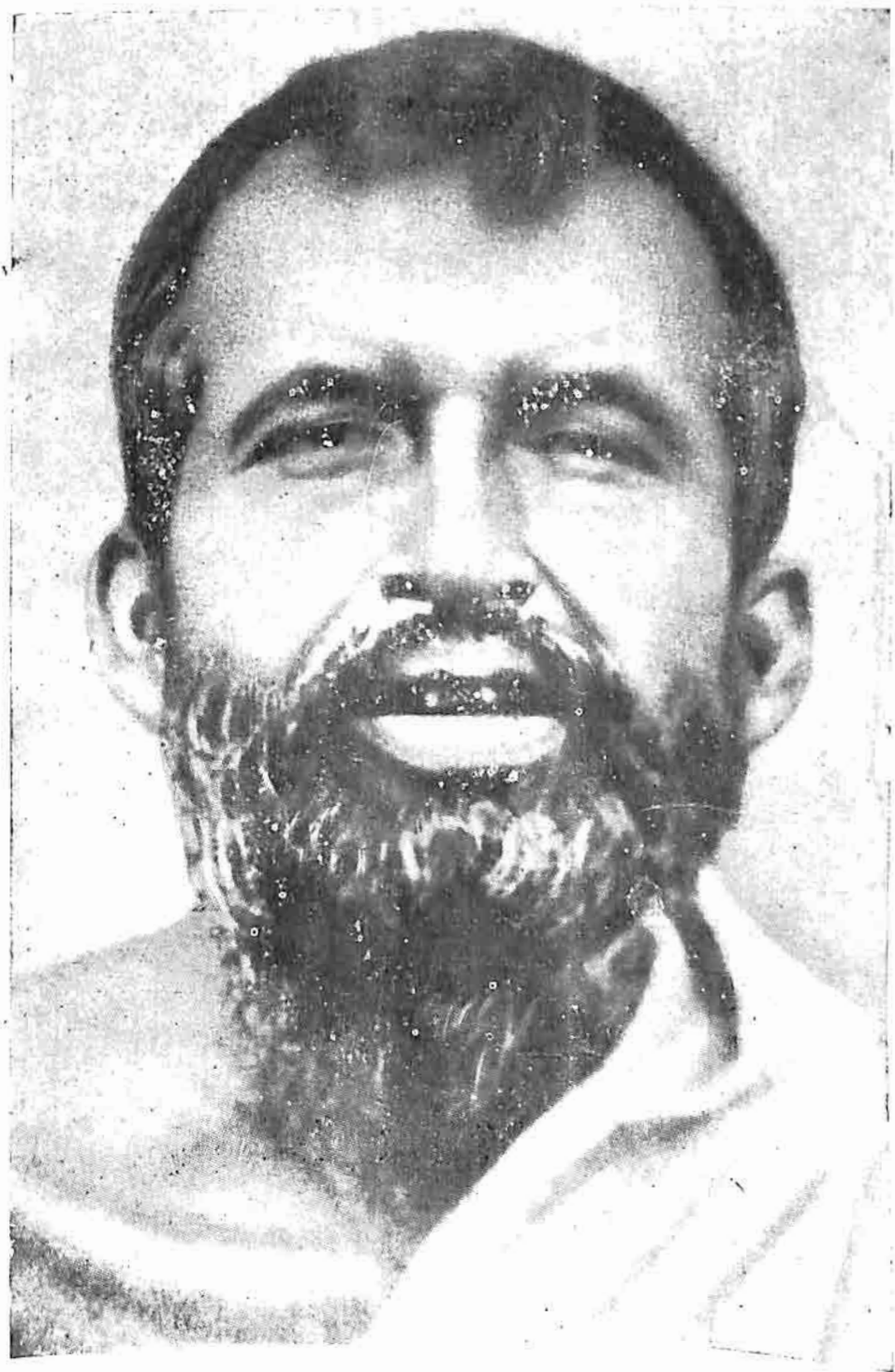
युगावतार भगवान श्री रामकृष्ण परमहंस

स्वामी नित्यात्मानन्द जी महाराज

"बच्चा जैसे अपने माता पिता के साथ आनन्द में निश्चिन्त रहता है, उसी तरह तुम रहो। ठाकुर-मां सर्वदा तुम्हारे साथ हैं। विश्वास करो और आनन्द में निश्चिन्त रहो।"

—श्री म लेखक के प्रति

प्रथम अध्याय

सर्वस्व ईश्वर में समर्पण —देवत्व का पूर्वाभास

(1)

मॉर्टन इन्स्टिटट्युशन। दो तल की पश्चिम की ओर के मार्ग के ऊपर का कक्ष। श्री म फर्श पर पूर्वास्य बैठे हैं। सम्मुख भक्तगण बैठे हैं— बड़े जितेन, योगेन, छोटे नलिनी, बड़े अमूल्य, बड़े नलिनी और उनके दादा, जगबन्धु, एकजन नवागत सज्जन आदि। देखते-देखते मणि, सुधीर, अमृत और एक भक्त आ उपस्थित हुए। सबके अन्त में आए डाक्टर और विनय।

आज 15 सितम्बर, 1923 ई०, 29 वां भाद्र 1330 (ब०) साल शनिवार। अब रात्रि आठ। जगबन्धु वेदान्त सोसायटी से लौटे हैं कुछ क्षण पूर्व। इटाली के युवक भक्त हरेन्द्र भी इसी बीच आ गए हैं। वे बी. एन. रेलवे में काम करते हैं। श्री म उन्हें स्नेह करते हैं। उनके साथ श्री म की बातें हो रही हैं।

श्री म—हां, हरेनबाबू तुमने सुना है कि अनेक ही ट्राम के पैसे मार लेते हैं—छः पैसे, किंवा आज ट्रान्सफर टिकट खरीदा, उसका आधा आज व्यवहार किया, बाकी और एक दिन।

हरेन—जी हां, सुना है। देखा भी है करते। मैंने कभी भी ऐसा किया नहीं।

श्री म—ऐसे जन भी हैं जो सीधे जाकर टिकट लेंगे। कन्डक्टर भीड़ में आ नहीं पा रहा तो गाड़ी ठहरने पर नीचे उतरकर टिकट लेकर फाड़ कर फैंक देंगे और ऐसे भी कोई कोई हैं कि टिकट किसी प्रकार

भी ले नहीं पाए। तदनन्तर पैसे मनीआर्डर करके ट्रैफिक मैनेजर के पास भेज देंगे।*

ऐसे लोग जो धोखा देते हैं वे हैं Penny wise pound foolish (अशर्फियों की लूट,कोयलों पर छापा)। समझ नहीं सकते छः पैसे केलिए कितनी क्षति होती है। बाइबल में है, 'How narrow is the gate, and strait is the way that leadeth to life, and broad is the way, that leadeth to destruction (St. Matthew 7: 14-13)' धर्म का पथ अतिसंकरा और नरक का पथ अति प्रशस्त है।

श्री म के ज्येष्ठ पुत्र प्रभास बाबू आज वैद्यनाथ से लौट आए हैं। वे स्कूल के काम का प्रबन्ध करते हैं। उनकी अनुपस्थिति में श्री म को वही सब काम देखना पड़ता था। आज श्री म को अवसर है। तभी आज खूब ही उन्मुक्त प्रसन्न भाव।

हरेन्द्र उठकर श्री म को प्रणाम करने की चेष्टा करते रहे हैं। श्री म ने समझ कर बाधा देकर कहा, "सुनो वेदान्त सोसाइटी की कथा। Questions and answers (प्रश्नोत्तर) क्लास थी आज। इन सब प्रणालियों से एक ही जल निकल रहा है। ठाकुर का भाव। सब सुनना चाहिए। (जगबन्धु के प्रति) इस ओर आइए आप। अपने नोट पढ़ कर सुनाइए।"

जगबन्धु पढ़ते हैं। कथोपकथन। प्रश्नकर्त्ता सभ्यगण, उत्तरदाता स्वामी अभेदानन्द। 15 सितम्बर, समय साढ़े पांच। सभ्य संख्या पचास।

प्रश्न—शकर ने कहा है 'संसार मिथ्या'। स्वामी जी(विवेकानन्द)ने कहा है, काम करो। संसार मिथ्या हो तो कार्य की क्या आवश्यकता ?

उत्तर—शंकर ने किस अर्थ में कहा है 'संसार मिथ्या' यही देखना होगा प्रथम, तत्पश्चात् अग्रसर होना होगा। 'संसार मिथ्या' माने Name and form(नामरूप)मिथ्या है। एक कुर्सी जल गई। वह कुर्सी मिथ्या हो गई। जापान ध्वंस हो गया। वस्तुतः 'in reality' कुछ ध्वंस हुआ क्या in matter (परमाणु रूप में) ? तो भी नाम मात्र का change (परिवर्तन) हुआ। सत्य का अर्थ है कि जो तीनों कालों में रहता है।

* श्री म ने स्वयं ही इस प्रकार किया था।

Past, Present and Future (भूत, भविष्यत्, वर्तमान) में जिसका change (परिवर्तन) नहीं है और मिथ्या माने जो बदलती है, जो तीनों कालों में नहीं रहता। नाम रूप ही रहता नहीं। Substance (मूलतत्त्व) रहता है —यह ही है सत्य।

स्वामी जी ने कहा, 'काज करो'। माने, भगवान की सेवा करो दरिद्र नारायण की सेवा करो। दरिद्र की, दुःखी की सेवा के लिए नहीं कहा। 'दरिद्र' यह तो नाम मात्र है। किन्तु उसके भीतर जो है परब्रह्म, प्रचलित भाषा में जिन्हें नारायण कहते हैं, उनकी सेवा करने को कहा।

'सेवा' का अर्थ केवल खिलौना नहीं—प्यार करना है। तुम जिनको जितना प्यार करते हो, अपने पड़ौसी को भी ठीक उतना ही प्यार करो। तुम्हारे मध्य में जो है, 'दरिद्र नारायण' जिसे कहते हो वे ही उस के मध्य में भी हैं। निजी सुख स्वाच्छन्द के लिए जैसा यत्न करते हो उसके सुख स्वाच्छन्द के लिए भी वैसा ही यत्न करो। इससे चित्तशुद्धि होगी। मेरा, मेरा कम हो जाएगा।

'निष्काम कर्म' के माने भी वही—चित्तशुद्धि। अब बिल्कुल भूले हुए हो -- मेरा घर, मेरा लड़का, मेरी देह इन सब को लेकर दिन रात इनका ही आराम खोजते हो। अरे बाबा, शरीर ही तेरा कैसे है ? इन सब हीन भावों से अपनी रक्षा करने के लिए ही निष्काम कर्म करने का प्रयोजन है।

"मोहमुद्गर" में शंकर बोले हैं, 'ब्रह्मपदं प्रदिशासु विदित्वा'। तब तो दिखता है कि ये जो बोले हैं, स्वामी जी ने भी वही बोला है। ब्रह्म की पूजा करने के लिए बोले हैं, जो ब्रह्म के भीतर नारायण रूप में रहते है उनकी पूजा। दोनों ही बातों का भाव एक है।

"अब दोनों हो बातें Naturally (स्वभावतः) उठती हैं -- जगत् मिथ्या है, अथवा जगत् सत्य है। भगवान की वह लीला भी सत्य है कि नहीं, यह बात आ जाती है। मिथ्या किस अर्थ में है वह पूर्व ही बताया गया है। यही जो लीला है, वह भी सत्य है। कथामृत में है ठाकुर, कहते हैं, नित्य और लीला दोनो ही सत्य हैं—कारणावस्था और कार्यावस्था।

कारण अवस्था में संसार समेट लेते हैं, लीला अवस्था में खेलते हैं। दोनों ही Absolute (अखण्ड)हैं। लीला क्यों होती है? यह कहने पर तो मात्र यही बोला जाता है, ठाकुर कहते, सांप कुण्डली मारे हुए है और फिर सांप चलता है। पूर्व की अवस्था, कुण्डली मारे रहना—ब्रह्मावस्था, नित्यावस्था। शेष की अवस्था—सांप हिल डुल कर चलता है—लीला। जगत् सृष्टि, ब्रह्म का manifestation (विकास) क्यों चल रहा है? उसका उत्तर यही है ब्रह्म की इच्छा। इससे अधिक कोई बोल नहीं सकता।

'और संसार मिथ्या' यह किस की आंख में प्रतिभात होता है? तुम्हारे चक्षु में नहीं। तुम्हारे तो ज्ञानचक्षु प्रस्फुटित नहीं हुए। ज्ञानचक्षु से दिखाई देता है जगत् माया मरीचिकावत् है। इस चक्षु से नहीं। ये तो चर्मचक्षु हैं। ज्ञानियों के मस्तक में एक चक्षु होता है और भीतर एक नाड़ी होती है। उसके आलोक में सब देख पाते हैं जो यथार्थ है। उसका उत्ताप नहीं होता अथच आभा है। देवता के शरीर की ज्योति भी उसी अर्थ में है। वह है Spiritual light (आध्यात्मिक प्रभा)। इस Physical sun (भौतिक सूर्य) की light (ज्योति) नहीं है।

"तुम कल्पना करो, तुम सूर्य में रह रहे हो। और वहां से पृथ्वी देखते हो। तब सब आलोक देखोगे। वैसे ही भीतर में ज्ञानबत्ती जलने पर जो सत्य है केवल उसे ही देख पाता है। अन्य कुछ भी दिखाई नहीं देता।"

"संसार को कैसा देखते हो जानते हो? ठीक मरुभूमि में जैसे मरीचिका। उसका अनुसरण करके पथिक विपद् में पड़ता है। संसार के पीछे जाने से भी विपद् में पड़ना पड़ता है।

"एक Vapour (वाष्प) पृथ्वी से उठती है। उस पर सूर्य का आलोक पड़ता है। इसके ऊपर दूर के वृक्ष जल आदि आकर reflected (प्रतिबिम्बित) होते है। तब मन में होता है वहां जल है, बाग है। इसका अनुसरण करने से ही प्राण तक चला जाता है।

"संसार भी वैसे ही है। माया के खेल से ये सब बना है—स्त्री, पुत्र, संबंधी, गृहस्थ। सत्यवस्तु एक ईश्वर है। इस ईश्वर को छोड़कर जो केवल संसार को सत्य कहकर पकड़ता है उसका ही विनाश होता है।

"हम एक वार चिलका झील देखने गए थे। संग में थे सारदानन्द और प्रेमचन्द। हमें मरीचिका का भ्रम हुआ था। कहने लगा, आहा कैसे सुन्दर स्थान, देखो,देखो। वस्तुत: वह था भ्रमज्ञान। उसी प्रकार तुम इस जगत् को सत्य देखते हो।"

प्रश्न—पाप पुण्य क्या ?

उत्तर–Constructive and destructive forces(संगठनमूलक व विनाशमूलक दो शक्तियां),जैसे प्रकाश और अन्धेरा। आलोक में आने पर अन्धेरा नहीं होता। वस्तुत: पाप पुण्य कुछ नहीं हैं। ये सब बातें मन की सृष्टि हैं। जब तक बेहोश हो संसार में, विषय में डूबे हुए हो, तब तक पाप है। वहां से उठ आने पर पुण्य है। पाप माने अज्ञान—मिथ्या वस्तु को सत्य कह कर लेना। स्त्री, पुत्र - कन्या, संसार का भोग, घर मकान इन सब को सत्य कहकर लेना ही पाप है। संसारी लोग सोचते हैं कि ठीक है. सुख से हैं. किन्तु वस्तुत: वैसा तो नहीं होता।

प्रश्न—क्यों महाशय, एक जन मद पीता है उसे तो आमोद सुख है। एक जन संसार में अपने पुत्र कन्याओं को उत्तम आहार वस्त्रादि सब कुछ देता है, निजी शरीर को खूब भली प्रकार रखता है, इसमें भी तो सुख है।

उत्तर—नहीं, यह प्रकृत सुख नहीं, यह सुख कितने क्षण ? जितने क्षण नूतन और एक विषय में मन को नहीं बैठा लेता। तब फिर इस विषय में और सुख नहीं रहता। किन्तु भगवान का जो सुख है,उसका क्षय वा ह्रास नहीं होता है। वह एक रस है। विषय का सुख अभी है, अभी नहीं। मद पीते ही व्यक्ति ने झट से मस्ती आरंभ कर दा, इसमें फिर क्या सुख है और कितने क्षण ही अथवा यह रहेगा ? मद खाना ही तो दु:ख है, ईश्वर सकल दु:ख के सागर हैं। संसार का जो सुख—विषय सुख, यह तो इसी अनन्त ईश्वरीय सुख सागर का एक कण मात्र है। तुम मिथ्या के पीछे फिर फिर कर सुख लाभ करना चाहते हो। वैसा भी क्या कभी होता है ? परिणाम में दु:ख ही सार होगा।

"ठाकुर ने एक सुन्दर कहानी सुनाई थी। एक कृषक का मात्र एक ही लड़का था। वही मर गया। कृषक था ज्ञानी। उसने स्वयं

को संभाल लिया था ज्ञान विचार द्वारा । किन्तु उसकी स्त्री से वह सहन नहीं हुआ । वह क्रन्दन करती है अछाड़ पिछाड़ खाती है, स्वामी को स्थिर देखकर कहती है—तुम कैसे निष्ठुर हो ? एक बार एक बून्द भी आंख का जल तुम्हारा नहीं गिरा, एक मात्र सन्तान की मृत्यु, आह कैसा तुम्हारा पाषाण हृदय है। कृषक तब बोला,तुमसे एक बात कहता हूँ, सुनो। कल रात मैंने एक स्वप्न देखा—मैं राजा हुआ हूं और तुम हुई हो रानी। और हमारे सात लड़के हुए हैं। परम सुख में हम रह रहे हैं। ओ मां, ज्योंहि निद्रा भंग हुई देखता हूं मैं जो कृषक था वही कृषक हूं। अब चिन्ता कर रहा हूं तुम्हारे एक लड़के के लिए क्रन्दन करूं या सात लड़कों के लिए करूं ?

"ज्ञानी की दृष्टि में ईश्वर सत्य, जगत् मिथ्या, ऐसा ही रहता है।" हरेन्द्र एकजन भक्त से पूछकर पाकेट नोटबुक में वेदान्त सोसाइटी का ठिकाना लिखते हैं। श्री म अतिशय आग्रह से वह लक्ष्य करते हैं।

श्री म (स्मित नयन से मजाक की तरह, हरेन्द्र के प्रति)—वही बात भी तो kindly(कृपा करके) लिख लो नीचे'कल मठ में जाऊंगा'। (कल्पित विस्मय से बड़े जितेन के प्रति) जी हां, अनेक तीर्थ किएहैं,उस दिन भी (जगबन्धु को आंख से दिखाकर) ये जोर करके जन्माष्टमी के दिन रात को मठ में ले गए थे। (उच्चहास्य से) यह तो चला आना चाहता था। तब इन्होंने जोर करके पकड़ रखा। (हरेन्द्र के प्रति) अच्छा, तुम ये सब बातें भी लिखोगे -- प्रश्नोतर क्लास की बातें, जो हुआ है ? जो सुनी हैं ?)

हरेन्द्र—इसमें नहीं लिखा। बड़ी डायरी है उसमें लिखूंगा।

श्री म (पुनः और भी कल्पित विस्मय से) इनकी बड़ी डायरी भी है। देखा जितेन बाबू, तीर्थ किए हुए हैं ना इसी लिए सब ठीक है।

अन्तेवासी—काली महाराज(स्वामी अभेदानन्द) सब बातों को ही अन्त में ठाकुर की वाणी से उपसंहार करते हैं। आज भी बोले, नित्य, लीला दोनों ही सत्य हैं'। जैसे सांप कुन्डली मारे रहता है और हिलता डुलता चलता है। ज्ञानी कृषक की कहानी भी ठाकुर की ही वाणी है।

हरेन्द्र—ठाकुर की वाणी से ऊंची ऊपर और कोई वाणी नहीं है।

इसकी appeal (प्रार्थना) नहीं है।

श्री म (सविस्मय) – अच्छा ? (भक्तों के प्रति) देखो, कैसा सार समझे हैं। तीर्थ किए हैं कि ना, तभी पकड़ पाए हैं।

हरेन्द्र—ठाकुर कैसे सरल भाव से सब बोल गए हैं। उसे तो पांच वर्ष का शिशु भी समझ सकता है।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—देखते हो, ये सब समझ रहे हैं। अब अन्य प्रसंग हो रहा है।

बड़े अमूल्य—कोकिलेश्वर शास्त्री ने वेदान्त की पुस्तक लिखी है—शंकर का मत।

श्री म—हां, पण्डितों की बात छोड़ दीजिए। पण्डित जो बोलते हैं वही हम साधु के मुख से सुनना चाहते हैं। पण्डितों की तो वाणी सर्वदा है ही। किन्तु जिन्होंने उनके लिए सर्वस्व त्याग किया है उनके मुख से सुनना चाहते हैं।

श्री म (मोहन के प्रति)—उस दिन भागवत में से साधु संग माहात्म्य पढ़ा गया था। उसे ही अब फिर पढ़ें तो।

भागवत एकादश स्कन्ध। षडविंश अध्याय। उर्वशी पुरुरवा संवाद।

पाठक(पढ़ते हैं, भगवान् श्री कृष्ण उद्धव को कहते हैं)जो बुद्धिमान होंगे वे कुसंग परित्याग करेंगे एवं साधुसंग करते रहेंगे। साधुओं के उपदेश-गुण से मन की आसक्ति छिन्न हो जाती है। जो निरपेक्ष, मद्गतचित्त, प्रशान्त, समदर्शी, ममता वर्जित, निरहंकार, निर्द्वन्द्व और निष्परिग्रह हैं वे साधु पद वाच्य।

श्री म—गुण समूह को फिर पढ़िए, जिनके होने से साधु होता है। (भक्तों के प्रति) मुखस्थ कीजिए।

पाठक—निरपेक्ष, मद्गतचित्त, प्रशान्त, समदर्शी, ममतावर्जित, निरहंकार, निर्द्वन्द्व और निष्परिग्रह।

श्री म (भक्तोंके प्रति)—ठाकुरके अपने जीवन और वाणी के संग मिलता जाता है। ये सब के सब ही पूर्णभाव से उनमें प्रकाशित हुए थे। बोले थे, "जिनके पास बैठने से ईश्वर का उद्दीपन हो, ईश्वर सत्य, संसार अनित्य यह ज्ञान हो, वे साधु हैं। आत्मज्ञ पुरुष में ये गुण पूर्ण प्रकाशित होते हैं। साधक का सोलह आना न भीं हो तो भी चौदह पन्द्रह आना हो जाता है, ईश्वर के लिए ठीक ठीक व्याकुल होने से।

पाठ चल रहा है।

पाठक (पढ़ रहे हैं, श्री कृष्ण कहते हैं—हे महाभाग उद्धव, साधुगण नित्य 'हितजननी मदीय' की कथा की ही आलोचना करते हैं। वे सब बातें श्रोताओं की पापनाशिनी हैं। जो जन सादर उसी साधु की कथा श्रवण, गान और अनुमोदन करते हैं वे जन मुझ में तत्पर और श्रद्धावान हुए मेरी ही भक्ति प्राप्त किए रहते हैं। मदभक्ति अनन्त गुण और आनन्दानुभवात्मक है। जो साधु ऐसे भक्तिसम्पन्न हैं, उनका और क्या बाकी रहता है ?

"भगवान अग्निदेव की उपासना से मनुष्य का जैसे शीत भय और अन्धकार दूर होता है, साधुगणों की सेवा करने से भी सब पाप नष्ट हो जाते हैं। जल में डूबते हुए व्यक्तियों की जैसे नौका ही परम अवलम्बन है, घोर संसार-सागर में डूबते-उतराते जीवगणों के लिए ब्रह्म वादी साधुगण वैसे ही परम आश्रय हैं।

"अन्न जैसे प्राणियों के प्राण,मैं जैसे दीनगणों की शरण, एवं धर्म जैसे मानव का पारलौकिक धन, साधुगण वैसे ही संसार में पतित और भीत पुरुषों के परित्राणकर्त्ता। सूर्य पूरी तरह से प्रकाशित होकर मात्र एक ही बाहरी नेत्र प्रदान करते हैं, किन्तु साधुगण के बहु चक्षु हैं। वे सगुण निर्गुण बहुज्ञान प्रदान करते हैं। साधुगण ही देवता, वे ही बान्धव एवं वे ही मैं हूं।"

श्री म—आहा, कैसी समस्त अमृत वाणी है साधुगण ही मैं। गीता में भी यही प्रतिज्ञा है। 'ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम्' ज्ञानी मेरी आत्मा, मेरा स्वजन है। (गीता 7:18)

श्री म (बड़े अमूल्य के प्रति)—उन्हीं साधुओं के मुख का कथामृत हम सुनना चाहते हैं। नहीं तो प्राण शीतल होगा कैसे? जो बाजे के बोल हाथ में लाए हैं वे ही साधु।

"पंडितों की बात में ठाकुर बोले थे, घास फूस जैसे लगते हैं। किन्तु पण्डित यदि विवेक वैराग्यवान् होते तब खूब मान देते। कहते थे, के जाने बापू तोर गाँड़ गुई। वीरभूम का वामुन मुई। 'गाँड़ गुई' माने non-essential part (असार अंश) और 'वीरभूम का वामन मुई' माने मैं जगदम्बा का पुत्र। 'मद्गत चित्त, मदेक तत्पर'। पण्डितों की बातें, मुख की बातें। साधु की कथा अन्तर की गाथा। तभी तो हम रोज मठ के साधुओं की कथा सुनना चाहते हैं, जभी तो प्राण शीतल होता है।"

कुछ दिनों से श्री म बीच बीच में कथामृत से एक एक सीन पढ़ कर भक्तों को सुना रहे हैं। कह देते हैं चौबीस घण्टों की खुराक है यह। सर्वदा इसी का ध्यान करते करते चित्त उसी रंग में रंग जाता है। मन का बदरस निकल जाता है ऐसे। अन्य चिन्ता दबकर क्रमशः नष्ट हो जाती है। आज पंचम सीन पढ़ रहे हैं। कथामृत चतुर्थ भाग। सप्तदश खण्ड। प्रथम परिच्छेद।

ठाकुर अधर के घर बैठकखाने में नृत्य करते हैं। उसी अपरूप नृत्य के आकर्षण से नरेन्द्र आदि भक्त भी ठाकुर के संग नाचने लगे। नृत्यरत ठाकुर हठात् समाधिस्थ— अन्तर्दशा-निर्वाक्। भक्त नृत्यानन्द में उनकी परिक्रमा करते हैं।

कुछ क्षण पश्चात् ठाकुर की अर्धबाह्य दशा 'चैतन्यदेव की न्याईं'। तब सिंहविक्रम से भक्त-संग नृत्य करते हैं। तब भी निर्वाक्। आहा, कैसा प्राणस्पर्शी वह दृश्य! प्रेम उन्मत्त! प्रति अंग विन्यास से पीयूष प्रेम वर्षित हो रहा है।

बाह्य दशा में आखर* दे रहे हैं, अधर भवन आज है श्रीवास-आंगन। नीचे राजपथ पर असंख्य लोए खड़े हुए वही दैवी नृत्यलीला दर्शन करते हैं।

* आखर=गाने के साथ नए पद जोड़ कर गा रहे हैं।

श्री म कुछ काल मौन बैठे रहे। तत्पश्चात् गाना गाते हैं। अधर के बैठकखाने में जितने गाने हुए थे सबके सब गाए। भक्तगण भी गा रहे हैं संग संग। 'आमाय दे मा पागल करे, आर काज नाई ज्ञान विचारे'। बार बार यह गाना गाते गाते सब जन ही लगता है पागल हो गए हैं। किसी को भी बाह्य होश नहीं—उन्माद में उन्मत्त हुए गा रहे हैं।

रात्रि दस। भक्तगण विदा लेते हैं। श्री म की इच्छा से एकजन भक्त आवृत्ति करते हैं।

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं।
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्॥

श्री म (भक्तों के प्रति)—यह सुनिए, उनकी कथा सुनकर चलने से दुःख हरण होता है। ना सुनने से बढ़ जाता है। साक्षात्, परमब्रह्म मनुष्य होकर आए। भक्तों के दुःख-हरण का सहज पथ दिखा गए। अब भी उनकी वाणी बज रही है, 'साधुसंग करो, साधु सेवाकरो'। परमानन्द लाभ का यही पथ और है। फिर नए रूप से साधु तैयार कर गए हैं। वही साधुसंग, साधु सेवा।

(2)

मॉर्टन स्कूल का द्वितल। रास्ते के ऊपर के कमरे में फर्श पर श्री म ध्यान कर रहे हैं। पास सुधीर और योगेन। अन्तेवासी ने प्रवेश करके ध्यान में योगदान किया। अब संध्या सवा सात। कुछ क्षण ध्यान के पश्चात् श्री म गाना गाते हैं।

गान : तोमारेइ करियाछि जीवनेर ध्रुवतारा।
ए समुद्रे आर कभु होबो नाको पथहारा।
यथा आमि जाइ नाको, तुमि प्रकाशित थाको,
आकुल नयन जले ढालो गो किरण धारा॥
तव मुख सदा मने, जागितेछे संगोपने,
तिलेक अन्तर होले ना हेरि कूल किनारा॥

कखनओ विपथे यदि भ्रमिते चाय ए हृदि,
अमनि ओ मुख हेरि सरमेते होइ सारा ॥

गान : आछि मा तारिणी ऋणी तव पाय। इत्यादि।

गान : हरि जगतजीवन जगबन्धु।
सुनेछि पुराणे कय पुनर्जन्म नाहि हाय :
हेरिले तव मुखइन्दु ॥

गान : हरि काण्डारी जेमन आर की तेमन आछे नेये।
पार करेन दीन जने अधम तारण चरण दिये ॥
तरणीर एमनि गुण नाइको हाल नाइको गुण।
चले से अपनि तरी अधम तारण चरण पेये ॥

बड़े जितेन का प्रवेश। फिर आए अमृत चैटर्जी, फिर शुकलाल और तब मणि। श्री म का शरीर आज अस्वस्थ, पीठ में वात की व्यथा हुई है। भक्तगण इधर उधर की बातें करते हैं। श्री म ने शायद कथा का स्रोत मोड़ने के लिए वह व्यथा लिए हुए ही पुनः गान पकड़ लिया। अब रात्रि प्रायः नौ। डाक्टर, विनय और छोटे नलिनी ने गृह में प्रवेश किया।

गान : गौर प्रेमेर ढेउ लेगेछे गाय।
तार हुंकारे पाषण्डदलन ए ब्रह्माण्ड तलिये जाय ॥
मने करि कूले दांड़िये रइ,
गौर चांदेर, प्रेमकुमीरे गिलेछे गो सइ।
ए मन व्यथार व्यथी के आर आछे हाथ धरे टेने तुलाय।

गान शेष हुआ। कुछ पश्चात् श्री म की इच्छा से भागवत पाठ होने लगा। श्री कृष्ण-उद्धव संवाद। सत्त्व, रज, तम गुण वर्णन, अन्तेवासी पढ़ते हैं।

पाठक (श्री कृष्ण बोलते हैं)—हे पुरुषवर उद्धव······सत्त्वगुण की वृत्तियां ये हैं–शम, दम, तितिक्षा, विवेक और स्वधर्मनिष्ठा, सत्य और दया, पूर्वापर स्मृति और यथालब्ध वस्तु में सन्तोष। दान, वैराग्य

और आस्तिक्य। अनुचित कार्यों में लज्जा। सारल्य, विनय और आत्म-रति आदि।

रजोगुण की वृत्तियां ये - इच्छा, चेष्टा, दर्प, लब्धवस्तु में असन्तोष गर्व और धनादि कामनाओं के लिए देवता के निकट प्रार्थना। भेद बुद्धि और विषय भोग। मत्तता प्रयुक्त युद्धाभिनिवेश। स्तुतिप्रियता और उपहास। प्रभाव विस्तार और बद्धचेष्टा आदि।

और तमोगुण की ये वृत्तियां हैं—असहिष्णुता, व्ययविमुखता और अशास्त्रीय वाणी। हिंसा, प्रार्थना और धर्मध्वजिता। श्रमविमुखता, कलह और अनुशोचना। भय, दुःख, दैन्य, तन्द्रा और आशा। भय और उद्यमहीनता आदि।

श्री म (भक्तों के प्रति)-खूब बढिया हैं ये सब बातें। ये सब मुख-थ कर लेना उचित। तभी निज के संग में मिलाया जायेगा। तब पता लगेगा मैं कहां हूं :—Where do I stand ? बड़ी बड़ी बातें बोलता जाएगा- इनके संग मिलाने पर देखेगा सब थोथी हैं, ये लम्बी लम्बी बातें सब मूल्यहीन। हाथ में न लाए तो सब मिथ्या।

"इन तीन गुणों से ही मनुष्य बद्ध है। तम से रज भला। रज से सत्त्व भला। भगवान कहते हैं, भक्तियोग अवलम्बन करने से, मत्परायण होने से इस गुणत्रय को जय किया जाता है। तब शुद्ध सत्त्व होता है—त्रिगुणातीत अवस्था। वह ही मुक्ति है।"

बड़े जितेन—पीठ में व्यथा क्यों होती है ?

श्री म (सहास्य)—यह भी फिर क्या व्यथा है ! Old age (बुढ़ापे) में ये सब होती ही हैं। कितने विघ्न है ! किन्तु उससे बड़ी व्यथा भी तो सामने है।

शुकलाल एक शीशी गलथरिया आयल लाए हैं। वह मालिश करने से यह व्यथा कम हो जाती है। श्री म को वह दे दी। कुछ काल उसकी उपकारिता की बात चली। श्री म ने मानो पुनः हाथ खेंचकर कथा के प्रवाह को मोड़ दिया।

श्री म (भक्तों के प्रति)—एक बार एक miracle (चमत्कार) हुआ था। 'सादा बाड़ी' में कमरे में झाड़ू दे रहा था। एक बिच्छू ने काट लिया। उहः वह कैसी यंत्रणा, आंखों में जल ही जल। कितने जनों

ने कितना कुछ किया। एक जन ने तम्बाकू का पत्ता बांध दिया। किसी से भी कुछ नहीं हुआ। जैसे आग जलती है सहस्त्र जिह्वाओं से, ऐसी यातना। प्राण गया कि गया। उसी समय ठाकुर की रोगक्लिष्ट वही मूर्ति स्मरण हो आई। मैंने इच्छा करके स्मरण नहीं की थी, किन्तु किसी ने जैसे भीतर से ठेल दी थी—जैसे बाइस्कोप को छवि हठात् निकल आती है, वैसे ही। कैसा आश्चर्य ! संग संग ही वह यमयंत्रणा भी मुहूर्त्त में ही अदृश्य हो गई। मानो कुछ ही नहीं था। कैसी विचित्र घटना !

"कैंसर की कैसी दारुण यन्त्रणा ! छटपट करते हैं ठाकुर। रोते रोते मां से कहते हैं, मां बड़ा लगता है। फिर भक्तों के कहने पर कि मां को इस कष्ट को हटा देने के लिए बोलिए तो उसी यंत्रणा के भीतर ही उत्तर दिया, 'नहीं भाई, हटा दो मां, यह मैं तो कह नहीं सकूंगा।' कहते हैं, मां ने मुझे बालक की अवस्था में रखा हुआ है। मां जानती है, किससे भला होगा। मुझे तो ज्ञानी की अवस्था में नहीं रखा जो ऐसे (अकड़े) रहूंगा। बालक मां बिना नहीं रह सकता। जभी वह क्रन्दन करता है, कष्ट होने पर। मां सर्वमंगला।

'इधर तो ऐसी यंत्रणा। ज्योंहि तनिक ईश्बरीय कथा हुई, या गान हुआ, त्योंहि फिर वसा मुख नहीं। अरुण-राग से रंजित कमल जैसे मुख पर खिल गया। कौन तब कहेगा इन्हें कैन्सर है ! डाक्टर महेन्द्र सरकार देखकर अवाक् ! किस प्रकार होती है ऐसी अवस्था—उनकी सायन्स में यह नहीं है।

"सुख दुःख के पार की अवस्था केवल उनमें ही मैंने देखी है। अभी अभी जो पढ़ा गया हैं भागवत से–त्रिगुणातीत अवस्था। 'यस्मिन् स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते।' (गीता 6:22)।

"संसारी जन जिसे सुख कहता है, विषय सुख—वह तो है दुःख का गुप्त रूप, चमकदार रूप। संसार में सुख कहां ? आज सुख, कल दुःख। छिः इसे सुख कहते हैं ? इसके ऊपर जो है सुख, अविरल सुख वह है भगवान के चरणकमलों में। निरवछिन्न सुख ब्रह्मानन्द।"

श्री म (युवक भक्त के प्रति)— एक दिन जगदम्बा के संग ठाकुर बातें कर रहे हैं। बोले विनती करके, 'मां तुम इच्छामयी हो; तुम्हारी

इच्छा ही पूर्ण होगी। इतना करके कहा, अपना भुवनमोहन रूप एक बार दिखाने को, जो रूप देखने से सब शोक दुःख दूर हो जाते हैं-संसार ज्वाला दूर होती है। वह तुम तो दिखाओगी नहीं ना।'

"उनको देख लेने पर सब भूल जाता है। तब मुहूर्त्त का विरह भी सहन नहीं होता। आहा, ठाकुर ने कैसा क्रन्दन किया था, वही रूप देखने के लिए—जिस को कहते हैं 'एक घटी क्रन्दन'। पंचवटी में क्रन्दन सुनकर लोग जमा हो जाते। नौका के लोग नीचे उतर कर, आ कर प्रबोध देते। बोलते, हां, तुम्हारा होगा तुम्हें दर्शन देंगे। दर्शन कर लेने पर ठाकुर के लिए विरह असह्य हो जाता। सर्वदा मां के अंक में रहते हैं, जैसे शिशु।

"चैतन्य देव भी सर्वदा क्रन्दन करते विरह में। किसी समय भी तनिक भी विरह सह्य नहीं होता। विलाप करते हैं और बोलते हैं, कृष्ण रे, बाबा रे तू कहां लुका है रे। उन्हें संसार भूल ही गया था। उनको भावते भावते एकदम महाभाव हो जाता है। उस अवस्था में बेहोश हुए एक दिन जगन्नाथ मन्दिर की Wall (दीवार) के पास पड़े रहे। भक्त खोजते हैं कहां गए प्रभु, मिलते ही नहीं और एक बार वैसे ही महाभाव में समुद्र के जल पर वे तैर रहे हैं। धीवर उठाकर ले आए। जल जमीन सब भेदभाव विलुप्त। और फिर कहां गए कोई भी नहीं जानता। एक दम अदृश्य हो गए। कोई कहता है टोटा गोपीनाथ में मिल गए हैं। कोई कहता है जगन्नाथ में। थर्ड थिओरी (तृतीयमत) है समुद्र में डूब गए हैं *।

श्री म (भक्तों के प्रति)—भक्तों के लिए कितना plead (प्रार्थना) करते। कितनी ही दोपहर को शय्या पर बैठे हुए कहते, मां अमुक को डुबा मत। एक भक्त को ससुराल भेज दिया। पीछे कहीं स्त्रीसंग हो, इसलिए यहां बैठे हुए कल दबा रहे हैं।

"और एक भक्त के लिए कहते हैं, मां इतना करके कहता हूं तुझे

* 'बृहत्‌बंग' में डाक्टर दीनेश सेन कहते हैं, गुण्डिचा मन्दिर में रथ के समय विषज्वर से देह त्याग की। राज आदेश से पण्डों ने उसी मन्दिर में गोपन में समाहित किया। बाहर प्रचार आ जगन्नाथ में मिल गए हैं।

यह बड़ा सरल है, चुप करके बैठा रहता हूं। खींच ले मां इसको। भक्तों के कल्याण के लिए इतनी चिन्ता जैसे मां बाप को चिन्ता रहती है सन्तानों के लिए। बांप मां तो फिर केवल इसी जन्म की चिन्ता करते है। किन्तु जो गुरु हैं वे अनन्त काल के कल्याण की चिन्ता करते हैं।"

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—असुख के समय ठाकुर भक्तों के लिए चिन्ता करते हैं। चले जाने पर ये निराश्रय हो जाएंगे तभी चिन्ता। एक जन से कहा कमर बांध। ऐसा होने से चलेगा कैसे, शोक में मुह्यमान ?

एक दिन अपने आप ही बोल रहे हैं, अच्छा, असुख क्यों हुआ ? और फिर स्वयं ही उत्तर देते हैं, असुख होने से एक तो बड़ा अच्छा हुआ। कोन अन्तरंग है, कौन अपना, कौन पराया है—इनकी छांटी हो जाएगी। अन्तरंगगण तो फिर त्याग कर सकेंगे नहीं, असुख ही हो या ठीक ही रहें। घर के जन को रोग हो तो क्या छोड़ देता है ? अन्तरंग जो हैं वे असुख होने पर रहेंगे ही, अन्य ही लोग हट जाएंगे। अन्य लोग कहते हैं, — ये तो अपनी ही रक्षा नहीं कर सकते, फिर दूसरे की रक्षा करना कैसे संभव ? यह कहकर हट जाएंगे। वे सकाम भक्त हैं। संसार के ऐश्वर्य के लिए आए हैं।

"ठाकुर ने बतलाया था, और भी एक अच्छी बात हुई है असुख होने से। यहां को (मुझ को) हस्पताल डिसपेन्सरी के हाथ से बचा लिया है। सिद्धाई दिखलाने पर लोग आते रोग हटवाने, मुकदमा जितवाने। अनेक लोग ही तो ऐसे भाव लेकर, कामना लेकर आते हैं किना साधु के पास।"

श्री म (डाक्टर के प्रति)— ठाकुर के असुख के समय सब भक्त सर्वदा सेवा नहीं कर सकते थे। उनके घरों में कितना काम रहता था। मां से तभी कहते, 'मां, वे कैसे आवें ? इन्हें इतना काज है। गृहस्थ देखना पड़ता है। समय कहां मां ? पीछे भक्तों का अपराध मां लें तभी पहले से ही उनकी रक्षा करते। उनके लिए स्वयं क्षमा मांगते।

"और फिर रुपया-पैसा अधिक माँगने से भक्त लोग भय से पीछे न आवें, तभी भक्तों को सुनाकर बोलते हैं, यहां पैला (पात्र) नहीं है। कभी कभी बोलते, आहा, रुपया इन्हें इतना प्रिय है, वह उनका ही रहे।

मुझे अपने पादपद्मों में शुद्धा भक्ति दो। किन्तु उनके पास आने पर हाथ में कुछ लेकर आने के लिए कहते। वह भी दो एक पैसे की इलायची आदि, अति सामान्य वस्तु। उनके लिए कुछ लेकर आने से अपना ही कल्याण है। देवता और साधु के पास जाने पर कुछ देना चाहिए, यह भी बतलाना हो जाता। और फिर अधिक कहने से, आवे ही नहीं जभी कह देते यहां पर आने के समय एक हरड़ ही चाहे हो, हाथ में ले आना। क्यों कहते, उन्हें क्या आवश्यकता हरड़ की, किंवा अन्य वस्तु की? भक्तों को उनके लिए वह वस्तु लेकर आने के लिए खूब सोचना पड़ेगा उस वस्तु के संग ध्यान होगा ठाकुर का, जभी कहते। यह तो एक नीति है। गुरु को भगवान को सब कुछ देना होगा कि नहीं अंतिम जन्म में, तभी उसका अभ्यास करवाते हैं, इस सामान्य से द्रव्य द्वारा। द्रव्य में तो कुछ नहीं है, मन की भावना में है। देने की यह भावना, सर्वत्याग की यह भावना, जाग्रत किये रखते हैं। यह तो एक अति बड़े Principle (नीति) के अभ्यास के लिए, हाथ में लाने के लिए कहते हैं। अधिक लेकर आने पर तुरन्त डांटते।

"जिनके पास पैसा नहीं होता उन्हें फिर गाड़ी भाड़े का पैसा भी दिलवाते। पैसे वाले भक्त बलराम बाबू आदि को उनका गाड़ी भाड़ा देने के लिए कह देते। कहते, हां, तुम इस का यह गाड़ी भाड़ा दिओ। किसी से बोलते, तुम गाड़ी भाड़ा करके नरेन्द्र को संग लेकर आना। अथवा कभी कहते, गाड़ी करके उस पर नरेन्द्र को बिठा देना। तब फिर तुम काम पर चले जाना। भक्त बिना रह सकते नहीं थे कि ना, तभी उनके लिए इतना व्याकुल होते। किन्तु चाहते नहीं कुछ, कोई भी जोर नहीं। अज्ञानावस्था में मनुष्य को देना पसन्द नहीं होता। केवल लेना चाहता है हद्द हुई तो give and take, दो और लो—आदान-प्रदान— इतना तक समझता है मनुष्य। इसके ऊपर समझता नहीं। केवल देना, बिना कुछ लिए—यह होता है जब मनुष्य देवभाव पर चढ़ जाता है। ज्ञान होने पर संस्कार का कार्य संस्कार करता है, कुछ देना चाहता नहीं। नीचे का वह मनुष्य तो पशु है। विचार करके तब देता है। इसी के द्वारा महामाया संसार-

रचना करती है— यह संचय में प्रीति, केवल लेने में प्रीति होती है। सर्वस्व देने की प्रीति तो जब उनकी कृपा से मनुष्य देवता होता है, तब होती है।

"(सहास्य) ठाकुर बीच बीच में एक कहानी सुनाते। एक स्थान पर 'जात्रा'* हो रही थी। वहां पर 'पैला'‡ नहीं था। जभी खूब भीड़। और एक स्थान पर हो रहा था गाना। वहां पर 'पैला' देना पड़ता था। तभीं वहां पर विशेष भीड़ नहीं थी, प्रायः खाली सभा। पशुभाव में मनुष्य खाली लेता है, देवभाव में सर्वस्व देता है।"

श्री म (सब के प्रति)— एक बार पंचवटी में एक जन हठयोगी आए। अफीम खाते। रोज उन का ड़ेढ़ सेर या कितना दूध लगता। राखाल से कहा दूध, अफीम आदि के लिए अर्थ जुटा देनें को। राखाल बोला, भक्तों के आने पर कहूंगा। भक्तगण जब आए हठयोगी भी आ उपस्थित, पांव में खड़ाऊं खटर खटर करते। राखाल से ज्योंहि रुपयों की बात हठयोगी ने पूछी, ठाकुर त्योंहि भक्तों से कहने लगे— तुम कुछ दोगे इसको? थोड़ा परे फिर बोले, तुम शायद नहीं देते। कहां, कोई भी तो कुछ बोला नहीं। भक्तों पर press (बोझ) न हो, जभी कैसे सुन्दर भाव में बात को गूंथ कर बोले। थोड़ी बात और फिर नम्र बात, अथच काम की बातें सब।

"आर. मित्र हमारे पड़ौसी प्रयाग गए थे कुम्भ मेला देखने। वापिस आकर दक्षिणेश्वर गये ठाकुर के दर्शन करने। ठाकुर बोले, कैसा देखा सब? उन्होंने उत्तर दिया, "सुन्दर, किन्तु अनेक साधु पैसे लेते हैं।" तत्क्षणठाकुर प्रतिवाद करके बोले, 'तुम ने केवल यही देखा, पैसा लेते हैं! भला गुण कुछ भी देख नहीं पाए? मैं कहता हूं पैसा बिना दिए खायें क्या, बोलो?"

श्री म इस बार मिहिजाम† होकर आए हैं गर्मी के समय। वहां पर आहार निज ही तैयार करना पड़ता था। खूब झंझट। तीर्थों में

---

*'जात्रा'= यात्रा, धार्मिकगीति नाटक।
‡पैला= प्रदर्शनी की प्रणामी। टिकट।
†मिहिजाम= श्री म दर्शन प्रथम भाग देखिए।

रहने से यह समस्त हंगामा करना नहीं पड़ता । ये ही सब बातें हो रही हैं ।

श्री म (भक्तों के प्रति)— तीर्थ में रहना तो अच्छा है । अग्नि सर्वदा जल रही है, सेक लेने से ही हो जाता है । अन्य स्थान पर तैयार करनी पड़ती है । निकट वाले स्थानों में वैद्यनाथ, पुरी आदि अच्छे स्थान हैं। पुरी में इस के ऊपर भी और एक सुविधा है– पकाना नहीं होता । क्रय करके खाओ । प्रसाद खरीदने पर मिल जाता है । पका कर खाने पर रहने से तो सब समय इस में ही चला जाता है । ईश्वर चिन्तन का समय कम हो जाता है । पुरी से सखीचरण ने दो बार निमंत्रण भेजा है। वे जगन्नाथ के मैनेजर हैं। तब तो फिर जगन्नाथ ही बुला रहे हैं ।

परिस्थिति वश योगेन और मणि दुःखी हैं। सामने झुके हुए बैठे हैं। श्री म यह सब देख रहे हैं ।

श्री म (भक्तों के प्रति)— ठाकुर को असुख । काशीपुर में रहते हैं। शरीर सूख कर धनुष वत् हो गया बांका । कुछ हाड़ ही मात्र सार । एक भक्त खिन्न हुआ शय्या के पास बैठा है । उसको देख कर बोले, 'ऐसे कैसे बैठे हो ? ऐसा होने से चलेगा कैसे ? कमर में जोर लाओ, खिन्न भाव छोड़ो ।'

श्री म (योगेन और मणि के प्रति)— संसार युद्ध क्षेत्र है, अनवरत युद्ध चलता है। म्यान से निकली तलवार होकर रहना उचित। सर्वदा जाग्रत सशस्त्र सैनिकवत् । कब क्या विपद् घटे ! कैम्पेनबैल (Campenbell) अस्त्रशस्त्र से सुसज्जित था । तब भी डूब गया। हठात् कहां से एक गोला आ गया ! वैसे ही है संसार, अनेक गोलियां आ पड़ती हैं रातदिन । चारों ओर विपद् ! जभी तो सर्वदा तलवार खुली रखनी चाहिए । महायुद्ध-क्षेत्र है संसार, आलसी, अमनोयोगी होने से ही ध्वंस । योद्धावत् कमर कस कर खड़े हो जाओ । और अन्तर में विश्वास रखो, भगवान सहायी हैं। जभी तो क्राइस्ट बोले थे………

· ....In the world ye shall have tribulation; but be of good cheer; I have overcome the world. (सेंट जौन 16:33) मैंने संसार को जीत लिया है, यही विश्वास करके मुझे पकड़े रहो। तब भय नहीं रहेगा। आत्मा को अवसादग्रस्त नहीं होने देते—'नात्मानमवसादयेत्' । (गीता 6:5) अविराम युद्ध-क्षेत्र है संसार। सर्वदा सशस्त्र जाग्रत रहो।

रात्रि साढे नौ

मॉटर्न स्कूल, कलकत्ता ।
17 सितम्बर, 1923 ई०, सोमवार ।
30 वां भाद्र, 1330 (बं०) साल; विश्वकर्मा पूजा।

द्वितीय अध्याय

वत्स पकड़े रहने पर गाय आप आती है

(1)

मॉर्टन स्कूल। अपराह्ण पांच। श्री म दोतल के पश्चिम की ओर के बड़े कमरे में बैठे हैं चटाई पर पूर्वास्य। सुधीर, शची और जगबन्धु स्वामी अभेदानन्द जी की वक्तृता सुनकर आए हैं। उन्होंने आकर देखा, श्री म के पास स्वामी सद्भावानन्द उपविष्ट। ये हैं विद्यापीठ के अध्यक्ष। योगीन और अमृत भी बैठे हैं। शची प्रणाम करके निवासस्थल पर चले गए। कुछ पीछे आए बड़े जितेन और विरिंचि कविराज। उसके परे मनोरंजन और रमणी, और डाक्टर बक्शी और विनय। सब के पीछे प्रवेश किया एटोर्नी बीरेन ने। स्वामी सद्भावानन्द श्री म के संग विद्यापीठ की परिचालना के सम्बन्ध में कुछ क्षण आलोचना करके मिष्टीमुख करके चले गए। श्री म भी आहार समाप्त करके आ गए ऊपर से। अब प्रायः साढे सात। श्री म आहार समाप्त करके तीनतले से उतरते समय जैसे श्री श्री मां के भाव में परिपूर्ण हैं। आसन ग्रहण करते ही उसी भाव का काफी कुछ अंश बाहर प्रकट करते हैं।

आज 19 सितम्बर, 1923 ई०; 2रा आश्विन, 1330 (बं०) साल; बुधवार। श्री म (भक्तों के प्रति, आवेग भरे)—मां ने चार बातें बताई थीं। प्रथम, 'जो पूर्णकाम हैं उनकी भक्ति अहैतुकी होती है,' उन्हें ही कहते हैं ईश्वर कोटि* ।

'द्वितीय' जिसका है माप, जिसकी नहीं जय।' अर्थात् जिसकी दान करने की शक्ति है वह दान करेगा। 'माप' माने दो, दान करो।

---

* ईश्वर कोटि=ईश्वर-शक्ति से भरपूर। ब्रह्मज्ञ। ईश्वर का अवतार अथवा अवतार के गुण लेकर जन्म लिए हुए।

दान करना माने पूजा करना, सेवा करना भगवद्बुद्धि से। वह शक्ति न हो तो जप करो बैठे बैठे।

तृतीय, वस्तु तो इतनी पड़ी हुई है कि उथली पड़ रही है, किन्तु स्वभाव कहां बदलता है ? इसका अर्थ है ईश्वरीय कथा तो इतनी सुनी है किन्तु तब भी कुछ नहीं होता। क्योंकि प्रकृति जो खेंच रही है। श्री कृष्ण ने अर्जुन को कही थी यही बात, प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति। (गीता 18 : 59)(बड़े जितेन के प्रति) ठाकुर बोलते, जल नीचे की ओर जाता है, उसका स्वभाव ही वैसा है। किन्तु यह भी बोला था, सूर्य के आकर्षण से ऊपर भी जाता है। ईश्वरीय कृपा होने पर दुर्दमनीय प्रकृति भी बदलती है।

"चतुर्थ, बाह्य चेतना विलुप्त हो गई, इस प्रकार की अज्ञानावस्था में मृत्यु होने पर क्या फल होता है ? इसी प्रश्न के उत्तर में मां बोलीं, मृत्यु के समय बेहोश होने से दोष नहीं है। यदि बेहोश होने के पहले ईश्वर का नाम स्मरण करता रहे, तो वह होने से ही हुआ। उत्तम फल होगा।"

श्री म (भक्तों के प्रति) —ये चारों ही महावाक्य आप लोग थोड़ा ध्यान कीजिए।

भक्तगण ध्यान करते हैं। श्री म भी ध्यान करते हैं। दसेक मिनट बाद श्री म एकजन भक्त से बोले, अब भागवत पाठ हो। एकादश स्कन्ध, तीसरा अध्याय पाठ हो रहा है—भागवत धर्म।

पाठक ने पढ़ा—सर्वप्रथम मन को सब विषयों से संगहीन करके साधुसंग करते रहो। उसके पश्चात् ऐसा होगा।

प्रथम, सर्वभूतों पर समुचित दया, मैत्री और नम्रता, शुचिता, स्वधर्मसेवा, क्षमा और वृथा वाक्यालापे पराङ्मुखता।

द्वितीय, वेदपाठ, सरलता, ब्रह्मचर्य, अहिंसा, सुख दुःखादि द्वन्द्वों में समभाव, सर्वत्र आत्मदर्शन, ईश्वर दृष्टि, सर्वत्र समव्यवहार, निर्जनवास, ग्रहादिमें निरभिमानता, पवित्र चीरवसन परिधान, सर्वविषयों में सन्तोष, भागवत शास्त्र में श्रद्धा तथा अन्य शास्त्रों में अनिन्दा।

तृतीय, मन वाक्य और कर्म संयम। सत्य, निष्ठा, शम और दम।

अद्भुतकर्मा श्री भगवान का नरलीला में जन्म, कर्म और गुणसमूह का कीर्तन श्रवण और चिन्तन। और भगवान के उद्देश्य में सर्वकर्म का अनुष्ठान।

और चतुर्थ, योगाचार, दान, तपस्या, जप, सदाचार, स्त्रीपुत्र परिजन गृहादि और मन प्राण सर्वस्व श्री भगवान में निवेदन। ये सब ही हैं भागवत धर्म के ऐश्वर्य।

श्री म (भक्तों के प्रति)—किन्तु साधुसंग सब का मूल है। इसको पकड़े रहने पर जो पढ़ा गया है आप ही प्रकाश पाता है। सब ही उत्तम वस्तुएं—सत्संग के ऐश्वर्य हैं। ठीक ठीक भक्त के भीतर ये सब आप ही आ जाते हैं। जैसे एकजन को अफीम खिलाने पर अफीम की प्रतिक्रिया आती है वैसे ही ठीक ठीक सत्संग होने पर, यह समस्त सद्गुणावली आप ही आती है। एक एक करके पालन करने से एक जन्म में कुछ नहीं होगा। ये सब ही एक वस्तु की विभूतियां हैं— भगवद्भक्ति की। साधुसंग ठीक होने से भगवान में भक्ति होती है। तब संसार के भोग की विभूति झड़ पड़ती है। और ईश्वरीय विभूति अभी जो सुनी गई है वह आ जाती है।

"ठाकुर के जितने उपदेश हैं उन्हें एक महावाक्य में कहना हो तो कहना होगा, आदि में साधुसंग, मध्य में साधुसंग और अन्त में साधुसंग। इतना स्मरण नहीं रहेगा, इसीलिए ठाकुर सहज करके इस काल के उपयोगी तीन बातों में सब बोल गए हैं। नित्य साधुसंग। नित्यनियमित भजन और व्याकुल होकर प्रार्थना, तथा बीच बीच में निर्जनवास।"

एकजन भक्त— सब के लिए ही क्या इसी भागवत-धर्म की व्यवस्था है, किंवा अधिकारी विशेष के लिए इस का प्रयोजन है ?

श्री म— सब के लिए नहीं। जो ज्ञानयोग, राजयोग ऐसे साधनों में असमर्थ हैं उनके लिए है यह पथ। कलिकाल है कि ना, सब लोग ऐसे कठिन पथ ले नहीं सकते। जभी सहज पथ यह भक्तियोग ही है। जिस पथ से भी जाओ गन्तव्य स्थल एक ही है। जिसके लिए जो करना सहज हो वही करना उचित।

"निमि मिथिला के राजा थे। उनके एक यज्ञ में नौ सिद्ध ऋषि

उपस्थित थे। भागवत धर्म का स्वरूप क्या है और अधिकारी कौन है, निमि के इस प्रश्न के उत्तर में प्रबुद्ध ऋषियों ने ये ही सब बातें कही थीं जो सुनी गई हैं। और बोले थे, जो स्थूलबुद्धि लोग हैं मन जय करने में असमर्थ हैं, उनके लिए यह भागवत धर्म की व्यवस्था है। इसकी ही सहायता से वे लोग मायापाश छिन्न करेंगे। इसको शरणागति योग भी कहा जाता है। कलिकाल में इस का प्रयोजन बहुत है।"

श्री म (पाठक के प्रति)—अन्य आठ ऋषियों के क्या नाम हैं, पढ़ो तो ?

पाठक—कवि, हरि, अन्तरीक्ष (प्रबुद्ध), पिप्पलायण, आविर्होत्र, द्रुमिल, चमस और करभाजन।

श्री म— साधुसंग का इतना प्रयोजन है। इसीलिए ठाकुर, चैतन्यदेव, गुरुनानक इन सब ने ही इस पर इतना जोर दिया है। कलि में अन्नगत प्राण और फिर आयु कम–समय भी नहीं। सामर्थ्य भी नहीं। जभी शरणागति योग की व्यवस्था। शरणागति योग का हृदयकेन्द्र साधुसंग, साधुसेवा। पथ कितना सहज कर दिया है। साधुसंग को पकड़े रहो अन्य सब आप ही आएगा। बछड़े को पकड़े रखने से गाय अपने आप ही आएगी हम्बा हम्बा करती हुई। 'गाय' माने ईश्वर। उनके आने से उनका सात्त्विक ऐश्वर्य संग ही आ जाता है।

(2)

अगले दिन बृहस्पतिवार। श्री म का शरीर उतना ठीक नहीं है, पीठ में व्यथा है। छोटे जितेन, योगेन, जगबन्धु, सुधीर, विनय, सुरपति आदि आए हैं। अब संध्या। श्री म भक्त–संग बैठे हुए ध्यान करते हैं— दो तल की सीढ़ी के पास के कमरे में। आठ बजे तक ध्यान हुआ। अब आए बड़े जितेन, डाक्टर बक्शी, छोटे नलिनी और 'स्वदेशी'। स्वदेशी नूतन आने लगे हैं। मौखिक राजनीति में उच्चकण्ठ हैं। जभी भक्तगण उसे 'स्वदेशी' नाम से पुकारते हैं।

श्री म का शरीर अस्वस्थ हो तो समय का अधिक भाग ही गान और पाठ में व्यतीत होता है। आज भी श्री म ने जगबन्धु को स्वामी अभेदानन्द जी की क्लास का ईश्वरीय कथा सुनाने के लिए

कहा। जगबंधु गतकल की राजयोग क्लास के नोट पढ़कर सुनाते हैं।

स्वामी अभेदानन्द बोले:—राजयोग की प्रधान वस्तु है Concentration and meditation(एकाग्रता और ध्यान)। मन को बाहर की वस्तु से उठा लेना चाहिए। प्रथम तो बहुत चेष्टा करनी पड़ती है, यत्न करके। फिर सुफल फलता है। अट्ठारह सौ छियानवे में (1896) मैं लण्डन में था। स्वामी जी (स्वामी विवेकानन्द) मुझे वहां छोड़कर चले आए। तब मैं वेदान्त क्लास लिया करता था विक्टोरिया रोड के एक घर के तीन मंजले पर। एक दिन वक्तृता दे रहा हूं तब रास्ते पर एक पैरेड जा रही थी ब्रासबैंड बजाते हुए। खूब बड़ा रास्ता था और भीड़ भी वैसी ही। किन्तु मैं कोई भी शब्द नहीं सुन पाया। मीटिंग के अन्त में कृतज्ञता के चिन्ह स्वरूप उस देश के लोग शेकहैंड करते हैं। और धन्यवाद ज्ञापन करते है। रेवरेण्ड होयस (एपिस्कोपल चर्च के बड़े मिनिस्टर) ने मुझ से कहा, आपको बड़ी ही disturbance (बाधा) हुई। मैंने उनसे पूछा कि कैसी disturbance (बाधा) ? तब फिर उन्होंने सब बात बताई। उनकी बात सुनकर मैंने कहा, कहां, मैंने तो कहीं कुछ भी नहीं सुना। तब उन्होंने उत्तर दिया, Then yourself is an instance of Concentration itself. (तब तो आप स्वयं ही एकाग्रता का मूर्तिमान दृष्टान्त हैं।)

और एक बार इलाहाबाद में रहता था, गंगा के किनारे झोंपड़ी में। वहीं पर साधुगण तीर काट कर गुहा बनाकर उसमें रहते हैं और तपस्या करते हैं। मैं भी ऐसी गुहा में रहता था। वहां कोर्ट से तोप पड़ती। दिन में, तोप का शब्द सुन पाता। रात्रि को ध्यान में बैठने पर फिर नहीं सुन पाता था।

Concentration (एकाग्रता) की शक्ति से वैस्ट में मैसमेरिजम, हिपनोटिजम, स्पिरिट इनवोकेशन इत्यादि होता है। स्लेट को स्पिरिट मिडियम से कागज पर लिखे हुए पचास प्रश्नों के उत्तर देते देखा है।

इग्लैंड और अमेरिका में मन की study (अनुशीलन) खूब चलता है। एकाग्रता सब कार्यों में ही अत्यावश्यक है, यह बात वे समझ गए हैं। Discovery और invention(प्राकृतिक और यांत्रिक आविष्कार)

जो होते हैं, उनमें कितनी गभीर concentration (एकाग्रता) की आवश्यकता है। एक दम तन्मय होना पड़ता है। जिस वस्तु का आविष्कार करेगा उसी के संग में एकात्म हो जाय तभी होता है।

'सायन्स के सत्य ईश्वर की तुलना में तो निम्नस्तर के सत्य हैं चाहे, किन्तु ये भी हैं तो सत्य ही। इसे छोड़ा नहीं जाता। मैं तभी अब सब सायन्स का दृष्टान्त देकर समझाता हूं। पहले यह सब नहीं था। तब हमारे शास्त्र दृष्टान्त ग्रहण करते थे Nature (प्रकृति) से— जैसे घटाकाश, पटाकाश। हम ने नए रूप से समझाना आरम्भ किया है सायन्स के भीतर से। दोष है क्या इसमें ?

"ईश्वर को जानना हो तो सबसे अधिक concentration (एकाग्रता) की आवश्यकता है। जागतिक विषय जानने के लिए ही इतनी एकाग्रता का प्रयोजन है तब तो ईश्वर को जानना हो तो इसका और भी अधिक प्रयोजन है, यह बात कहना ही बाहुल्य है। बुद्ध concentration के बल पर 'कुछ नहीं' 'कुछ नहीं', करते करते negative side (नेति की दशा) देखते हुए nothing (शून्य) में जा पहुंचे हैं। बुद्धदेव का परमतत्त्व ही तभी निर्वाण है। शंकराचार्य positive side (इति की दिशा) देखकर चले हैं। बोले, 'ब्रह्म सत्य' और 'अहं ब्रह्मास्मि'—I am Brahman. बुद्धदेव और शंकराचार्य एक ही बात बोले हैं। ढंग भिन्न हैं। बुद्धदेव गए थे बाहर की दिशा से और शंकराचार्य भीतर की दिशा से। इनका विरोध नहीं है। बाहर की दृष्टि में विरोध लगता है। जभी इन दोनों जनों को परमहंस देव ने मिला दिया है। उन्होंने कहा है, प्याज का छिलका उतारते उतारते कुछ नहीं रहता—सर्वं शून्यम् (बुद्धदेव)। और फिर बोले, जहां पर कुछ भी नहीं रहता वहां पर ही हैं वे—परब्रह्म (शंकराचार्य)। वहां सब शून्य। जगत्, चन्द्र, सूर्य, जीव, तुम, मैं कुछ भी नहीं वहां। केवल अद्वितीय एक अखण्ड सत्ता मात्र रहती है।"

स्वामी अभेदानन्द (सभ्यों के प्रति)— तुम निज चेष्टा करो। तुम लोग भी बड़े बन सकोगे। खाली दुहाई मत देना— कह कह कर कि अमुक ने अमुक कहा है। चेष्टा करो, ऋषि हो सकोगे। विवेकानन्द

ने यह बात कही है, कपिल, बुद्ध भी यही बोले हैं, यह बात कहने से क्या लाभ होगा? अपने जीवन में वह करके दिखाओ।जो बोलते हो हाथ में लाकर दिखाओ। चेष्टा द्वारा तुम लोग ही,एक दिन कपिल हो सकोगे शंकर बुद्ध हो सकोगे, रामकृष्ण, विवेकानन्द हो सकोगे, तो भी उन को छोड़कर जा सकोगे नहीं। उनके पथ पर ही चलो। देखो और भी कुछ बढ़ा सकते हो कि नहीं? उनके संग विरोध करके नहीं, मिलकर चलो, चेष्टा करो।

"Concentration (एकाग्रता, ध्यान) की अन्तिम अवस्था है समाधि। ठाकुर सर्वदा ही समाधिस्थ रहते—तन्मय। इस अवस्था में किस के मन में क्या हो रहा है जान सकता है। हम पास में है। कोई भी बात नहीं, पूछा नहीं। किन्तु हमारे मन की सब बात जान लेते। और उसका उत्तर देते, बिना प्रश्न से ही। एक दिन पूछा, कैसे मन की बात जान ली। बोले, 'तुम्हारे नेत्र मानो कांच की खिड़कियां हैं। भीतर का सब देख लेता हूँ उन्हीं नेत्रों द्वारा।' ठाकुर थे highest development of human mind (मनुष्य मन का सर्वोच्च परिणाम)—वे अवतार हैं।"

"एक दिन नौका करके दक्षिणेश्वर जा रहे हैं, ठाकुर हैं और हम तीन-चार भक्त हैं। तब हमें खुब भूख लगी। बराह नगर घाट पर उतर कर बाजार से कुछ मुरमुरा और बतासे खरीदकर लाए गए। मैं ले आया हूं, देखते ही ठाकुर ने वे सब मांग कर खा लिए थोड़ा थोड़ा करके। देखकर हम तो अवाक् हो रहे हैं,यह क्या? ओ मां, इसी बीच हम अनुभव करते हैं कि हमारे पेटमें भूख ही नहीं है पेट-भरा हुआ है और डकारें आ रही हैं। तुम लोग क्या समझोगे इस लीला को।'तस्मिन् तुष्टे जगत् तुष्टं'। उनके तुष्ट होने पर सब सन्तुष्ट हो जाते हैं। वृक्ष की जड़ में जल देने से समस्त वृक्ष जल पाता है। उन्होंने खा लिया,सब का ही खाना हो गया। वे अन्तरात्मा।"

श्री म (शची के प्रति)—तुम भी ये लैक्चर नोट लिखो। इससे मन की खूब उन्नति होगी। (भक्तों के प्रति) ठाकुर का एक एक महावाक्य, मंत्रस्वरूप है। जप करने से सिद्ध हो जाय। संध्या के पश्चात्

प्रायः ही—'गुरु गंगा गीता गायत्री' इसी मन्त्र की आवृत्ति किया करते। इसका एक सौ बार जप करने से भीतर बाहर एक हो जाता है।

बड़े जितेन—हमारा भानजा नारायण, नवयुवक है। विवाह नहीं किया, रेलवे में काम करता है। उसने तीन चार दिन पूर्व एक अद्भुत स्वप्न देखा है सारे दिन भर।

श्री म—उसको मैं मिलूंगा। एक बार भेज देना तो। उसके जीवन का course (रास्ता) उसी एक ही स्वप्न ने बदल दिया है।

एक भक्त कभी कभी आते हैं, खाली स्वदेशी स्वदेशी बोलते रहते हैं। जभी भक्तों ने आमोद से उनका नाम स्वदेशी रख लिया है। वे श्री म के सम्मुख बैठे हैं पैरके ऊपर पैर चढ़ाकर। श्री म उनसे कहते हैं, "ऐसे नही बैठते। प्रताप मजूमदार को ठाकुर ने कहा था, यह कैसे बैठना? यह तो रजोगुणी का लक्षण है, योगासन में बैठना उचित सर्वदा। भक्तों के चालचलन सब ही भिन्न प्रकार के।

अब श्री म गाने गा रहें हैं —

गान : नाहि सूर्य नाहि ज्योतिः नाहि शशांक सुन्दर।
भासे व्योमे छायासम छवि विश्व चराचर॥ इत्यादि॥

गान : एक रूप अरूप नाम वरण अतीत आगामी कालहीन,
देशहीन सर्वहीन, 'नेति नेति' विराम जथाय।
जेथा होते बहे कारण धारा, धरिए वासना वेश उजला,
गरजि गरजि उठे तार वारि, अहमिति सर्वक्षण।
से अपार इच्छा सागर माझे, अजुत अनंग तरंग राजे;
कतइ रूप कतइ शकति, कत गति स्थिति के करे गणन॥
कोटि चन्द्र, कोटि तपन, लभिये सेइ सागरे जनम,
महाघोर रोले छाइलो गगन, करि दशदिक ज्योति मगन॥
ताते बसे कतो जड़ जीव प्राणी सुख दुख जरा जनम मरण
सेइ सूर्य तारि किरण, जेइ सूर्य सेइ किरण॥

गान : देखिले तोमार सेइ अतुल प्रेम आनने।
कि भय संसार शोक, घोर विपद शासने॥
अरुण उदये आंधार जेमन, जाय जगत छाड़िये॥

तेमनि देव तोमार ज्योतिः मंगलमय विराजिले ।
मकत हृदय वीतशोक तोमार मधुर सान्त्वने ।।
तोमार करुणा तोमार प्रेम हृदये प्रभु भाविले,
उथले हृदय नयन वारि राखे के निवारिये ।
जय करुणामय जय करुणामय तोमार नाम गाहिये,
जाय यदि जाक् प्राण तोमार कर्मसाधने ।।

श्री म कुछ काल मौनावलम्बन किए बैठे रहे। तब फिर 'कथामृत' पाठ करने के लिए बोले, श्री रामकृष्ण-शशधर संवाद। प्रथम भाग, एकादश खण्ड। पाठ के बाद फिर बातें होती हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—पण्डित के ऊपर कृपा हुई है। जभी स्वयं आग्रह करके गए मिलने। बोले, जिस पण्डित के विवेक वैराग्य नहीं, वह पण्डित ही नहीं। जिसने भगवान का आदेश नहीं पाया उसके लैक्चर से क्या होगा ? और जो व्यक्ति आदेश पा लेता है उसके ज्ञान का शेष नहीं होता। मां का एक बार कटाक्ष होने से फिर ज्ञान का अभाव नहीं रहता। वे राशि ठेल देती हैं ज्ञान का। वाग्वादिनी के पास से यदि एक किरण रेखा ही आ जाती है, तो फिर ऐसी शक्ति होती है कि बड़े बड़े पण्डित-गण केचुआवत् हो जाते हैं।

"कैसे कहा है, 'और थोड़ा सा बल बढ़ाओ ! और भी कुछ दिन साधन भजन करो।' यही तो है असली बात। यही बोलने के लिए ही तो है उनका आगमन। तपस्या करना दरकार। तपस्या बिना किए अध्यात्म पथ का कुछ भी समझ में नहीं आता।

अगले दिन 21 सितम्बर, चौथा आश्विन, शुक्रवार। श्री म के शयनगृह में भक्तगण बैठे हैं, तीनतले का पश्चिम का कमरा। बड़े जितेन, डाक्टर, विनय, छोटे नलिनी, मणि, अमृत, योगेन, शालिखा का भक्त, जगबन्धु आदि भक्तगण श्री म के सम्मुख बैठे हैं। अब संध्या हुई कि हुई।

मां के सेवक स्वामी अरूपानन्द ने गृह में प्रवेश किया। प्रणाम करके बैठ गए। सब फर्श पर चटाई पर बैठे हैं। अरूपानन्द जी के हाथ में एक कापी है। श्री म से बोले, 'मां की बातें संकलित हुई हैं, अब

निकलेंगी। इसलिए आप को एक बार सुनाने आया हूँ।' परमानन्द के साथ भक्तों के साथ श्री म सुनने लगे। सुनते सुनते बाह्य ज्ञान शून्य हो रहे हैं, मुख में कोई बात नहीं। छविवत् बैठे मानो सब मधुपान करते हैं। रात्रि दस बजे आज का पाठ शेष हुआ। श्री म जैसे स्वप्न से उठे हुए की न्याईं बोले, 'रासबिहारी, आज तुम ने क्या ही अमृत पान करवाया।''

(3)

मॉर्टन स्कूल। चार तल पर श्री म का कमरा। अब अपराह्ण तीन। श्री म अन्तेवासी से कहते हैं, आज राममोहन राय लाईब्रेरी में रांचि के ब्रह्मचर्य विद्यालय की सत्संग सभा होगी। एक बार देख आइये, साधुगण आएंगे।

आज 15 सितम्बर, 1923 ई०, 8वां आश्विन, 1330 (बं०) साल, मंगलवार। अन्तेवासी रांचि के ब्रह्मचर्य आश्रम का वार्षिक उत्सव देख कर आए हैं। दीर्घकेश पीतवस्त्र पहने हुए विद्यार्थीगण अध्यक्ष सत्यानन्द गिरि प्रमुख साधुओं के साथ आए हैं। सत्संग के आचार्य वृद्ध साधु युक्तेश्वर गिरि जी भी उपस्थित हैं। कलकत्ते के बहुत से विशिष्ट व्यक्तिगण उपस्थित हैं। प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली को नूतन सांचे में गठन करने का प्रयोजन है। भारत की अध्यात्म भित्ति के ऊपर नवीन शिक्षा भवन निर्माण करना होगा। पश्चिम वालों से जड़ विज्ञान आदि प्राप्त करना होगा। किन्तु स्मरण रखना होगा कि नींव अध्यात्मज्ञान की होगी, लौकिक ज्ञान क्यों दरकार? अभ्युदय के लिए। किन्तु निश्रेयस्(परम· शांति) चरम उद्देश्य, मोक्ष लाभ। धर्म अर्थ काम अभ्युदय के सहायो होते हैं। इसीलिए जागतिक ज्ञान आवश्यक है। यह ज्ञान स्कूल कॉलिज में प्राप्त करना होगा। आंख के सामने उद्देश्य आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान प्राप्ति रखकर। इन सब बातों पर आलोचना हुई।

अब संध्या साढ़े छह। श्री म चार तल की छत पर बैठे हैं, कुर्सी पर। पास में जोड़ा-बैंच पर एकजन साधु बैठे हैं। उनके साथ कथा-वार्ता हो रही है। अन्तेवासी सभा से आकर, पास बैठकर कथोपकथन सुन रहे हैं। चैतन्यदेव की बात उठी। उनके नाम में बहु सम्प्रदाय हुए हैं—ऐसी ही सब बातें।

साधु(श्री म के प्रति)—उनकी(वैष्णवों की)निष्ठाभक्ति है। किन्तु परमहंस देव ने कहा है सब पथों से ही उनको पाया जाता है।

श्री म —हाँ, जिस समय जो दरकार। ईश्वर की इच्छा से ही सब होता है। जब जो प्रयोजन, वे करते हैं। इस युग में जो प्रयोजनीय है वही किया है परमहंस देव ने। इसमें हमारा हाथ देना नहीं चलेगा।

"नाना सम्प्रदाय होंगे ही—sects are inevitable. मनुष्यों का मन भिन्न भिन्न। जभी भिन्न भिन्न पथ। इसीलिए ही तो विभिन्न सम्प्रदाय सृष्टि हुए हैं। मनुष्य ने कुछ नहीं बनाया। बाहर की ओर से देखने से मन में होता है अमुक ने अमुक सम्प्रदाय किया है। वस्तुतः वह बात नहीं है। सबके कर्त्ता ईश्वर हैं।

"दूसरे को देखकर नाक सिकोड़ने से नहीं चलेगा। अपने अपने पथ द्वारा सब एक ही गन्तव्यस्थल पर पहुंचते हैं। तुम अपना पथ चुन लो। उसे पकड़कर चलते रहो। दूसरा दूसरे पथ पर चले।

"अब सब मनुष्यों ने सब को जानना आरम्भ किया है। विज्ञान के प्रभाव से यातायात बढ़ गया है। सब देशों की खबर सब प्राप्त करते हैं। इस समय स्वतन्त्र रहना नही चलता। जभी ठाकुर सकल मनुष्यों के सम्मिलन का साधन कर गए हैं—मूल में, आत्मा में। सब ही तो अमृत की सन्तान हैं—'अमृतस्य पुत्राः' इसे ही नए रूप में करके दिखा कर जगत् के लोगों के सामने रख गए हैं। नरनारायण की पूजा इसी लिए तो वे कर गए हैं।

"और विभिन्न धर्ममतों का साधन करके सब पथों से एक ही ईश्वर में पहुंच कर बोले, 'मत पथ'। एक ओर सर्व-धर्म-समन्वय, संग संग मनुष्यों का भी समन्वय नारायण में— यही महाकार्य परमहंसदेव कर गये हैं जगत् के कल्याण के लिए।

"(सहास्य) सागर में दल नहीं होता। दल होता है गड्ढे तालाबों में, ठाकुर कहा करते। देखिए ना, वैष्णव समाज में कितने दल हो गए हैं अब। चैतन्यदेव के समय में दल बल नहीं थे—सागर था। परमहंस देव के पास भी दल नहीं थे। वे सकल दलों की सम्मिलन भूमि थे।"

साधु ने मिष्टीमुख करके विदा ली। उनका नाम द्वारका दास बाबा जी है। ये गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के हैं। पहले ये श्री म के स्कूल में शिक्षक थे।

साढ़े सात बजे श्री म दोतल पर उतर आए। आज भक्तसभा बैठी पश्चिम के बड़े कमरे में। भक्तगण बहुत से आए हैं—बड़े जितेन, शुकलाल, मनोरंजन, अमृत, डाक्टर, विनय, सुधीर, छोटे नलिनी, योगेन, जगबन्धु आदि। श्री म ने भक्तों के संग बैठकर सत्संग सभा का सब विवरण अन्तेवासी से सुना। अध्यात्म विद्या को सामने रखकर लौकिक विद्या लाभ करना होगा इत्यादि। वे ध्यानस्थ होकर ये सब बातें सुन रहे थे। सुनना समाप्त होने पर कुछ काल मौन रहे। भक्तगण सोचते हैं कि अब इन सब बातों की समालोचना होगी। किन्तु श्री म ने वैसा न करके भक्तगणों के मनों पर हाथ रखकर मानो उनकी निम्न बुद्धि को नीचे भूमि से उठाकर ऊपर महाकारण में ले गए हैं आद्या शक्ति में, जहां से जगत् आया है।

विभोर हुए श्री म गा रहे हैं—मां की महिमा।

गान : अन्तरे जागिछो मा अन्तरयामिनी।
कोले करियाछ मोरे दिवस रजनी॥
अधम सुतेर प्रति केनो एतो स्नेह प्रीति,
प्रेमे आहा, एकेबारे जेनो पागलिनी।
कखनो आदर करि, कखनो सबले धरि
पियाओ अमृत सुनाओ मधुर काहिनी।
निरवधि अविचारे कत भालोवासो मोरे
उद्धारिछो बारे बारे पतितोद्धारिणी।
बुझेछि एबार सार मा आमार आमि मार,
चलिबो सुपथे सदा शुनि तव वाणी।
करि मातृस्तन्य पान, होबो बीर बलवान,
आनन्दे गाहिबो जय ब्रह्मसनातनी॥

[अर्थः—हे अन्तर्यामिनी मां, आप मेरे भीतर जाग रही हो और मुझे रात दिन अपने अंक में लिए हो। आपको इस अधम पुत्र के लिए क्यों

इतना स्नेह और प्रीति है ? आप तो प्रेम में मानो पागलिनी ही हो गई हो। मैं तो कभी आप को प्यार करता हूँ और कभी जोर से पकड़ लेता हूँ। तुम मुझे अमृत पिलाती रहती हो और मधुर कहानियां सुनाती रहती हो। सतत बिना विचारे ही आप मुझे कितना प्यार करती हो। हे पतितोद्धारिणी आप मेरा बार बार उद्धार कर रही हो। मैंने अब सार समझ लिया है—मां मेरी है और मैं मां का हूँ। तुम्हारी वाणी सुनकर सर्वदा सुपथ पर चलूंगा, मैं मां का स्तनपान करके वीर बलवान हो जाऊंगा और तब आनन्द में 'जय ब्रह्मसनातनी' सर्वदा गाता रहूँगा।]

गान : मा, त्वं हि तारा। तुमि त्रिगुणधरा परात्परा।
आमि जानि गो ओ दीन दयामयी, तुमि दुर्गमेते दुःखहरा॥
तुमि जले तुमि स्थले, तुमि आद्यमूले गो मा,
आछो सर्वघटे अर्घ्यपुरे साकार आकार निराकारा॥
तुमि संध्या तुमि गायत्री तुमि जगद्धात्री गो मां
तुमि अकुलेर त्राणकर्त्री सदाशिवेर मनोहरा॥*

गान समाप्त हुआ। श्री म अब बातें करेंगे नहीं। तभी ऐसे समय पाठ हुआ करता है। जगबन्धु को वेदान्त सोसायटी की रविवार की क्लास के नोट पढ़कर सुनाने के लिए बोले। वे ही पढ़े जा रहे हैं। विषय : कर्मयोग।

स्वामी अभेदानन्द जी कहते हैं—मनुष्य कितने ऋण लेकर जन्मता है—देवऋण, ऋषिऋण, पितृऋण, ये सब। हिन्दू लोग ये सब ऋण अपशोध करने की चेष्टा करते हैं। इनका नित्य आचरण करना चाहिए। ये शास्त्र विहित कर्म। कितने ही कर्म हैं। स्वाभाविक-आहार बिहार, शयन, इत्यादि। क्या विहित, क्या स्वाभाविक सकल कर्मो का फल अवश्यम्भावी। और फल से बन्धन। उससे ही जन्म-मरण, उससे ही दुःख-कष्ट, शोक-ताप। जीव इसके हाथ से मुक्त होना चाहता है। वह अंधे की भांति चेष्टा करता है, किन्तु ठीक पथ जानता नहीं। वेदान्त ने चार पथों का अविष्कार किया है—ज्ञान-पथ, योग-पथ, भक्ति-पथ और कर्म-पथ।

* अर्थ के लिए श्री म दर्शन, प्रथम भाग, पृष्ठ 268 द्रष्टव्य।

कर्म-योग वा कर्म-पथ की ही आलोचना आज होगी। जो कोई भी कर्म करके फल ईश्वर में समर्पण करने का नाम ही कर्म-योग। कर्म द्वारा ईश्वर के संग में योग होना,जो सब किया जाए वह सब उनके लिए किया जाता है इस भावना से और फिर बन्धन नहीं होता, कर्म-योग होता है। जीवन धारण के लिए नित्य जो किया जाता है—खाना, पकाना, घर धोना, बासन मांजना—ये सब सामान्य काज भी उनके लिए किया जाता है, इस प्रकार भावना कर सकने पर ही कर्मयोग होता है।

और किसी भी जीव से घृणा करोगे नहीं। घृणा का भाव आने पर मन में सोचोगे इस के भीतर नारायण हैं। भंगी, डोम—इन से घृणा करके तुम बड़ा होना चाहते हो। यह कभी भी होगा नहीं। जो जगत् में बड़े हुए हैं उन्होंने इन सब को अंक में उठा लिया है। बुद्धदेव को देखो उनके धर्म में सब का ही स्थान है, भंगी, डोम को आश्रय दिया है। चैतन्य देव ने आचण्डाल को अंक दिया है। और ठाकुर ने भंगी के घर की नाली अपने सिर के बालों द्वारा मार्जना करके झाड़ू दिया है। बुद्ध, चैतन्य, रामकृष्ण, ये जिन्हें तुम नीच बोलते हो,उन्हें अपना बना गए हैं। तुमने इन्हें पराया कर दिया है। अब इन्हें उठाओ। लिखना पढ़ना सिखाओ, प्यार करो। मन में करो तुम्हारे इष्ट ये सब रूप धारण करके रह रहे हैं। नारायण बुद्धि से करने से वे शीघ्र उठ जाएंगे। संग में तुम भी उठोगे, देश उठेगा, जगत् उठेगा।

तुम स्वयं जो लेना चाहते नहीं हो, अन्य को भी वह मत देना। तुम क्या निज घृणा, लज्जा, दुःख-कष्ट, अपमान लेना चाहते हो? कभी भी नहीं। तो फिर अपर को भी ये सब देना मत। मानुष को यदि प्यार न कर सको तो फिर क्या होगा तुम्हारे बी०ए०, एम०ए द्वारा? यह विद्या यथार्थ मानुष कर सकती नहीं। Morality (नीति) का जोर न रहे तो किसी से भी कुछ होता नहीं। ईश्वर में विश्वास करके—सब काज उनका है, यही सोचकर सब करने की चेष्टा करो। देखोगे शक्ति बढ़ जाएगी। नैतिक बल बिना रहे धर्मपथ पर अग्रसर हुआ जाता नहीं। परमहंसदेव एक प्रकार से निरक्षर थे, किन्तु आज जगत् पूज्य।

वैदिक क्रियाओं का समय अब और है नहीं–अश्वमेधादि का। अभी वर्तमान समय के युगावतार परमहंस ने उन सब को छोड़ दिया है। वे बोल गए हैं, अब सार पकड़ो। कलि का जीव अन्नगत प्राण, आयु कम। अभी ये सब कर्मकाण्ड करके उठ सकता नहीं। 'जीव-शिव', वेदान्त का यह सार वे प्रचार कर गए हैं सहज वाणी में। उनकी वाणी पालन करो। मनुष्य हो जाओगे, क्रमशः देवता होगे।

उन्होंने हम लोगों को सिखला दिया था, मन मुख एक करके प्रार्थना करना। मन मुख जब एक हो जाएगा, इस साधन में जब सिद्ध हो जाओगे, तब जो चाहोगे वही पाओगे। शुद्ध मन से आन्तरिक प्रार्थना की जाय तो वही universal mind (विश्वमन, भगवान के मन) पर आघात करती है। तब वहां से response (उत्तर) आता है सुफल रूप में।

कर्मयोग का secret (कौशल) हुआ वही गीता जो कहती है :—

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत् कुरुष्व मदर्पणम्॥*

जब खाओगे तब सोचोगे, क्षुधारूप में ईश्वर उदर में रहते हैं। मैं उनमें आहुति देता हूं। रोज कर्मफल भगवान में देने की चेष्टा करो। और मन में रखो सत्यवस्तु एक। जब निर्गुण है, तब ब्रह्म कहा गया है। जब सगुण, तब ईश्वर नारायण यह सब कहा गया है। वस्तु एक।

देखो, अमेरिका में मैं आनन्द में था। वहां पर भी उनका काज करता था। यहां पर भी उनका काज करता हूं। यहां पर ठहरूंगा, यह कहकर मैं आया नहीं था, किन्तु हो गया रहना। ये सब काज उनके ही। Sore-throat (गले में घाव) हुआ था आने से डेढ़ वर्ष पूर्व। सानफ्रानसिसको (San Francisco) में विशेषज्ञ डाक्टर ने कहा था warm climate (गरम स्थान) में चले जाओ। मैंने सोचा तो फिर India (भारत) में जाऊं। रोग भी हटेगा और महात्मा गांधी की movement (आन्दोलन) भी देखकर आ सकूंगा। ठहरूंगा, इसलिए नहीं आया, अब सब ने पकड़कर मुझे इसी काज में लगा दिया। विचार

*गीता 9:27

करता हूँ यह उनकी ही इच्छा है। ठाकुर जैसे गर्दन से पकड़ कर काज कराते हैं। मैं भी भावना करता हूँ। मन प्राण सब ही जब उनको दिये हैं तब उनकी ही इच्छा पूर्ण हो। मेरे मन में जो वेदान्त सोसाइटी प्रतिष्ठा का संकल्प उठा है वह उन्होंने ही उठाया है। किए जा रहा हूँ उनका काज। फलाफल वे ही जानें। तुम भी सब उनमें समर्पण करो... मन, प्राण, शरीर सब, स्त्री पुत्र परिजन सब। शान्ति पाओगे, आनन्द पाओगे निःसंशय।

रात्रि नौ। श्री म आहार करने ऊपर चढ़ रहे हैं।

(4)

श्री म (भक्तगणों के प्रति)—वे कितने प्रकार से लीला करते हैं। यही हम जैसे यहां पर बैठे उनको पुकार रहे हैं, ऐसे ही अनन्त स्थानों पर अनन्त लोग उनको पुकारते हैं।

द्वितल के पश्चिम के घर में बैठक जमी है। श्री म भक्तसंग चटाई पर बैठे हैं। छोटे जितेन, मणि, मनोरंजन, योगेन प्रभृति पास बैठे हैं। अब रात्रि आठ। देखते-देखते बड़े जितेन और अमृत आ गए, उसके परे डाक्टर बक्शी, विनय और छोटे नलिनी।

जगबन्धु वेदान्त सोसाइटी होकर आए हैं। उनको देखते ही श्री म उपरोक्त बात बोले।

श्री म (डाक्टर के प्रति)आप लोग गए थे क्या मीटिंग में गतकल ? क्या बात हुई ?

डाक्टर—काशीमबाजार के महाराजा मणीन्द्र नन्दी के सभापतित्व में सभा हुई थी। रांची के ब्रह्मचर्य विद्यालय का वात्सरिक अधिवेशन। शिक्षा सम्बन्ध में नाना रूप आलोचना हुई। शिक्षा धर्ममूलक होनी चाहिए। आत्मज्ञान की भक्ति के ऊपर लौकिक शिक्षा देनी होगी। उससे चरित्र सुगठित होगा। वर्तमान शिक्षा की भित्ति सुदृढ मूलहीन है। जभी मानुष तैयार होता नहीं —इत्यादि।

श्री म(भक्तों के प्रति)—तब तो फिर दिखाई दे रहा है टीचरों को पहले ट्रेनिंग दरकार। और गार्डियनों को पहले contents of men (मनुष्य क्या है) यह जानना दरकार। तदुपरान्त philosophy or

plan of education शिक्षा प्रणाली निर्धारण। मनुष्य के भीतर तीन शरीर होते हैं, gross, intellectual and spiritual —स्थूल,सूक्ष्म और कारण। इन तीन शरीरों को ही जिससे क्रमशः वा एक समय में आहार पहुंचे उसकी व्यवस्था दरकार। स्कूल कॉलेज में तो बीच के शरीर के आहार की व्यवस्था होती है, सूक्ष्म शरीर के। कारण शरीर के संग योग रखकर शिक्षा की व्यवस्था करनी होगी। उससे चरित्र सुगठित होगा। शांति आनन्द आएगा। Highest ideal (सर्वश्रेष्ठ आदर्श) के संग में योग रखकर सब करना होगा। नहीं तो नैतिक चरित्र दृढ होगा नहीं। भारत की शिक्षा की इस व्यवस्था के कारण ही भारत की संस्कृति इतनी सुदृढ़ और उच्च है। गुरुगृह में इन तीन शरीरों के विकास की व्यवस्था थी। मनुष्य का आदर्श, जाति का आदर्श पहले स्थिर करके प्लान करने से काज होता है उत्तम। नहीं तो जैसे कलसी से जल डालता है, किन्तु सब मिट्टी में गिरता जाता है। ग्लास होता है अनेक दूरी पर। सब श्रम नष्ट होता है।

"हमारे विद्यापीठ में उन्होंने सुन्दर किया है अनादि महाराज आदि ने। उत्तम सब टीचर तैयार होते हैं। छात्रों के उन तीन शरीरों के ही आहार की व्यवस्था होती है। और teachers भी trained (शिक्षक भी तैयार) होते हैं। अवश्य सूक्ष्म शरीर के ऊपर ही जोर देना उचित शिक्षा के समय, कुछ अधिक करके। स्थूल शरीर का संगठन होता है और कारण शरीर में विश्वास भी रहता है संग संग। विद्यापीठ के सभी शिक्षकों ने अपना-अपना काज समझ तो लिया है। उनके संग रहना एक privilege (विशेष सुविधाजनक व्यापार)। हम कुछ दिन थे मिहिजाम* में, जब प्रथम आरंभ हुआ। पहले सोचा था हेमेन्द्र महाराज (स्वामी सद्भावानन्द) ही शायद लीडर हैं; वैसा तो नहीं। अब देखता हूं कोई भी कर्त्ता नहीं। जो जिसका काम है निज ही समझ कर करते हैं। अच्छा होता है। प्रातः से रात नौ-दस तक अनवरत परिश्रम। सब काम हंसीमुख से किए जाते हैं। दायित्वज्ञान भीतर प्रवेश कर गया है, और मनुष्य को क्या क्या दरकार उसकी

*मिहिजाम खण्ड=श्री म दर्शन प्रथम भाग द्रष्टव्य।

शिक्षा भी पाई है वहां के शिक्षकों ने ।"

श्री म कुछ समय चुप रहे । तब फिर बातें करने लगे । श्री म (बड़े जितेन के प्रति) — एक जन ने जिज्ञासा की थी ठाकुर से,...... 'उपाय क्या ?' उन्होंने तत्क्षण उत्तर दिया, गुरुवाक्य में विश्वास। अर्थात् Superman (ब्रह्मज्ञ) की सहायता लेना । गुरुवाक्य पर विश्वास करके कर ले, उससे ही हो जाएगा ।

"गिरीशबाबू का कितना विश्वास ! ठाकुर बोलते, 'पांच सिक्के पांच आना विश्वास गिरीश का ।' (गिरीश का एक रुपया पांच आना विश्वास ।) वे क्या बाहर देखते ? वे देखते मनुष्य का भीतर । बोलते, कांच की अलमारी के भीतर चीज हो तो जैसे सब दिख जाती है, वैसे ही मैं सब का भीतर देख लेता हूं । केवल क्या इस जन्म का; पूर्वजन्म का, परजन्म का सब देख लेते, कहते । गिरीश बाबू का बाहिर ऐसा होने से क्या हुआ ? भीतर में साधु थे पहले से ही ।

"गिरीश बाबू के घर एक दिन ठाकुर गये थे । बाजार से जलपान लाकर थाल में रखकर दरी के ऊपर रख दिया । उसी दरी पर सब बैठे थे । बलराम बाबू वहां उपस्थित उस समय । उनके मन में लगा यह अनाचार देखकर। जभी ठाकुर उसकी ओर ताक कर मुस्कराते हुए, बोले, 'यहां पर इसी प्रकार । तुम्हारे वहां जब जाऊंगा तब अन्य प्रकार सदाचार ।' बलराम बाबू निष्ठावान वैष्णव ।

"जभी उनके अनन्त भाव, अनन्त काण्ड । इतना सब झंझट मिटाने के लिए बीच बीच में आते हैं मनुष्य होकर, आकर दो चार बातें सार रूप में कह जाते हैं । अब कुछ दिन वही बातें लेकर चलते रहो। फिर आकर फिर और बोल जाएंगे । ऐसे ही चलता है ।

"मिहिजाम में देखा था, हल सब जमीन पर पड़े हैं। छिड़काव के जल से कितनी जमीन पर खेती करेंगे तभी । ज्योंहि वृष्टि हुई झट सब हल लेकर व्यस्त , सब निकल आए घर से । वैसे ही अवतार— उनके आने से जल ही जलमय ।"

अवतार आने से 'जल ही जल' यह महावाक्य भक्तगण चिन्ता करते हैं । श्री म भी नीरव कुछ काल । ठाकुर अवतार अभी मात्र आए

हैं, अब तभी तो खूब सुयोग, और हम खूब सौभाग्यवान, भक्त कोई कोई भरोसे का यह निश्चिन्त भाव उपभोग करते हैं क्षणकाल। पुनः कथा आरंभ हुई।

श्री म (एकजन भक्त के प्रति)—वेदान्त सोसाइटी में क्या हुआ, बोलिए तो।

भक्त—आज का विषय था राजयोग। स्वामी अभेदानन्द जी बोले, Concentration (एकाग्रता) attention(मनोयोग)की ही एक forward stage(अग्रसर अवस्था)है। समस्त मन समेट कर एक दिनमें एक ही वस्तु में निविष्ट करना। इसका ही नाम है Concentration (एकाग्रता)। प्रथम होती नहीं, नित्य अभ्यास करने से होती है। चेष्टा और अभ्यास द्वारा क्रमे क्रमे ठीक हो जाती है। ठाकुरों की इतनी सब छवियाँ हैं। इनमें से जो तुम्हें अच्छी लगे उसको ही मन में बसाने की चेष्टा करो। मन बाहर हजार चीजों में बिखरा हुआ है। अल्प अल्प करके अपनी आदर्श छवि की ओर लाने की चेष्टा करो। साधारण भाषा में इसे ही ध्यान का अभ्यास कहते है। जप, ध्यान सब उसी उद्देश्य में करना चाहिए। रोज रोज अल्प अल्प करके, करते करते हो जाएगा। अन्त में सुख पाओगे।

इसमें साधुसंग का बड़ा प्रयोजन। साधुसंग से यह काम अति सहज में हो जाता है। साधु लोग सर्वदा वही अभ्यास करते हैं कि ना। तीन बार अन्ततः ध्यान करना चाहिए नियमित समय पर—प्रातः, मध्याह्न, संध्या। शेष रात्रि में ध्यान शीघ्र होता है। मन तब स्थिर रहता है। अभी सर्वदा साधुसंग करो।

शंकराचार्य इतने ज्ञानी। साधुसंग के सम्बन्ध में वे कहते हैं— क्षणमिह सज्जनसंगतिरेका भवति भवार्णवतरणे नौका। साधुसंग भवार्णव उत्तीर्ण करवा सकता है अर्थात् अज्ञान नाश कर सकता है,एक क्षण के लिए भी यदि साधुसंग हो जाए। साधुगण अग्निस्वरूप हैं। उनका संग करने से भीतर की वासना सब सूख जाती है। परमहंसदेव के पास यातायात करके हमारा सब उलट गया। तुम्हारी तरह हमारा मन भी था। तुम भी सत्संग करो। तुम्हारा मन भी शुद्ध हो जाएगा। तुम भी

साधु हो सकोगे। तब तुम्हारे पास लोग आने से उनका मन भी फिर जाएगा। वह मन लेकर और संसार भोग करना चलेगा नहीं। संन्यासी करना हमारा उद्देश्य नहीं। गृह में रहकर भी होता है। अनासक्त होकर गृह में रहने का अभ्यास करो। हो जाएगा। केवल गेरूआ तो साइन बोर्ड।

Concentration (एकाग्रता) बिना ईश्वर लाभ होता नहीं—कुछ भी लाभ होता नहीं। सब विषयों में इसका प्रयोजन उन्नति करना चाहो तो। पौलैण्ड में एक लड़का पांच वर्ष की आयु में अपने बाप को chess (शतरंज) खेल की चाल बोल देता था। चौदह वर्ष की आयु में World's chess competition (विश्व शतरंज प्रतियोगिता) में Champion (विश्वविजयी) हुआ था, पृथिवी जय की थी।

तुम लोग अभ्यास करो। ज्ञान लाभ कर सकोगे। जनक गृह में थे, राज्य करते थे, किन्तु ज्ञानी थे। तुम लोग भी ज्ञानी होओ।

मॉर्टन स्कूल, कलकत्ता।
26 सितम्बर, 1923 ई०।
9वां आश्विन, 1330 (बं०) साल, बुधवार।

तृतीय अध्याय

जो विपद् में पड़ा नहीं वह शिशु

(1)

मॉर्टन स्कूल। श्री म दो तल के पश्चिम के हॉलघर में बैठे हैं। पास छोटे जितेन, विनय, मणि, नलिनी और योगेन उपविष्ट। एक भक्त तीन बजे के समय बेलुड़ मठ में गए श्री म की इच्छा से। वहां से कलकत्ता युनिवर्सिटी इन्स्टीटयूट में गए। स्वामी अभेदानन्द ने वहां वक्तृता दी। श्री म ने मठ की सब बात सुनी। अब रात्रि नौ।

आज 30 सितम्बर, 1923 ई०, 13 वां आश्विन, 1330 (बं०) साल, रविवार।

अब श्री म की बातें हो रही हैं।

श्री म (योगेन के प्रति)—अन्नदा ठाकुर को एक बार ले जाएं मठ में, भ्रमण के लिए कहकर।

योगेन—वे जाएंगे नहीं।

श्री म—जोर करके नहीं। आप केवल बोलें, ठाकुर की नित्य पूजा होती है वहां पर, चलिए टहल आएं। हम भी चलते हैं। अभिमान में आघात न दें उनको वहां जाकर मस्तक नत कीजिए, वे ऐसा न कहें। बोलें, जैसे टहलते हैं ना लोग इधर उधर, उसी भाव में। कहें, चलिए ठाकुर का एक बार दर्शन करके आएं।

(उपहास से, उत्साह देकर) आप तो हैं कृति लोग से। इतना सब काज करते हैं, यह सामान्य सा एक काज करिए ना। इसमें कल्याण होगा यीशु बोले थे: Blessed are the peace-makers : for they shall be called the children of God. (St. Matthew 5:9)

जो शांति स्थापन करते हैं, जो विपद मिटा देते हैं, वे सामान्य जन नहीं। वे धन्य। वे ईश्वर के विशेष कृपा पात्र।

"आजकल ठाकुर के "मिशन" से अलग होकर उसी नाम में काज कोई कर सकेगा नहीं—success (सफलता) होगी नहीं। अमुक इतना बड़ा लोग, अन्त में मठ के मत से अपना मत मिला लिया। तभी काज हो रहा है।"

अनन्दा ठाकुर हैं दक्षिणेश्वर के श्री रामकृष्ण-संघ के प्रतिष्ठाता। कुछ दिन पूर्व वे श्री म के निकट आए थे। तब श्री म ने ठाकुर की कथामृत कुछ उनके लिए परिवेशन की थी। और खूब आदर यत्न प्रकाश किया था। स्त्री लोग लेकर साधन खूब विपदजनक—ठाकुर की इन्हीं सब महावाणियों की आलोचना हुई थी उस दिन।

डाक्टर बक्शी और एटोर्नी वीरेन ने प्रवेश किया। वीरेन के संग श्री पुरी की बातें हो रही हैं। वीरेन पुरी जाएंगे।

श्री म — हमारी इच्छा होती है पुरी जाएं। कितने दिनों से ही पुरी पुरी कर रहा है यह मन। अब स्वयं जगन्नाथ ले जाएं तो हो।

अब ठाकुर के नाम में नाना प्रतिष्ठानों की बात उठी। भक्तगण कोई कोई खूब उत्साह से योगदान कर रहे हैं उसी बात में। सब ही क्या ठाकुर का शुद्ध भाव रख सकेंगे? ऐसी सब बातें। कलिकाता के उपकण्ठ के एक प्रतिष्ठान की बात विशेष करके हो रही है। श्री म अब तक चुप बैठे हुए थे। अब बातें करते हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—ये लोग इन सब छोकरों के जोर करके कपड़े रंग देते हैं। और लड़के चंदे का खाता हाथ में लेकर होई होई करते फिरते हैं। यह सब ठीक नहीं। गेरूए का आदर्श कितना बड़ा! संन्यास का बाह्य चिन्ह गेरुआ। मन की सब वासनाएं जाने से संन्यास। इतना बड़ा उच्च आदर्श, इसी लिए चैतन्य देव ने गधे की पीठ पर गेरूआ देखकर साष्टांग प्रणाम किया था। आदर्श को इतना नीचे उतारना नहीं सुविधा के लिए। चंदा उठाना हो तो ऐसे ही उठावें ना, गेरूआ क्यों?

श्री म कुछ काल चुप किए बैठे हैं। अब एक जन भक्त को गतकल

की वेदान्त सोसाइटी के कथोपकथन क्ल की रिपोर्ट सुनाने के लिए कहा। भक्त पढ़कर सुना रहे हैं । प्रश्नकर्ता सम्यग् एग। उत्तर देते हैं स्वामी अमोदानन्द जी।

प्रश्न—महाराज, दीक्षा का प्रयोजन क्या ?

उत्तर—यह एक प्रकार का संस्कार है, बेपटिज़म की भांति। ईश्वर के राज्य में जाना हो तो इस का प्रयोजन है।

प्रश्न—अच्छा, कुलगुरू के पास से दीक्षा न लेने में क्या दोष होता है ?

उत्तर—तुम्हारा यदि उस पर विश्वास न हो तो फिर क्या करोगे ? जहाँ विश्वास होगा वहां से ही ली जाती है। तो भी उनका वात्सरिक दे देना उचित।

प्रश्न—एक बार एक जन के पास से मंत्र लेकर और फिर अपर स्थान से लिया जाता है क्या ?

उत्तर—वह लिया जाता है। प्रकृति भिन्न भिन्न। तुम्हारे पिता माता हरिभक्त हैं तुम्हारा मन सम्भवतः शक्ति की ओर आकृष्ट है। बचपन में हरिमन्त्र लिया था, किंवा बड़े होने पर ही लिया। हरिमन्त्र से तुम्हारा काज होगा नहीं। इस अवस्था में मंत्र परिवर्तन का पयोजन है। अवधूत के चौबीस गुरु थे। परमहंस देव जी ने भी एक साधन के समय एक एक गुरू किया था।

परमहंस देव कहते 'मन तोर' (मनतोर, मंत्र)। मंत्र माने तुम्हारे मन में जिस से शांति आती है वही वस्तु। जिस की चिन्ता करना तुम्हें प्रिय लगे वही लेना।

प्रश्न—Mind (मन) और Conscience (विवेक) का अन्तर क्या ?

उत्तर—Mind (मन) हुआ संकल्प विकल्पात्मक। बुद्धि हुई निश्चयात्मक-सदसत् विचारात्मक। मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, इन चारों को कहते हैं अन्तःकरण —inner organ. Conscience (विवेक) विवेकात्मक बुद्धि—भलो बुरी विचार शक्ति। It is formed by education, environments, customs and manners of different

countries. (भिन्न भिन्न देशों की भिन्न भिन्न प्रकार शिक्षा, पारिपार्श्विक अवस्था, आचार व्यवहार के द्वारा इसकी सृष्टि।) जभी Conscience (विवेकात्मक बुद्धि) भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न होती है।

प्रश्न—भारत की दुर्दशा का कारण क्या है? नाना जन नाना प्रकार से कहते हैं।

उत्तर—भारत की इस वर्तमान दैन्य दुःख दुर्दशा का कारण तुम निज हो।

भारत की पराधीनता, बंगाल की पराधीनता का कारण तुम निज हो। तुम परस्पर को घृणा करते हो। तुम परश्रीकातर हो गए हो। तुम हिन्दू होकर हिन्दू को जितनी घृणा करते हो मुसलमान को भी उतनी घृणा नहीं करते। कणखल में देखता था कूएं से मुसलमान जल ले लेता है उसमें आपत्ति नहीं। किन्तु ज्योंहि हिन्दू मोची ने छू लिया त्योंहि कूप अपवित्र हो गया। यही तो देश की अवस्था। यही हमारा मनोभाव है। ऐसा मनोभाव लेकर न तो बड़े हो सकोगे, न मुक्त हो सकोगे।

सब को ही प्यार करना सीखो। इधर सब ही तो मुख से बोलते हो। सब ही नारायण—'सर्वं नारायणं जगत्।' तो फिर घृणा करते हो कैसे? परमहंसदेव ने हमें सिखा दिया था, सब नारायण। सब को ही तभी श्रद्धा करो। वे युगावतार। उनकी वाणी लेकर हमें चलना होगा।

जाति विभाग तो रहेगा। वह रहे। वह तो जाने वाला नहीं। बुद्धदेव इतना करके भी उसको हटा सके नहीं। किन्तु Untouchability (अस्पृश्यता) हटानी होगी। इसने मनुष्य को पशु से भी अधम करके रखा हुआ है। मेहतर, डोम ये पहले भली जाति थीं बौद्ध युग में। पीछे हिन्दुओं ने प्रतिशोध से (एक घेर) अछूत कर रखा है। छोटा करके रखा हुआ है। इनको सिखाओ वेद वेदान्त सब। देखोगे वे लोग महापण्डित हो जाएंगे इससे।

परमहंसदेव ने अपने फिर के केशों से मेहतर के घर की नाली का

परिष्कार किया था। और बोले थे, 'मां मेरा ब्राह्मण अभिमान दूर कर दो। इसके रहते तुम्हें पाऊंगा नहीं।'

तुम सब को प्यार करो, सेवा करो। देखोगे देश हुड़हुड़ करके ऊपर उठ जाएगा। वे भी उठेंगे, तुम लोग भी उठोगे। उनको नीचे रखकर तुम ऊपर उठ नहीं सकोगे।

श्री म—आज की वक्तृता में क्या क्या बात हुई ?

भक्त—आज की वक्तृता थी अंग्रेजी में। संक्षेप में सार यह —

"Return good for evil. Think all as parts of a stuprendous whole—Virat. Gods sees through us- -sees speaks, eats etc. through us all. There can be no feeling of hatred in us if we judge in this way. 'Make an ideal and then go on working it out. Remember, you are a part of that ideal. Think all alike as so many Narayans."

सब ही भगवान का रूप, नारायण का रूप हम सब। इस प्रकार चिन्तन कर सकें तो ईर्ष्या द्वेष दूर हो जाते हैं। विराट पुरुष का अंश हम सब। वे हमारे भीतर से देखते हैं, खाते हैं, सुनते हैं, सब करते हैं।

श्री म—नारायण बुद्धि से देखेगा कैसे यदि प्रथम नारायण को न पहचाने। ठाकुर जभी बोलते, तपस्या करके पहले नारायण को पहचानो। तत्पश्चात् संसार करो या जो भी करो। नहीं तो जैसे पुस्तक में होती है वैसी ही बात—काज नहीं होता।

एकजन भक्त—काली महाराज (स्वामी अभेदानन्द) क्लास में सर्वदा ये सब बातें कहते रहते हैं। साधुसंग, प्रार्थना, ध्यान, निर्जनवास ये सब बातें। बोलते हैं, आदर्श एक ही पकड़ो, और इन सब उपायों से उसको ही जाग्रत करो और सोचो कि सबके भीतर वही आदर्श ही रहता है। आज की पब्लिक वक्तृता में इस प्रकार बोले नहीं। शायद साधन के ऊपर जोर देने से लोग पलायन करेंगे सुनकर, तभी हो सकता है बोले नहीं। एक सत् विचार मात्र सुना दिया। इसलिए क्या सत्य बात कहूंगा नही, ठाकुर ी वाणी जो। लोग रहें या जाएं।

उनकी वाणी कहनी ही होगी। (सहास्य) हमारा दरबान ठीक कहता है, 'सच बोलूंगा, इसमें सिर जाय जाने दो।'

ठाकुर यही बोलते, सत्य को पकड़े रहने से ईश्वर लाभ होता। है सत्य कथन कलि की तपस्या।

(2)

आज एकादशी 20 अक्टूबर, 1923 ई०; 3 रा कार्तिक, 1330 (बं०) साल। गतकल विजया दशमी गई है। मार्टिन स्कूल के भक्तगण पूजा के ये कई दिन मठवास करके आए हैं। डाक्टर कार्त्तिक बक्शी और जगबन्धु मठ से काशीपुर डाक्टर की बाड़ी होकर अभी ठनठनिया कालीबाड़ी के निकट ट्राम से उतरे हैं। अब रात्रि आठ। वे मां काली को प्रणाम करने गए।

विस्मयान्वित हुए उन्होने देखा श्री म मां के सम्मुख बैठे हैं, पूर्वास्य। शुकलाल मन्दिर के निम्न सोपान पर उपविष्ट। मनोरंजन, योगेन, सुखेन्दु और छोटे जितेन— कोई बैठा है, कोई दण्डायमान है।

विस्मयानन्द से पूर्ण हुए एक भक्त मां को अतिशय भक्ति भरे प्रणाम करते हैं। मस्तक उठाते ही श्री म सस्नेह बोले, "चरणामृत ले चरणामृत।" भक्त का हृदय कृतज्ञता से पूर्ण हो गया। वे सोचते हैं, कैसा सौभाग्य आज मेरा। ब्रह्मशक्ति की मनुष्यमूर्ति श्री श्री ठाकुर थे। उनके हाथ को गढ़ी अन्तरंग सन्तान श्री म ने मां का चरणामृत लेने का निर्देश किया। मां का चरणामृत क्या संसार-ज्वाला की महौषध?

भक्तगण श्री म संग मां का ध्यानचिन्तन करते हैं। कुछ काल बाद एकजन युवक भक्त से श्री म ने जिज्ञासा की, "कितने वर्ष से आप लोग इस महायज्ञ में योगदान कर रहें हैं? पांच-छः बरस तो हो गए? दुर्गा पूजा मठ में जो हुई है, यह एक महायज्ञ ही है। धन्य हैं वे लोग जो इसमें योगदान करते हैं।"

श्री म उठकर चले गए ठाकुरबाड़ी आहार करने। अन्य भक्तों ने भी निज निजगृह गमन किया। केवल डाक्टर, विनय, सुरेन्द्र और जगबन्धु स्कूलबाड़ी में आ गए। वे दो तल के सीढ़ी के पास के कक्ष में चटाई पर आकर बैठ गए। मठ में कई एक दिन तक सुनिद्रा हुई नहीं,

परिश्रम भी यथेष्ट हुआ है, जभी वे लोग निद्रित हुए लेट गए।

एक भक्त बेंच पर लम्बा होकर लेटा हुआ सोच रहा है, 'ठाकुर के संन्यासी शिष्यों के नाम का कोई विशेष अर्थ है क्या? किंवा वैसे ही नाम दिया हुआ है। स्वामी जी के दिये नामों का विशेष अर्थ होना ही संभव।' इसी बीच श्री म आ उपस्थित। "क्या निद्राविष्ट शायद सब?" श्री म ने एक जन से जिज्ञासा की। "जी हां, इनका विश्राम बिल्कुल भी हुआ नहीं। मैंने तो फिर भी दिन में थोड़ा विश्राम कर लिया था। ये खूब क्लान्त हैं," भक्त ने उत्तर दिया। "हाँ. ये कई दिन कितने परिश्रम के गए हैं, सब tired (क्लान्त) हैं," वे बोले।

बाहर चन्द्र की कैसी स्निग्ध सुषमा! जगत् सुशान्त किरणजाल से ढका हुआ है। भक्त को लक्ष्य करके मानो निज को ही निज कहते हैं।

श्री म—आगामी पूर्णिमा का दिन भी खूब दिन। केशव सेन के जीवित रहते हुए ठाकुर इसी दिन उनकी बाड़ी में गए थे। स्टीमर में भी एक बार केशव बाबू के संग भ्रमण किया था। केशव बाबू का शरीर जाने पर केशव बाबू की मां ठाकुर को इसी दिन निमंत्रण करके ले गई थी कलुटोला की नवीन सेन की बाड़ी में। यह उनका बड़ा पुत्र है।

"उसी दिन रात्रि को मैं खाली वासस्थान छोड़कर चला आया था! ऐसा आकर्षण था उनके लिए। मन में आया ही नहीं कि वासस्थान पर विपद् हो सकती है। नीचे बैठे बैठे सब गाने सुने थे। ऊपर ठाकुर का भुवनमोहन नृत्य हो रहा था। और गाना। हम ऊपर गए नहीं। चौतरे पर बैठकर सुना था। अन्य किसी को पता नहीं लगा। ठाकुर को किन्तु पता लग गया था। अगले दिन जभी बोले थे हठात्, अन्य कोई भी बात नहीं—'गोपने भालो।' मैं सुनकर आश्चर्यान्वित हो गया। कैसे जान लिया। वे अन्तर्यामी पुरुष! उनके तो अगोचर कुछ नहीं। आज भी वही चांद, वही रात मन में आ रही है—वही नृत्य, वही गान जिसे देखने से, या सुनने से त्रिताप ज्वाला का नाश होता है, जगत् भूल जाता है। अवतार लीला का साक्षी वहीं चांद आज भी देखता हूँ। जैसे

कल ही हुआ हो, यह सब मन में हो रहा है, इतने बरस चले गए हैं तब भी। कैसा आश्चर्य, अब भी देखता हूँ वही अपरूप नृत्य उसी देव-मानव का!"

(3)

शरत् काल। मॉर्टन स्कूल। तीन तल के कोने के कक्ष में श्री म। गृह अर्गलबन्द। एक युवक आकर पांच सात मिनट बाहर प्रतीक्षा करते हैं। इतिमध्य श्री म बाहर आ गए। अब संध्या सवा सात। आगामी कल श्री लक्ष्मी पूर्णिमा।

यह युवक आज देश जाएंगे। श्री म उनसे पूछ रहे हैं, "घर जा रहे हैं, शायद आज? ट्रेन कितने बजे?" युवक ने उत्तर दिया, "जी साढ़े आठ बजे। शियालदह से छूटेगी।" श्री म ने पुनः जिज्ञासा की, "आहार हो गया क्या?" "शियालदह जाकर गाड़ी में चढ़ूंगा," युवक बोले।

श्री म दोतल पर उतर रहे हैं। हाथ में एक शीशी उत्तम मधु, शिमला पहाड़ से आई थी। बोले, यह मधु मठ में महापुरुष को देना। उतरते उतरते जगबन्धु के हाथ में देवी भागवत दिया।

दोतल की सीढ़ी का दाएं का कमरा। इस घर में ही सर्वदा भक्तसभा होती है। आज भी भक्तगण यहां ही बैठे हैं। श्री म शीघ्र शौचादि समाप्त करके फिर आकर फर्श पर चटाई पर बैठ गए पूर्वास्य। श्री म के दाएं हाथ बड़े जितेन। उनके ही पास उत्तर पश्चिम की ओर मुख करके बैठे हैं और एक युवक। श्री म के सम्मुख, शुकलाल, छोटे जितेन, विनय, योगेन और छोटे रमेश। श्री म बातें करते हैं।

श्री म — विनयबाबू, यह मधु महापुरुष महाराज को देना होगा। मठ में ले जाना। और भाव महाराज (स्वामी रामेश्वरानन्द) के संग में उसी विषय पर और कुछ बात हुई?

विनय—जी, नहीं। उन्होंने तो कितनी बार कह रखा है 'जब इच्छा हो जाए।' वे कहते हैं, जामताड़ा में आश्रम ही हुआ है इसीलिए, ठाकुर की सन्तानों के लिए। उन्होंने और भी कहा है, आपके जाने से आश्रम शीघ्र जाग्रत हो उठेगा।

श्री म की पुनः जामताड़ा और मिहिजाम जाने की इच्छा है।

विनय—मिस मेक्लाउड ने आप के लिए यह एक पत्र दिया है।

एकजन भक्त पत्र पढ़कर सुनाते हैं। मिस मेक्लाउड ने लिखा है—कथामृत के सब के सब भागों का अंग्रेजी अनुवाद होने से जगत के लोगों का प्रभूत कल्याण होगा। नाना रूप दुःख दैन्य से जगत् के लोग इस समय अतिशय प्रपीड़ित। श्री रामकृष्ण की शांतिमय कथामृत हृदय में प्रवेश करने से निश्चय शांतिलाभ करेंगे।

श्री म—उसका भी कुछ कहना! 'तव कथामृतं' तप्तजीवनम्' श्री कृष्ण विरह कातर गोपीजन समझे थे इसे। जभी बोले यह बात। संसार की त्रिताप ज्वाला में तप्त जीवगणों के निकट यह जीवन अर्थात् जलस्वरूप। प्राण शीतल होता है इसे सुनकर, जैसे तृष्णार्त्त का शरीर शीतल होता है जल पीने से। उसका भी कहना! हमारी खूब इच्छा है। किन्तु हो पाता नहीं जो। एक पार्ट मात्र मैंने अनुवाद किया था। मां ने शक्ति दी थी। बाकी सब भी होंगे उनके शक्ति देने से।

श्री म(जगबन्धु के प्रति) आप के संग मिस मेक्लाउड की क्या बात हुई काशीपुर बागान खरीदने के संबंध में?

जगबन्धु—मैंने कहा था, आपने उनके पास मुझे भेजा है काशीपुर बागान के संबंध में अलाप करने के लिए। बाग के मालिकों के पास मुझे भेद दिया, वे साठ हजार समग्र बाग का दाम चाहते हैं। वे चेष्टा करें तो यह सहज ही मठ के हाथ में आ जाए, आपको इसी अनुरोध की बात कहूँ। स्वामी जी (विवेकानन्द) की यहां पर ही निर्विकल्प समाधि हुई। और ठाकुर ने प्रकाश्य भाव में स्वामी जी के निकट परिचय दिया—'जे राम जे कृष्ण इदानीम् रामकृष्ण'। ये सब बातें सुनकर बोलीं:, But I am not interested in the garden. If you are all interested, you can try. (किन्तु मेरा इसमें आग्रह नहीं है। तुम लोग चेष्टा कर सकते हो, तुम्हारा यदि आग्रह हो।)

श्री म—आहा, कैसा त्याग उनका! गोपीभाव। श्री वृन्दावन में गोपियों का जो भाव था श्री कृष्ण के लिए, ठीक वही भाव इनका स्वामी

जी के लिए। सब ऐश्वर्य और आत्मीय स्वजन छोड़कर बैठी हैं उसी गंगातट पर, मठ में स्वामी जी के समाधि मन्दिर के पास। आहा पूर्ण प्रेम का लक्षण।

जगबन्धु—मिस मेक्लाउड ने आपसे अनुरोध किया है कथामृत के अनुवाद के लिए। बोलीं, "I request Mr. M, to translate 'Kathamrita' himself. Be he speaks and writes brilliant English. After Swamiji I do not hear anybody speaking such good English. As literature, even his translation of the Gospel Part-I is an excellent study." (श्री म से मेरा अनुरोध है कि वे स्वयं कथामृत के बाकी अंश का अंग्रेजी अनुवाद करें। वे अति उच्च स्तर की अंग्रेजी बोलते और लिखते हैं। स्वामी जी के पश्चात् ऐसी अंग्रेजी और किसी से सुनी नहीं। उनके प्रथम भाग का अनुबाद पढ़ने से लगता है वह अति उच्च श्रेणी का एक अंग्रेजी साहित्य है।)

श्री म—वह तो हुआ। किन्तु उसे यदि कोई कर दें तब तो खूब भला हो। खरीद करके मठ के हाथ में छोड़ देना। प्रायः एक वर्ष घर किया था वहां पर। कितनी स्मृति! और फिर महासमाधि हुई वहां पर। अन्तरंग-छटाई हुई वहां पर, कौन अपना कौन पराया।

श्री म (भक्तों के प्रति)—बराहनगर का प्रथम मठ का स्थान और काशीपुर बागान खूब दर्शन करना चाहिए। तभी वहां का सब भाव भक्तों के भीतर जाग्रत होगा। वे सब स्थान भी जाग्रत हो उठेंगे। बराहनगर के मठ में कितना सब ईश्वर चिन्तन हुआ है, कितना जप ध्यान। ध्यान ही तब अधिक होता। कौपीन संबंल करके पड़े हैं सब। कैसा वैराग्य! जगत् की होश नहीं। आहार में शयने में लक्ष्य नहीं। सर्वदा संगीन चढ़ी है। ठाकुर सद्य गये हैं। सब को विरह व्यथा। गंगातीर पर बैठकर ही कितनी रातें काट देते। मध्याह्न में थोड़ा सा केवल भात और 'तेलाकुचो

पाता'* उबला हुआ। यही तो आहार। रात को रोटी और टुकड़ा गुड़। वह भी फिर पेट भर कर नहीं। जलयोगवत्। आप ही कर लेते ब्राह्मण न रहने पर। कितना कष्ट गया है? किन्तु भ्रूक्षेप नहीं उस ओर। सब प्रेमोन्माद। भगवान को कैसे संग में रख कर आनन्द लाभ हो, चक्षुओं के सामने यही चेष्टा सब की। ठाकुर के रहते उनके सामने भक्तों का हृदय प्रेमानन्द से पूर्ण रहता। उनके चले जाने पर सब ही चेष्टा करते हैं किसी प्रकार लौट आए वही प्रेमानन्द दैनन्दिन जीवन में— आहार में, विहार में, शयन में, स्वपन में। सर्वकार्यों में श्री भगवान की जीवन्त आनन्दमय उपस्थिति भक्तगण चाहते हैं।

विनय— महापुरुष महराज ने बताया था, तब एक पैसे की दियासलाई खरीदने की शक्ति थी नहीं। तेल खरीदना तो दूर की बात अन्धकार में बैठकर सब भजन करते। काशी अद्वैताश्रम के आरंभ में भी वैसा ही था, बताया था। एक एक दिन ऐसा गया है अति कष्ट से। एक पैसे के बतासे से ठाकुर को भोग देना हुआ है। पैसा नहीं तेल और दियासलाई खरीदने के लिए, जभी अन्धकार में ही आहार होता।

श्री म— जभी तो स्वामी जी कहते जो विपद में पड़े नहीं, वे babies माने, दुग्ध-पोष्य शिशु। वयस होने से क्या होता है, मन तो वैसा ही है। कितना कष्ट गया है स्वामी जी पर। असुख विसुख भी कम नहीं हुआ। कभी कभी भयंकर असुख होता। बराहनगर में एक बार असुख हुआ। डाक्टर बुलाना होगा। किन्तु विजिट का पैसा नहीं। बढ़िया डाक्टर को दिखाया नहीं गया। कितनी चेष्टा करके भक्तगण औषध के दाम संग्रह करते। उस समय के भक्त लोग भी सब 'नड़े भोला' (गरीब), पैसा नहीं। ठीक हो गए, किन्तु फिर और मलेरिया। जाता ही नहीं किसी से भी। अन्त में फिर और क्या करे? इसे लेकर ही निकल पड़े। इसी समय ही वैद्यनाथ, भागलपुर गाजीपुर, मेरठ प्रभृति भ्रमण किया। तत्पश्चात् संकल्प किया हिमालय में तपस्या करेंगे। अलमोड़ा चले गए। एक वृक्ष के नीचे आसन किया था, तभी

* तेलाकुचो पाता= एक प्रकार की वन्य लता

टेलिग्राम आ गया, 'तुम्हारी बहिन ने आत्महत्या की है।' कैसा सुख–समाचार! आसन उठाकर पहाड़ी रास्ते से श्रीनगर होकर टिहरी आ गए। इच्छा थी उत्तरकाशी जाएंगे। स्थिर हुआ टिहरी में ही कुटीर बनाकर वहां पर ही तपस्या करेंगे। बंगाली कौन एक जन दिवान या अन्य उच्चपदस्थ कर्मचारी थे। वे सब व्यवस्था करेंगे। किन्तु संगी गुरुभाइयों में किसी को असुख हो गया—गंगाधर को शायद, उसको लेकर आ गए देहरादून। इसके उपरान्त ऋषिकेश में स्वयं को गुरुतर पीड़ा, ज्वर, प्राण जाय— नाड़ी नहीं। नंगे शवदेह की न्याईं पड़े हैं। कहां से एक साधु दैवात् आ उपस्थित हुआ, हाथ में पिप्पलचूर्ण और मधु। जिह्वा पर उसी को घिसते घिसते चेतना लौट आई। गुरुभाई संग में थे, हरि महाराज, शरत् और सांन्याल। कोई कोई रोए थे शरीर त्याग हो गया है यह सोचकर। कैसा आश्चर्य, पीछे वह साधु दिखाई ही नहीं दिया! स्वप्न की भांति आकर स्वप्न की भांति ही विलीन हो गया। राखाल तब हरिद्वार में थे। वे भी पीछे उनके संग मेरठ गए। बूढे बाबा भी आकर मिल गए मेरठ में। स्वामी जी को असुख होने से फिर तब और कौन तपस्या करे? टिहरी में इसके पूर्व गंगाधर को भी असुख हुआ था। स्वामी जी उसको लेकर विव्रत हुए। उसको लेकर देहरादून गए। घर घर फिरने पर भी उसके रखने का स्थान नहीं हुआ। कौन एक वकील, कश्मीरी पंडित औषध और पथ्य के दाम देने को राजी हुए। किन्तु स्थान नहीं मिला। भाड़े के घर में गंगाधर को रखा गया। अन्य सब एक सेठ के घर में एक ठाकुर दालान में रहे। स्वामी जी के एक क्रिश्चियन बन्धु वहां पर शिक्षक थे। उनके साथ मिलन होने पर वे ले गए गंगाधर को अपनी बाड़ी में। किन्तु मुसलमान बावर्ची देखकर पलायन। गंगाधर को मेरठ भेजा गया। अन्य सब ऋषिकेश रहकर, थोड़ा ठीक होने पर स्वामी जी को लेकर सहारनपुर होकर—मेरठ गए। दिल्ली की ओर तत्पश्चात् आए। फिर शायद अकेले भ्रमण शुरू किया। सब को ही हटा दिया। कितने कष्ट, कितनी विपदाओं के पश्चात् तब वही शतदल कमल प्रस्फुटित हुआ।

सारे भारत में भ्रमण किया अकेले अकेले। निर्जनवास की इच्छा

अति प्रबल होने के कारण तीन वर्ष इसी प्रकार भ्रमण किया । कभी कभी गुरुभाईयों के संग मिलन होता, गुजरात में हुआ था। ये लोग छोड़ना नहीं चाहते। तब खूब कठोर होकर ताड़ना दी। तत्पश्चात् अमरीका वहां भी क्या कम कष्ट! परिश्रम करते करते कितना असुख। वापिस आगए, किन्तु किडनी (गुरदा) में रोग हो गया, उससे ही देह गई।

श्री म (युवक के प्रति)—उसके पूर्व भी कितनी विपद। विपद का अन्त नहीं। बाप थे बड़े एटोर्नी। अनेक आय थी, किन्तु वे थे खूब खर्चीले। यत्र आय तत्र व्यय। उधार करके भी दान करते। हठात् मर गए। परिवार परिजन अन्नहीन। नरेन्द्र बड़ा लड़का। चाकरी के लिए कितनी चेष्टा करते हैं—यहां जाना, वहां जाना। एक दिन विद्यासागर महाशय को मैंने कहा। उन्होंने बऊ बाजार स्कूल का हैडमास्टर कर दिया। एक मास गए उस काम पर। इसी बीच वह कर्म चला गया। विद्यासागर महाशय के जमाई उसी स्कूल के सेक्रेटरी थे। वे उन्हें दबाकर रखना चाहते। नरेन्द्र तो बिल्कुल ही वैसे पात्र नहीं, म्यान से निकली तलवार। जमाई ने एक षड्यन्त्र रचा। छात्रों द्वारा उनके विरुद्ध एक अभियोग करवा दिया। फर्स्ट और सैकेन्ड क्लास (दसवीं, नौवीं) के छात्रों ने लिखा, वे अच्छा पढ़ा नहीं सकते। विद्यासागर महाशय ने हम से कहा, "तो फिर नरेन्द्र को बोलो और न आए। दरकार होगी नही।" यह बात सुनकर हमारा तो सिर घूम गया कि बहुत कष्ट से इसी एक कर्म की तो व्यवस्था हुई थी, यह क्या विपद फिर उपस्थित हुई। नरेन्द्र से कहा। यह बात सुनकर नरेन्द्र बोले, "क्यों वैसा बोले छात्र ? मैं तो बाड़ी में खूब तैयार होकर जाकर पढ़ाता हूँ।" और कुछ नहीं बोले। न आत्मपक्ष समर्थन किया, न दूसरे पर दोषोरोप किया। कोई कैफियत नहीं दी। वह भी फिर अति Coolly (शांतभाव) से बोले यह बात। Noble Soul महापुरुष। देखो, जो जगत् को शिक्षा देंगे वे छात्रों को पढ़ा नहीं सकते। कैसा अपवाद। कैसा आश्चर्य! ईश्वर की इच्छा को मनुष्य कैसे समझेगा ? उनको लाए बड़े काज के के लिए। विपद में डालकर अग्निपरीक्षा के भीतर से लेकर निर्मल करके तभी काज में लगाया। जगत् को शिक्षा दी। तब जगत् के लोग सुनकर

स्तम्भित हो गए। जगत् की बहिर्मुखी चिन्ताधारा का किसी ने जैसे मचोड़ कर मोड़ फिरा दिया भीतर को। पाश्चात्यों से कहा, सावधान, तुम ध्वंस के मुख में बैठे हो। सावधान होग्रो, नहीं तो सब जाएगा। विज्ञान ग्रौर राजनीति ने समग्र जगत् को कुक्षीगत कर रखा है, किन्तु अपनी Soul (आत्मा) को खो रहे हो। 'Ye are divinities'— अमृतस्य पुत्राः, तुम लोग यह भूल गए हो। जाग्रत होग्रो, ईश्वर के संग सम्पर्क पुनः स्थापन करो। उनकी सन्तान मनुष्य — इस महासत्य के ऊपर सभ्यता स्थापन करो। तब ही कल्याण।

श्री म कुछ काल चुप रहे। पुरनाय बातें करते हैं।

श्री म (युवक के प्रति)— ग्रौर एक बार चाकरी के लिए सिमला से बऊबाजार के मोड़ पर्यन्त गए एक जन के पीछे पीछे। तब फिर बोले, नहीं मुझे ग्रौर जाना होगा नहीं। Noble Soul (महापुरुष) उमीदवारी के लिए जाने को राजी नहीं।

स्वामी जी बराहनगर मठ में रहते। ग्रौर फिर बीच बीच में घर घर भी आते। तब घर के ये लोग उनको खिलाने के लिए व्यस्त होते। वे कहते, मैं खाकर ग्राया हूं इधर किन्तु उपवास। कहीं घर के लोग अपना सामान्य खाद्य भी उन्हें खिला दें, तभी यह बात कहते। कितनी ही रातें कलकत्ता के राजपथों के घरों के चबूतरों पर बैठकर काट दीं उस समय। इतना सब दुःख कष्ट निज जीवन में देखा है। तभी तो सेवाश्रम किए हैं। दारिद्रय दुःख कितना बड़ा दुःख है वह उन्होंने अपने जीवन में पूर्णभाव से अनुभव किया है। तभी चिरकाल दरिद्रों के ऊपर दयावान थे। अमरीका से आने पर तभी कहा, जो जन दुःख कष्ट में पड़े नहीं वे तो babies—शिशु।

श्री म (भक्तों के प्रति)— इसी महापुरुष के जीवन की आलोचना करने से ही तो हृदय में बल आएगा। स्वामी जी का जीवन चरित्र सब को पढ़ना उचित, तभी मनुष्य होगा। विशेष करके युवकों को पढ़ना उचित। तभी तो हृदय में दृढता आएगी, भगवान में विश्वास आएगा। यह संसार दुःख सागर। उस में सब जीव डूबे हुए हैं। कहते हैं अच्छे हैं। होश नहीं। जिसे होश हुआ है, जो समझ सका है यह दुःख, वह ही माथा

ऊंचा करके रह सकता है यहां पर। ऐसा करके (छाती ऊंची करके दिखाकर)। वह ही मानुष।

श्री म (युवक के प्रति) — महापुरुषों के लक्षण, "दुःखे-ष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः" (गीता 2:56)। उनका मन सुखदुःख के पार रहता है—चिर सुख में। किन्तु सुखदुःखमय संसार में रहकर काज करते हैं। उन्हें देखकर अपरजन साहस पाते हैं वे "असंग शस्त्रेण" अश्वत्थ रूप संसारबन्धन छिन्न कर देते हैं। यह अवस्था केवल अवतार आदि की होती है।

महापुरुषगण, "जितसंगदोषाः"। संग का दोष इन्हें स्पर्श कर सकता नहीं। जिस संग में रहा जाता है उसका दोषगुण आता है। किन्तु अवतार आदि कहीं पर क्यों न रहें, संगदोष में दुष्ट होते नहीं। देखिए ना श्री कृष्ण ने वृन्दावन में ढेरों प्रेम वर्षण किया। मथुरा में चले गए जब, तब जैसे कुछ भी हुआ नहीं, नूतन मानुष। मन निर्लेप तब फिर द्वारका में यदुवंशियों को राजा किया। और फिर "धर्मसंस्थापना' के लिए हस्तिनापुर यातायत करते है। युद्धविग्रह कुरुक्षेत्र में कितना कुछ किया। किन्तु मन में दाग नहीं। एकदम नूतन मनुष्य। यह ही, 'जितसंगदोष।"

जहां जाते हैं सब सोचते हैं हमारा जन है। किन्तु वस्तुतः किसी का नहीं। क्यों ? वे जो "अध्यात्मनित्याः"। स्वस्वरूप में सर्वदा अवस्थित। वे जानते है मनुष्य दृष्टि में वे किसी के नहीं, आत्मदृष्टि में सब की अन्तरात्मा।

मन में रोख चाहिए। विपद् तो है ही। पूर्व से उसके लिए prepared (प्रस्तुत) रहना चाहिए। इतना सब किया यदुवंशियों को लेकर और फिर देखो प्रभासलीला। निज-चक्षु सम्मुख समग्र यदुवंश ध्वंस हो गया। वे ऐसे किए (दोनों बगलों में दोनों हाथ रखकर) दण्डाय-मान--साक्षी-स्वरुप। संसार विषादमय है। यह जानकर संसार में जाओ।

"नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः"—दुर्बल का स्थान नहीं इस संसार

युद्धक्षेत्र में। वीरगण केवल बचे रह सकते हैं यहां पर—आत्मरति वीर-गण। कभी मन को अवसन्न होने नहीं देते। अवसन्न हो पड़े तब रोख करके बोलना चाहिए, मैं आत्मा का अंश हूं, सन्तान हूं। सर्वदा यही सजग दृष्टि रहेगी—मैं जगदीश्वर की संतान, सच्चिदानन्द का अंश, मैं शुद्ध बुद्ध मुक्त, शांति और प्रेमरूप। रणक्षेत्र में जैसे वीर heart within and God overhead (ईश्वर में सुदृढ विश्वासवान्)।

साधारण लोगों को संगदोष रंग देता है। संगी का गुलाम हो जाता है—

"ध्यायतो विषयान् पुंसः संगस्तेषूपजायते।
संगात् संजायते कामः कामात् क्रोधोऽभिजायते॥
क्रोधाद् भवति सम्मोहः सम्मोहात् स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति॥*

विषयियों के संग रहते रहते विषय प्राप्ति की इच्छा होती है। न मिले तो होता है क्रोध। क्रोध से हिताहित ज्ञान तिरोहित होता है। तब आता है सम्मोह। इस समय गुरु–शास्त्र-वाक्य सब भूल जाता है। उस से ही आती है. दुर्बुद्धि और उससे ही पतन। पतन मानें क्या? यही ना, "मैं कर्त्ता" यह बुद्धि। और उत्थान मानें क्या? यही तो, मैं सर्वशक्ति-मान की संतान। मैं अकर्त्ता, ईश्वर कर्त्ता, यह ज्ञान जिसका होता है वही बुद्धिमान ठीक-ठीक। बाकी सब बुद्धिहीन।

श्री म (युवक के प्रति) उठिए, आप उठिए। गाड़ी का समय हो आया।

श्री म का प्राणस्पर्शी कथामृत पान करके युवक का सब भूल हो गया। पन्द्रह मिनट अतीत हो गये तथापि उठते नहीं। पुनः श्री म बोले उठिए और फिर आहार करना होगा। (सब के प्रति)—ये आज देश जाएंगे— थोड़ा भ्रमण करके आ रहे हैं।

प्रमत्तवत् युवक उठे। श्री म के पादस्पर्श करके साष्टांग प्रणाम किया। युवक के मन को जैसे किसी ने हरण कर लिया है। यंत्रचालित-

* गीता 2 : 62-63

वत् चलने लगे, संग गये विनय और छोटे जितेन।

ट्रेन चल रही है। ट्रेन में बैठे युवक सोच रहे हैं आज की सब बातें ही मुझे लक्ष्य करके कहीं। स्वामी जी को आदर्श रूप में धारण किया मेरे सामने। संगदोष जिससे स्पर्श न करें। मैं उनका पुत्र सच्चिदानन्द का अंश, यह बात न भूल जाऊं। सुख दुःख संसार में रहने पर होगा ही, तभी उसके लिए पूर्व से ही तैयार रहना चाहिए। उनके नाम में माथा ऊंचा करके चलना। स्मरण रखना—'नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः।' और कर्मक्षेत्र में 'जितसंगदोषाः' 'अध्यात्मनित्याः' यही आदर्श दिया। गाड़ी चल रही है—युवक का मन भी चल रहा हैं—चलते चलते एक स्थान पर जाकर स्थिर हो गया। मैं ईश्वर का पुत्र, इस महासत्य को ही मूर्तिमान जीवन्त करना होगा।

23 अक्तूबर, 1923 ई०
6 टी कार्तिक, 1330 (बं०) साल।
मंगलवार, शुक्ला चतुर्दशी।

—०-०-०—

चतुर्थ अध्याय

दक्षिणेश्वर में दोलयात्रा के दिन श्री म

(1)

कालीघाट, आदिगंगा का तट। गदाधर आश्रम। ब्राह्म मुहूर्त। पूर्वाकाश ईषदालोकित। श्री म गदाधर आश्रम की छत पर बैठ हैं। यहां पर मासाधिक काल से तंत्रमत से देवीपीठ स्थापित हुआ है। पूजा और हवन चलता है। सिन्दूर रंजित एक बड़ा त्रिशूल घर के पार्श्व में स्थापित। इस घर में ही पूजा होती है। प्रधान पुरोहित स्वामी कमलेश्वरानन्द। ये हैं इसी आश्रम के महन्त। कई एक जन साधु ब्रह्मचारी भी बैठे पूजा दर्शन कर रहे हैं। अदूर कालीघाट के मन्दिर की दिक् से शंखघण्टा ध्वनि आ रही है—मंगल आरती हो रही है।

आज 1 दिसम्बर, 1923 ई०, 16 वीं अग्रहायण, 1330 (ब०) साल; रविवार।

श्री म कुछ काल से गदाधर आश्रम में रहते हैं। बीच-बीच में मॉर्टन स्कूल में भी जाते है। ठाकुर के भक्तगण जो सर्वदा उनके पास यातायात करते हैं उनमें से कोई कोई यहां पर आकर कभी कभी रात्रिवास करते हैं। आज जगबन्धु, विनय, छोटे जितेन प्रभृति आए हैं।

श्री रामकृष्ण मठ की शाखा गदाधर आश्रम आदिगंगा के तीर पर अवस्थित है। तभी इसी भोरवेला में गंगास्नान, यात्रियों का यातायात आरंभ हुआ। कोई कोई 'राम राम', कोई 'राधेकृष्ण', कोई 'माँ गंगे', कोई 'जय मां काली', उच्चारण करते हैं। कोई अथवा गीता चण्डी प्रभृति शास्त्रों से आवृत्ति करते हुए चलते हैं। कोई मधुर

स्वर में गान करते हैं। इतना शीत किन्तु, ग्राह्य नहीं—धर्म की उन्मादता कितनी प्रबल !

होमकुण्ड के सम्मुख श्री म उपविष्ट । स्वामी कमलेश्वरानन्द पवित्र मंत्र उच्चारण करके आहुति देते हैं। इस पवित्र समय में आहुति मंत्र का शेषांश —'स्वाहा' बारबार समस्वर से उच्चारित होता है— कैसा मधुर पवित्र प्रभाव विस्तार करता है साधु ब्रह्मचारियों के हृदय में ! स्थान भी मधुमय, समय भी मधुमय— मधुमय साधकगणों का हृदय ! अब स्तव पाठ करके पूजा शेष करते हैं :—

न तातो न माता न बन्धुर्न नप्ता न पुत्रो नो पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिः ममैव गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥
न जानामि दानं न च ध्यानयोगं न जानामि तंत्रं न च स्तोत्रमंत्रम् ।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगं गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।
न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित् ।
न जानामि भक्तिं व्रतं वाऽपि मातः गतिस्त्व गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ।

प्रातः सात । गदाधर आश्रम की भजनमण्डली अब दक्षिणेश्वर जा रही है। वहां मां भवतारिणी को श्यामा नाम सुनाएगी। रामनाम कीर्तनवत् श्यामा नाम कीर्तन की भक्तों ने रचना की है। रामनाम की भांति श्रुति मधुर और भक्तिपूर्ण। भक्तों को आज अवसर है।

दक्षिणेश्वर मन्दिर अब श्री रामकृष्ण-सेवक किरणचन्द्र दत्त महाशय के सेवाधीन है। उन्होंने अति साग्रह मण्डली को निमत्रण दिया है मां को श्यामा नाम सुनाने के लिए। साधु और भक्त मिलकर

पचपन जन हो गये। श्री म ने विनय, जगबन्धु, जितेन प्रभृति भक्तों को भी इनके संग में भेज दिया। बोले, "सुविधा हुई तो आहार करके एक बार चेष्टा करूंगा जाने की।"

स्वामी गिरिजानन्द दलपति। वे सब को लेकर ट्राम में चढ़कर

बड़ा बाजार घाट पर उपस्थित हुए। वहां पर जहाज पर आरोहण कर के शिवलता पहुंचे। वहां से पदब्रजे प्राय: एक मील दूरवर्ती दक्षिणेश्वर मन्दिर में सब उपस्थित हुए।

वेलुड़ मठ से बहु साधु और ब्रह्मचारी आए हैं स्वामी धीरानन्द के साथ।

नटमन्दिर में मां के सम्मुख कीर्तन आरम्भ हुआ है। सब गा रहे हैं। परिचालक सनत्।

दस बजे आरंभ होकर 12 बजे शेष हुआ श्यामानाम कीर्तन। कैसा जमजमाट भाव! इतने दिन जैसे कालीबाड़ी तमोमेघावृत्त थी। आज के कीर्तन और साधुभक्त समागम से जैसे मेघों के अन्तराल से माँ की आनन्दरश्मि विस्तृत हो गई। और उसने भक्तहृदय में प्रवेश करके हृदयबिहारी का स्पर्श किया। कैसा आनन्द! दक्षिणेश्वर मन्दिर आज आनन्दमुखर।

साधु और भक्तगण का आनन्द आज सर्वत्र। गंगास्नान करते करते कोई तैर रहे हैं, कोई फिर देह पर जल छिड़क रहे हैं। कोई अथवा दूसरे को खींच कर ले जाकर जल में फेंक रहे हैं।

एक बजे के पश्चात् प्रसाद पाने के लिए सब बैठे हैं। आयोजन करने की बात थी चालीस जनों की, किन्तु प्रसाद पाया बियासी जनों ने। श्री मां की कृपा और स्वामी धीरानन्द की सुव्यवस्था और तत्त्वावधान में सब ने परम परितृप्ति सहित पेट भरकर प्रसाद पाया।

बहुकाल पश्चात् आज दक्षिणेश्वर में श्रीरामकृष्ण भक्तों का यह आनन्दोत्सव। श्री ठाकुर के समय कभी-कभी ऐसा आनन्दोत्सव होता था। तत्पश्चात् अनेक काल वह फिर हुआ नहीं। अब भक्त के हाथ में सेवा का भार आने से फिर दुबारा आरम्भ हुआ है।

आज ग्राम के बहुलोग आए हैं। और रविवार के दर्शक भक्त भी बहुत। दक्षिणेश्वर आज आनन्दमय।

आहारान्ते साधुभक्त-गण विस्तृत कालीबाड़ी के नानास्थानों पर

बिखर गए। कोई नटमन्दिर में विश्राम करते हैं। कोई पंचवटीतले बैठे हैं, बिल्वतले और फिर कोई गंगा के घाट पर। मॉर्टन स्कूल के भक्तगण ठाकुर के घर में बैठे आनन्द कर रहे हैं। उत्तर का द्वार खुला है।

भक्तगण विस्मित हुए देखते हैं मातृपीठ नहबत-खाने के निम्नतल के मां के गृह से श्री म बाहर आ रहे हैं। और उनके आनन्द की सीमा नहीं। सब ही दौड़ते हुए जाकर सम्मुख दण्डायमान। अब वेला अढ़ाई। उन्होंने आनन्द से जिज्ञासा की, "सब का प्रसाद पाना हो गया तो ? आइए प्रदक्षिणा की जाए।"

श्री म के आगमन का संवाद पाकर बहु साधु भक्त एकत्रित हो गए थे। वे पंचवटी की ओर जाते हैं। संग में स्वामी धीरानन्द, गोपालानन्द, उमेशपुरी, नीलकण्ठ महाराज प्रभृति साधुगण और जगबन्धु, विनय, छोटे जितेन, बड़े अमूल्य प्रभृति मॉर्टन स्कूल के भक्तगण।

श्री म ने घाट के ऊपर खड़े होकर गंगादर्शन किया। फिर भूमिष्ठ होकर चबूतरे के मध्यस्थल पर प्रणाम किया। बोले, यहां पर ठाकुर की माँ की अन्तर्जली हुई थी। यहां पर ही ठाकुर ने गर्भधारिणी के चरण पकड़कर आश्चर्यान्वित होकर कहा था, "मा तुम कौन हो जी, मुझे गर्भ में धारण किया था।" निज को निज जानते हैं कि ना—अवतार। जभी विस्मयानन्द से कहा, "तुम साधारण मां नहीं।"

"कभी कभी पंचवटी, झाउतला यातायात के समय वहां पर खड़े होकर ठाकुर गंगादर्शन करते। हमारी मां ठाकुरुण नित्य इसी घाट पर गंगास्नान करतीं रात तीन के समय।"

अब की बार श्री रामकृष्ण हस्तरोपित पंचवटीमूल में भूलुण्ठित होकर प्रणाम करते हैं। उठकर पुरातन वटवेदिका के दक्षिण-सोपान-श्रेणी के द्वितीय सोपान पर मस्तक स्पर्श करके प्रणाम किया, तत्पश्चात् वेदिका परिक्रमा करते हैं। इसी सोपान पर श्रीरामकृष्ण ने श्रीचरण रखकर केशव के संग बैठकर बातें की थी। वेदिका के दक्षिण दिशा के मध्यस्थल पर मस्तक रखकर प्रणाम किया। यहां पर भी एक

दिन श्रीपद रक्षा करके विजय कृष्ण गोस्वामी के संग ईश्वरीय बातें की थीं।

श्री म पंचवटीस्थ ठाकुर का ध्यान-कुटीर प्रदक्षिण करते हैं। पूर्व और दक्षिण दिकस्थ वातायन के मध्य से गृहाभ्यन्तरदर्शन और प्रणाम किया। घर में शिवमूर्ति है। तदुपरान्त बरान्डे में आकर द्वार की चौकाठ पर हस्त रखकर भूमिष्ठ प्रणाम किया। इस के परे श्रीरामकृष्ण रोपित माधवी लतिका को युक्त कर से स्पर्श, प्रणाम और आलिंगन करके झाउतला की ओर अग्रसर हुए। बहुत लोग अनुगमन करते हैं।

आजकल "झाउतला" के जंगल का परिष्कार हुआ है। गंगा की ओर "झाउतला" के रास्ते से कुछ दूर अग्रसर होकर झाउतला के मध्य से सीधा "बिल्वतला" आते हैं। पूर्वमुखी होकर चलते हैं — पीछे गंगा, सम्मुख अदूर बिल्वतल। यहां पर रास्ता नहीं। सम्प्रति जंगल परिष्कार हुआ है। भूमि कण्टकाकीर्ण। श्री म नग्न पद चलते हैं। क्षुद्र क्षुद्र वृक्षों की छिन्न मूल सब सूचिकावत् (सूईवत्) तीक्ष्ण और ऊर्ध्वमुख। श्री म भावस्थ हुए जा रहे हैं। प्रायः मध्यस्थल पर जाकर और चल सक रहे नहीं। पदतल कण्टकविद्ध हुआ है। जगबन्धु प्रभृति संग। वे पैर का कण्टक निकाल देते हैं। वे एक जन का स्कन्ध पकड़े हुए हैं। दो जनों के— जगबन्धु और छोटे जितेन के, स्कन्ध पर भार देकर अनेक कष्ट से "बिल्वतला" के मार्ग पर आ गए।

बिल्वतले श्री म। पश्चिम दिक से वेदिका के ऊपर घोड़े टेककर बिल्ववृक्ष स्पर्श और प्रणाम किया। वेदिका परिक्रमा करते हैं। वेदिका के पूर्वदिक् में आकर भूमि पर लुण्ठित होकर प्रणाम किया। यहां पर एक दिन भगवान श्री रामकृष्ण खड़े होकर बिल्वमूल में पूर्वमुखी ध्यानरत श्री म को देख रहे थे। अनेक क्षण परे श्री म चक्षु खोलकर अन्तर की निधि ध्येयमूर्ति को सशरीर सम्मुख दण्डायमान देखकर उनके पैरों में जाकर प्रेमोन्मादना से विलुण्ठित हो पड़े थे। आज चालीस वर्ष हो गए हैं तथापि जब भी इस स्थान पर आते हैं इसी प्रकार

भावविह्वल होकर मिट्टी में लोटने लगते हैं।

अंग्रजो पढ़े भक्तगण कोई कोई सोच रहे हैं क्या आश्चर्य वस्तु लाभ की है इन्होंने श्री रामकृष्ण के पास से! आधुनिक शिक्षा सभ्यता और भव्यता के सकल बन्धन छिन्न करके, इंगलिशमैन श्री म यह क्या कर रहे हैं? परम धन को हृदय में जाग्रत जीवन्त लाभ करने से लगता है मनुष्य अष्टपाश से आप ही बिमुक्त हो जाता है— जैसे सर्प त्वक् विमुक्त होता है।

इस क्षण श्री म वेदिका पर उत्तर दिक् से आरोहण करके बैठे हैं, दक्षिणास्य— सम्मुख विल्ववृक्ष। कुछ काल ध्यान करके पुनराय प्रणाम और प्रदक्षिणा करके हंसपुकुर के तीर पर आकर दण्डायमान हुए पश्चिमास्य। सम्मुख हंसपुकुर, फिर पुरातन वटवृक्ष और पंचवटी, उसके पश्चात् पतितपावनी सुरधनी। तत्पश्चात् पूर्वमुखी होकर पाना-पुकुर पर गमन किया। वहां से होकर लौटकर हंसपुकुर के दक्षिण तीर के घाट पर उपस्थित हुए। घाट के ऊपर चत्वर (चबूतरा) इष्टक-निर्मित। और तीनों ओर बैठने के लिए आसन हैं वैसा ही ईंटों का। श्री म उसी उच्चासन पर नहीं बैठे। बैठे चत्वर के मध्यस्थल पर थोड़ा बाएं हाथ। श्री म के पदयुगल निम्न प्रथम सोपान के मध्यस्थल पर हैं। दृष्टि प्रसन्न गंम्भीर—मन जैसे किसी राज्य में चला गया है। कुछ क्षण इसी भाव में बैठे रहे। अब प्रेमविजड़ित सुस्निग्ध कण्ठ से बोले—(चबूतरे के उत्तर प्रान्त का मध्यस्थल, दांए हाथ से दिखलाकर) "यहां पर एक दिन ठाकुर दण्डायमान, स्वामीजी पुकुर से गाड़ू में जल उठाकर लाए। पायखाने जाएंगे ठाकुर। तब नरेन्द की वयस अठारह उन्नीस वर्ष। नूतन आना जाना करते हैं। एटीन एटी टू (1882) का मार्च। नरेन्द्र से बोले, देख नूतन प्रेम होने पर खूब आना जाना करना चाहिए प्रथम प्रथम। तत्पश्चात् तो देरी से आने से भी चलता है। प्रथम प्रथम समय कटता नहीं प्रेमिक प्रेमिका का, एक दूसरे को बिना देखे। स्त्रियों के प्यार की बात के दृष्टान्त द्वारा वही बात कही थी। फोरटी टू ईयरज (42 वर्ष) हो गए हैं। किन्तु मेरे मन

में हो रहा है जैसे कल ही हुआ है।"

"कोठी" में श्री म । हंसपुकुर से सीधे रास्ते से आकर यहां पर उपस्थित हुए । गंगा की ओर के कक्ष में प्रवेश करके भूमिष्ठ होकर प्रणाम किया । बोले, "यहां पर सोलह वर्ष थे ठाकुर। अक्षय की मृत्यु से वहां गए, अब वही ठाकुर-घर है। ठाकुर की मां ने शोक से फिर इस घर में ठहरना नहीं चाहा । जभी वहां पर गए।"

अब प्रवेश किया "काला-बाड़ी" के आंगन में, उत्तर के सदर द्वार से । युक्त कर सब देवताओं के उद्देश्य में प्रणाम करके राधाकान्त के मन्दिर पर आरोहण करते हैं। राधाकृष्ण के सम्मुख गलवस्त्र होकर भूमिष्ठ प्रणाम किया । फिर-चरणामृत लेकर नीचे उतर आए । फिर प्रणाम-आंगन में, उत्तरास्य, राधाकृष्ण मन्दिर की सर्वनिम्ने-सीढ़ी के नीचे मध्यस्थल पर। बोले, "केशव सेन प्रभृति ब्राह्मभक्त संग रहने से ठाकुर इसी प्रकार प्रणाम करते, लोक-शिक्षा के लिए ।"

एक भक्त मन्दिर के चौंतरे पर आरोहण करते हैं। श्री म निम्ने दण्डायमान, गंगाजल हाथ में लेते हैं। जलपात्र से भक्त देते हैं। हाथ शुद्ध करके अब मां काली की ओर जाते हैं।

मां काली का मन्दिर। श्री म ने भूमिष्ठ प्रणाम किया वरान्डे में, देवी को दांए हाथ रखकर गलवस्त्र से । तत्पश्चात् उठकर द्वार के पश्चिम की ओर जाकर उत्तरास्य ध्यान करते हैं । कुछ काल परे मां को एक रुपया प्रणामी दी। और नकुल ने आकर कहा, "जेठामशाय (ताऊजी), मां का चरणामृत लीजिए । और सिन्दूर।" यह कह कर कपाल पर सिन्दूर का तिलक लगा कर हाथ में चरणामृत दिया।

नट मन्दिर में श्री म। वेला तीन से पुनः कीर्तन चल रहा है। श्री म प्रथम बार कीर्तन सुन सके नहीं। जभी द्वितीय बार उन्हें सुनाने के लिए यह कीर्तन । वे एक स्तम्भमूले बैठे। मानो ठाकुर के पद तले आश्रय लिया है। यह स्तम्भ मां के मन्दिर के द्वार को पीछे रखकर नट-मन्दिर में प्रवेश करने पर पूर्व-पश्चिम द्वितीय पंक्ति के दक्षिण हस्त का

प्रथम स्तम्भ है। एक बार इसी नट मन्दिर में यात्रागान हो रहा था। श्री श्री ठाकुर ने भाव में आकुल होकर क्रन्दन करते करते आवेश में इसी स्तंभ को आलिंगन किया था। तदवधि श्री म दक्षिणेश्वर आने पर इसी स्तम्भ को प्रणाम और आलिंगन करते हैं। आज भी वही करके पद मूल में उपविष्ट। भजन समाप्त हुआ साढ़े चार के पश्चात्। अब साधु भक्त गण कोई बेलुड़ मठ, कोई कलकत्ता, कोई भवानीपुर रवाना हो रहे हैं। अथवा कोई रह गए आरती दर्शन करेंगे।

श्री म पुनराय मां के सामने बैठे हैं।

श्री म ने पुनराय काली मन्दिर में प्रवेश किया। प्रणाम करके पुनराय मां के सामने बैठे हैं। कितनी ही बार ठाकुर ने मां के सामने बिठाकर भक्तों को ध्यान करने के लिए कहा है। यहां पर ही नरेन्द्रनाथ ने तीन बार प्रार्थना की थी–"मां, ज्ञान, भक्ति, विवेक वैराग्य दो।" किन्तु मुख से बाहर हुआ नहीं–"मां, अन्न वस्त्र दो, अर्थ दो"—दारुण कष्ट में भी। श्री रामकृष्ण की शिक्षा क्या विफल हो सकती है?

डाक्टर कार्तिक बाबू प्रचुर "संदेश" लाए हैं। मां को भोग देने पर भक्तगण उसे आनन्द से ग्रहण करते हैं। प्रसाद हाथ में लेकर श्री म—संग भक्तगण बासन मांजने के घाट पर खड़े हुए प्रसाद खा रहे हैं।

मां के मन्दिर के सम्मुख चबूतरे पर आकर श्री म दण्डायमान हुए। मां को देख रहे हैं युक्तकर से। फिर बैठ गये। दक्षिण हस्त के आसन पर किसी को बैठने दिया नहीं, खाली रखा। बोले, "एक दिन ठाकुर यहां बैठे थे। और एक भक्त (श्री म) यहां पर (श्री म के बैठने वाले स्थान पर)। ठाकुर गाना गा रहे थे, "भवदारा भयहरा नाम नियेछि तोमार।" यही गाना गाकर ठाकुर ने भक्तों को मां के चरणों में उत्सर्ग किया। जभी दक्षिणेश्वर का यह स्थान भी श्री म का अति प्रणम्य।

श्रीयुक्त रामलाल दादा ने आकर मन्दिर का गंगा-दिक् का द्वार खोल दिया। वरान्डे का द्वार भी खुला है। पश्चिम की सूर्यकिरण ने मन्दिर में प्रवेश करके मां की मूर्ति को मानो जीवन्त और झिलमिल कर के प्रकाशित कर दिया। कैसा सुन्दर दर्शन। भारत के दक्षिण प्रान्त के

कन्या कुमारी मन्दिर में भी उदीयमान सूर्य की किरणरश्मि प्रवेश कर के मां को एक अपरूप रूप में मण्डित और प्राणवन्त करके सुशोभित करती है। भक्तगण वहां देखते हैं नानापुष्प और अलंकारभूषिता भवतारिणी ने भव का त्राण करने के लिए जीवन्त रूप धारण किया है।

श्री म की बहुत दिनों की साध पूर्ण हुई। इतने दिन अन्य लोगों के हाथ सेवा रहने से वह साध अपूर्ण रही थी। श्री श्री ठाकुर इसी प्रकार पश्चिम का द्वार खोलकर मां के दर्शन करवाते थे।

श्री म "चांदनी" में खड़े हैं, पास स्वामी धीरानन्द। अल्प क्षण परे गंगास्पर्श करके प्रणाम करते घाट पर, संग अमूल्य विनय और जगबन्धु। घाट पर बहुयात्री-नौकाएं। बाबू लोग कोई कोई गणिकाओं आदि को लेकर भी आए हैं–गाना बजाना, रंगरस कर रहे हैं। मां तो सब की ही मां।

श्री म ने ठाकुर घर के गोल वराण्डे से प्रवेश किया। श्री श्री ठाकुर की शैय्या प्रदक्षिण करते हैं। अग्रे श्री म, उनके पश्चात् स्वामी धीरानन्द, डाक्टर, विनय, बड़े अमूल्य, भोलानाथ और जगबन्धु। श्री म ने प्रदक्षिण करते करते बड़े तख्त पोश के पश्चिम दिक् के मध्यस्थल पर गद्दी के नीचे हस्त प्रवेश करके वही हस्त ललाट पर लगाया। तत्पश्चात् छोटा तख्त पोश। उस पूर्व-दिक् में खड़े होकर, पश्चिमास्य हुए ठीक मध्यस्थल पर शैय्या प्रान्त में मस्तक संलग्न करके प्रणाम करते हैं। श्री श्री ठाकुर का शरीर रहते हुए उनके इसी स्थान पर बैठे होने पर इसी प्रकार प्रणाम किया करते ।

गृह में रामलाल दादा खड़े हुए सब दर्शन करते हैं। प्रणाम शेष होने पर श्री म को प्रसाद दिया। भक्तगण भी गोल वरान्डे में दण्डायमान प्रसाद पाते हैं।

अब विदा की बारी। श्री म ठाकुर घर के उत्तर के द्वार से बाहर आते हैं। सदर फाटक की ओर जाते हैं—फाटक के बाहर डाक्टर बाबू की गाड़ी खड़ी है, उस पर चढ़ेंगे। अग्रे श्री म, तत्पश्चात् भोलानाथ,

विनय, जगबन्धु, बड़े अमूल्य और डाक्टर। श्री म ने डाक्टर और विनय को लेकर गाड़ी में आरोहण किया। बोले, "आप लोग स्टीमर में जाएं कोई कोई। ठाकुर कहते, घोड़े को कष्ट होता है।" श्री म गदाधर आश्रम भवानीपुर जा रहे हैं।

शिवतला में स्टीमर में प्रायः एक सौ साधु और भक्त चढ़े। आनन्दे सब पुनः कीर्तन करते करते चलते हैं। गं ा के ऊपर से स्टीमर चल रहा है कलकत्ता अभिमुख। नवयुग के नवभाव प्रवाह का मुख्यकेन्द्र बेलुड़ मठ दिखाई दे रहा है—गंगा के पश्चिमकूल पर। और पूर्वतट पर श्री रामकृष्ण-अवतार-लीलाभूमि दक्षिणेश्वर।

(2)

वसन्त प्रभात। मॉर्टन की चारतल की छत। श्री म मादुर पर बैठे हैं, पश्चिमास्य छत के पूर्व-दक्षिण कोण में। सम्मुखे दूसरी चटाई पर बैठे हैं, विनय, जगबन्धु और छोटे अमूल्य। सूर्य चढ़ रहा है।

आज दोलयात्रा। श्री म गीता पढ़ते हैं। अष्टम अध्याय की व्याख्या स्थान स्थान से करके सुनाते हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—मृत्यु के समय जो जैसा स्मरण करके मरता है, वह वैसा ही बनता है। उस के लिए ही अभ्यास करना होता है जिससे मृत्युकाल में ईश्वर का नाम स्मरण हो जाय। "मामनुस्मर युद्ध्य च" (गीता 8:7) माने निज का क ंव्य-कर्म करना। संग संग स्मरण भी रखो मुझको, माने ईश्वर को। आगे कर्म परे फिर स्मरण नहीं। आगे स्मरण, परे कर्म। और कर्म के मध्य में, बीच बीच में स्मरण। कर्म समाप्त हो जाने पर सम्पूर्ण मन द्वारा मुझे स्मरण करो।

"ठाकुर जभी कहते, 'घटि रोज माजते होय।' अभ्यास योग। अज्ञानान्धकार के पार जो ज्योतिर्मय पुरुष अर्थात् भगवान, उनको

भावते भावत यदि प्राण जायें तो फिर उनकी ही प्राप्ति होती है। उस के लिए ही शरीरत्याग के पूर्व ही प्रस्तुत होना चाहिए।"

"सर्वद्वाराणि, अर्थात् जिस के द्वारा रूप रस गन्ध आदि आते हैं वह इन्द्रिय-समूह, उनको मन में लय करना। मन को हृदयबिहारी श्री भगवान में निबद्ध करना। और प्राण का अर्थ है प्राणवायु को (अंगुलि द्वारा भ्रूमध्य दिखा कर) यहां पर कपाल में स्थापन करना होता है मृत्यु के समय।"

(भगवान बोलते हैं) जो अनन्यरूप होकर मेरा चिन्तन करता है, उस को ईश्वर दर्शन होता है। मेरा नाम करते करते जो देहत्याग करता है उसको और आना नहीं होता। उसके अतिरिक्त सब को ही पुनर्जन्म लेना पड़ता है -ब्रह्मलोक से आरंभ करके सकल लोकों के अधिवासियों को। किन्तु जो मुझ को लाभ करता है उसका और जन्म होता नहीं।"

"ब्रह्मा की जब रात्रि होती है तब सब लय हो जाता है। जब दिन तब सब का पुनः प्रकाश होता है।"

अव्यक्त अर्थात् प्रकृति, माया—तत्पश्चात् जो सनातन पुरुष ही केवल रहते हैं और सब का लोप हो जाता है। जिन को वेद में 'अव्यक्त' 'अक्षर' बोला गया है उन्हें ही श्री कृष्ण परमगति बोलते हैं। अनन्यभक्ति से केवल उस पुरुष को पाया जाता है।"

"किस काल में मृत्यु होने से आना पड़ता है, किस काल में मृत्यु होने से आना नहीं पड़ता, वह सुन। हे अर्जुन, उत्तरायण रूप जो छः मास हैं इस समय मृत्यु होने से आना नहीं पड़ता। कृष्णपक्ष एवं दक्षिणायन के छः मास में यदि कोई मरता है तो उस योगी को फिर आना पड़ेगा अर्थात् उसका पुनर्जन्म होगा।"

यह तो ऐसा होने से ऐसा होता है कहा गया। अब उपाय ? वह भी बोलते हैं, 'योगी बनो।' जो संसार का कोई भी भोग चाहते नहीं—स्वर्ग आदि भी नहीं, वे योगी हैं। योगी का एक लक्ष्य—ईश्वर। अन्य किसी

भी दिक् में मन नहीं। इसी में यदि रुचि जन्मे तो फिर और योगी को किसी में भी भूल होती नहीं। स्वर्गादि तुच्छ उन के पास। ऐसे योगी नारायण के स्थान को प्राप्त होते हैं।

श्री म ने चारतले के निज कक्ष में प्रवेश किया। पश्चिम के वातायन से निम्ने अमहर्स्ट स्ट्रीट में लोगों का चलाचल देख रहे हैं। और फिर दक्षिण की खिड़की से मुख बढ़ाकर नीचे की मोची-पल्ली का भजन गान सुनते हैं।

अब निजी शयन-खाट पर आकर बैठे—उत्तरास्य। श्री म के पीछे छोटे अमूल्य बेंच पर बैठे हैं। विनय फर्श पर आसन पर श्री म के वांए हाथ पूर्वास्य बैठे हैं। जगबन्धु पास ही अपने कक्ष में गए थे। पर्यावर्तन करते ही श्री म ने उनसे कहा, "आज दोलयात्रा। अल्प 'कथामृत, पढ़िए।" श्री म ने द्वितीय भाग, 23 वां खण्ड निकाल दिया— "दोलयात्रा दिवसे श्री रामकृष्ण दक्षिणेश्वरे भक्त-संगें।"

"पाठक पढ़ते हैं (श्री रामकृष्ण बोल रहे हैं) "भक्ति ; , विद्या का मैं," "बालक का मैं"—इसमें दोष नहीं। शंकराचार्य ने विद्या का मैं रखा था.............. हजार विचार करो "मैं" जाता नहीं। मैं रूप कुम्भ। ब्रह्म जैसे समुद्र जल-ही-जल। कुम्भ के भीतर बाहर जल। जले जल। तब भी कुम्भ तो है। वैसे ही भक्त के मैं का स्वरूप। जब तक कुम्भ है "मैं" "तुम" है। "तुम ठाकुर "मैं भक्त"। तुम प्रभु, मैं दास, यह भी है। हजार विचार करो, यह छूटने वाला ही नहीं। कुम्भ न रहे, तब वह एक और बात।

श्री म — इस का नाम प्रैक्टिकल वेदान्त। समाधिस्थ होकर तो सर्वदा रहा जाता नहीं। जभी नीचे आने पर एक भाव लेकर रहना पड़ता है। एक जीवन्त भाव रहना अवश्यक। साकार निराकार दर्शन के पश्चात् पक्का भाव होता है। साधन अवस्था में कभी इधर कभी उधर होता है।

शुकदेव का "विद्या का मैं" था। प्रह्लाद, हनुमान इन का "दास मैं" था। ठाकुर का "बालक मैं" —तुम मां, मैं पुत्र। मां बिना कुछ भी जानते नहीं। सर्वदा प्रार्थना, "मां, अपने पादपद्मों में शुद्धा भक्ति दो। शयने, स्वप्ने "मां"। निद्रित हैं, निद्रा तो खूब सामान्य थी, इसके भीतर ही, "मां मां" कर उठते हैं। जैसे मां के अंक का शिशु–मां बिना रह नहीं सकते। हाथ टूट गया, कहते हैं बड़ा लगता है। किन्तु आराम कर दो यह बात मुख से निकलती नहीं। अहा. कैसी अवस्था—जैसे शिशु, सर्वदा मां का अंचल पकड़े हैं, मां के अंक में।

दोल यात्रा के दिन दक्षिणेश्वर में नरेन्द्र आए। ठाकुर ने उस को गिरीश घोष के पास जाने के लिए वारण किया है। गिरीश गृहस्थ। कहीं पीछे वही रंग पकड़े। श्री रामकृष्ण कहते हैं, गृहस्थ आश्रम में योग भोग दोनों ही रहते हैं। किन्तु संन्यास आश्रम में केवल योग। नरेन्द्र के द्वारा एक नूतन श्रेणी सृष्टि करेंगे। जभी गृहस्थाश्रम के भेद-समूह एक एक दिखाकर सस्नेह बोले, "वत्स, कामिनीकांचन त्याग न होने से होगा नहीं।" नरेन्द्र अश्रुपूर्ण लोचनों से श्री रामकृष्ण की ओर देखते हैं। गृहस्थाश्रम की मलिन ग्रन्थिसमूह की बात सुनकर उपस्थित गृहस्थ भक्तों का हृदय कम्पित हुआ। अन्तर्यामी ठाकुर वह समझ कर अभय वाणी सुनाते हैं।

पाठक (पढ़ते हैं)—श्री रामकृष्ण महिमाचरण से कहते है— अग्रसर हो जाओ। और भी आगे जाओ, चन्दन काष्ठ पाओगे। और भी आगे जाओ, रूपा (चांदी) की खान पाओगे। और भी आगे जाओ, सोने की खान पाओगे। अग्रसर हो जाओ।

श्री म — महिमाचरण को सुनकर भय होता है। तभी ठाकुर उनको आश्वासन देते हैं। अवतार जब highest ideal preach (सर्वश्रेष्ठ आदर्श प्रचार) करते हैं तब सब की searching of the heart (अन्तर की परीक्षा) आरंभ होती है। महिमाचरण को भी वही हुई थी (हास्य)।

पाठक (पढ़ते हैं)—श्री रामकृष्ण नरेन्द्र से बोले—तू तो चिकित्सक हुआ है। "शतमारी भवेद्वैद्यः सहस्त्रमारी चिकित्सकः।"

श्री म (सहास्य)—नरेन्द्र अनेक विपदों में पड़े हैं पितृवियोग के पश्चात्। अनेक लोगों के contact (संस्पर्श) में आए हैं। अनेक जाना है। तभी बोले, "चिकित्सक"। माने हजार लोग जिस ने मारे हैं वही पक्का, बहुदर्शी! नरेन्द्र अल्प वयस में ही बहुदर्शी हो गए हैं। संसार दुःख पूर्ण। ईश्वर ही सच्चे सुख और शान्ति का आधार हैं, यह अभिज्ञता नरेन्द्र ने लाभ की है। ठाकुर यही बात ही कहते हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति) — उस ओर अबीर देखा, आज के दिन की विशेष वस्तु। आज दोलयात्रा है कि ना श्री कृष्ण की।

छोटे अमूल्य—जी, मैं ले आता हूँ अबीर।

श्री म —दो पैसे का, और अधिक न लाएं।

अबीर आ गया है।

पाठ चलता है। श्री म उठकर कक्ष को पूर्व दीवार पर विलम्बित ठाकुरों की छवियों पर नग्नपदे अबीर देते हैं। दीवार पर चतन्य देव की संन्यास की एक छवि है, और एक चैतन्य-संकीर्तन की छवि। ठाकुर मां ठाकुरण, यीशु क्राइस्ट, रामकृष्ण, बलराम, मां काली प्रभृति की छविएं हैं, ठाकुर के शरीर त्याग के पश्चात् भक्त संघ की छवि, ठाकुर के अन्तरंग संन्यासी भक्त स्वामी विवेकानन्द, ब्रह्मानन्द, प्रेमानन्द प्रभृति महापुरुषगणों की छविएं है। और फिर अन्तरंग गृहस्थ भक्तगण नाग महाशय, बलरामबाबू, गिरीश बाबू प्रभृति की छवियां भी हैं। और एक छवि में हैं सोलहजन गृहस्थ और संन्यासी भक्त। ठाकुर के आदेश से की हुई, अंडों को सेती हुए एक पक्षी की छवि भी है। श्री म ने एक एक का, प्रत्येक का नाम उच्चारण करके भक्ति पूर्ण सब की अबीर उपकरण से पूजा की।

श्री म (भक्तों के प्रति)— आप लोग भी अबीर दें। अलग से दें,

छूने का काम नहीं। (विनय के प्रति) तुम चाहे ना ही दो जब अशौच है। यह सब मानना चाहिए।

जगबन्धु—ठाकुर ने देखी थी क्या यह छवि, पक्षी अंडे सेता है ?

श्री म — ना बोले थे एक बनवाने के लिए। उन के शरीर के त्याग के पीछे हुई थी। योग का चिन्ह। योग की उद्दीपना होती है इससे।

श्री म मस्तक स्पर्श कर के उसी छवि को प्रणाम करते हैं। श्री म (यीशु की छवि दिखा कर) —इसे पच्चीस वर्ष हो गए हैं। मां ठाकुरुण जब हमारी बाड़ी आई थीं तब खरीदी गई थी। और भी अनेक छविएं बॉक्स में हैं। अवसर समय टांगने से हो।

श्री म (स्वगत:)— आह, आज दोलयात्रा। यही बात ही स्मरण होती है। सोचा था, दक्षिणेश्वर जाऊंगा। किन्तु हो सका नहीं। वृद्ध मनुष्य कि ना, स्नान आहार इन सब का हंगामा। उस के ऊपर फिर गरमी, ये सब प्रतिबन्धक हैं। वहां पर रहने से ये सब (ठाकुर देवताओं के दर्शन और ठाकुर का स्मृतिस्मरण) फिर होता। (पाठक के प्रति) —बाकी को भी पढ़ डालो।

तृतीय अध्याय पाठ चलता है। महिमाचरण महानिर्वाणतंत्र से स्तव आवृत्ति करते हैं — 'हृदयकमलमध्ये निर्विशेषं निरीहं" इत्यादि। श्री म पाठ सुनकर जैसे क्या स्मरण करते हैं !

श्री म (हठात्, पाठक के प्रति) — वे तर्क करते हैं। इधर थोड़ा पीछे मुझसे धीरे धीरे ठाकुर कहते हैं, मुझे ये सब भला नहीं लगता। वे (महिमाचरण) जो बोले खींचकर रख दिया।

महिमाचरण आने पर यही स्तव ही ठाकुर को सुनाते। इन्हें श्लोक आवृत्ति करने में आनन्द होता है तभी उन्हें उसी पथ से ले जाएंगे। स्तव सुनते ही ठाकुर का मन एकदम भीतर-बाड़ी में चला गया—एक दम समाधिस्थ। जैसे सूखी दियासलाई, अल्प घिसने से ही घप् करके जल उठती है। ठाकुर की यही अवस्था।

हम "हा" किए देखते थे कि ना उनकी ओर — भीतर क्या होता है जानने के लिए। ठाकुर का मन नीचे आने पर झट से मुझ को वही बात कही—'टेने रेखे दियेछे' — खींचकर रख दिया है। वे अन्तर्यामी, जान लिया था हम उन का भीतर समझने की चेष्टा करते हैं। जभी वही बात बोले।

आह, यही स्तव एक महामंत्र। इसे यदि कोई आवृत्ति करे अनायास ही सिद्ध हो सकता है। उनके अनेक महामंत्र है "कथामृत" में।

श्री म (भक्तों के प्रति) — सब ही यह महामंत्र एक बार आवृत्ति कीजिए। भक्तों के संग श्री म आवृत्ति करते हैं—

हृदयकमलमध्ये निर्विशेषं निरीहं
हरिहरविधिवेद्यं योगिभिर्ध्यानगम्यं ॥
जन्म-मरण-भीति-भ्रंशि सच्चित्स्वरूपं।
सकलभुवनबीजं ब्रह्मचैतन्यमीडे ॥*

*मैं हृदय रूपी कमल मध्य (अधिष्ठित) विशिष्टता रहित, इच्छा रहित, विष्णु, महादेव और प्रजापति ब्रह्मा द्वारा जानने योग्य, योगियों द्वारा ध्यातव्य, जन्म मरण के भय से रहित, सच्चिदानन्द स्वरूप, समस्त लोक के बीजाधार, ब्रह्मचैतन्य रूप ईश्वर की बन्दना करता हूं।

महिमाचरण पुनराय शंकराचार्य कृत शिवनामावली अष्टक पाठ करते हैं। प्रत्येक श्लोक के अन्त में है— संसारदुःखगहनात् जगदीश रक्ष, यही प्रार्थना। स्तव पाठ समाप्त होने पर ठाकुर गृहस्थ भक्त महिमाचरण को अभय देते हैं। बोलते हैं, "संसार कूप, संसार गहन" क्यों कहते हैं? वैसा प्रथम प्रथम बोलना चाहिए। उनको पकड़ने पर फिर भय क्या? तब यही संसार मज़े की कुटि। .... क्या भय? उनको पकड़ो। कांटों का वन भी चाहे हो। जूता पैर में देकर "कांटा वन" में चले जाओ। किसका भय?"

श्री म (छोटे अमूल्य के प्रति)— देखिए, कैसी अभयवाणी भक्तों के लिए। किस की साध्य यह बात कहे ईश्वर छोड़—उनको पकड़ने पर और भय नहीं। उस ओर भय, इस ओर अभय।

पाठक प्रथम दो श्लोक पाठ करते हैं। श्री म भी संग संग उन दोनों की आवृत्ति करते हैं। तत्पश्चात् चतुर्थ परिच्छेद पाठ प्रायः शेष भाग से चला। श्री रामकृष्ण "मास्टर" से बोलते हैं —"अच्छा यही जो कोई अवतार बोलते हैं, तुम्हें क्या बोध होता है? पूर्ण या अंश या कला? वजन बोलो न!"

श्री म (सहास्य, भक्तों के प्रति)— "वज़न बोलो ना।

पाठक (श्री म के प्रति)—षड्भुज माने क्या?

श्री म —वह वे ही जानते हैं। (सहास्य) ठाकुर बोलते हैं, "थमो (ठहरो) तुम्हारा असुख।" रामबाबू तभी असुख से उठे हैं। वे नरेन्द्र के संग तर्क करते हैं। जानते हैं कहने पर भी थमेंगे नहीं। तभी फिर बोले, "अच्छा, आस्ते आस्ते (हास्य)।" इधर फिर मुझ से कहते हैं, "मुझे ये सब भला लगता नहीं।"

भवतारिणी की संध्यारती में श्री म।

दक्षिणेश्वर मन्दिर। मां काली की संध्याआरती हो रही है। शंख घण्टादि बज रहे हैं। पुजारी मां के सम्मुख दण्डायमान — अग्नि

प्रभृति सृष्टि के प्रथम पंचद्रव्यों द्वारा मां की पूजा कर रहे हैं। श्री म मां के सम्मुख दण्डायमान हैं युक्तकर गलवस्त्र। तीनों ओर भक्तिभरे भक्तगण दर्शन करते हैं। आज दोलयात्रा, जभी बहु लोक समागम। आज और फिर महाप्रभु श्री चैतन्य की जन्म तिथि है।

आज श्री म ने विनय और जगबन्धु से श्री दक्षिणेश्वर मन्दिर दर्शन करने के लिए बोला था। वे साढ़े पांच बजे आए हैं। श्री म के आने की सम्भावना थी नहीं, तब भी आ गए। काशीपुर से डाक्टर बक्शी जाकर श्री म को निज गाड़ी में बिठाकर ले आए हैं। छोटे अमूल्य, लक्ष्मण, मनोरंजन, शुकलाल प्रभृति आए हैं। गदाधर और महेश चैतन्य इदानीं दक्षिणेश्वर में रहते हैं।

श्री श्री राधाकान्त और द्वादश शिवमन्दिरों की आरती समाप्त हो गई। मां काली के मन्दिर में आरती चल रही है। तभी श्री म आ उपस्थित हुए। आरती शेष होने पर "चाँदनी" के मध्य से श्री म गंगा के बड़े घाट पर आकर उपस्थित हुए।

आज पूर्णचन्द्र। चन्द्र किरण ने गंगा के जल में पड़कर अपूर्व शोभा सृजन की है। गंगा का जल रजतप्रभ हुआ है – बीच में झिल-मिल करता है।

ऊपर से द्वितीय सोपान के दक्षिण दिक् से तीन हस्त उत्तर में बैठकर श्री म मां गंगा, चन्द्र तथा चन्द्रकिरण जात नैसर्गिक शोभा दर्शन कर रहे हैं। गंगा के अपर पार पर वैद्युतिक ज्योति जल रही है। और काँसर तथा घण्टा निनाद सुना जाता है। भाट में जल अति नीचे उतर गया है। श्री म वृद्ध और क्लान्त हैं। जभी एकजन भक्त ने गंगाजल लाकर श्री म के हस्त में दिया। उसी जल को वे मस्तक पर और मुख में देकर श्री राधाकान्त मन्दिर की ओर जाने लगे।

मन्दिर-सोपान-श्रेणी के ठीक मध्यस्थ पर श्री विग्रह के सम्मुख प्रांगण में उत्तरास्य होकर श्री म भूमिष्ठ प्रणाम करते हैं। फिर सोपान चढ़ कर श्री विग्रह के सम्मुख वरान्डे में पुनः भूमिष्ठ प्रणाम किया–मुख

में 'गोविन्द, गोविन्द" यही महामंत्र। चरणामृत धारण करके उतर आए। ठाकुर घर में आने वाले पथ पर शिवमन्दिर-समूह के उद्देश्य में युक्तकर प्रणाम करके ठाकुर घर में प्रवेश किया।

श्री म ठाकुर के कक्ष में फर्श पर बैठे हैं—पश्चिमास्य, छोटी खाट के ठीक मध्यस्थल पर। वे ध्यान करते हैं। रामलाल दादा ने आकर मां की प्रसादी गठित-माला श्री म के गले में पहना दी। गदाधर को भी एक माला पहना दी। श्री म ने माला हाथ में लेकर मस्तक और वक्ष पर धारण करके कुरते की बुक-पॉकेट में रख दी। ठाकुर की दोनों खाटें परिक्रमा करके श्री म पुनः आकर मां काली के मन्दिर में उपस्थित हुए। मां को भूमिष्ठ प्रणाम करके चरणामृत धारणपूर्वक चबूतरे पर अवतरण किया। यहां पर भी दो बार भूमिष्ठ प्रणाम किया। प्रथम-प्रणाम का लक्ष्य मां भवतारिणी, द्वितीय प्रणाम का लक्ष्य ठाकुर। चत्वर पर आकर ठाकुर जिस स्थान पर बैठते थे उसी स्थान पर प्रणाम किया।

अब श्री म ने नटमन्दिर के ठीक मध्यस्थल से दक्षिण प्रान्त पर्यन्त गमन किया। पुनराय लौट आए। लौटते हुए पथ में वृहत् पिलर को आलिगंन और प्रणाम किया। ठाकुर ने नीलकण्ठ की यात्रा सुनकर भाव में इसी पिलर का आलिगंन किया था। जभी श्री म के निकट वह अति पवित्र वस्तु, पवित्र तीर्थ। चत्वर के मध्यस्थल से नटमन्दिर में प्रवेश करने पर दांए हाथ में एक पिलर है। ठीक उसके दक्षिण का वह पिलर ही महातीर्थ।

आकाश में चांद। प्रांगण अतिक्रम करके उत्तर के फाटक से श्री म "कुटी" के सम्मुख उपस्थित हुए। "कुटी" के सोपान हस्त द्वारा स्पर्श करके उसी हस्त को मस्तक पर स्थापित किया। इसी स्थान पर एक जन श्री म को अन्तराल में बुलाकर चुपके-चुपके बातें करते हैं। वह जन कर्म प्रार्थी।

नहबत के द्वितीय और तृतीय सोपान पर श्री म मस्तक अवनत करके ललाट स्पर्श करके प्रणाम कर रहे हैं। यह स्थान श्री

रामकृष्णभक्त जननी की चरणरज से समाकीर्ण पुण्यतीर्थ। जभी शायद श्री म बालक की न्याई भूलुण्ठित हुए— मां के चरणों में पुत्र। युक्तकर से मां के कक्ष के सम्मुख खड़े रहे। गृह कुंजित्रद्ध। श्री म लगता है मां को जगज्जननी रूप में देखते हैं! नचेत् ज्ञानवृद्ध, विश्वविद्यालय के कृती-स्नातक, सप्तति वर्ष वयस्क ये "इंगलिश मैन" क्यों अशिक्षिता ग्राम्य-रमणी के चरणतले भूलुण्ठित।

वकुलतल के घाट के ऊपर श्री म दण्डायमान गंगादर्शन करते हैं। फिर भूमिष्ठ प्रणाम किया-उत्तरास्य। श्री श्री मां की चरणरज धारण करके यह सोपान-श्रेणी भी आज महापवित्र तीर्थ। श्री श्री मां इस घाट पर नित्य स्नान करतीं। और फिर यहां पर भगवान श्री रामकृष्ण अन्तर्जली के समय स्वीय गर्भधारिणी चन्द्रादेवी के श्री चरण मस्तक पर धारण करके विस्मयानन्द से बोले थे, "मां तुमि के गो? आमाय गर्भे धारण करेछो।" (मां तुम कौन हो जी, मुझे गर्भ में धारण किया जो।)

श्री म पंचवटी की ओर जा रहे हैं। बांए हाथ गंगातीर पर एक इष्टक निर्मित वेदिका है। श्री राकृष्ण प्रायः ही उस पर बैठकर गंगा दर्शन किया करते। श्री म ने हस्त द्वारा स्पर्श करके उसी वेदिका को प्रणाम किया।

श्री श्री ठाकुर-हस्तरोपित पंचवटी के मूल में तीन हाथ पश्चिम में पुनराय श्री म भूलुण्ठित हुए। फिर उठे— जाकर ठाकुर के साधनस्थल पुरातन वटवृक्ष के चत्वर के ऊपर पश्चिम कोणे में नीचे से मस्तक स्पर्श करके प्रणाम किया। ऊपर चन्द्रकिरण वृक्ष के बीच आलोक-अंधेरे के सुमधुर खेल की सृष्टि कर रही है। पश्चिम में गंगा—सलिल में चन्द्रकर पतित होकर स्वच्छस्निग्ध प्रतिबिम्ब रचना करता है। वही प्रतिबिम्ब पंचवटी के निबिड़ घन पत्र समूह के नीचे से मानो आधुनिक वैद्युतिक आलोक प्रवाह (flood light) की न्याईं पवित्र वनस्थली को दीप्तिमान कर उठा है। नव भारत का यह तपोवन पूर्ण शशी की उज्ज्वल किरणों से उद्भासित है। वृद्ध श्री म उन्हीं

किरणों में अपने गुरुदेव नरदेही भगवान श्री रामकृष्ण को, प्रतीत होता है, खोज रहे हैं, स्मृतिज्योति में।

श्री म विल्वतले भूपतित होकर साष्टांग प्रणाम करते हैं। स्थान वैसा परिष्कृत बिना हुए भी श्री म वहां पर भूपतित हुए। इसी स्थल पर श्री म ने ठाकुर को सशरीर दण्डायमान देखा था। श्री श्री ठाकुर के आदेश से विल्वमूले बैठकर जिनका ध्यान कर रहे थे दीर्घकाल पश्चात् नयन खोल कर उनको नरदेह में सम्मुख दण्डायमान देखा। अवतार में विश्वासी लोगों के निकट यह स्थान तभी अमूल्य। वह महा सिद्धपीठ।*

श्री म ने वेदी के ऊपर दक्षिण की ओर विल्ववृक्ष को प्रणाम किया। कुछ क्षण वेदी के ऊपर बैठकर उत्तरास्य ध्यान किया। संगी भक्तों में से कोई कोई ध्यान करते हैं। कोई श्री म और भक्तों की ध्यान मूर्ति का दर्शन करते हैं।

श्री म हंसपुकुर के दक्षिण घाट के चत्वर पर उपनीत। चत्वर के तीन ओर बैठने के लिए पक्के बेंच हैं। केवल उत्तरदिक् खुला है— घाट पर उतरने की सीढ़ी है, इस कारण। पूर्व दिक्वर्ती बेंच पर श्री म बैठे हैं —बेंच के दोनों पूर्व दक्षिण के संयोग स्थल से अढ़ाई हाथ उत्तर में। श्री म के सम्मुख पंचवटी, तत्पश्चात् गंगा। इसी स्थान पर कुछ क्षण विश्राम करते हैं। बेंच के निम्नदेश में चत्वर। वह एक समकोण इष्टक निर्मित क्षेत्र। उस के उत्तर पश्चिम की ओर श्री म ने दक्षिणास्य होकर भूमिष्ठ प्रणाम किया। इसी स्थल पर एक दिन भगवान श्री रामकृष्ण दण्डायमान थे उत्तरास्य—नरेन्द्रनाथ सोपानतल से गाड़ू में जल उठा रहे हैं। श्रीरामकृष्ण सस्नेह उनका दर्शन कर रहे हैं। उसी जल से श्री रामकृष्ण का शौचादि कार्य सम्पन्न होता है। गंगावारि ब्रह्मवारि, जभी शौचाद्रि निम्नांगेर कर्म में इस का व्यवहार नहीं करते। इसी स्थल पर खड़े होकर एक दिन ठाकुर नरेन्द्र नाथ से बोले थे —"और भी घना घना आना चाहिए। सुना नहीं 'नूतन

*सिद्धपीठ=जिस स्थान पर अनगिनत साधनाएं की गई हैं।

पीरीत' में क्या करते हैं लोग ?" नरेन्द्रनाथ तब नूतन आना जाना करने लगे थे ना।

अब श्री म पंचवटी में फिर आए । ध्यान कुटीर का अभ्यन्तर दर्शन करते हैं दक्षिण के वातायन पथ से। कुटीर के मध्य में एक क्षीण तैल प्रदीप मिट् मिट् जल रहा है— पास ही एक ध्यानस्थ मृण्मय शिवमूर्ति है। गृह हस्त द्वारा स्पर्श करके उसी हस्त से ललाट स्पर्श किया। कुटीर के वरान्डे में भी हस्त द्वारा प्रणाम किया। इसी स्थल पर पहले मृण्मय कुटीर थी। ठाकुर उस में बैठकर ध्यान किया करते थे। अब वह इष्टक निर्मित है। घर में सकल सामग्री ही नूतन ।

श्री म ठाकुर के रोपित पंचवटी और साधनस्थल पुरातन बटतला प्रदक्षिण करते हैं। पुरातन वटवेदिका के उत्तर पश्चिम कोण पर्यन्त गमन किया। इसी स्थल पर पुरातन वृक्ष की एक डाल टूटी पड़ी है। उसी डाल से रास्ते के पश्चिम गंगातट पर नूतन और एक वृक्ष उग गया है। ठाकुर के साधन पीठ के बहुत नीचे, चत्वर के उत्तराग्र होकर एक ब्रह्मचारी ध्यान में मग्न हैं । श्री म इसी स्थान से लौट आए ।

ठाकुर घर के पश्चिम की दिक् के गोल वरान्डे में श्री म आरोहण कर रहे हैं, संग में भक्तगण। सोपान के निम्नस्थल पर हस्त द्वारा स्पर्श करके वही हस्त ललाट पर स्थापन करके तब ऊपर चढ रहे हैं। पुनराय ठाकुर घर में प्रवेश किया । छोटी खाट के पूर्व की ओर पश्चिमास्य प्रणाम करके पूर्व दक्षिण के वरान्डे में जाकर हाजरा महाशय के आसन पर चटाई पर बैठे। यहां पर अद्यावधि एक चटाई बिछी रहती है। श्री युक्त राम लाल दादा ने खड़े होकर अभ्यर्थना करके हाथ से पकड़कर उनको चटाई पर बिठा लिया। श्री म दक्षिणास्य बैठे हैं। उत्तर के वरान्डे में जाने के पथ पर बैठे हैं— डाक्टर बक्शी, विनय, जगबन्धु, मनोरंजन, शुकलाल, गदाधर, महेश चैतन्य, छोटे अमूल्य, छोटे जितेन, बड़े अमूल्य, लक्ष्मण प्रभृति। शुकलाल बड़ी एक हांडी रसगुल्ले और सन्देश लाए हैं। उनको रामलाल दादा ने ठाकुर

को निवेदन कर दिया। श्री म रामलाल दादा को दिखाकर भक्तों से कह रहे हैं, "ठाकुर इनके मुख द्वारा खाते हैं। अधिक रख दो इन के लिए, तदुपरान्त सब प्रसाद पाओ।" घोषाल एकजन कर्मचारी हैं इस मन्दिर के। उनको लक्ष्य करके भक्तों से बोले, "यहां के सब ही हमारे प्रणम्य, जो जो सब मां की सेवा करते हैं।"

प्रसाद पाने के पश्चात् श्री म ने ठाकुर-घर में प्रवेश करके प्रणाम करके विदा ली। ठाकुर के घर के उत्तर पूर्व कोण में डाक्टर बक्शी की घोड़ा-गाड़ी उपस्थित है। श्री म का काला चटीजूता था गाड़ी के भीतर और डाक्टर का जूता था नीचे भूमि पर। श्री म ने भूल से डाक्टर के जूते को हाथ से पकड़ लिया अपना जूता समझ कर। डाक्टर की संत्रस्त आपत्ति में घबराकर मना करने पर श्री म ने जूता नीचे रख दिया। अब हाथ शुद्ध करना होगा, जल निकट नहीं। श्री म भूमि से रजः स्पर्श करके भक्तों को बतला रहे हैं, "यहां की सारी धूल में हाथ देने से गंगाजल का काज होता है। सब पवित्र।" दो बार इसी वाणी की आवृत्ति की। और फिर बतला रहे हैं, "एक दिन ठाकुर निजहाथ से झाड़ू दे रहे हैं ठीक यही स्थान। मुझे देखकर बोले, 'मां यहां पर टहलती है।' वे यह सब लीला सर्वदा इन्हीं चक्षुओं से दर्शन किया करते थे कि ना।"

ठाकुर के घर के उत्तर के वरान्डे में रामलाल दादा खड़े हैं। श्री म नमस्कारान्ते उनके निकट विदा की याचना कर रहे हैं—"दादा" तो फिर जाऊं ?" दादा ने भी प्रीति नमस्कार करके श्री म को गाढ़ा आलिंगन किया। फिर घोषाल को नत होकर नमस्कार करके श्री म गाड़ी में चढ़ने जा रहे हैं, भक्तों ने सोचा। किन्तु वे पदब्रजे बड़े फाटक की ओर चलने लगे। कहते हैं, "Experiment (प्रयोग) करता हूँ पैदल जा सकूंगा कि नहीं आलम बाजार तक।"

श्री म फाटक के बाहर आ गए। थोड़ा अग्रसर होने पर ही दक्षिण की ओर यदु मल्लिक का फाटक है। श्री म युक्त कर से इस

फाटक का स्पर्श करके प्रणाम करके कहते हैं, "ठाकुर यहां प्रायः ही आया करते—उनका touch (स्पर्श) है।" रास्ते में चलते चलते विनय से बोले, "तुम एक बार जिज्ञासा करके आओ तो जुगलबाबू घर हैं कि नहीं।" भक्तों के संग चलते चलते आलमबाजार के मोड़ पर्यन्त आ उपस्थित हुए। आज फाल्गुन पूर्णिमा, आकाश में पूर्णचन्द्र। प्रायः एक मील पथ आने में तेरह मिनट लगे। श्री म डाक्टर की गाड़ी में रवाना हुए। भक्तगण मोटर बस में आएंगे। अब रात्रि के दस।

रास्ता चलते चलते एक युवक सोच रहे हैं, आज श्री म ने मन्दिर में प्रायः दस बार भूमिष्ठ प्रणाम किया। और फिर युक्तकर अथवा कभी कभी हस्तस्पर्श और बहु स्थानों पर बहुबार प्रणाम किया है। क्यों यह प्रणाम ? वे क्या अब भी ठाकुर का सशरीर दर्शन करते हैं इन सब स्थानों पर ? विचार करके या स्मरण करके प्रणाम में सजीवता, माधुर्य और स्वाभाविकता दिखाई नहीं देती। किन्तु श्री म के आचरण में पूर्ण सजीवता देखी है, सम्पूर्ण स्वाभाविक। सप्ततिवर्ष अतिक्रम होने पर भी श्री म आज युवक की न्याईं भक्ति-चंचल। श्री म के नयनों में और आनन में एक सरस आनन्दमय सजीवता और स्वाभाविकता देखी थी। इसी तन्मयता से ही शायद श्री म की देह श्रमविदूरित। श्री म क्या विदेह ?

मॉर्टन इन्स्टिट्यूशन, कलकत्ता।
21 मार्च, 1924 ई०।
7 वां चैत्र 1330 (बं०) साल; शुक्रवार, दोल पूर्णिमा।
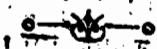
पंचम अध्याय

श्री रामकृष्ण गीता-विग्रह

(1)

श्री म चार तल की सीढ़ी के कक्ष में बैठे हैं बेंच पर, दक्षिणास्य। हैडमास्टर मुकुन्द रामपुर हाट से आए हैं। वे वहां पर काज करते हैं, श्री म उनको पुत्रवत् आदर स्नेह से पास बिठाकर कथावार्त्ता कर रहे हैं। अब प्रातः नौ। आज 22 मार्च, 1924 ई०, 8 वां चैत्र, 1330 (बं०) साल; शनिवार। अन्तेवासी आज प्रथम स्टीमर से बेलुड़ गए थे। वे अभी अभी लौटे हैं।

श्री म उनको दिखाकर बोले, "हम 'हाँ' किए अपेक्षा में बैठे हैं कि कब प्रत्यावर्तन करेंगे। यही expect (आशा) किया था। यही जो miss (परित्याग) किया नहीं, बड़ा भला हुआ। आयंगर महाशय का संन्यास आज भोर में हुआ है— क्या नाम हुआ?

अन्तेवासी– जी हां, संन्यास हो गया है आज प्रातः। नाम हुआ है स्वामी श्रीवासानन्द।

श्री म —विरजा होम हुआ कहां?

अन्तेवासी—ध्यान घर में।

श्री म — कहां मिले पहले?

अन्तेवासी — महाराज के मन्दिर के पास।

श्री म — किस कक्ष में रहते हैं?

अन्तेवासी --दो तल पर, महराज के कक्ष में।

श्री म— कैसा देखा?

अन्तेवासी—खूब प्रफुल्ल।

श्री म — कुछ बातें हुईं ?

अन्तेवासी — जी हां, बोले, "Now I am happy." (अब मैं प्रसन्न हूं ।)

मुकुन्द ने विदा ली। श्री म क्या सोच रहे हैं ? पुनराय बातें ।

श्री म (अन्तेवासी के प्रति) —नूतन संन्यासी। इन का कितना त्याग। पीछे पीछे रहना चाहिए। देखना चाहिए सब— intrude (विरक्त—परेशान) बिना किए। कैसे बैठते हैं, कैसे बातें करते हैं, सब देखना चाहिए।

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ।।

लड़के (युवक) भी त्याग करते हैं। वह फिर ऐसा क्या है ? जैसे हरि, इससे उनका ही भला होता है। किन्तु उनका कितना बड़ा त्याग ! (सहास्य) जोगेन स्वामी परिहास करके कहते, "यहां पर आकर हमारा लाभ ही हुआ है। लोग पूजा करते हैं, पद-धूल लेते हैं, कितना क्या कुछ ! वहां रहते तो ट्रामों के कन्डक्टर होना पड़ता (हास्य) !

अब नित्य जाना चाहिए मठ में जिनको time (समय) है। ऐसे लोग हैं ये कि इनके द्वारा बहुत काज होगा। शायद कहीं फिर डुबकी लगाएंगे। बी० बाबू की वैसी व्याकुलता नहीं है। नहीं तो सारा दिन रह सकते हैं मठ में। अमूल्य बाबू भी कर सकते हैं। नहीं, ये फिर ठाकुर-सेवा में अटक गए हैं। वह भी तो खूब भला काज हो रहा है। फ्रेन्डस् के काज में सहायता करनी चाहिए। उन्होंने कितनी सेवा की है कितने समय। बी० बाबू के मन में वैसी चेष्टा नहीं है। आलसी, सुस्त। नहीं, लगता है (व्याकुलता) नहीं है। (जगबन्धु के प्रति) आप लोग कल जा सकते हैं, सवेरे खाकर। हजारों पुस्तकें पढ़ने से क्या होता है ? एक बार देखने से बहुत काज होता है। ठाकुर कहते, पढ़ने से सुनना अच्छा। सुनने से देखना अच्छा ! जभी जाकर देखना चाहिए बार बार ।

श्री म (भक्तों के प्रति)— अब सोच रहा हूँ अब कुछ दिन दक्षिणेश्वर आना-जाना करूंगा । पॉकेट में भात ले जाऊंगा सोचता हूँ (हास्य) ! तब फिर समस्त शरीर पर और कपड़ों पर गंगाजल छिड़क दूंगा । उससे ही हो गया । बूढी वयस में नियम चलते नहीं—फिर चलता नहीं । पचास पार होने पर फिर और नियम चलता नहीं । (एक जन भक्त के प्रति)— प्रातः शायद ये लोग (पंजाबी) रोटी नहीं बनाते ?

आहार लेकर हो तो है जितनी भी गड़बड़ । तो फिर आहार सरल कर देने से ही हुआ । देखो ना इतनी बड़ी simplification (जटिल अंक सरल करना) । उसका result (फल) हुआ हाफ (1/2) । तो फिर क्या प्रयोजन, आहार लेकर इतना करने का ।

श्री म (युवक के प्रति)—वह थोड़ा सा पैदल जाकर अच्छा हुआ—आलम बाजार से दक्षिणेश्वर मन्दिर । मार्ग में एक फ्रेन्ड (जुगल) का घर है । कल, देखा तेरह मिनट लगे आते हुए ।

एक जन भक्त (श्री म के प्रति) —गत रात्रि को नारायण आयंगर महाशय को स्वप्न में देखा था, गेरूआ पहने । आज जो देखकर आया हूँ सब मिलता है । केवल, सिर पर केश देखे थे । आज देखा मुंड़ा हुआ ।

श्री म— पूर्व संस्कार हैं कि ना जभी सिर पर केश देखे । अब फिर देखना चाहिए, संन्यास लिया है । हमारा मन तो इसी भाव से तैयार है । जो देखते हैं, जो सुनते हैं, इनकी समष्टि ही मन है ।

अब वेला दस । श्री म स्नान करने चले गए ।

अपराह्ण साढ़े चार । दो तले के घर में फर्श पर चटाई पर श्री म बैठे हैं । शनिवार के भक्त उपस्थित हैं । भाटपाड़ा के ललित, भोलानाथ और संगी, भीम और वसन्त, फकिर और माखन प्रभृति आए हैं । जगबन्धु यहां पर ही रहते हैं । देखते देखते एटोर्नी वीरेन, बड़े और छोटे अमूल्य, सदानन्द प्रभृति आकर समवेत हुए । थोड़ा परे बेलुड़

मठ के एकजन साधु आए। साधु जी ने घी-मुड़ि आहार किया। अब श्री म साधु के साथ आनन्द से बातें कर रहे हैं।

श्री म (साधु के प्रति) बालकों की पुस्तक में एक कविता है। नाम—"He will not come." एक कुत्ता था। उसका स्वामी हठात् मर गया। कुत्ता बड़ा ही शोकग्रस्त। अब सर्वदा प्रभु की grave (कबर) पर बैठा रहता। Summer (ग्रीष्म) गई, winter (शीत) आ गया। न खा-खा कर और शीत से उसको असुख हुआ। स्कूल के छात्र उसके लिये खाना ला देते। शीत के समय स्कूल बन्द था। जभी आहार मिला नहीं। खूब असुख हुआ। शरीर खूब दुर्बल हो गया। जभी कबर के ऊपर से थोड़ा थोड़ा करके हट गया। ज्योंहि मृत्यु का समय हुआ त्योंहि भीषण एक आर्तनाद करके छलांग मारकर फिर जाकर कबर के ऊपर पड़ गया। फिर मृत्यु।

इससे दो example (दृष्टान्त) पूर्ण संन्यास, और सच्चिदानन्दे प्रेम—ठाकुर जो कहते। हां, यह दोनों का ही दृष्टान्त।

साधु (श्री म के प्रति)—ठाकुर दर्शन किया जाता है इसी स्थूल शरीर में ?

श्री म—हां। सुना है, भक्तों ने, किसी किसी ने उनका दर्शन किया है। ठाकुर ने विवेकानन्द से कहा था—इस पंखे को जैसा देखता रहा हूँ वैसे ही (ईश्वर को) देखा जाता है।

साधु—Conscious state में या super-conscious state में (सज्ञान में या समाधि में) ?

श्री म—ठाकुर बताते, इन साधारण आंखों से ही पहले दर्शन होता था। अब भाव में होता है। गुरुवाक्य पर विश्वास करना होता है। और पालन बिना किए कुछ समझ नहीं आता। गुरुवाक्य-विश्वास चाहिए।

श्री म (भोलानाथ के प्रति)—मुखर्जी महाशय, वही गाना गाइए

ना— भवराणी । और यही मुखे मुखे बोलिएगा (हास्य)। किसी ने एक गाना ठाकुर का रच कर सुनाया था। और एक सुनने की इच्छा रहती तो कहते, 'अच्छा, वह एक बार मुखे मुखे हो जाय ना' (सब का हास्य)।

भोलानाथ गा रहे हैं :—

गाना : कि होबे कि होबे, भवराणी तबे, भवेते आनिये भावाले आमाय।
ना जानि साधन, नाजानि पूजन, विषयविषभोजन करि प्राण जाय ।।
कातरेते ताइ डाकि भवदारा, कखन आछे कखन जेते हबे तारा
ए देह सन्देह त्वराय देखा देह, रसिकेर ए देह जलबिम्ब प्राय ।।*

श्री म —वह भी हो जाय।

गाना : विकल्पविहीन समाधि विलीन ब्रह्म चिरदिन आसन तोमार।

संध्या उत्तीर्ण हुई है। श्री म भक्तों से कहते हैं, "कहां, चांद तो देखा नहीं आप लोगों ने। चलिए ऊपर, आपको चांद दिखाऊं(हास्य)।" किसी किसी ने विदा ली। अधिकांश ही श्री म के संग चार तले की छत पर चढ़ गए।

श्री म चार तले की छत पर टहल रहे हैं — उत्तर-दक्षिण। गतकल पूर्णिमा गई। आज भी आकाश में स्निग्धोज्ज्वल चन्द्रमा है।

---

*अर्थ : क्या होगा भवराणी, क्या होगा ? संसार में मुझे लाकर तुमने चिन्ताओं में डाल दिया है। न जानूं साधन, न जानूं पूजन, विषय रूपी विषपूर्ण भोजन करते करते प्राण जा रहा है। कातर होकर तभी हे भवदारा मैं तुम्हें पुकारता हूं। ओ तारा, कब तक देह रहेगी, कब जाना होगा — यह देह का सन्देह है। तभी जल्दी से दर्शन दो। 'रसिक' की यह देह जल के बुलबुले के समान है।

उस समय गतरात्रि में श्री म दक्षिणेश्वर तपोवन में भक्तसंग प्रदक्षिण कर रहे थे। और फिर इसी वसन्त चन्द्रालोक में ही उन्होंने प्रथम प्रथम ठाकुर का दर्शन किया था। वसन्त-चन्द्रिमा श्री म को अति प्रिय ।

श्री म भ्रमण कर रहे, हैं और बीच बीच में खड़े होकर चांद देख रहे हैं, कुछ सोचते हैं, और फिर चलते हैं ।

भक्तगण अनेक ही उपस्थित । कोई खड़े हैं, कोई बैठे हुए श्री म के दर्शन कर रहे हैं। श्री म अब विस्तृत छत के मध्यस्थल पर दण्डायमान —दक्षिणास्य । अपने आप बातें कर रहे हैं।

श्री म (स्वगत)— सब कुछ ही उन्होने कर रखा है। सब कुछ हो वे होकर रह रहे हैं । जभी ठाकुर रोज प्रार्थना करते, शरणागत, शरणागत।

इस समय श्री म आकर बाघाम्बरी कम्बल के ऊपर बैठे छत के दक्षिण प्रान्त में— पश्चिमास्य । श्री म के तीनों ओर भक्तगण— बड़े जितेन, छोटे जितेन, माखन और उनका बन्धु, शचीनन्दन, बलाई, डाक्टर विनय, जगवन्धु प्रभृति । बातें हो रही है।

श्री म (भक्तों के प्रति)—कैसा आश्चर्य देखिए ना। यह सूर्य कैसे आता है। यह आता है तो प्राण बचता है। फिर देखिये मनुष्य क्या है ? ऐसे एक नन्हे से spermatozoon (बीजाणु) से इतना वड़ा शरीर हुआ, हाथ, पैर, नाक, सब । फिर मन बुद्धि अंहकार भी ।

यही (शरीर) फिर और भी इस प्रकार से तैयार है कि इसमें reflection (प्रतिविम्ब) होता है । कांच की पीठ पर मरकरी (mercury) लगाने से उस पर प्रतिविम्ब पड़ता है। वैसी ही यह देह । यह भी ठीक इसी प्रकार तैयार। इस पर भी sense world (बाह्य जगत्) की छवि पड़ती है। और ज्योंहि (प्राण) निकल गया त्योंहि सब पड़ा रह गया। इस पर फिर छवि नहीं उठेगी ।

जभी भोर ना होते होते बाजी मार लेनी चाहिए, शरीर रहते रहते। अधर सेन को ठाकुर ने कहा था, 'ताड़ाताड़ि सेरे नेओ। ताड़ाताड़ि सेरे नेओ।' (जल्दी जल्दी खतम करलो, जल्दी जल्दी खतम कर लो।) छः मास पश्चात् ही अधर बाबू का शरीर गया।

श्री म (एक जन युवक भक्त के प्रति)— गृहस्थों से कहते, तुम लोग मन से त्याग करोगे। मन से क्या ठीक ठीक त्याग होता है ? बाहर से त्याग करना पड़ता है। बाहर से न हो तो मन से भो नहीं होता। भय लगेगा इसलिए वैसा कहते।

योगियों का, किन्तु सब त्याग हो जाता है। अर्थात् sense world (बाह्य जगत्) का कुछ न लेते लेते एक परदा खुल जाता है। मरकरी (mercury) के पीछे और भी है कि ना। वे सब क्रमशः develop (परिपुष्ट) करते रहते हैं।

बाघ एक मुनि को पकड़कर शायद ले जाता है। सब खबर पा कर पीछे-पीछे जाते हैं। मुनि बाघ के मुख में बैठे 'सोऽहम् सोऽहम्' करते हैं। वे जानते हैं कि ना, कुछ भी नहीं है। ईश्वर ही सार है।

बुद्धि की jurisdiction sense knowledge (दौड़ बाह्य जगत् पर्यन्त) है. इससे अधिक नहीं।

बड़े जितेन— तब तो फिर sense knowledge (बाह्य जगत् के ज्ञान) का प्रयोजन नहीं।

श्री म — ना, तो भी if it leads to something higher (यदि वह उन्नति के किसी उच्च आदर्श पर ले जाए)। इसी sense knowledge (बाह्य जगत् के ज्ञान) के द्वारा ही उनका लाभ किया जाए, मोड़ फिरा देने से।

इसीलिए साधुसंग करना होता है। और अभ्यास योग द्वारा भी होता है। जभी चक्षु बन्द करके ध्यान करना होता है। ठाकुर बताते, मुझे वृक्षतले ले गए। आँखे बन्द करवा लीं। कहीं फिर मन में अन्य चिन्ता हो जभी एक जन को शूल हस्त में देकर रख दिया थ

डराने के लिए।

चक्षु खोलकर भी ध्यान होता है। देखते हुए कौन ध्यान कर सकते हैं ? जिनका पक्षीवत् मन हो गया—अंडे से रहा है। आंखें अर्ध निमीलित। मन रहता है वहां, अंडो में*। वैसे ही जिनका मन सर्वदा ईश्वर में रहता है वे खुली आंखों से ध्यान कर सकते हैं।

बड़े जितेन — Clean slate (स्वच्छ स्लेट) का प्रयोजन है तब तो।

श्री म — उस के लिए ही तो योगीगण चेष्टा करते हैं। कुछ भी लेंगे नहीं, पूरा—नोन-को-ओपरेशन (असहयोग)।

श्री म (सहास्य, भक्तों के प्रति)— ठाकुर ने एक जन के हाथ से माला छीन ली और बोले, यहां आकर भी माला जपना ? यहां पर जो आएंगे उन्हें एकदम चैतन्य हो जाएगा।

अवतार जब आते हैं तब अति सुविधा। तब धरती पर भी एक एक बांस जल। अन्य समय अति चेष्टा। मिट्टी खोदने पर भी जल मिलता नहीं। किन्तु अवतार आने से खूब chance (सुयोग)।

आयोजन कितना; किन्तु ग्रहण करने वाले लोग तो नहीं। सौभाग्य क्या कम ? देखिए, प्रथम मानुष जन्म। मनुष्य जन्म में ही केवल साधन-भजन किया जाता है। अन्य किसी शरीर में होता नहीं। इसी जन्म में ही मोक्ष होता है।

द्वितीय, भारत में जन्म—यहां पर ईश्वर का बहुत नाम हुआ है, जहां पर ऋषिगण आए थे।

तृतीय, बंगला देश में जन्म। इसी बंगला देश में चैतन्य देव आए। प्रेम की बाढ़ से देश को तर कर गए हैं। अब ठाकुर आए हैं, अभी अभी गए हैं। हाथ बढ़ाने से पकड़ा जा सकता है। मां, मां, करके पागल। कुछ भी लिया नहीं। इतना प्रेम ईश्वर में कि कोई वस्त्र भी रख सकते नहीं। समस्त मन विलीन हुआ उनमें।

*पृष्ठ 71 का चित्र द्रष्टव्य।

और चतुर्थ सौभाग्य, उसी समय के भक्तगण भी दिखाई देते हैं। और साधु दिखाई देते हैं, वे जिनको तैयार कर गए हैं। भक्तों को देखने पर उनकी कथा स्मरण हो आती है। बहुत आयोजन, किन्तु लोग कहां? निमंत्रण में जाकर अनेक कहते हैं, और लो और लो, किन्तु और लेता नहीं।

बड़े जितेन— एक चपरासी को एक जन रुष्ट हुआ था भूल होने पर। और एक जन ने सुनकर कहा, महाशय, वह भूल करेगा नहीं तो क्या? वह जो सत्तू खोर। संसार में इतनी बढ़िया वस्तुओं के होते हुए भी सत्तू खाता है। वैसे ही हम घास जो खाते हैं।

श्री म (भरोसा देते हुए)—आप लोग अमृत खाते हैं। अवतार जब आते हैं तब आकाश पाताल उनके भाव से surcharged (परिपूर्ण) हुए रहते हैं।

क्या आप जानते है, आप कहां हैं? निद्रित जन गाड़ी में बैठा हुआ काशी पहुचने पर भी सोचता है, वहीं पर ही हूँ हावड़ा में ही। तत्पश्चात् काशी की वस्तुएं दिखाने पर तब समझता है, 'नहीं, मैं तो काशी आ गया हूं।' सद्य निद्रा टूटने पर क्या समझ पाता है, कहां हूं?

आप जब बातें करेंगे, सुनकर लोग अवाक् हो जाएंगे। बर्क (Burke) शेरिडोन (Sheridan) सब अवाक् होंगे। Single speech Hamilton की भांति (सिंगल स्पीच हेमिलटनवत्)। हैमिल्टन नामक एक जन ब्रिटिश पार्लियामैन्ट के मेम्बर थे। चालीस वर्ष से मेम्बर हुए चले आ रहे हैं। कभी भी उन्होंने वक्तृता नहीं दी। एक दिन ऐसा बोले, बर्क, शेरिडोन सब अवाक्। आप भी एक दिन उसी प्रकार बोलेंगे।

बड़े जितेन— गीता पढ़ी थी। अर्थ समझ में नहीं आता। 'प्रकृतिं यान्ति भूतानि'— मनुष्य प्रकृति द्वारा चलाया जाता है। और एक क्या था?

श्री म—वह क्या समझ में आता है ? तपस्या बिना किए वह होता नहीं। दूर से बाजार का 'हो-हो' शब्द सुन पड़ता है। बाजार में प्रवेश बिना किए क्या पता लगता है किसका शब्द है। निर्जने गोपने तपस्या करनी चाहिए, जभी समझ में आते हैं, गीता शास्त्र आदि ।

पहले तरुण ऋषिगण जाते थे बड़े ऋषियों के पास, समित् हाथ में। बड़े ऋषि कहते, "समझा, कुछ जिज्ञासा करने आए हो। तब एक वर्ष तपस्या करके आओ।" ऐसा काण्ड है। तपस्या बिना किए प्रश्न करने का भी अधिकार नहीं होता। बोलना कुछ था बोल दिया कुछ ।

जभी तपस्या करनी चाहिए - शास्त्र समझना हो तो । (गाने के सुर में) 'से जे भावेर विषय भाव व्यतीत अभावे कि जानते पारे ?' (वह तो भाव का विषय है, भाव के बिना अभाव में क्या जान सकते हो ?)

श्री म मॉर्टन इन्स्टिट्यूशन के चार तले की छत पर बैठे हैं कम्बलासन पर पश्चिमास्य । सम्मुख भक्तगण। अनवरत श्री म के मुख- कमल से कथामृत पान करते हुए भक्त-अलि कुल मत्त हैं। आकाश में प्रायः पूर्णचन्द्र। और फिर सुशीतल समीरण। वसन्त के ऐसे दिन में ही श्री म ने ठाकुर का दर्शन किया था। जभी आज ठाकुर के दिव्य संग की कथा स्मरण करके श्री म आनन्द से भरपूर हैं । अर्ध शताब्दी पूर्व का वही निर्मल आनन्द-रस भक्तों को प्रदान करने की इच्छा हुई है। तभी श्री म ने रसभण्डार 'कथामृत' पाठ करने के लिए कहा । स्वयं प्रथम भाग, चतुर्दश खण्ड निकाल दिया। हरिकेन के आलोक में जगबन्धु पढ़ते हैं। भगवान श्री रामकृष्ण ने बलराम मन्दिर में शुभागमन किया है ।

पाठक ने पढ़ा (श्री रामकृष्ण बोल रहे हैं)— उनके इच्छा करने से उनके भीतर की सार वस्तु—मनुष्य के भीतर से आ सकती है और आती है। वे अवतार होकर रहते हैं। ... ...उनके अवतार को देखने से ही उनको देखना हुआ। अवतार और ईश्वर अभेद ।

श्री म —जभी क्राइस्ट बोले थे, ... he that hath seen me

hath seen the father. (St. John. 14:9)·········I and my father are one.' (St John 10:30) किन्तु ईश्वर के बिना समझाए समझ में आने वाला नहीं है। ऐसी उन की माया! इसीलिए राम को यह तो मात्र कुछ ऋषि पहचाने थे। कृष्ण को भी वैसे कुछ ही लोगों ने अवतार कहकर ग्रहण किया था - असित, देवल, व्यासदि ने। क्राइस्ट चैतन्य, श्री रामकृष्ण इनका भी वैसा ही। कैसे पहचानेंगे? बुद्धि का कर्म नहीं, विद्या का कर्म नहीं, पाण्डित्य का कर्म नहीं। उनके ज्ञात करवाने से ही केवल जान सकता है। और पथ नहीं।

पाठक (पढ़ते हैं, श्री रामकृष्ण बोल रहे हैं) —पुस्तक, शास्त्र ये सब केवल ईश्वर के पास पहुंचने वाला पथ बता देते हैं। ··· ·····किन्तु मत्र समाचार जानकर स्वयं कर्म आरंभ करना पड़ता है। तभी तो वस्तु लाभ। केवल पाण्डित्य से क्या होगा? ········· पण्डित खूब लम्बी लम्बी कथा बोलते हैं, किन्तु दृष्टि कहां पर? कामिनी और कांचन पर, देह के सुख और पैसे में। शकुनि खूब ऊंचाई पर उड़ता है, दृष्टि मरघट पर (हास्य)।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति) —यही देखिए, कुछ करने के लिए कहते हैं अर्थात् तपस्या चाहिए। निर्जन में रहना पड़ता है। नहीं तो शास्त्र का अर्थ समझ में नहीं आता। वस्तु लाभ तो दूर की बात!

अवतार की language (भाषा) ही पृथक्। अवतार के आने के पूर्व पण्डित लोग उलट पलट करके शास्त्र का अर्थ करते हैं। किन्तु अवतार के आने पर शास्त्रों का प्रयोजन नहीं रहता। इतना पढ़ना नहीं पड़ता। उनके मुख से शास्त्र व्याख्या सुनने से ही हुआ। शास्त्र का यथार्थ अर्थ वे प्रकाश करते हैं, अपनी बातों और आचरण में। अवतार के न आने से लोग कठिनाई में पड़ जाते हैं पण्डितों की व्याख्या सुनकर। जभी तब उपाय को ही उद्देश्य समझने लगते हैं। शास्त्र तो उपाय, उद्देश्य — ईश्वर लाभ। शास्त्र पढ़ना ही तब उद्देश्य हो जाता है। अवतार आकर कहते हैं, तपस्या करो, नहीं

तो निर्जने गोपने क्रन्दन कर-करके कहो। केवल पढ़ने में कुछ नहीं है। करो कुछ, करो आन्तरिक।

श्री म (भक्तों के प्रति)—ईश्वर तरह तरह से object lesson (दृष्टान्त) आंखों के सामने रखते हैं। नारायण आयंगर महाशय को देखिये ना। भीतर से भी छोड़ा है और फिर बाहर से भी भी छोड़ा हैं। कल ही तो संन्यास हुआ है, अब तीव्र वैराग्य है। सब है. —अर्थ, मान. यश, पुत्रकन्यादि और कुछ। सत् ब्राह्मण कि ना - सब कुछ है, किन्तु समस्त त्याग किया है, कैसा तीव्र वैराग्य! जिला मजिस्ट्रेट थे। उनको देखना उचित। देखने से चैतन्य हो जाता है।

एक वर्ष से ही ही संन्यास लिए हैं। कभी मायावती, कभी काशी इसी प्रकार आश्रम में वास करते हैं। हाथ में इसी बीच एक बेदना दिखाई दी। बम्बई के बड़े बड़े डाक्टरों ने कहा, विलायत जाकर आपरेशन करवाना होगा। हड्डी में मवाद जम गई है। भ्रूक्षेप नहीं-देह की ओर देखा नहीं। इधर संन्यास ले लिया है। कहा तो वि यत जाना चिकित्सा के लिए और कहां संन्यास! कल प्रातः संन्यास के थोड़ा पीछे ही एक भक्त से कहा, "Now I am happy." अर्थात् सफेद वस्त्र पहने हुए रहो तो सब बुलाएंगे। आज विवाह, कल अमुक, सब में बुलाएंगे। गेरुआ पहनने पर फिर बुलाएंगे नहीं। सोचेंगे वे अब और ऐसे सब विषय नहीं देखते, क्या होगा बुलाकर? गेरूआ एक बार लेकर लौट जाने में लज्जा होती है। इसलिए गेरूआ लेना। सफेद वस्त्र हो तो लौट जाने की संभावना रहती है।

कैसी रोख! ठाकुर पांच रुपये के बैल और पचहत्तर रुपये के बैल की कहानी सुनाते। किसान बैल क्रय करते समय परख करते हैं—पूंछ पर हाथ देते हैं। जो बैल हाथ देते ही आराम से निद्राविष्ट सा ढीला पड़ जाता है, उसका दाम पांच रुपये। हाथ पड़ते ही जो छिनमिना कर उछल कर उठ पड़ता है उसका दाम पचहत्तर रुपये। इनका दाम

पचहत्तर रुपये—आयंगर महाशय प्रभृति का। खूब रोख ! कितनी बाधा पड़ी, कोई भी बाधा नहीं मानी। दर्शन करने से लोगों को चैतन्य हो जाएगा। ठाकुर तभी तो कहा करते, पढ़ने से सुनना भला, सुनने से देखना भला।

श्री म (स्वगत)—पट परिवर्तन। (भक्तों के प्रति) जभी तो ठाकुर कहते, मां, अब भी मेरी अवस्था बदल रही हैं। दर्पण के भीतर से दिखाई देता है। एक छवि उठाकर हटाकर और एक दी है। इसी प्रकार सब बदलती हैं। सब उनकी इच्छा।

(2)

मॉर्टन स्कूल। प्रातः साढ़े सात। विनय और छोटे अमूल्य रात को यहां पर थे। वे अब काशीपुर डाक्टर बक्शी की बाड़ी जा रहे हैं। वे वहां रहते हैं। श्री म से विदा लेते हैं। श्री म दोतल की सीढ़ी के ऊपर दण्डायमान हैं। प्रणाम करते ही वे उनके कल्याण के लिए उपदेश देते हैं।

श्री म (विनय और अमूल्य के प्रति) —नारायण आयंगर महाशय का संन्यास हो गया है। अब नित्य मठ में जाना उचित। टटका सन्यासी, तीव्र वैराग्य अब। दर्शन करने से चंतन्य हो जाता है। ठाकुर बोलते, पढ़ने से सुनना अच्छा। सुनने से देखना अच्छा। हजार पुस्तकें पढ़ो कुछ होगा नहीं, एक बार देखने से जो होता है। तीव्र वैराग्य। लड़कों का life (जीवन) ही फिर क्या ? इधर जाते, तो फिर चाहे उधर चले गए। सोचो इनका सब नाम, यश, धन, दौलत, कुल, शील, उच्च राजपद। सब छोड़कर चले आए हैं। आजकल अनेक क्षण मठ में रहना उचित — रहकर इनका सब watch (देखना) करना। 'किमासीत व्रजेत किम्।' Idea and ideal, body (भावना और आदर्श, नवरूप) धारण करते हैं। वह देखना चाहिए जाकर।

अब वेला नौ का। श्री म निज कक्ष में चार तले पर बैठे हैं खाट पर, पश्चिमास्य। उनके बाईं ओर बेंच पर मोहनबांशी और

जगबन्धु बैठे हैं। मोहनबांशी की वयस चालीस की होगी । उनको साधुओं की सेवा करने के लिए कहा था श्री म ने।

मोहन बांशी (श्री म के प्रति) — अब समझा हूँ, नित्य जाऊंगा (गदाधर आश्रम)। यह आप का आदेश है, उनसे कहूँगा ।

श्री म (विरक्ति सहित)—-वैसा कहने का क्या प्रयोजन ? मैं साधुओं के दास के दास का दास। इतनी बडी बड़ी बातों की क्या आवश्यकता ? साधुओं के आश्रम में हाथ जोड़कर प्रवेश करना चाहिए। क्यों ? ठाकुर कहते कि ना, ऊंचे टीले पर जल ठहरता नहीं। जभी (हाथ जोड़कर मस्तक नत करके) ऐसे करके जाना चाहिए । सेवा करनी चाहिए साधुओं की, सेवा लेते नहीं । पहले से ही ये सब विषय विचार करके ready (प्रस्तुत) हो जाना चाहिए ।

साधु-लोग भोग- वोग छोड़े हुए हैं। तभी स्मरण रखें साधुगण गृहस्थों के पास रहते नहीं । गृह अर्थात् भोग का अड्डा । विषयियों के संग अधिक रहने से वैसा ही हो जाता है। विषयी अर्थात् जो रुपया-पैसा, मान-सम्भ्रम, देहसुख ये सब लिए हैं। साधु ये सब कुछ नहीं चाहते।

आग के पास रहने से देह गरम होती है। बरफ के पास रहने से ठंडी होती है। गृह में जो हैं वे तो वही सब लिए हुए हैं कि ना ।

नाना प्रकार चाहने पर ही मुश्किल। उसके बिना जीवन धारण अत्यन्त सहज है । विद्यासागर महाशय बोलते, क्यों जाऊं मैं अपर का दासत्व करने ? तीन मुट्ठी चावल उबालकर नमक के साथ खाऊंगा । वह होने से ही हो गई problem solved (समस्या समाधान ।)

उसके लिए ही आप को दक्षिणेश्वर में रहने को कहा था । ऐसा स्थान ! भगवान में जिनका प्रेम है, उनके लिए कुकुरवत् वहां पर पड़े रहना ही ठीक है। राम से कहा था वशिष्ठ ने, "राम तुम आओगे सुनकर यहां पर रह रहा हूं। नहीं तो दासत्व नहीं करता। तुम्हें नित्य

दे ख पाऊंगा, जभी यही हीन कर्म स्वीकार किया है।" वशिष्ठ मंत्री थे कि ना। 'पेटे खेले पीठे सय।' (पेट भर खाने से पीठ पर सहन होता है।)

विजय थे भगवान के द्वारी। सनत्, सनन्दन, सनातन, और सनत्कुमार ये चार जन आदि ऋषि गए दर्शन करने। जय विजय ने जाने नहीं दिया। वे बोले, "क्या, हमारा प्राण इतना व्याकुल भगवान-दर्शन-जन्य। तुम ने जाने नहीं दिया, हम अभिशाप देते हैं हमें यह कष्ट देने के लिए, तुम्हें मर्त्य में जाकर जन्म लेना होगा। भगवान को यह बात पता लगने पर वे ऋषियों के पास जा उपस्थित हुए। बोले, "आज मेरा कैसा शुभ दिन है। आप लोगों के दर्शन करके धन्य हुआ हूँ।" इनको सुखासन पर बिठाकर तुष्ट करके तत्पश्चात् जय विजय के पास गए। वे क्रन्दन करते हैं। उनसे कहा, "धन्य हो तुम लोग! मेरी जो दिवानिशि चिन्ता करते हैं उन्ही ऋषियों ने तुम्हें अभिशाप दिया है। उससे भी तुम्हारा धैर्य विनष्ट नहीं हुआ। तुम लोग क्रन्दन करते हो फिर? धन्य तुम! क्यों, भय क्या, तुम्हारे मर्त्य में जाने पर मैं भी तुम्हारे संग मर्त्य में जाऊंगा।"

श्री म (मोहनबाँशी के प्रति)— साधु के आश्रम में जाकर सेवा करनी चाहिए। वे लोग दौड़ा-दौड़ी कर रहे हैं, तब एक जन जाकर ध्यान जप करेगा, वह होता नहीं। एक बार मां ठाकुरुण के पास कई स्त्री भक्त गई थीं। सब बैठकर ध्यान करने लगीं, (ध्यान का अभिनय करके) ऐसे करके आंखे मूंदकर। मां तब गोबर से एक स्थान लीप रही थीं। एक भक्त (श्री म की धर्मपत्नी) उठी और जाकर मां के संग लीपने लगी। मां बोलीं, "तुम आ गई, वे सब ध्यान कर रही हैं।" स्त्री-भक्त ने कहा, "छिः, ऐसे ध्यान के मुख में आग लगे। आप तो गोबर में गुड़ुच (लिपटी हुई) और मैं बैठे बैठे ध्यान करूंगी? मैं तो कर सकूंगी नहीं।" वही भक्त ठीक समझी है, क्या

करना चाहिए, क्या नहीं ।

वैष्णव लोग खूब बोलते हैं 'आमि मालाय आछि" (हास्य) । एक को किसी काज से जाना पड़ेगा, यह पता लगते ही वह माला लेकर बैठ गया । सब खोजते हैं, अमुक कहां है, बाजार जो जाना होगा । मिलता ही नहीं वह फिर । एक ने वहुत खोज-खाज कर सन्धान पाया और कहा तुम्हें तो बाजार जाना होगा । उसने उत्तर दिया, "मैं अब माला में हूँ ।" (सब का हास्य) । अन्य एक ने कहा, और अमुक काज भी तो करना होगा तुम्हें । तब भी वही उत्तर—"मालाय आछि ।" (माला में हूँ ।) ज्योंहि और एक ने कहा, अरे आओ आहार परिवेशन हुआ है । वह उत्तर देता है, "आ रहा हूँ, माला हो गई है" (सब का उच्चहास्य) । ये सब आलसी लोग । इनका न तो इधर का होता है और न उधर का ।

श्री म (जगबन्धु के प्रति)— ठाकुर ने मुझ से कहा था, 'एक पक्षी की छवि यदि कोई बनाए, अंडे से रहा है, दृष्टि फैल फैल । (अर्धनिमीलित ध्यानस्थ ।) योग का खूब उद्दीपन होता है उससे । उस कुत्ते की गल्प भी वैसी ही । प्रभु-भक्त कुकुर ने प्रभु के शोक में देह त्याग कर दी । कोई यदि बनाए ऐसी एक छवि तो उससे भी योग का खूब उद्दीपन हो । प्रभु की कबर के ऊपर बैठे रहकर शरीर दे दिया । यह पूर्ण प्रेम और पूर्ण संन्यास का लक्षण है ।

श्री म (मोहनबांशी के प्रति)— 'He will not come'— इसी नाम की छात्रों की एक कविता है । एक जन का कुत्ता था । वह कुत्ते को खूब प्यार करता था । वह जन हठात् मर गया । वह कुत्ता जाकर उसकी कबर पर जो बैठा फिर उठा नहीं । ग्रीष्म गया, शीत आया । वह वहां पर ही बैठा है । स्कूल के छात्र कभी कभी कुछ खाने को दे देते और बोलते, —He will not come. शीत में आहार न मिलने से शरीर खूब दुर्बल हो गया, जभी सूखकर कांटा होकर कबर के नीचे गिर गया । किन्तु ज्योंहि मृत्यु का समय आया, त्योंहि भीषण

आर्तनाद करके छलांग मारकर कबर के ऊपर जा पड़ा और तत्क्षण ही मृत्यु हो गई।

मोहनबांशी ने कई बार कहा शास्त्र में यह है, शास्त्र में वह है।

श्री म (अधीर होकर)— शास्त्र शास्त्र करने से क्या होगा ? कौन लेता है शास्त्र की बात ? शास्त्र तो बोलता है, साधुसंग करो, साधु सेवा करो, किन्तु सुनता कौन है ? खाली बक-बक करता है।

श्री म (जगबन्धु के प्रति)— गीता दें तो, उलट दिया जाय।

भक्तियोग की व्याख्या करते हैं। द्वादश अध्याय।

श्री म (भक्तों के प्रति) —अर्जुन को संशय हुआ कौन सा पथ ठीक है। जभी प्रश्न किया ज्ञानयोगी बड़ा, कि भक्तियोगी बड़ा ? जो निराकार निर्गुण ब्रह्म की उपासना करते हैं, वे बड़े किंवा जो विराट्-रूपी, सगुण ब्रह्म की उपासना करते हैं, वे बड़े ?

श्री कृष्ण बोले, निराकार उपासना बड़ी कठिन, सगुण उपासना अच्छी। और बोलें, जो सर्वदा मेरी बात चिन्तन करता है श्रद्धा के साथ, वही युक्ततम। अर्थात् अर्जुन इसी सगुण उपासना का अधिकारी है जभी उनके लिए इसे ही बड़ा बताया। अधिकारी भेद से सब ही बड़ा और भला। छोटा बड़ा नहीं इसमें। ठाकुर इसीलिए तो कहते, जो जिस के पेट को सहे, उसके लिए वही भला। छोटा बड़ा न कहकर वरं कहना ठीक है, कौन सा उसके पक्ष में suitable, easier and natural (उपयुक्त, सहज और स्वाभाविक) है। अर्जुन के लिए तो यही 'लगना' है। भगवान ने तत्पश्चात् सगुण उपासना के चार alternative (पक्ष) दिए।

प्रथम, मेरे सगुण ध्यान में मग्न होओ।

द्वितीय, वह न कर सको, चेष्टा करो, अभ्यास करो।

तृतीय, वह न कर सको 'मत्कर्म' करो।

चतुर्थ, वह भी न कर सको तो सब काज करो, किन्तु benefit (लाभ) स्वयं न लो। सब शुभ कर्म निष्काम होकर करने के लिए बोले।

सत्कर्म माने कुछ कर्म चुन लेना, जो directly (सीधे) भगवान का उद्दीपन करते हैं। नवधा भक्ति, वैधी भक्ति की बात बोलते है, श्रवण कीर्तनादि की। 'सर्वकर्म अर्थात् जो कुछ किया जाय शुभ-अशुभ स्वाभाविक सब काम। 'सर्वकर्म' जैसे बड़ा circle (वृत्त) और 'सत्कर्म' छोटा circle (वृत्त)। दोनों ही हैं निष्काम कर्म। यहां तक कि स्वाभाविक कर्म, या दुष्कर्म सब ही उनमें समर्पण करना उचित। सम्पूर्ण शरणागत होना। अपना कुछ ईश्वर का इससे होता नहीं। सब उनका —देह, इन्द्रिय, मन बुद्धि, चित्त, अंहकार—सब उनमें उत्सर्ग करके कर्म करने की चेष्टा। यह भी तो ठीक ठीक होता है भगवान दर्शन होने पर। उसके पूर्व साधक अवस्था में सिद्धान्त को मान लेने की sincerely प्राणपण से यथाशक्ति चेष्टा करना।

अर्जुन को युद्ध में लगाना होगा। जभी सर्वकर्म-फलत्याग श्रेष्ठ है, यही बात बोले। 'अभ्यास से ज्ञान' —intellectual understanding बड़ा। उससे ध्यान, अर्थात् concentration बड़ा। उससे भी बड़ा सर्वकर्मफलत्याग।

श्रवण, मनन, निदिध्यासन। गुरुमुख से सुनकर फिर अभ्यास करना चाहिए। इसके पश्चात् अपने आप चिन्तन करके, समझ कर फिर उसी विषय का ध्यान। भोग वासना रहने से ध्यान भी ठीक होता नहीं। जभी उनका दर्शन होता नहीं। इसीलिए शांति पाता नहीं। इसी कारण तो बोले, सर्व कर्मफल त्याग। बोले, ज्ञातसारे वा अज्ञातसारे भलामन्दा जो करो सब मुझ में समर्पण करो, तो फिर शांति पाओगे। अर्जुन को इसी प्रकार शांति का पथ दिखा दिया।

अब उत्तम भक्त के लक्षण बता रहे हैं। उत्तम भक्त 'सर्वभूते' भगवान को देखते हैं। जभी सब के ऊपर उनको प्रेम होता है। तब तो द्वेष फिर किस से करेंगे ? सब ही अपने मित्र। सब के दुःख में ही तब करुणा होती है। इसीलिए 'अद्वेष्टा', 'मैत्र' और 'करुण'। 'निर्मम, निरंहकार'— ईश्वर कर्त्ता, मैं अकर्त्ता यह बोध हो गया है, जभी सब

ही ईश्वर के — मेरा', 'मैं' तब भी। सुख दुःख दोनों ही ईश्वर का प्रसाद। यह शरीर मन भी उनका। सुख दुःख भी इसीलिए उनके— क्योंकि मैं भी तो जो उनका। तो फिर अब कौन सुख दुःख बोध करे ? इसका अर्थ यह नहीं है कि सुख दुःख बोध होगा नहीं। देह रहने से अवश्य ही होगा। किन्तु मन के ऊपर ये सब आधिपत्य नहीं जमा सकेंगे। 'क्षमी' अर्थात् क्षमाशील। यह एक लक्षण भक्तों का। शक्ति होते हुए भी प्रतिकार न करना क्षमा का लक्षण है। कोई अन्याय कर भी ले तो भी दूसरे की तरह धैर्यच्युत नहीं होता। वे देखते हैं भगवन्माया से वह करता है, इसलिए क्षमाशील होता है। अन्याय को प्रश्रय देना क्षमा नहीं जिसके ऊपर क्षमा प्रयोग करेगा, उस व्यक्ति को आत्मग्लानि होनी चाहिए इस क्षमा प्रदर्शन पर।

'सन्तुष्टः सततं योगी' — भक्त को सर्वावस्था में ही सन्तोष। क्योंकि वे देखते हैं ईश्वर ने मुझे इस अवस्था में रखा जैसे बिल्ली का बच्चा, मां के बिना नहीं रह सकता। जभी योगी। योगी स्वभावतः ही संयतचित्त होते हैं, चंचल नहीं, गंभीरात्मा। 'दृढ निश्चयः' उनके मन में जो भाव उदय होता है उसको इश्वर का आदेश जानकर उस पर दृढचित्त होते हैं। जभी कर्तव्य में अचंचल। जिसे करने के लिए स्थिर करते हैं जगत् उलट जाने पर भी वे वही करेंगे।

भक्त किसी को भी उद्वेग देते नहीं, निज भी उद्विग्न नहीं होते। किसी के पास से उन्हें कुछ भी प्राप्य नहीं। सम्पूर्ण शरणागत होने से, अपनी किसी भी विषय में कामना न रहने से हर्ष, विषाद, भय, उद्वेग नहीं। निज का कुछ भी नहीं —सब उनका। वांछित वस्तु की प्राप्ति पर हर्ष न मिलने पर विषाद, इसके लिए ही भय और उद्वेग। इनकी निजत्व में अन्य कोई भी वांछा नहीं। बाइबल में है ऐसा ही एक चरित्र जॉब (Job)।

किसी की भी अपेक्षा नहीं, जभी 'अनपेक्षः'। कोई कुछ कर देगा यह भरोसा नहीं रखते। एक मात्र भगवान के ऊपर निर्भर। 'शुचि' अन्तरबहिः शुचि। बहिःशुचि स्नान आदि से होती है। अन्तः शुचि होती

भगवान चिन्तन से। 'श्री विष्णु, श्री विष्णु' बोलने से अन्तर शुद्ध हो जाता है। 'दक्षः' माने सब काज में पटु। Sense of proportion (विचार बुद्धि) रहती है। जभी ठाकुर बोलते, 'भक्त होबि तो बोका होबि केनो ?" (भक्त होगा तो मूर्ख होगा क्यों ?)

'उदासीनः' अर्थात् भगवान में मन निबद्ध। तभी संसार की petty things (तुच्छ वस्तुएं) उनके मन को आकर्षित नहीं कर सकतीं। पक्षपातित्व नहीं। 'गतव्यथः'—भक्त को दुःख विचलित नहीं कर सकता आत्यन्तिक भाव से। ठाकुर ने बहुत दुःख सहे हैं। तभी वे बोलते, 'श, ष, स।' जो सहता है वह रहता है, जो नहीं सहता वह नष्ट हो जाता है। दुःख कष्ट तो आता जाता रहता है। किन्तु वह अन्त में मन को majestic height (अति ऊंचे) अर्थात् भगवान में उठा देता है। यह बोध भक्तों का हो जाता है। 'सर्वारंभपरित्यागी' अर्थात् all beginnings (सब आरभ) परित्याग करते हैं। अर्थात् नूतन कार्य में हाथ नही देते ! जो आ पड़ता है वही करते जाते हैं।

यथार्थ भक्त का कोई द्वन्द्व नहीं—हर्ष, द्वेष, शोक, आकांक्षा इन में से एक भी नहीं। काम्य वस्तु की प्राप्ति में हर्ष, अप्राप्ति में द्वेष होता है। और फिर वांछित वस्तु के खो जाने पर शोक होता है। भक्त की ईश्वर के अतिरिक्त कोई भी वांछा नहीं। जभी शुभ अशुभ बोध नहीं। सब शुभ उनके निकट। जिसे हम समझते हैं वे उसे भी कल्याणकर देखते हैं, क्योंकि वह ईश्वरेच्छा से जो होता है। ईश्वर सर्वमङ्गलमय। इसीलिए हर्ष द्वेषादि नहीं।

भक्त शत्रु मित्र में समान, मान अपमान में समान, शीत उष्ण में, सुखदुःख में समान। निन्दास्तुति में समान। और थोड़े में सन्तुष्ट। 'अनिकेतः' —घर द्वार नहीं। Personal property (व्यक्तिगत सम्पत्ति) कुछ भी नहीं। जैसे आंधी में झूठी पत्तल। बाड़ी घर नहीं तथापि 'स्थिरमतिः'। उन्मादी का मन अस्थिर। भक्त का मन भगवान में सन्निविष्ट। जभी स्थिरबुद्धि, स्थितप्रज्ञ।

भक्त के इन सब अलौकिक लक्षण- समूह को 'अमृतम्' कहा है।

इसके माने जिसके ये होते हैं वह मुक्त पुरुष । वे जन्म-मरण–चक्र के वाहर। तभी 'अमृतन्' । किंवा अमृत जैसे अमर करता है वैसे ही ये सब भी अमर करते हैं — भगवान लाभ करवा देते है।

ये सब लक्षण जिन्होंने भगवान दर्शन किया है उनमें प्रकाशित होते हैं। और जो भगवान दर्शन की चेष्टा करते हैं उनका आदर्श उनका साधन हैं ।

ठाकुर के जीवन में वे समस्त देखे हैं। गीता का ही जीवन था कि ना !— गीता-विग्रह श्री रामकृष्ण ।

श्री म (मोहनबाँशी के प्रति)— उनमें कभी भी द्वेष नहीं था। सब ही जो वे होकर रह रहे हैं तो फिर द्वेष कैसे होता ? अपने इष्ट को कैसे घृणा करेंगे ? ठाकुर सब को भगवान का अधिष्ठान जानकर नमस्कार करते।

श्री म (भक्तों के प्रति)— सब के भीतर ईश्वर, जभी सब ही मित्र। किसी का भी दुःख देखने से करुणा से ठाकुर का हृदय विगलित हो जाता। माथुर बाबू के संग तीर्थ में गए। गरीबों को देखकर बड़ी करुणा हुई। तभी माथुर को उन्हें खिलाने के लिए बोले । और एक एक करके नूतन धोती दिलवाई। और एक एक पली (कड़छी) सिर का तेल । 'मेरा' बोल नहीं सकते थे, बोलते 'यहां का' । रामलालों को कितना कष्ट, किन्तु उनके लिए किसी के निकट से कुछ मांग नहीं सकते थे। ममता नहीं, अहंकार नहीं। इसलिए क्या भक्तों के लिए ममता नहीं थी ?—यह बात नहीं । भक्तों को मां का जन देखते, तभी ममता रखी थी। ठाकुर का अहकार भी वही — मैं मां के अंक का शिशु, तभी विद्या का अहंकार। यह ममता, यह अहंकार दोष का नहीं । मैं विद्वान, मैं, धनी, मैं मानी ये सब खराब। ये मेरा पुत्र, यह मेरा गृह— ममता यह बुरी । और फिर सुख दुःख में समान बोध था । माथुर बाबू सेवा करते — उसमें जैसे उनकी मृत्यु के पश्चात् लड़के देखते नहीं थे, उसमें भी वैसे ही । माथुर

बाबू को मृत्यु के पीछे खूब कष्ट हुआ था सेवा का। त्रैलोक्य आदि लड़के वैसा नही देखते थे। खूब क्षमाशील थे ठाकुर। माथुर बाबू के कुलगुरु कालीघाट के एक हलदार थे। ठाकुर को माथुर प्राणापेक्षा प्यार करते, उनके कहने पर कितना अर्थव्यय करते हैं देखकर ईर्ष्या हुई थी। जभी उसने एक दिन माथुर बाबू के जानबाजार के गृह में पैर मारा था। ठाकुर तब भावस्थ होकर गिर गए थे। पदाघात करके बोले थे, बोल तूने क्या जादू टोना किया है माथुर पर? ठाकुर ने माथुर को यह बात बताई नहीं। बताने पर रक्षा नहीं थी। टुकड़े टुकड़े करके काट के डाल देते उसको।

ठाकुर का कभी भी अभाव बोध नहीं देखा। मां जिस अवस्था में रखती हैं उसमें सन्तुष्ट। माथुर बाबू के शरीर के जाने पर कोई देखने वाला नहीं था। एक या दो बजे के समय सूखा कड़कड़ा प्रसाद खाते। इधर पेट खराव। बिछौने आदि सब मैले फटे हुए। किन्तु उसमें भी असन्तोष नहीं, सदा सन्तुष्ट। दृढ निश्चय— असुख के समय कविराज को कहा, जल नहीं पीऊंगा, तो छः मास जल पीया नहीं। एक दिन चैत्रमास, खूब गरमी। ठाकुर बलराम बाबू के घर आ हाजिर तीन के समय। आकर बोले. 'कह दिया था जाऊंगा तीन बजे, तभी आया हूँ। किन्तु बड़ी धूप है।'

उनमें हिंसाद्वेष नहीं। तभी उनके पास रहते हुए कोई भय या उद्वेग नहीं पाता था, शिशु के निकट जैसे। कालीबाड़ी के कर्मचारी गण अन्य भाव के लोग थे। तीस वर्ष उनके संग ही रहे। कोई भी उद्वेग नहीं।

किसी के भी ऊपर प्रत्याशा भी नहीं थी ठाकुर को। विजयकृष्ण गोस्वामी ने कहा, रख ही लीजिए ना। वे न दें तो आएगा कहां से? एक जन भक्त तीन कुरते ले गए थे। एक रख कर दो लौटा दिए। उस पर गोस्वामी महाशय यह बात बोले थे। ठाकुर ने बाधा देकर कहा, 'नहीं, मुझे संचय करना नहीं। मां रहती हैं। मां ही सब देती हैं। तुम अमुक राजा मुझे मानोगे, कि तुम केशव सेन मुझे बड़ा बोलोगे,

तो मैं बड़ा होऊंगा, यह भाव उनमें था नहीं ।

ठाकुर की सारी चीज बस्त परिष्कृत संजीसवंरी रहतीं । ठाकुर की cleanliness (शुद्धि) के ऊपर एक विशेष तीक्ष्ण दृष्टि थी । साफ स्वच्छ रखना, सजा संवार कर रखना उनका स्वभाव था । sense of proportion (विवेचना बुद्धि) भी खूब थी । कहा था, 'अच्छा, यह जलचौकी यदि बारह आने की होती है, तो फिर वह स्टूल दो रुपये का क्यों होगा ?' अमुक भक्त के पास रहे बिना सेवा न करने पर चलेगा नहीं, यह अपेक्षा थी नहीं । देखते, मां ही एक जन को लाकर रखती हैं और फिर हटा देती हैं । एकजन भक्त (राम) ने कहा, 'फिर भी यह (लाटु) रहेगा यहां परठाकुर की सेवा के लिए ?' ठाकुर ने उत्तर दिया, उसकी इच्छा हो तो रहे । किसी के ऊपर निर्भरता नहीं । सब भार मां के ऊपर ।

ठाकुर संसार की कोई भी वस्तु चाहते थे नहीं । ममता बुद्धि भी थो नहीं । एक वस्तु किसी ने दी, बालक को न्याईं आह्लाद करते । क्षण परे और मन नहीं उस वस्तु पर । दस हजार रुपये देने चाहे लक्ष्मीनारायण मारवाड़ी ने । रुपये की बात सुनते ही मूर्छा । कहते, 'नाटो, (लाटु) की नून देने की क्षमता नहीं, तब भी उसको प्यार करता हूं ।' क्यों ? अपना शिष्य होने के कारण नहीं, मां का जन है इसलिए ।

उनका शत्रु मित्र में भेद नहीं था । कालीबाड़ी के कर्मचारीगण कितनी यातनाएं देते, किन्तु वे अग्रसर होकर उनका भला करते । मान अपमान में भी समान । इतना मान देते केशव बाबू, उस पर लक्ष्य नहीं । और फिर नन्दन बागान में अपमान किया । खाने के लिए बुलाया नहीं । किन्तु स्वयं जाकर, अग्रसर होकर खाने के लिए बैठ गए । मांग कर पूरी नून छुआ छुआ कर खा लीं । पीछे कहीं अकल्याण न हो गृहस्वामी का । किन्तु तरकारी नहीं लीं, एक अन्य प्रकार की स्त्री देने आई थी !

निन्दा स्तुति में भी समान थे । हाजरा महाशय निन्दा करते ।

वे उल्टा उसको प्यार करते । अपना दूध का हिस्सा देते । और दक्षिणेश्वर में अपने पास रख लिया। विजय कृष्ण गोस्वामी, केशव बाबू प्रभृति भक्तगण कितनी प्रशंसा करते, किन्तु उस पर भ्रूक्षेप नहीं।

'अनिकेत:' दरवान ने भूल से ठाकुर को बाहर निकल जाने के लिए कहा, कालीवाड़ी से। झट चल दिए हंसते हंसते, कंधे पर अंगोछा। कहां पर रहूँगा, वह चिन्ता नहीं । त्रैलोक्य ने देख लिया, पुकार कर जिज्ञासा की, कहां जा रहे हैं छोटे भटचार्य मोशाय ? ठाकुर बोले, क्यों, यही जो कहला भेजा है चले जाने के लिए ? त्रैलोक्य दुखित होकर बोला, कैसा जलाते हैं, देखिये तो, कैसा अन्याय है। आपको किसने कहा है चले जाने के लिए ? लौट आइए और फिर हंसते हंसते लौट आए।

ठाकुर के जीवन में ये सब ही अवस्थाएं देखी गई हैं। शास्त्र की इन सब साधनों की बात जब समझ में न आए तब उनके जीवन की घटनावली की कथा स्मरण करने पर सहज ही समझ में आ जाता है इन सबका समझने का ही मूर्त्त रूप ठाकुर । केवल शास्त्र, भाष्य पढ़ कर समझने का उपाय नहीं है — कुछ बातें मात्र हैं । किन्तु ये सब जीवन में घटी हैं, ऐसा लोग देखने पर समझ में आता है ये सब कथा मात्र नहीं है। ये सब गुण रूप धारण करके आते हैं। सिद्ध पुरुषों में भी ये सब के सब दिखाई नहीं देते। ठाकुर में सब के सब देखे हैं। वे सिद्धों के सिद्ध। अवतारादि ईश्वर कोटियों में इन सबका प्रकाश होता है।

वेला साढ़े दस।

मॉर्टन इन्स्टिटयूशन, कलकत्ता ।
23 मार्च, 1924 ई० ।
9वां चैत्र, 1330 (बं०) साल; रविवार ।

—o—

षष्ठ अध्याय

मठ भक्तों का 'बंगाल क्लब'

(1)

मॉर्टन स्कूल। चारतले की छत। अब सकाल आठ। पूर्व दक्षिण कोण में जगवन्धु और छोटे जितेन बैठे पाठ कर रहे हैं। श्री म निज कक्ष से बाहर आकर छत पर खड़े हैं। हाथों में घृतपूर्ण बड़ी एक बोतल। श्री म बातें करते हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—इसको मायावती की ब्रांच में देना होगा साधुसेवा के लिए। (छोटे जितेन के प्रति)— ठाकुर ने कहा था, साधुसेवा करने से भला होता है। क्या कहते हो? पंचवटी में कई साधुजन आए। ठाकुर एकजन भक्त (श्री म) को साधुसेवा की व्यवस्था करने के लिए बोले। कहकर, एक गल्प सुनाने लगे। द्रौपदी स्नान कर रही है। तब घाट पर एक साधु भी स्नान कर रहे थे। उनका बहिर्वास (चादर) जल में बह गया। देखकर द्रौपदी ने अपने वस्त्र से अर्धेक फाड़कर साधु को दे दिया। कौरव सभा में वस्त्रहरण के समय द्रौपदी आकुल होकर क्रन्दन करती है लज्जा निवारण के लिए। भगवान दर्शन देकर बोले, "तुमने क्या कभी साधु को वस्त्र दान किया था?" द्रौपदी ने तब उसी घटना की बात कही। सुनकर भगवान बोले, तब और भय नहीं। वस्त्र जितना ही खिचता है उतना ही बढ जाता है। साधुसेवा का ऐसा माहात्म्य!

आज 24 मार्च, 1924 ई०; सोमवार, 10 वां चैत्र, 1330 (बं)

साल। अब अपराह्न साढ़े पांच। श्री म चारतले की छत पर बैठे हैं चेयर पर उत्तरास्य। भक्तगण कोई फर्श पर, कोई कम्बल पर और कोई बैंच पर बैठे हैं। बड़े जितेन, जगबन्धु और शचीनन्दन श्री म के साथ बीच में इधर उधर की बातें कहते हैं। इसी समय एक ब्रह्मचारी आ गए पुरूया से। स्वामी कृष्णानन्द ने विशेष रूप से कह दिया था श्री म के दर्शन करने के लिए। ब्रह्मचारी इस समय बेलुड़ मठ से आए हैं। वे बैंच पर पश्चिममुखी होकर बैठे हैं। श्री म आनन्द सहित कृष्णानन्द जी का समाचार ले रहे हैं।

ब्रह्मचारी (अतिविनीत भावे) — कुछ ठाकुर की कथा कहिए !

श्री म—पंचवटी में एक साधु आए हैं। ठाकुर ने एक भक्त से उनकी सेवा की व्यवस्था करने को कहा। (यह कहकर पूर्वकथित गल्प बोले।) ठाकुर ने कहा था, साधुसेवा करना भला, क्या कहते हो ? क्यों यह भला नहीं ?

कुछ दिन मठ में रहकर साधुसंग और साधूसेवा करके तत्पश्चात् वहां जाइएगा। ठाकुर कहते, साधुसंग गृहस्थों को दरकार, साधु को भी दरकार। कैसे, ठीक है ना ?

कर्म करना पड़े तो निष्काम कर्म करना चाहिए। जैसे, आश्रम करता हूँ, Subscription (चंदा) उठाकर, किन्तु स्वयं भिक्षा करके खाऊंगा। विवेकानन्द बताते, बाबा काली कमली वाले की बात। बताते, ठीक ठीक निष्काम कर्म उसी एक ही साधु को करते देखा है। चंदे से लाख लाख रुपया उठाया। उससे उत्तराखण्ड के रास्ते घाट बनाए। बीच बीच में धर्मशाला और सदाव्रत। ऋषिकेश में साधुओं के लिए अन्नसत्र।

वे निज जल भरते, आटा गूंधते, रोटी सेकते। संग में और लोग भी कोई कोई सहायता करते। साधुओं को वही रोटी देते। स्वयं भी बाहर आकर साधुओं के संग खड़े होकर वही रोटी भिक्षा में लेते। इधर उधर फिर नंगे। एक मात्र काला कम्बल शरीर पर। ज्योंहि काजकर्म सब ठीक ठीक चलने लगा, ओ मां वे अदृश्य हो गए — एकदम डूब

भागे, disappear (अदृश्य) हो गए । आज तक भी कोई उनकी खबर जानता नहीं । इसका नाम है निष्काम कर्म ।

श्री म (भक्तों के प्रति) —विवेकानन्द ने स्वयं भी वैसा ही किया । वेस्ट में इतना सब मान पाया । इस देश में आकर मात्र एक ही कौपीन पहने हैं । सब दे दिया गुरु-भाइयों को । भक्तों के पास चिट्ठी लिखकर भेजते, आप मेरे खाने पीने की व्यवस्था कर दें । मैं अन्न भिक्षा करके खाता हूँ । पहले की न्याईं भाड़े की सवारी गाड़ी में पांच पैसे देकर बराहनगर यातायात भी करते । नंगे पांव हट्-हट् करके चलते ।

ठाकुर ने विवेकानन्द से (तब नरेन्द्र) कहा था एटीन एट्टी फाइव (1885) की दोलयात्रा के दिन दक्षिणेश्वर मन्दिर में, 'बाबा, कामिनीकांचन त्याग बिना किए कुछ होगा नहीं ।' स्वामी जी ने जो किया, इसका कहते हैं कामिनी-कांचन-त्याग ।

सुना जाता है, बाबा काली कमली वाले ने स्वामी जी को पहचान लिया था । तब तक अमरीका नहीं गए थे । ऋषिकेश गए थे । कहा था शायद उसी सत्र का भार लेने के लिए । किन्तु भगवान ने उनके लिए जगत् सिंहासन की रचना कर रखी थी । वे क्यों जाएंगे यहां कर्म करने ? वे तो जगत् को शिक्षा देंगे । (ब्रह्मचारी के प्रति) कैसे, यह ठीक है ना ?

ब्रह्मचारी—अच्छा, कामना बिल्कुल ही नहीं करते ?

श्री म — निज के लिए नहीं – 'लोकहिताय' हो सकती है । वह भी फिर गुरु-लाभ होने पर उनकी आज्ञा लेकर करनी चाहिए । वे जानते हैं कि ना कौन सा मंगलकर है । गुरु माने, ईश्वर ही मनुष्य रूप धारण करके आते हैं । यही विश्वास चाहिए । उनका आदेश लेकर करना । यही पथ ।

विलायत में बिशप-आफ-नोरफोक् ने एक बार लिखा था "टाइम्स्" में । कहा था, "मैं जानता हूं, मैं जो बोलूंगा उससे

बहुत ही लोग असुन्तुष्ट होंगे। किन्तु क्या करू सत्य के लिए मुझे यह बोलना पड़ेगा। सत्य प्रकाश करना ही पड़ेगा।"

बोले थे, ये जो चर्च आदि हो रहे हैं, मिशनरीगण कर रहे हैं, ये सब क्राइस्ट के आदर्श के अनुगामी नहीं हैं। जो करते हैं वे अपनी सुविधा के लिए ही सब करते हैं, ऐसा लगता है। अपना अच्छा घर, सामान, नौकर, conveyance (सवारी)— ये सब होते हैं। क्राइस्ट के शिष्यगण जैसा आचरण करते थे अब ये वैसा नहीं करते। यह apostolic (क्राइस्टशिष्यों का आचरणीय धर्म) नहीं। वे थे पूर्ण संन्यासी। उनका आदर्श था क्राइस्ट का महावाक्य: 'The foxes have holes, and the birds of the air have nests; but the son of man hath not where to lay his head'. (वन्य शृगालों का वासस्थान है गर्त में, वातास में उड़ने वाले पक्षियों के घोंसले है, किन्तु ईश्वरपुत्र क्राइस्ट के पास सिर छिपाने का स्थान भी नहीं।)

श्री म (भक्तों के प्रति) — 'मैं' जाता नहीं ना, जभी 'भक्त का मैं' लेकर रहना भला। वटवृक्ष की फुन्गी निकलेगी ही चाहे हजार काटो। तो भी बिल्कुल जाती है समाधि होने पर। । वह ठाकुर की हुई थी। एक साधु (स्वामी दयानन्द) का ठाकुर के संग मिलन हुआ। ठाकुर की थी तब समाधि। एक भक्त बोले, "देखिए, देखिए, समाधि — इसको समाधि कहते हैं।" उस साधु ने समाधि की बात पढ़ी थी, सुनी थी, देखी नहीं थी। तब अवाक् होकर देखने लगे।

श्री म (ब्रह्मचारी के प्रति) आप उधर (पुरूलिया) रहते हैं। वहां जैसा एक गाना सुनाइए ना। आप लोग जहां पर हैं —ऐसे ही सब स्थान शान्त निर्जन वन में वेद प्रकाशित हुआ था। उपनिषद् का और एक नाम है आरण्यक। अरण्य में बोला गया था इसलिए आरण्यक।

दोनों बातें हैं — गृह और वन। 'गृह' अर्थात् जहां विषयों की कथा होती है। 'वन' जहां ईश्वर की कथा होती है। चैतन्य देव विषय

कथा को ग्राम्य कथा कहते। कहते, 'ग्राम्य बातें नही करोगे, ग्राम्य ब.तें नहीं सुनोगे।' कृष्णानन्द को उसी वन में ही वास करने का adaptation (अभ्यास) हो गया है, निर्जन में रहना पसन्द करते हैं।

ब्रह्मचारी ने एक रामकृष्ण स्तोत्र की आवृत्ति की । तत्पश्चात् एक भजन गा रहे हैं।

गान :— जयतु जयतु रामकृष्ण, जय भव भयहारी हे।
जयतु जयतु परमब्रह्म जय नररूपधारी हे ।
कामकांचन आँधारे धरणी डुबिलो हेरे,
उदिलो सूर्य अमित वीर्य, युगे युगे अवतारी हे।
महासमन्वय तरे, रामकृष्ण एकाधारे,
डाकछो केनो सकातरे, जगतेर नरनारी हे ।
सुनेछि अभयवाणी तुमि जग चिन्तामणि
तोमारि द्वारे अति कातरे, एसेछि दीन भिखारी हे।

श्री म (भक्तों के प्रति) आश्रम में कितने महापुरुषों के संग साक्षात् होता है। तभी इच्छा होती है आश्रम आश्रम घूमता फिरूं। कितने लोग आते हैं, सब महत् लोग। वहां (गदाधर आश्रम में) कितने भले भले लोगों के संग साक्षात् हुआ है। 'कुंड़ा' (चारा) डाला है कि ना! (बड़े जितेन के प्रति)—समझ लिया, दिघी (बड़े सरोवर) में कुंड़ा डालने पर बड़ी बड़ी मछली ऊपर तैरने लगती हैं। 'कुंड़ा' माने ईश्वर में भक्ति ।

ईश्वर ही सब करते हैं। चेष्टा भी वे। गीता में है, "पौरुषं नृषु"— चेष्टा भी वे देते हैं और फिर बिठाए भी वे ही रखते हैं।

बड़े जितेन— क्षुधा से लोग छटपट क्यों करते हैं तो फिर ?

श्री म — वे ही छटफटानी देते हैं —अन्न के लिए व्याकुलता।

महेन्द्र डाक्टर ने ठाकुर से कहा, तो फिर तुम इतना बोलते क्यों हो ? ठाकुर कहते थे कि ना, मां ही सब करती हैं। ठाकुर झट से उत्तर

देते हैं, 'वे बुलाती हैं तभी।' बस एक बात से ठंडा, शांत। कैसा ready answer (तैयार उत्तर)।

नीचे आग है इसलिए दूध खदखद करता है। आग खींच लो। तब फिर खदखदानी रहेगी नहीं।

ब्रह्मचारी — तो भला मन्दा सब ही वे करते हैं।

श्री म— उनके पास भलामंदा नहीं, सब भला। कारण, सब वे जो बनाते हैं। और फिर सब वे ही होकर रह रहे हैं। भला-मंदा यह सब हमारे पास है। वे ही फिर मनुष्य होकर कह जाते हैं तुम यह भला ही लो, खराब मन्दा छोड़ दो। इससे मेरे निकट शीघ्र आ सकोगे। वस्तुतः भलामन्दा नहीं है, 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म।' ठाकुर कहते, 'मां ही सब होकर रहती हैं, मैं देख रहा हूँ, इस पर और क्या विचार करूं ?' कोई काट सकता है यह बात ?

श्री म (भक्तों के प्रति) —सुनता हूँ, शिकागो में नित्य एक घण्टा सूअर के बच्चे काटे जाते हैं। इतने सारे बच्चे ही कहां से आते हैं, आश्चर्य ! यह भी उनकी इच्छा से होता है — इतनी सब जीव हत्या। वे इच्छा करें तो वह सब इसी क्षण बन्द कर सकते हैं। सब उनकी इच्छा। ठाकुर रामप्रसाद का गाना गाकर यही बात बोलते, तुम्हारा कर्म तुम करती हो मां, लोग कहते हैं हम करते हैं। यही जो इतना बड़ा युद्ध ही (प्रथम विश्व युद्ध, १६१४) हुआ है, वह क्या फिर मनुष्य की इच्छा से हुआ है ? उनकी ही इच्छा से हुआ है। क्या है गाने की प्रथम लाइन ?

अन्तेवासी— सकल-इ तोमर इच्छा मा इच्छामयी तारा तुमि।
तोमार कर्म तुमि करो मा, लोके बोले करि आमि ॥

ब्रह्मचारी (श्री म के प्रति)— तब तो सोचना चाहिए सब वे ही करते हैं।

श्री म — केवल वह कहने से क्या होगा ? नित्य प्रार्थना करनी होगी, इसे समझाने के लिए, जिससे धारणा हो। बाजे के बोल सब ही

सुखस्थ कर सकते हैं, किन्तु हाथ में लाना बड़ा कठिन।

ब्रह्मचारी— अब तो भक्तियोग ही भला।

श्री म— क्या फिर करना, 'मैं' जब जाने वाला नहीं है। जिसका 'मैं' चला गया है वह कर सकता है अन्य प्रकार से। किन्तु कितने लोगों का 'मैं' गया है या जाता है? हमने ठाकुर को देखा था, इसलिए समझ सकते हैं कि 'मैं' जाने का व्यापार क्या है— यह समझाना पण्डितों का कर्म नहीं। वे केवल self-delusion, self-deception (आत्म विस्मृति, आत्मप्रवंचना) लिए हुए हैं।

डाक्टर बक्शी और विनय का प्रवेश।

श्री म (भक्तों के प्रति)— दक्षिणेश्वर जाने के लिए कई दिन से ही इच्छा हो रही है। आज कुहरे के लिए साहस नहीं किया। स्टीमर लगता है बन्द थे, ट्राम शायद थी, होना भी उचित। शाम को विचार किया, मन क्यों इतना व्याकुल हुआ है दक्षिणेश्वर जाने के लिए? बूढा मनुष्य, प्राण ही चाहे निकल जा सकते हैं मार्ग में। मन को समझाया, क्यों, मन से जाने से भी होता है। समान दर्शन ही होते हैं। इसके पश्चात् ही analyse (विश्लेषण) करके सब देखकर फिर synthesise (एकत्र समन्वय) किया। तब समस्त जैसे धप करके मन में उतराने लगा। इधर को सातों सीढ़ियां (काली मन्दिर, पर चढ़ने की) नटमन्दिर, राधाकान्त, काली मन्दिर, आंगन, गंगा का घाट, नहबत, पंचवटी, बेलतला, पुकुर प्रभृति एक एक देखा। तत्पश्चात् एक संग समग्र बाग का ही दर्शन हो गया।

शास्त्र में जभी परिक्रमा की बात है। तीर्थ में जाकर अन्ततः तीन बार परिक्रमा करना उचित। परिक्रमा का अर्थ है, घूम फिर कर देखना। उससे भली प्रकार स्मरण रहेगा। तीन बार possible (संभव) सब के ही पक्ष में, जिस समय मनुष्य बिलकुल भी करना नहीं चाहता। उससे अधिक करने से दोष नहीं, वरं भला ही है। जभी शास्त्रकार लिख गए हैं अन्ततः तीन बार करो। एक बार करने से ही होता है

क़िसी किसी का, जिनकी है power of observation और retentive faculty खूब strong (अवलोकन शक्ति और धारण शक्ति अति प्रबल)। फिर अनेक बार करने में भी दोष नहीं। तो भी तीन बार करने का विधान सब के लिए है।

तीर्थ पर जाकर क्या क्या करना चाहिए ?

प्रथम, चरणामृत लेना चाहिए।

द्वितीय, बैठना चाहिए।

तृतीय, गान या स्तोत्र पाठ उच्च स्वर से करना चाहिए। दक्षिणेश्वर जाने पर मां काली और ठाकुर को गाना सुनाना चाहिए।

चतुर्थ, कहीं साधु और ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए। (सहास्य) सुन्दर पूछते हैं, "तुम ने कितना ब्राह्मण-भोजन किया ?" उत्तर आया, "दस।" यह सब करने पर मन में होता है कुछ किया। ऐसी हो है हमारे मन की constitution (गठन)।

पंचम, पूजा के लिए फल अथवा मिठाई कुछ हाथ में ले जानी चाहिए।

षष्ठ, वित्तशाठ्य न होना। वित्त माने धन, शाठ्य शठता, कृपणता। रुपये पैसे में धोखा नहीं देते। स्टिक (सोटी) घुमाकर धर्म करना, घर आकर फिर गप्पें हांकना — कैसी बहादुरी !

सुरेश बाबू का ठाकुर ने तिरस्कार किया था। वृन्दावन, प्रयाग इन सब तीर्थों पर गए थे। लौटने पर ठाकुर के दर्शन करने गए। ठाकुर ने जिज्ञासा की थी, कैसा लगा तीर्थ ? सुरेश बाबू बोले, "भला, किन्तु साधु भी पैसा मांगते हैं ! एक जगह मैंने कहा, कल दूंगा। उससे पहले ही चला आया।" सुनकर ठाकुर ने भर्त्सना की। बोले, छिः छिः, ऐसा करना चाहिए ? यह तो मिथ्या बात कहना हुआ, धोखा देना हुआ। उसके अतिरिक्त भक्तों के बिना दिए उनका चले कैसे ?

तीर्थ में पण्डों को वश में करना चाहिए। वे यहां ले जाते हैं, वहां ले जाते हैं। कहते हैं, दो, यहां पर पैसा दो पूजा दो। लोग समझते हैं

शायद ठग रहा है। सोचते नहीं क्या वस्तु पाते हैं। पण्डे कितना यत्न करके उन्हें home-comfort (निज गृह सुख) देते हैं। आजकल बाबू लोग तीर्थ करने जाते हैं स्टिक (छड़ी) हाथ में लेकर। कहते हैं, नहीं, हमें पण्डा नहीं चाहिए। धोखा देकर धर्म। और फिर लौट आकर बन्धुओं से कहते हैं हम तीर्थ करके आए हैं (हास्य)। कैसी दुर्दशा !

जिनके पास पैसा है उन्हें देना उचित। जिनके पास नहीं है जैसे साधु, फकीर, उनका मन ही मन स्तव करने से ही हुआ।

ब्रह्मचारी— अच्छा, ठाकुर कितने क्षण रहते समाधि में ?

श्री म —अनेक क्षण। केशव बाबू के घर प्रायः एक घण्टा थे। जोड़ा सांको में हरिसभा में दीर्घकाल थे। अनेक स्थानों पर ऐसा होता।

ब्रह्मचारी अब विदा लेंगे। उनको परमात्मीयवत् पूछे बिना ही उनके कल्याण का पथ बता रहे हैं।

श्री म (ब्रह्मचारी के प्रति) कुछ दिन मठ में रहना उचित। प्राचीन साधुगण सब हैं। उनकी सेवा करनी चाहिए। उनका काज कर्म, चलन बलन watch (दर्शन) करना चाहिए। गीता में है, 'स्थितप्रज्ञस्य का भाषा।' कुछ दिन मठ में रहकर रंग पकड़ लेने पर फिर अन्यत्र जाना। काजकर्म या तपस्या लेकर रहना। प्रथम मठ में रहना दरकार। गुरु के पास हाथ जोड़कर निवेदन किया जाय, मेरी कुछ दिन मठ में रहकर साधुसेवा करने की इच्छा है, आप कृपा करके अनुमति दें तो हो। तपस्या करने की इच्छा होने पर भी, गुरु को कहना चाहिए विनीत भाव से, मेरी कुछ दिन निर्जन में रहने की इच्छा हो रही है। गुरु की अनुमति लेकर करना जो भी करना। किन्तु प्रथम कुछ दिन मठ में रहकर रंग पकड़ लेना चाहिए।

(2)

मॉर्टन स्कूल। नीचे का आंगन। अब अपराह्ण छः। श्री म बेंच पर फाटक के सामने बैठे हुए हैं पश्चिमास्य— सम्मुख अमहर्स्ट स्ट्रीट।

श्री म के तीनों ओर भक्तगण बैठे हैं बेंचों पर ही। अब अनेक भक्त एकत्रित हुए हैं। डाक्टर, विनय, छोटे जितेन, बड़े अमूल्य, दुर्गापद, बलाई, छोटे अमूल्य, जगबन्धु, सदानन्द, छोटे नलिनी प्रभृति।

श्री म आज क्लान्त। वयस सत्तर के ऊपर। फिर हार्ट खराब। कई दिन से दक्षिणेश्वर के लिए मन व्याकुल है। गत कल भी मनोरथ पर दक्षिणेश्वर गए थे। आज प्रातः कोई भी बाधा न मानकर किसी को भी कुछ कहे बिना अकेले ही ट्राम पर चढ़कर बागबाजार गए। वहां से स्टीमर पर चढ़कर शिवतला गए। अभिज्ञता की बातें बोल रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति) — आज एक experiment (परीक्षण) किया गया। स्टीमर में चढ़कर मठ और दक्षिणेश्वर के दर्शन हुए। कहीं भी उतरा नहीं। वहां पर बैठे बैठे ही दर्शन और प्रणाम किया। लौटते समय बड़ा कष्ट हुआ था। ठाकुर ने बुद्धि दी, तभी फर्स्ट क्लास में जा कर बैठ गया। हवा से प्राण आया।

आज शचीनन्दन मठ में गए थे। वे श्री श्री स्वामी ब्रह्मानन्द के मंत्र शिष्य हैं। अन्त के दिनों में दीक्षा ली थी। वे आज मठ के अध्यक्ष से तिरस्कृत हुए हैं। मन खराब है। जभी पांच के समय श्री म के पास आकर दुःख निवेदन करते हैं। श्री म नाना प्रकार से उनको समझाते हैं। बोलते हैं, गुरुजनों के निकट तिरस्कार लाभ तो परम सौभाग्य! महापुरुषों का तिरस्कार प्राप्त बिना हुए, दंड बिनापाए चरित्र गठित नहीं होता। अपने जन जो। तभी तो अन्याय दोष देखकर तिरस्कार किया। क्यों, जानते हो? उससे उसका कल्याण होगा। महापुरुष का तिरस्कार लाभ करने पर समझा जाता है, उनकी कृपा लाभ हुई है।

शची किशोर बालक। मन का भार अभी भी उतरा नहीं। जभी उनके साथ कभी हास्य परिहास करते हैं। घर में जैसे पिता तिरस्कार करने पर चाचा आकर स्नेह करते हैं। श्री म का व्यवहार भी उसी

प्रकार का।

श्री म (शची के प्रति)— बंगाल क्लब' worldly man (संसारी जन) के पास जैसा, मठ भक्तों के पास वैसा। बंगाल क्लब में रहने पर चार सौ रुपया का बिल मासिक। (सहास्य) तुम कितने रुपये दे सकते हो? बारह रुपया, चौदह रुपया— तो फिर कैसे हो? रुपया दो, तभी रहो। रुपया दोगे नहीं, तो कैसे रहोगे?

श्री म (भक्तों के प्रति)---- मैं एक बार गया था 'बंगाल क्लब' में— 'वुड रोफ' साहब के साथ मिलने। यही 'वुड रोफ' (तंत्र के अनुवादक) नहीं, उनके पिता। वे तब तक एडवोकेट जनरल नहीं थे— खूब roaring practice खूब उन्नत काज! मुझको उन्होंने खूब sound advice (बढ़िया परामर्श) दिया। बोले, Try to stand on your own legs. (अपने पांव पर उठने की चेष्टा करो।) और भी बताया, "मैं जब प्रथम इस देश में आया था, तब मुझे स्मॉल कॉज़— कोर्ट का चीफ जज बनाना चाहा था। मैंने उस समय के एडवोकेट जनरल से परामर्श मांगा। वे बोले, ना, ना, तुम्हरा खूब prospect (भविष्यत् उज्ज्वल) है। Try to stand on your own legs (अपने पाव परखड़े होने की चेष्टा करो।)

वहां पर सब मानो mechanically (यंत्रचालितवत्) चलता है, शब्द भी नहीं। जैसे योग में हैं सब। एक सौ जन घर में, लगता है जैसे कोई नहीं है। प्रत्येक द्वार पर कहीं एक जन, कहीं अथवा दो जन चपरासी दण्डायमान। गदाधर आश्रम जाते हुए ट्राम से देखता हूँ, बंगाल क्लब, एलेग्जेण्डर क्लब।

श्री म (शची के प्रति) —मां ठाकुरुण ने कहा था हावड़ा स्टेशन पर जाकर, 'वहां (जयरामवाटी) अधिक भक्त न जाएं। मुझको बहुत कष्ट होता है।' बड़ा कष्ट होता मां को। भक्त कितना कष्ट करके धूप में पैदल पैदल जाते। देखते ही मां उनकी सेवा करतीं। आहारादि सब स्वयं प्रस्तुत करतीं। इस प्रकार परिश्रम करते करते शरीर जाने

वाला जैसा हो जाता । दूसरे लोगों से बाजार करवाना पड़ता । कोई भी तो नहीं जो कर देता । जभी स्टेशन पर जाकर बोलीं, वहां पर अधिक भक्त न जाएं यहां से ।

साधु आश्रम में जाना चाहिए सेवा करने, सेवा लेने नहीं। साधुगण एक पाल्की कंधे पर उठाकर चलते हैं । अब तुम उस पर बोझ रखने जाते हो ? बोलो, तुम दबाते हो कि नहीं ? तभी कभी कभी वे क्रोध करके थोड़ा सा बोलेंगे ही तो । उनकी वाणी में venom (विष) नहीं है; संसारियों की वाणी में जैसा रहता है । और ये लोग स्मरण नहीं रखते (अप्रीतिकर घटना) जैसे वे लोग (गृही लोग) रखते हैं ।

(सहास्य) सिन्धवाद की गल्प जानते हो ? अरेबियन नाइट्स में है । सिन्धबाद एक नाविक था । वह ship-wrecked (जहाज के डूबने से आश्रयहीन) हो गया था । एक island (द्वीप) में गया, वहां पर कोई नहीं था । केवल एक बूढ़े को देखा । बूढे ने इशारा किया उसे नदी पार करनी होगी । अन्त में दोनों जन ही नदी पार हुए । बूढे को गर्दन पर उठाकर नदी पार की । किन्तु बूढा तो फिर गर्दन से उतरता ही नहीं । अनुनय विनय, धमक कितना कुछ हुआ ! किसी तरह भी उतरता नहीं । और वहां पर बैठा बैठा ही वृक्ष से फल तोड़ तोड़ कर खाता है । एक बार फेंकने की चेष्टा करने से और भी जोर से पकड़ कर बैठ गया । अन्त में किसी एक वृक्ष का फल खाकर नाचने लगा । तब सिन्दबाद ने झट नीचे फेंक दिया । फिर पत्थर से ठोक कर मार डाला । (दीर्घ हास्य ।) वैसे ही यह भी है । छोड़ता जो नहीं । बड़ी मुश्किल । मठ में नित्य पचास जन (स्वयं बनाकर) खाते हैं । यही तो कलकत्ता है । इतने सब बड़े बड़े लोग हैं, कौन खिलाता है नित्य पचास जनों को ?

भक्त सेवा बड़ी कठिन । अन्य लोगों की सेवा करना वरं सहज । किन्तु भक्त सेवा बड़ी मुश्किल । एक आध दिन चलता है । अधिक होने से ही विपद ।

बड़े जितेन— क्या करना चाहिए मठ में प्रसाद पाना हो तो ?

श्री म—एक good sense (सुविवेचना) रहना उचित । Invite

(निमंत्रण) करने पर खाना उचित। वह हो तो भी पूजा के लिए कुछ देना चाहिए। कुछ मिठाई लेकर जाना चाहिए हाथ में। यदि आहार करना हो तो पूजा के लिए अन्ततः तीन गुणा देना चाहिए। यदि दस रुपये खाने का खर्चा हो तो तीस रुपया देना उचित। यदि वैसा नहीं करते तो बोर्डिंगों का तो अभाव नहीं है। जाओ ना वहां। अपना खाना भी पूजा का अंग है। पूजा माने, प्रथम अपना खाना। द्वितीय establishment (परिचालन) का खरच। तृतीय पूजा। ये तीनों ही पूजा के अंग हैं।

एक दिन खा लिया, संभवतः साधुओं ने ही invite (निमन्त्रण) किया। पैसा-कौड़ी संग नहीं है। तो अन्य किसी दिन जाकर दे आए। तो भी उत्सवादि पर जब बहुत जन जाते हैं तब की और बात है। उसमें भी सामर्थ्य अनुसार कुछ देना चाहिए।

श्री म (शची के प्रति) 'He will not come'. (वह फिर लौट कर नहीं आएगा।) इस कुत्ते की कहानी शायद नहीं जानते। पूर्ण प्रेम और पूर्ण संन्यास, इन दोनों का ही example (दृष्टांत) है यह। कुछ भी फिर लिया नहीं, सब त्याग। केवल यही नहीं, फिर शरीर पर्यन्त भी दे दिया। प्रभु के मर जाने पर एक कुत्ता उसकी कबर के ऊपर जाकर बैठ गया। और हिलता नहीं। वहां पर बैठे ही बैठे शरीर दे दिया। स्कूल के छात्र कभी कभी आहार देते और प्रबोध देकर बोलते, "He will not come'. (वह फिर लौट कर नहीं आएगा।) ग्रीष्म गया, शीत आया, वह कुत्ता वहां पर ही बैठा रहा।

श्री म (भक्तों के प्रति)— अहा, अधर सेन से कहा था ठाकुर ने। आज भी वह बात मन में जाग्रत है। मैं पास दण्डायमान। बोले थे, 'ताड़ाताड़ी शेरे न्याओ ताड़ा ताड़ि।' (जल्दी जल्दी खत्म कर लो, जल्दी जल्दी।) अधर सेन ने भी वैसा ही किया। छः मास तक ऑफिस के पश्चात् नित्य दक्षिणेश्वर जाते अढ़ाई रुपया करके गाड़ी भाड़ा प्रतिदिन।

छः मास ऐसा किया, फिर शरीर गया।

जो अभी तक जनमे नहीं है उनके लिए भी provision (व्यवस्था) कर गए हैं। कहते हैं, 'जिसको जो अच्छा लगे, वह उसी का चिन्तन करे निर्जन गोपने व्याकुल होकर।' लॉ में भी शायद इस प्रकार provision (व्यवस्था) है। unborn (अज्ञातजनों) के लिए विल (will) करके सम्पति दी जा सकती है।

बड़े जितेन— अतीन बाबू चले गए।

श्री म— जभी, 'ताड़ाताड़ि सेरे न्याओ, ताड़ा ताड़ि।' अतीन चले गए और डाक्टर कांजीलाल भी गए।

रात्रि साढे दस। जगबन्धु और विनय मैदा लेकर ठाकर बाड़ी गए। श्री म श्री वासानन्द जी को पत्र लिखते हैं। वे एक दिन आकर मिल नहीं पाए थे, तभी लिखना।

मॉर्टन स्कूल। चार तले छत। संध्या हुई-हुई। श्री म चेयर पर बैठे हैं, उत्तरास्य। बहुत से भक्तगण सम्मुख और पास बैंचों पर बैठे हैं। सन्ध्या प्रदीप आया। देखते मात्र ही श्री म के पांव से काला वार्निश चट्टी जूता जैस अपने आप निकल पड़ा, और मुख में, हरि बोल हरि बोल, हाथ में मृदु करतालि। तदुपरान्त आध घण्टा ध्यान।

छोटे जितेन का प्रवेश, हाथ में कालीघाट वाली मां का प्रसाद। श्री म ने आलोक में प्रसाद दर्शन, मस्तक पर धारण और कणिका मात्र ग्रहण किया। अवशिष्ट प्रसाद का भाग पाया भक्तों ने।

बड़े जितेन का प्रवेश। शरीर घर्माक्त, श्वास चंचल, स्थूलकाय। उस पर वयस पचास के ऊपर। चारतल पार करके छत पर चढ़ना अत्यन्त ही कष्टकर है—और फिर ऐसी ग्रीष्म में! श्री म को दया आई। जभी सस्नेह कष्टलाघव कर रहे हैं सहानुभूति द्वारा।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—मैं एक तले पर चढ़ता हूँ और पन्द्रह मिनट विश्राम करता हूँ। खूब ऊंचा है कि ना।

वड़े जितेन (हांफते हांफते) —वही ठीक। इस कल को उसका यहां नहीं भोग देना उचित। नहीं तो कब फिर निकल जाय।

श्री म — कैसा आश्चर्य ! इन पांचभूतों की देह, उसके भीतर फिर मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार। यही जो 'मैं मैं' करता है, यह 'मैं' ही क्या है ? जो इसे ही देखकर analogy (सादृश्य ज्ञान अनुमान) द्वारा ऋषियों ने इस Universe को, इसी ब्रह्माण्ड की भी एक 'मैं' है, उसे पकड़ लिया है। तत्पश्चात् जो analogy अनुमान था, अन्त में वही revealed (प्रकटित) हुआ उनके निकट। तभी तो है, 'जो है भाण्ड में वही है ब्रह्माण्ड में।' जो microcosm (शरीर के भाण्ड) में है, वही इस microcosm (ब्राह्मण्ड) में है।। यह शरीर ही एक ब्रह्माण्ड है in miniature (क्षुद्ररुप में)। तभी क्राइस्ट बोले थे, Before Abraham was I am'. (अब्राहम के जन्म के पहले से ही मैं हूँ।) और उससे ही सब वस्तुओं के अधिष्ठात्री देवता हुए हैं सब देशों में ही। उसका फिर दर्शन हुआ है, जैसे हिमालय।

बड़े जितेन—-ठाकुर बताते, ('मैं' तो) प्याज के छिलके की भांति दिखती है।

श्री म — वैसा नहीं। वह तो विचार की ओर से है। यहां पर 'these things were revealed unto us'. (ये सब तत्त्व हमारे निकट स्वत: प्रकाशित हुए हैं।) यही तो revelation (प्रत्यक्ष दर्शन)।

तभी साधुसंग करना चाहिए। साधुसंग बिना किए वह समझ में नहीं आता। देखिए ना नारायण आयंगर साधुसंग करके साधु हो गए। साधुसंग करने से ऐसे सब भी दिखाई देते हैं। वे ढेले से ढेला तोड़ते हैं। इन को देख लेने पर तब जो गृह में हैं उनको चैतन्य होगा। गृहियों में यह विचार आप ही आएगा—- इस जन का सब था, बड़े आराम में रह सकता था, क्यों फिर ये सब छोड़ कर यह कठोर जीवन लिया ? ऐसे लोगों को देखना चाहिए। माधवाचार्य सुना जाता है किसी देश के मंत्री थे। तत्पश्चात् साधु हुए थे। ये ही जो आयंगर महाशय हैं उनका त्याग

कितना ! सब है और फिर बड़े राजकर्मचारी, सब त्याग ! ईश्वर ही ये सब करवाते हैं। तभी अन्य को चैतन्य होगा ।

डाक्टर कार्तिक बक्शी - 'तोमाय डेंपोमि करते होबे ना।' (तुम्हें प्रौढ़ता दिखानी नहीं पड़ेगी।) यह बोलकर एक हाईकोर्ट के वकील का ठाकुर ने तिरस्कार किया था इस प्रकार प्रश्न करने पर। उनके निकट प्रार्थना करनी चाहिए, आपके पादपद्मों में जिससे मन रहे।

श्री म (भक्तों के प्रति, सहास्य)—एक गल्प है। किसी ने एक गाय को मारा। उसने हाथ से मारा था कि ना, जभी वह कहता है, 'इन्द्र ने गोहत्या की है।' ाथ का देवता इन्द्र है। अब इन्द्र ब्राह्मण का वेश धारण करके उस व्यक्ति के पास आकर पूछने लगे, यह घर किसका है। उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, 'मेरा।' 'यह बाग ?' उत्तर हुआ, मेरा। यह जमीदारी ? जी, यह भी मेरी, वह व्यक्ति बोला। छद्मवेशी इन्द्र ने तब हंसकर प्रश्न किया, 'तो फिर क्या केवल गोहत्या ही मेरी ?' फिर तिरस्कार करके बोले, लो अपना पाप तुम। सब में ही मैं और पाप के समय तुम ! (सब का उच्च हास्य)

बड़े जितेन (हताश भावे)— अब यह आलोचना कर्म रुचिकर हो कैसे ?

श्री म—उनकी ओर लक्ष्य रखने से। वह होने से ही निष्काम होगा। सब कुछ करो किन्तु उनके लिए करो। उसे छोड़ उपाय नहीं। गीता में भी श्री कृष्ण ने अर्जुन को यही बात ही कही, 'तत् कुरुष्व मदर्पणम्।'

श्री म (भक्तों के प्रति)— दो पहलवानों की कुश्ती होगी। एक जन पन्द्रह दिन पूर्व से खूब मांसादि खाता है जिससे शरीर में बल आए। और दूसरा खाना कम करता जाता है दिन-दिन। और सर्वदा 'महावीर महावीर' जप करता है। कुश्ती के दिन एक दम उपवास। अन्त देखा गया, जिसने मांस खाया था वही हारा। और इस की जीत हुई क्यों ? क्योंकि उसका मन victory (विजय) से आच्छिन्न हो गया था। जो चौदह वर्ष फलमूल खा सकता है केवल वही (लक्ष्मण ही) इन्द्रजित का

वध कर सकता है।

वेलिंग्टन लार्ड वेलजली के भाई थे। तब वे दक्षिण में युद्ध कर रहे थे। निजाम ने प्रधान मन्त्री को भेज दिया। वे जाकर उनसे बोले, "यह लीजिए पन्द्रह लाख रुपया मुख मीठा करने के लिए। केवल हमारे लिए कुछ सुविधा कर दीजिए।" उन्होंने उनको "गुड बाई" कर दी अर्थात् अपना रास्ता देखो

इधर तो यह ! और उधर क्या ? इंग्लैंड में एक परमसुन्दरी युवती के संग कोर्टशिप होता आ रहा है, किन्तु रुपये के अभाव से विवाह नहीं होता। कैसा दृढ चित्त, कैसी सत्यता ! इस देश में आए ही थे रुपये के लिए। रुपया कमा कर विवाह करेंगे। वही रुपया हाथ में आने पर भी अन्याय का होने के कारण नहीं लिया। केवल क्या यही goodness (महत्त्व) है, और भी है। देश में लौट आए, बहुत रुपया जमा करके। उसी लड़की के घर गए। सब उनके पास आए,किन्तु वही लड़की नहीं आई। कैसे आए ? Pox (माता) से उसकी मुखश्री चली गई थी। तभी लज्जा से नहीं आई। उन्होंने पूछकर सब घटना सुनी। जिद करने पर तब मुख पर घूंघट करके आई। उन्होंने घूंघट खींच कर फेंक दिया और बोले, मेरा विवाह होगा तुम्हारे गुणों के संग, रूप के संग नहीं। लड़की जितना ही कहती है तुम अन्यत्र विवाह करो, वे उतना ही बातों में उड़ाने लगे। अन्त में विवाह हुआ।

ऐसे ऐसे लोगों के बिना हुए क्या नेपोलियन को हरा सकते थे ? कैसा त्याग ! अवश्य यह ईश्वर के लिए नहीं है, देश के लिए है। वह भी भला। कारण, जिसका इस विषय में त्याग है, इच्छा करने पर ईश्वर के लिए भी त्याग कर सकता है। ठाकुर का महावाक्य है कि नहीं, जो नमक का हिसाब रख सकता है मिश्री का भी रख सकता है। यही जो ब्रिटिशों ने इतना बड़ा साम्राज्य लाभ किया है, ऐसे ऐसे महत् लोगों के बिना हुए क्या वह कभी भी संभव होता ?

जो जितेन्द्रिय, जो चौदह वर्ष फलमूल खाकर है, और फिर विनिद्र

केवल वही महावीर लक्ष्मण ही, इतने बड़े वीर इन्द्रजित को हरा सकता है। जो जितेन्द्रिय हैं उनका Head Cool (सिर ठंडा) होता हैं। वे ही खूब बड़ा Organisation (प्रतिष्ठान) चला सकते हैं।

वकील ललित बैनर्जी का प्रवेश, हाथ में ठनठनिया मां काली का प्रसाद। प्रायः संग संग ही शचीनन्दन का प्रवेश। उसके हाथ में भी दक्षिणेश्वर वाली मां काली का प्रसाद है। श्री म के आनन्द की सीमा नहीं। कल स्टीमर में दक्षिणेश्वर यातायात किया था, किन्तु प्रसाद नहीं पाया। जभी आनन्द से कहते है, देखो, मां ने किस प्रकार प्रसाद भेज दिया है।

कालीघाट, दक्षिणेश्वर और ठनठने का प्रसाद—तीनों ही मां के प्रसाद। आनन्द बार बार उठता है, प्रसाद दर्शन, मस्तक पर धारण और कणिका ग्रहण करते हैं। किन्तु भक्त कोई पुनः पुनः उठाने में इतने प्रसन्न नहीं हैं। श्री म ने इसको लक्ष्य किया है, औषध प्रयोग होता है।

श्री म (भक्तों के प्रति)---ऐसा जीवन्त प्रसाद, उसमें भी विरक्ति! कैसे विपरीत संस्कार हैं।

ठाकुर के विवेकानन्द की छाती पर हाथ लगाते ही प्रायः समाधि की अवस्था हुई। किन्तु क्रन्दन कर उठे और बोले, अजी, आपने मेरा यह क्या कर दिया? घर में मेरे माता पिता जी हैं। पूर्व संस्कार जाग्रत हुए हैं। ऐसा काण्ड! वयस तब अठारह उन्नीस। ये सब Type of men (आदर्श मनुष्य)। इन की ही ऐसी अवस्था! तो अन्य लोगों की क्या बात?

ठाकुर बोले थे तभी तो, मेरे पास एक चटाई बिछा कर रख दो। (भक्तजन) सोएंगे आकर। नहीं तो फिर शायद हो सकता है आएं ही नहीं। वे जानते हैं कि ना Human infirmities (मनुष्य की दुर्बलताएं)। बाइबल में है, 'Jesus knew what was in man'. मनुष्य दुर्बल है, यह बात यीशु अच्छी तरह जानते थे। जभी तो तीन बार प्रसाद लेने से ही अरुचि।

श्री म के हाथ में कथामृत। तृतीय भाग, त्रयोदश खण्ड बाहर कर दिया। जगबन्धु पाठ करते है—श्री रामकृष्ण का देवेन्द्र के भवन में शुभागमन।

मॉर्टन इन्स्टिट्यूशन,

पचास नम्बर अमहर्स्ट स्ट्रीट, कलकत्ता।

26 मार्च, 1924 ई०, 12 चैत्र 1330 (बं०) साल, बुधवार।

सप्तम अध्याय

मैं युगे-युगे अवतीर्ण होता हूं

(1)

मॉर्टन स्कूल का चारतला। श्री म निज कक्ष में बैठे हैं बिछौने पर उत्तरास्य। उनके पीछे बैंच पर बैठे हैं छोटे जितेन, विनय और जगबन्धु। श्री म ब्राह्मधर्म सुर से पाठ कर रहे हैं। अब शाम के सात। आज 27 मार्च, 1924 ई०, बृहस्पतिवार।

प्रथम स्तोत्र पाठ किया, "ॐ नमस्ते सते ते जगत्कारणाय।" तत्पश्चात् प्रार्थना — 'असतो मा सद्गमय।' फिर स्वाध्याय—'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते' –'आनन्दाद्धयेव खल्विमानि भूतानि जायन्ते'— इत्यादि। अब शान्ति पाठ करके बृहदारण्यक का अक्षर ब्राह्मण पाठ करते हैं — 'एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि सूर्य-चन्द्रमसौ विधृतौ तिष्ठतः। ……… यो वा एतदक्षरं गार्ग्यविदित्वा-स्माल्लोकात् प्रैति स कृपणः। अथ य एतदक्षरं गार्गि विदित्वास्माल्लोकात् प्रैति स ब्राह्मणः।' तदनन्तर बंगला में संक्षेप अर्थ बतला कर पाठ शेष किया। अब निज मन्तव्य व्याख्या करते हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति) —कैसा आश्चर्य ! यही वाक्य—गुणातीत पुरुष, जिनको अक्षर कह कर निर्देश किया हैं ऋषियों ने वही अखण्ड सच्चिदानन्द मनुष्य होकर आते हैं। यह बातों की बात नहीं, सत्य। हमारे संग में जो वास करके गए हैं, बातें की गई हैं। मनुष्य होकर खिलाना-पहनाना, मान-अभिमान, स्नेह-यत्न, कितना प्यार लेना देना

हुआ है। मनुष्य होकर आए हैं तो ठीक एकदम मनुष्य का ही व्यवहार सोलह आने।

यह क्या भक्तों का बनाया हुआ ईश्वर। वैसा नहीं। उन्होंने निज को ईश्वर कहकर प्रकाश किया है। बोले थे, इसके भीतर से सच्चिदानन्द. बाहर आकर एक दिन बोले, मैं ही युग युग में अवतीर्ण होता हूँ। और बोले, देखा सत्त्वगुण का पूर्ण आविर्भाव ।

ऋषियों ने कितना कष्ट करके कितनी तपस्या करके उनको पाया है। कैसा आश्चर्य, अति आश्चर्य!

फिर ईश्वर को छोड़ और कौन बोल सकता है with full conviction and authority (पूर्ण विश्वास और प्रभुत्व के साथ) 'मेरा चिन्तन करने से ही होगा।' 'तुम लोगों को विशेष कुछ करना नहीं पड़ेगा। मैं कौन और तुम कौन, जानने से ही हुआ।'

जो अखण्ड सच्चिदानन्द वे ही ईश्वररूप में जगत् की सृष्टि स्थिति प्रलय करते हैं, वे ही मनुष्य अवतार होकर आते । और फिर वे ही अन्तर्यामी रूप में सब के भीतर रहते हैं, सब चलाते हैं। वे भीतर हैं इस कारण से ही हम सब बचे हुए हैं। किन्तु उनकी माया यह सब बातें बोध होने नहीं देती सबको। कभी थोड़ा सा बोध हुआ, झट फिर ढक देती है।

और फिर इसके ऊपर है। वेद में ऋषियों ने कहा है, वे ही ये सब होकर रहते हैं नामरूप में, चतुर्विंशति तत्त्वों में। ठाकुर ने इसे ही देखा था। बोले थे, 'मां ही ये सब होकर रहती हैं।' ऋषियों ने दर्शन करके समझाने की चेष्टा की है दो उपायों से—एक तो 'नेति नेति' के पथ से, और दूसरा 'इति इति' से —negative and positive, both ways. सूर्य, चन्द्र, जल, वायु, अग्नि, मृत्यु—यह सब देखकर, इनका clocklike precision (घड़ीवत् नियम अनुवर्तिता) देखकर प्रथम तो ईश्वर की बात अनुमान करते हैं। इस विशाल प्रकृति को देखकर उसके

चालक की विशाल बुद्धि की बात सोचते हैं, और विराट शक्ति की बात। तदनन्तर ध्यान योग में उनका साक्षात्कार करते हैं। तब अनुमान सत्य में परिणत होता है —theory became a fact— वे लोग तो देखकर एकदम अवाक् हो गए। उनकी बातें नाना प्रकार से describe (वर्णन) की हैं। उनका ठीक ठीक स्वरूप कोई मुख से बोल नहीं सकता। आकर इंगित से तनिक सा प्रकाश किया जाता है। उससे ही काम हो जाता है। वे ही हैं सुख शांति और आनन्द की खान। जीव का चरम लक्ष्य वे— 'एषा अस्य परमा गतिः।'

अपराह्ण छः। श्री म दोतले के घर में बैठे हैं चटाई पर, पूर्वास्य। अनेक भक्त जन भी आए हैं। सतीश बाबू ने प्रवेश किया। श्री म ने आह्लाद से उनको निकट बिठाया। ये 'वसुमती' प्रतिष्ठाता, श्री रामकृष्ण के परम भक्त उपेन्द्रनाथ के पुत्र हैं। पारिवारिक कुशल प्रश्नादि के पश्चात् बातें होती हैं।

सतीश—आज आया हूँ एक प्रार्थना लेकर। मासिक वसुमती ठाकुर की बातें निकलें तो लोगों का खूब उपकार होता है। बहुतों ने मुझ से अनुरोध किया है, आपको बोलने के लिए।

श्री म— वह उनकी इच्छा। हमारी इच्छा से तो काम होगा नहीं उनके बिना इच्छा किए। हम तो कितने दिनों से विचार कर रहे हैं कि और एक पॉर्ट निकालने से हो। किन्तु हो पाता है कहां? हम समझते हैं हम करते हैं। वैसा नहीं, वे ही सब करते हैं। भीतर तो देख नहीं पाते ना, जभी बोलते हैं हम करते हैं।

आज प्रातः पढ़ा था, ऋषिजन कहते हैं, सूर्य, चन्द्र, वायु, अग्नि, मृत्यु ये सब उनकी इच्छा से और उनके भय से कार्य करते हैं। मनुष्य सोचते हैं कि हमारी इच्छा से होता है। यदि वह होता है, तो फिर दुःख में गिरते हैं क्यों, क्रन्दन करते हैं क्यों? पुत्रशोक करते हैं क्यों? इच्छा करके विपद् कौन लेना चाहता है? यदि बोलो कर्मफल से होता है? उसका उत्तर— तो कर्मफलदाता कौन है? किस की इच्छा से

कर्मफल होता है ? वैसा नहीं हैं, सब कुछ होता है उसकी इच्छा से। इसी को समझाने के लिए शोक दुःख देते हैं वे। क्रमशः समझता है। तब निश्चिन्त शांत।

बड़े जितेन (प्रार्थना के स्वर) में) —तो कर दीजिए ना ऐसा ही।

श्री म— समय होने पर आप ही होता है। असमय में करने में मुश्किल है। अर्जुन इतने बड़े जन, वे ही सह सके नहीं-एकदम 'वेपथुः।'

श्री म (भक्तों के प्रति) —What is the first thing for spiritual advancement ? It is Sadhu-Sanga (company of holy men). What is the second thing ? It is also Sadhu-Sanga. And the third thing ? The same Sadhu-Sanga. (धर्म जीवन का प्रथम सहाय साधुसंग। द्वितीय, तृतीय सहाय भी साधु संग।) साधुसंग बिना भगवान दर्शन होता नहीं। साधुसंग ही एकमात्र पथ।

श्री म (सतीश के प्रति) — तुम बहुत बड़ा काज कर सकते हो। जो वसुमती चला सकता है, वह और भी बड़ा काज कर सकता है। आरंभ करने से ही हुआ। देखो ना लार्ड रैडिंग, भारत का कर्त्ता बना कर उनको भेज दिया। इससे पूर्व जज थे। ठाकुर ने कहा था, 'जो नून का हिसाब कर सकता है वह मिश्री का हिसाब भी कर सकता है।'

संध्या साढे सात। श्री म के हाथ में "कथामृत" चार पार्ट एकत्र बंधे हुए। पन्ने उल्टा कर प्रथम भाग, त्रयोदश खण्ड निकाल दिया।

अन्तेवासी पढ़ते हैं (एक जन श्री रामकृष्ण से कहते हैं) — सुनता हूँ महाशय, आपने ईश्वर-दर्शन किया हुआ है। तो फिर हमें दिखा दें। श्री रामकृष्ण ने उत्तर दिया, 'कर्म चाहिए तभी दर्शन होता है। …… ध्यान जप ये सब कर्म। उनका नाम गुणकीर्तन और कर्म; और दान यज्ञ ये सब भी कर्म।'

श्री म (बड़े जितेन के प्रति) — देखिए ठाकुर बोलते हैं, कर्म चाहिए। पुरुषार्थ आवश्यक। चेष्टा बिना किसी का भी कुछ होता नहीं। ध्यान जप कीर्तन प्रार्थना, ये सब करते करते उनमें भक्ति होती है। भक्ति के परे ही व्याकुलता। व्याकुलता के परे ही दर्शन। कहते, जैसे अरुणोदय के परे सूर्योदय, वैसे ही व्याकुलता के परे ही वे दर्शन देते हैं। बिना कुछ किए होता नहीं। कुछ करना चाहिए। (सहास्य) कुछ करना बोलते ही चुप !

पाठक (पढ़ते हैं, श्री रामकृष्ण बोल रहे हैं)—पुस्तक पढ़कर ठीक अनुभव नहीं होता। बहुत अन्तर — उनके दर्शन के उपरान्त पुस्तक, शास्त्र सायन्स सब घास फूस से लगते हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)— पुस्तक, आदि, तो गाइड बुक। उनके दर्शन के पश्चात् क्या प्रयोजन इन सब का ? जभी घासफूस कहते ठाकुर, अर्थात् अनावश्यक वस्तु, तुच्छ वस्तु का अपने लिए और प्रयोजन नहीं। तो भी लोकशिक्षा के लिए आवश्यक होती है। वह भी फिर कहते, उनके संग साक्षात् होने पर ज्ञान की कमी होती नहीं। वे राश ठेल देते हैं। Cart-load of books (गाड़ी गाड़ी पुस्तकें) पढ़ने की अपेक्षा दस बार 'राम राम' करना भला है।

पाठ चलता है। श्री म दीर्घकाल निविष्ट होकर सब सुन रहे हैं। कोई भी बात नहीं मुख से। पंचम परिच्छेद शेष होने पर पुनः बातें करते हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—इतनी देर जो पढ़ा गया है, उसका सार है ईश्वर-कृपा ही मूल। उनकी कृपा बिना तो कुछ भी होने वाला नहीं। चेष्टा भी उनकी कृपा से होती है। जप ध्यान प्रार्थना, रो रो कर कहना, ये सब करने पर और भी कृपा होती है। तभी व्याकुलता होती है, जिसके उपरान्त दर्शन होता है। यही एक दिशा।

और एक पथ है। वे स्वतन्त्र हैं। जप ध्यानादि करने पर ही जो दर्शन होगा—ऐसी भी कोई बात नहीं। तो भी करते जाना, हो अथवा

त्र हो । कारण इसी पथ से ही महापुरुषों ने उनकी कृपा लाभ की है, दर्शन पाया है । इसका व्यतिक्रम भी है । हठात् सिद्ध, स्वप्नसिद्ध, ये सब भी हैं ठाकुर कहते । वे सम्पूर्ण स्वतंत्र । असली बात है, उनकी कृपा से ही उनका दर्शन होता है, अन्य पथ नहीं । निश्चय करके बोलना हो तो केवल यही बात ही कहने से चलता है । तो भी गुरुवाक्य पर विश्वास करके कुछ करना दरकार । कैसे बोले, मक्खन निकालना हो तो दही का मन्थन करना होगा, तब मक्खन मिलेगा ।

श्री म (भक्तों के प्रति)—इस का अर्थ हुआ individuality को, बज्जात, 'मैं' को, eliminate (दूर, पृथक्) करना होगा । अथवा sublimate (परिष्कृत, निर्मल) करना होगा । (भक्त की 'मैं' में परिणत करना होगा ।) दो ही पथ हैं । ज्ञान पथ से ही जाओ । किंवा भक्ति पथ से ही जाओ । कुछ करना होगा ।

एक जन गृही भक्त — ठाकुर बोले, मन से सब त्याग बिना हुए ईश्वर लाभ होता नहीं । हम क्या वह कर सकते हैं ? तो फिर हमारा उपाय क्या हुआ ?

श्री म— शरणागत होना । चेष्टा करना उचित, चेष्टा करके भी कर रहा हूँ नहीं इस अवस्था में शरणागत होता है मनुष्य । कहा है, संसार में उन्होंने जब रखा है तब समस्त उनको समर्पण करो । उनमें आत्मसमर्पण करके बड़े लोग के घर की दासी की भांति होकर काज-कर्म करो । तब देखा जाता है सब ही वे करते हैं, सब राम की इच्छा । व्याकुल होकर भार देने से वे भार लेते हैं ।

अहा ! ठाकुर की कैसी अवस्था ! मिट्टी से हाथ मांजेंगे, तो जहां पर बैठेंगे वहां से ही करेंगे । एक टुकड़ा मिट्टी हाथ में लेकर जाने का उपाय जो नहीं है । ऐसा त्याग ! यह क्या वे इच्छा करके करते थे जैसे लोग करते हैं । साधक अवस्था में कुछ संचय नहीं करते कि ना । वैसा

नहीं, उनके लिए संचय करना ही जो नहीं है, माँ करने नहीं देती। मां के हाथ में जैसे यंत्र। जैसा करवाती है वैसा करते हैं।

भक्तगण पीछे यह अवस्था देखकर न भय पाएं, हताश न हो जाएं, तभी और थोड़ा नीचे उतर कर सुर को बांध दिया—'बड़े व्यक्ति के घर की दासीवत् रहो।' इसके ऊपर और एक अवस्था है वह भी त्याग की अवस्था। कहते हैं, 'आंधी का झूठा पत्ता होकर रहो।' और भी सीधा पंथ बोले हैं, 'मेरा चिन्तन करो।' बोले. 'प्रतिज्ञा करके कहता हूँ जो मेरा चिन्तन करेगा वह मेरा ऐश्वर्य लाभ करेगा, जैसे पिता का ऐश्वर्य पुत्र लाभ करता है।'

श्री म (गृहस्थ भक्त के प्रति)—देखिए, कैसा भरोसा सब। और फिर बोलते हैं, 'संसार करना, संन्यास करना सब राम की इच्छा।' जभी उनके ऊपर भार डालकर संसार का काम करते जाना।

भक्ति लाभ करके, ज्ञान लाभ करके भी संसार में रहा जाता है। केशव सेन, उपाध्याय ये सब थे। ठाकुर के भक्त भी अनेक गृह में रहते हैं। तो भी ठीक ठीक त्याग, बाहर से बिना छोड़े बहुतों का होता ही नहीं।

(2)

वसन्त प्रभात। पूर्वाकाश अरुण रंग-रंजित। सूर्य अब भी चढ़े नहीं। मॉर्टन स्कूल के चार तले की छत पर श्री म बैठे ध्यान कर रहे हैं दक्षिण पूर्व कोण में। छोटे जितेन, विनय और जगबन्धु श्री म के सम्मुख चटाई पर बैठे हैं। सब ही ध्यान कर रहे हैं। एक घन्टे परे श्री म ब्राह्म-धर्म पाठ करते हैं वैदिक सुर में।

श्री म पढ़ते हैं, 'श्रोत्रस्य श्रोत्रं मनसो मनो' 'यन्मनसा न मनुते;' 'यस्यामतं तस्य मतं' 'इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति' — इत्यादि। अब व्याख्या करते हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—चुतर्विंशति तत्त्व द्वारा ईश्वर ने इस जगत् की सृष्टि की है। वे हैं स्वयं इन सब पंचविंशाति तत्त्वों के अतीत। इसीलिए इनसे उनका ज्ञान नहीं होता। मनुष्य, मन बुद्धि इन्द्रियादि द्वारा बाह्य जगत् का ज्ञानलाभ करता है—रूप, रस, गन्ध, शब्द, स्पर्श इत्यादि का। पीछे कोई यह समझे कि ईश्वर को इन्हीं साधनों द्वारा जान लेगा, इसलिए सावधान करते हैं। ऋषिगण बोले, वे सब का भी कारण हैं। ये उपकरण समूह उनके जानने में सहायक होने पर भी वे उनको जनवा नहीं सकते। ठाकुर ने जभी कहा है, एक सेर के लोटे लोटे में दस सेर दूध नहीं रखा जाता।

इस प्रकार उन्होंने यह हमारा देह-यंत्र बनाया है इन्द्रियां, प्राण, मन, बुद्धि द्वारा, कि इसी देह में ही उनका दर्शन होता है। इसी नश्वर वस्तु की सहायता से नित्य वस्तु प्राप्त होती है। ठाकुर जभी तो बोलते, इस पंक के भीतर से पद्मफूल खिलता है।

सशक्त चाहे है, किन्तु होता है—उनकी कृपा से ही। जो इन्द्रियादि विषय में मनुष्य को बद्ध करते हैं, उनकी कृपा होने पर वे ही सब फिर सहायक होते हैं—मित्र का कार्य करते हैं। आवृत्त चक्षुरमृतत्वमिच्छन्—उनकी कृपा से बहिर्मुखीन मन अन्तर्मुखीन होता है। जिस विष से प्राण जाता है, अभिज्ञ डाक्टर के हाथ में पड़ने से वही विष ही प्राण-रक्षा करता है।

विषयलिप्त मन-बुद्धि के अगोचर, किन्तु शुद्ध बुद्धि के गोचर—'दृश्यते त्वग्रया बुद्धया सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः।' ठाकुर बोलते, शुद्ध बुद्धि और शुद्ध आत्मा एक। ब्रह्म होकर ब्रह्म को जानना—ब्रह्मवेद ब्रह्मैव भवति। ठाकुर बोलते, नून का पुतला समुद्र मापने गया, फिर और खबर नहीं दी। अर्थात् समुद्र के सग मिल गया।

मोहन—वैस्ट के ये जो लोग कोई कहते हैं ईश्वर है Unknown and unknowable (अज्ञात और अज्ञेय)?

श्री म—ठीके ही तो बोलते हैं वे लोग। मलिन बुद्धि के निकट तो वैसा ही है। ऋषिगण भी तो वही बोलते हैं; 'मनसा न मनुते' 'मतं यस्य न वेद सः' 'अतर्क्यं।' किन्तु शुद्ध बुद्धि द्वारा जाना जाता है--when the mind is stripped of its sensuous nature (जब मन, इन्द्रियासक्ति विवर्जित होता है) हेगेल की वाणी। विचार करके, मनुष्य की विषय बुद्धि द्वारा उनको नहीं जाना जाता। कान्ट का unknown and unknowable (अज्ञात और अज्ञेय) का अर्थ यही है। स्वामी जी की वाणी भी वही, अवाङ्मनसगोचरं बोझे प्राण बोझे जार।

श्री म (एक जन युवक के प्रति)—'महती विनष्टिः'-वेद बोलता है, महासर्वनाश, इस शरीर में ईश्वर को न जान सकने पर। इसका अर्थ यही हुआ--वह न हुआ तो जन्ममरणचक्र में पड़ना होगा। कब फिर मनुष्य देह होगी उसका निश्चय नहीं। केवल मनुष्य देह में ही आत्मदर्शन होता है कि ना। जभी कहते हैं, यह दुर्लभ देह पाकर उनको न जान सकने पर महासर्वनाश। ठाकुर ने इसीलिए अधरबाबू को सावधान कर के कहा था, जल्दी जल्दी समाप्त कर लो। कब देह चली जाय उसका तो निश्चय नहीं। छः मास परे ही अधरबाबू की देह गई।

जिन्हें ब्रह्म दर्शन हुआ है वे सर्वभूतों में उनको ही देखते हैं। इसी नामरूपवान जगत् के चक्षुओं के सामने भासित होते हुए भी मन उसमें जाता नहीं। मन जाता है जो जगत् के अधिष्ठान हैं उनमें। ठाकुर को इसी प्रकार दर्शन हुआ था। बोले थे, सब मोम द्वारा (शुद्ध चैतन्य) ढका हुआ है---बाग, पेड़-पौधे फूल-फल माली सब मोम से तैयार। समाधि के पश्चात्, Point of contact (चैतन्य और जगत् के संयोग स्थल पर) आकर यह बात बोले हैं। दो ही तो Circle (वृत्त), एक तो ब्रह्मचैतन्य, दूसरा जगत्। जब बिल्कुल ही जगत् का ज्ञान रहता नहीं—इसी अवस्था का नाम है समाधि। समाधि से उतर कर अनेक नीचे आने पर तब दिखाई देता है वे ही नामरूप होकर रह रहे हैं। ठाकुर

इसे अवस्था को विज्ञान की अवस्था कहते । समाधि में सब एकाकार, तत्पश्चात् वही एक ही नामरूपों में बहु हुए हैं। यह अवस्था। इस अवस्था में वे भक्ति-भक्त लेकर रहते। यही तो थी उनकी normal state (साधारण अवस्था)।

श्री म (भक्तों के प्रति) —अभी जो पढ़ा गया है—वेद बोलता है, 'प्रेत्य अस्मात् अमृता भवन्ति' उसका अर्थ यह नहीं है कि मृत्यु के पश्चात् अमृत होता है। उनका दर्शन होने पर मृत्यु के हाथ से निष्कृति प्राप्त हुई। मृत्यु अर्थात् जन्ममृत्यु दोनों ही। मृत्यु के रहने पर जन्म भी है। जो मृत्युञ्जय, वे जीवित होते हुए भी मुक्त, जीवन्मुक्त।

अब सवा आठ। श्री म अपने कक्ष में बैठे हैं शय्या पर उत्तरास्य। बिछौना पूर्व-पश्चिम लम्बमान तख्तपोश के ऊपर। श्री म मोहन को गीता सुना रहे हैं —पंचदश अध्याय पाठ करके व्याख्या करते हैं।

श्री म (मोहन के प्रति)—ठाकुर छोटी खाट पर बैठे कभी कभी निजे निजे आवृत्ति करते—'ब्रह्म-माया-जीव-जगत्।' सुनकर मन में होता कि जैसे उनके चक्षुओं के सामने ये चारों ही पदार्थ ज्वल-ज्वल करके स्पष्ट रूप में तैर रहे हैं जैसे। पृथक् पृथक् रूप में, अथच एक संग में, इस काण्ड का दर्शन हो रहा है। ब्रह्मशक्ति महामाया इस जगत् की सृष्टि कर रही हैं। वेदवेदान्त सर्वशास्त्र का सार यही वाणी। उनकी माया जीव जगत् लेकर खेलती है। (दोनों हाथ प्रसारण और संकोचन इंगित करके) एक बार ऐसे करती हैं और फिर ऐसे। जैसा हारमोनियम का 'बेलौज' किम्वा लोहार की धौंकनी। एक बार expand (प्रसारित) करते हैं और फिर contract (संकुचित) करते हैं।

इस पंचदश अध्याय में ये सब बातें ही बोली गई हैं। उपाय, उद्देश्य सब बातें हैं इसमें। यह अध्याय ही गीता का सार है। केवल गीता ही,क्यों, सर्वशास्त्रों का सार है। संसार का मोह जाना नहीं चाहता

है कि ना, तभी तत्त्व की ओर दृष्टि किए दे रहे हैं। बुद्धि को ही खींच कर ऊपर उठा दे रहे हैं। जैसे मनुष्य को होना स्वाभाविक, वैसे ही अर्जुन का मोह उपस्थित हुआ है। अपने आत्मियों कुटुम्बियों को कैसे मारे? देह-बुद्धि से मन को खींचकर आत्मस्थ किए दे रहे हैं। इसका स्वाद मिल जाने पर फिर नीचे उतरेगा नहीं। आत्मज्ञान बिना ब्रह्म दृष्टि बिना देह बुद्धि जाती नहीं। अर्जुन के द्वारा कार्य करवाना होगा, धर्मयुद्ध। अर्जुन को उपलक्ष्य करके समस्त जगत् को शिक्षा देते हैं। यह घटना रातदिन होती है। This conflict between what we do and what we should do. (हम जो करते हैं और हमें जो करना उचित, यही द्वन्द्व।)

ठाकुर बोलते, 'ब्रह्म-माया-जीव-जगत्।' श्री कृष्ण बोले, अश्वत्थ-क्षर-अक्षर-पुरुषोत्तम— अर्थात् जगत् जीव माया ब्रह्म, विलोम प्रणाली से। अर्जुन का मन देह में है। आत्मीय कुटुम्बियों की देह विनाश हो जाएगी इस कारण शोक मोह नीचे से ऊपर उठाते हैं, देह से ब्रह्म में। बहिर्मुखीन दृष्टि अर्जुन की, जगत् के ऊपर स्थूल देह के ऊपर। उससे उठाकर प्रथम रखा जीवतत्त्व में— 'ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः।' वहां से कूटस्थ चैतन्य में, अक्षर में मायोपहित ब्रह्म में। तदनन्तर निरुपाधिक ब्रह्म। उनको ही 'पुरुषोत्तम' कहा है।

इसी पुरुषोत्तम को जान सकने पर यह जीव ही शिव हो जाता है। इसीलिए अर्जुन के नेत्रों के सम्मुख यह आदर्श रखा—concrete (स्थूल) रूप से। गुणातीत स्थितप्रज्ञ पुरुष के लक्षण बोले श्री कृष्ण—

निर्मानमोहा जितसंगदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः।
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत्॥*

जभी तो भरोसा होगा अर्जुन को। श्री कृष्ण ने निज अवस्था प्रकारान्तर में बताई। निज प्रच्छन्न रहे। अर्जुन किन्तु तब भी पकड़

* गीता 15:5

नहीं पा सके। एक बार थोड़ा थोड़ा समझ पाते हैं, और फिर भूल जाते हैं। यही 'आलो--आंधार' का खेल चलता है। इससे ही काज होता है कि ना । बिल्कुल अज्ञ के द्वारा कुछ होता नहीं, और फिर अतिविज्ञ के द्वारा भी होता नहीं। ये सब ही उनकी महामाया का कार्य। इसके उपरान्त एकअवस्था हुई अर्जुन की जब बोले, 'स्थितोऽस्मि गतसन्देहः।' कुछ समय के लिए निश्चयरूप से समझ पाए थे। उसी समय ही कार्य करवा लिया। इसके तनिक पूर्व ही श्री कृष्ण बोले थे, 'मामेकं शरणं व्रज।' ठीक ठीक शरणागत होने से ही काज हो गया।

श्री कृष्ण का ही जीवन देखो ना। उनको मान भी नहीं, मोह भी नहीं। दुर्योधनादि इतना अपमान करते हैं तब भी खुदगरज होकर जाते हैं शांति स्थापना के लिए। अपने पुत्रपौत्रादि झगड़ा करके मरते हैं वे साक्षीवत् दण्डायमान सब देखते हैं। मनुष्य जैसों के संग रहता है उसका रंग लग जाता है। इनका वैसा नहीं। जहां पर भी जाते हैं सब ही समझते हैं हमारे ही जन हैं ये। किन्तु किसी के भी नहीं वे। वृन्दावन में गोपियां सोचती हैं, हमारे कान्त श्री कृष्ण। किन्तु उन्हें छोड़कर मथुरा चले गए, फिर द्वारका, कुरुक्षेत्र में कितना ही क्या क्या किया, किन्तु वे निर्लिप्त।

'अध्यात्मनित्या' अर्थात् अपने स्वरूप का ज्ञान रहता है सर्वदा। श्री कृष्ण में पूर्णरूप से वह देखने को मिलता है। नहीं तो युद्ध क्षेत्र में सर्वशास्त्र-सार गीता बोल सकते हैं? अपने लिए कोई कामना नहीं। एक दिन के लिए भी राजा हुए नहीं निज। किन्तु दूसरों को राजा बनाया है। सुखदुःख में फिर समान। सुखदुःख होता नहीं, वैसा नहीं है। मनुष्य का शरीर जब लिया है तब सब कुछ ही था। किन्तु उससे अभिभूत नहीं। पाण्डवों के कोर्ट में जो भाव, विदुर की कुटीर में भी वही भाव। कुरुक्षेत्र के श्मशान में और राजसूय यज्ञ में एक ही भाव।

जीवत्व माने the doubting self- – (संशयात्मा ।) उनके दर्शन के पश्चात् --- माने beyond all doubts-- संशयातीत । उनको ही 'स्थितप्रज्ञ' 'ब्राह्मी स्थितिः' 'गुणातीत' कहते हैं।

ठाकुर की यही अवस्था--- मान मोह बोध नहीं । कितनी कटु बातें बोलते हैं कालीबाड़ी के लोग, किन्तु भ्रूक्षेप नहीं । कैसे उनका भला हो उल्टा वही करते । 'नन्दन बागान' के ब्राह्मसमाज में आदर हुआ नहीं। किन्तु स्वयं मांग कर खाकर आए । मोह भी था नहीं । रामलाल हर को कितना कष्ट खाने-पहनने का । किन्तु जगन्माता को एक दिन के लिए भी कहा नहीं उसे दूर करने के लिये । अक्षय के लिए शोक किया था । और फिर अधरसेन, केशव सेन इनके शरीर त्याग होने पर रोये थे । किन्तु उन्हीं अल्प कुछ दिनों के लिये । तत्पश्चात् वह बात ही फिर उठाई ही नहीं । शरीर धारण किया था कि ना, जभी भक्तों के लिए यह शोक । 'जित संग दोषा' - जहां पर ठाकुर जाते हैं, सब ही सोचते हैं हमारा ही जन है । ब्राह्मसमाज के जन बोलते हैं, 'परमहंस महाशय तो हमारा ही लोग है' । कर्ता भजा समझते उनका ही लोग है । देश में गए, ग्राम के लोग सोचते हैं हमारा 'गदाई' आया है, अब गृहस्थ धर्म करवाएंगे। स्त्रियां सोचतीं, ये हमारा ही एक जन है । माथुरबाबू के गृह में अन्दर स्त्रियों के महल में स्त्रियों के संग में रहते । तब मधुर भाव में साधन चला था । स्त्री की पोशाक, चालचलन सब उनकी भांति । (सहास्य) कहते स्त्रियों को भांति इन अंगुली (तर्जनी) से कोयले के चूर्ण से दांत मांजता था ।' सब के संग रहते हैं, किन्तु अन्तर में किसी के संग नहीं । केवल मां के संग हैं --- सर्वदा 'मां, मां' । नित्य आहारविहार, शरीर शरीर रक्षा ये सब विषय भी देखती है मां ही, सब करती हैं । जभी कोई भी कामना नहीं अपने लिए । किन्तु भक्तों के लिए, दुःखी-दरिद्र के लिए, जगत् के लोगों के लिए भावना करते हैं ।

माथुर बाबू की जमीदारी लिखकर देने की प्रार्थना का प्रत्याख्यान

किया। रमारसा.डी.का दस हजार रुपया की लिया नहीं। शरीर को सुख-दुःख का बोध भी नहीं। मन तो सर्वदा मग्न ईश्वर में। माथुर बाबू के इतने प्यार में भी उनके अन्तर में और मुख में 'मां-मां।' और फिर उनका शरीर जाने पर जब सेवा मिलने में बड़ा दुःख होता था, तब भी वहीं 'मां मां।'

श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जो कहा था, ठाकुर भी नरेन्द्र को वही बोलें। बाप के हठात् मर जाने पर नरेन्द्र को बड़ा कष्ट होता। मन बड़ा ही उद्विग्न, घर पैसा नहीं। मां-भाई-बहनों के लिए आहार नहीं इतने कष्ट में भी मन को नीचे उतरने नहीं दिया। अर्जुन की न्याईं नरेन्द्र ने मां काली से मांगा ज्ञान भक्ति विवेक-वैराग्य। रुपया पैसा आहार इत्यादि मांग सके नहीं। ठाकुर की बात से मांगने गए यह सब, किन्तु मां के मन्दिर में जाकर मांगा ज्ञानभक्ति। तीन बार भेजा। तीनों बार ही मांगा वही ज्ञान भक्ति विवेक वैराग्य। अन्न वस्त्र की बात भूल गए। मन को जो ठाकुर ने ऊपर चढ़ा रखा है। ठाकुर तब बोले, 'मोटा भात, मोटे कपड़े की व्यवस्था मां ने कर रखी है। इसके लिए चिन्ता मत करो। तुम आत्मस्थ हो जाओ।'

श्री कृष्ण ने अर्जुन को जिन 'पुरुषोत्तम' की बात कही वे ही श्री कृष्ण रूप में, नररूप में सम्मुख उपस्थित हैं। अर्जुन बूझ नहीं सके जब तक उन्होंने ही नहीं बुझाया। समझ में आने वाला ही जो नहीं है। यही पुरुषोत्तम ही अब ठाकुर श्री रामकृष्ण। बोले थे, 'एक दिन सच्चिदानन्द इसके (निज के) भीतर से बाहर आकर बोले, मैं ही युग युग में अवतार होता हूं।'

कौन बूझ सकता है यह प्रहेलिका? जिसको बुझाते हैं वही बूझता है।

संध्या अतीत। श्री म चार तले की छत पर बैठे हैं चेयर पर उत्तरास्य। सम्मुख पूर्व और पश्चिममुखी हुए भक्तगण बैंचों पर उपविष्ट आमने सामने। ग्रीष्म आरंभ हुआ है। श्री म कष्ट अनुभव

करते हैं।

शुकलाल, मनोरंजन, छोटे जितेन, शांति और जगबन्धु बैठे हैं। देखते देखते बड़े जितेन, डाक्टर बक्शी, विनय, डाक्टर चारु बाबू और इटाली के कुंजबाबू आकर उपस्थित हो गए। तत्पश्चात् अन्य भक्तगण। वे डाक्टर चारुबाबू की बाड़ी है पश्चिम में मिर्जापुर में। वे पुत्रशोकग्रस्त। श्री म उनको सान्त्वना देते हैं।

श्री म (डाक्टर चारुबाबू के प्रति)---शोकताप यह रहेगा ही। अवतार को भी सहन करना पड़ता है। जो लोग जगत् में बड़े हुए हैं प्रायः सब को इन सब के भीतर से जाना पड़ा है। जभी पूर्व से ही प्रस्तुत होकर रहना चाहिए। वसिष्ठ के शत पुत्र गए। गान्धारी को भी वैसे ही शतपुत्र शोक। द्रौपदी ने खोए पांच किशोर पुत्र। श्री कृष्ण का समस्त परिवार, पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र चक्षुओं के सामने ध्वंस हुए। ठाकुर जभी तो भक्तों को सिखा देते, 'मेरा पुत्र नहीं बोलते। बोलोगे, भगवान का पुत्र। मेरे पास धरोहर रखा है।' क्यों इस प्रकार सिखाते ? जानते हैं कि ना कौन कब चला जाए। तब भयानक शोक होगा। पूर्व से ही प्रस्तुत करवा लेते। इतनी सावधानी से जो प्रस्तुत होकर चलता है, शोक का समय उनका भी विचार-विचार बहा ले जाता है कुछ काल के लिए। अवश्य वे पीछे ground recover (पुनः प्रकृतिस्थता लाभ) कर लेते हैं। और जो सोचो, सोलह आना उत्तरदायित्व लेकर सन्तान पालन करते हैं उनकी कैसी दुर्विषह अवस्था। तिल तिल पल पल मनुष्य बनाया था— मेरा पुत्र, यह कह-कह कर।

जभी श्री कृष्ण ने अर्जुन को कहा था, 'तान् तितिक्षस्व भारत—' शोक दुःख सहन करो। इसके बिना उपाय नहीं। ये सब हैं इसीलिए मनुष्य ईश्वर का संधान करता है। नहीं तो कोई जाता उस पथ पर ? जभी तो आदर्श सामने रख दिया, द्वन्द्वैर्विमुक्ता सुखदुःखसंज्ञैः।' सुख दुःख दोनों ही समान बोध हो जाएं तभी शांति। भक्तगण उनका प्रसाद कहकर मन का साम्य लाने की चेष्टा करते हैं। ज्ञानी लोग

कर्मफल कहकर सहन करते हैं। और एक दल है, ये कहते हैं संसार में ऐसा होता ही है, यह कहकर प्रबोध लाते हैं।

सुखदुःख — इसका नाम ही संसार। संसार द्वन्द्व क्षेत्र। तत्त्वदृष्टि में विषयसुख को भी दुःख जानकर देखा जाता है। कारण, इस सुख के पीछे ही दुःख आएगा। दोनों एक संग चलते हैं। जभी ये दोनों ही त्याज्य। इसके ऊपर भी एक सुख है। वह तो अविराम सुख। उसके संग दुःख नहीं। तत्त्वज्ञगण केवल वही सुख चाहते हैं। उसका ही नाम है ब्रह्मानन्द। इसी सुख के लिए, इसी शाश्वत सुख के लिए विषय सुख छोड़ना होता है। उनके पास यह तुच्छ है, जैसे मिछरी-पाना* के निकट ओलागुड़ तुच्छ।

श्री म कुछ क्षण चुप किए रहे।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)—ओलागुड़ छोड़कर मिश्रीपाना का आस्वाद पाया है, ऐसे एक जन यहां पर आए थे। उनका नाम नारायण आयंगर महाशय। अब हुए हैं स्वामी श्रीवासानन्द। संन्यास हो गया है मठ में। स्त्रीपुत्रकन्या, धन ऐश्वर्य आत्मीयस्वजन, कुलशील-मान, उच्चराजपद – यह सब छोड़ा है। कितना बड़ा त्याग! सब को देखना उचित। चले जाएंगे कहते थे, पन्द्रह सोलह दिन पश्चात्।

श्री म (सहास्य, भक्तों के प्रति)— हमने आयंगर महाशय को बताया, आपके पुत्र से कहा है, आज कल का संन्यास जैसे कॉलेज के बोर्डिंग में रहना। कॉलेज के बोर्डिंग में रहने पर चिन्ता रहती है, examination (परीक्षा) देनी होती है, और फिर कर्म के लिए चेष्टा करनी होती है। किन्तु यहां पर ऐसी बला कुछ भी नहीं है। वह तुम लोगों को अच्छा नहीं लगेगा। वे लोग अगले दिन आकर बोले, आप की बात हमने रात को आलोचना की थी। खूब आह्लाद हुआ। छोटा पुत्र और जमाई आए थे यदि वापिस ले जा सकें।

---

*मिछरीपाना=मिश्री का शरबत
ओलागुड़= गुड़ का शरबत

नारायण आयंगर महाशय बोले, लड़के मुझको selfish (स्वार्थ-पर) कहते हैं। वैसा नहीं कहेंगे? उनकी कितनी आशाएं थीं। किन्तु कैसा धन जो उन्होंने पाया है उसको तो वे समझ सकते नहीं। यह greatest riches (अमूल्य धन) पा रहे हैं। पिता साधु हुए हैं। उनकी चिन्ता आने पर ईश्वर सर्वदा याद आएंगे। इसीलिए शास्त्र में है, वंश में एक जन साधु होने से ऊपर के दस-पन्द्रह पुरुषों और नीचे के दस पंद्रह पुरुषों का उद्धार हो जाता है। अर्थात् सर्वदा ही ईश्वर चिन्तन होता रहता है कि ना, उसकी चिन्ता करते हुए। अब ईश्वर चिन्तन से मुक्ति !

श्री म (शुकलाल के प्रति)— श्री कृष्ण गुरुदक्षिणा देंगे। गुरु बोले "मेरा मृत पुत्र ला दो। यही तुम्हारी दक्षिणा।" अब क्या करें, अगत्या यमालय में जाना पड़ा। अब उनके संग जो थे उन्होंने हरिनाम शुरू कर दिया। उसको सुनकर और श्री कृष्ण के दर्शन करके जितने भी पापी थे सब का उद्धार हो गया। चित्रगुप्त, यम का सैक्रेट्री कि ना, उसने शीघ्र दौड़ कर यम को संवाद दिया। बोले, आपका कर्म अब समाप्त हो गया है। हरिनाम सुनकर सब पापी मुक्त हो गए, यमालय शून्य है (हास्य)। यम ने आकर तब हाथ जोड़कर प्रार्थना की, "तब तो प्रभु मुझे भी मुक्ति दो—क्यों फिर और इस कर्म में रखना ?" (सब का हास्य)। किन्तु कीर्तनीए लोग सुन्दर कहते हैं।

हरिनाम का ऐसा माहात्म्य। आयंगर महाशय के लड़के क्रमशः समझेंगे कैसा अमूल्य धन वे पा रहे हैं पिता के निकट से। तब फिर नहीं कहेंगे, पिता selfish (स्वार्थपर)।

जभी इन्हें देखना उचित, object lesson (आदर्श शिक्षा) कि ना। ठाकुर बोलते, पढ़ने की अपेक्षा सुनना भला, सुनने की अपेक्षा देखना भला। यह स्मरण रखो प्रत्यक्ष त्याग-दर्शन, ईश्वर के लिए सर्वस्व त्याग।

श्री म कुंज बाबू के इटाली के 'अर्चनालय' के संबध में कथावार्ता

करते हैं। अर्चनालय ठाकुर के प्रिय भक्त देवेन्द्र नाथ मजुमदार महाशय द्वारा स्थापित है। नित्यसेवा ठाकुर की होती है। सम्प्रति ठाकुर का जन्मोत्सव हुआ है।

कुंज—आश्चर्य, हमारे उधर के क्रिश्चियन तक उसमें योगदान करते हैं। उनमें खूब उत्साह और आनन्द देखा जाता है। इसबार उत्सव में बहुत से आए थे। स्त्री पुरुष सब प्रकार की वयस के भक्त।

श्री म—ठाकुर के सर्वधर्म-समन्वय की बातें सुनते हैं कि ना, तभी वे आते हैं। 'यत मत तत पथ'—यह बात सुनने से ही मन में साहस आता है, प्रीति का भाव आता है। हम लोग गए थे कठोपनिषद् का ड्रामा देखने बिशप कॉलेज में। ललित महाराज (स्वामी कमलेश्वरानन्द) संग थे। रेवरेण्ड (Reverend) पेली बहुत भले जन हैं। वे उसी कॉलेज के वाईस प्रिन्सीपल हैं। ठाकुर की बातें सुनने में कितना आह्लाद और कितनी आकांक्षा। सुना है कि हम उसी समय के लोग हैं। हमारे से उनकी बातें सुनने में कितना आनन्द। हमें लगने लगा जैसे अपने ही जन हैं। वे भी निमंत्रण देकर ले गए थे। कैसी energy (उत्साह)! शीघ्र शीघ्र कठोपनिषद् का translation (अनुवाद) करके बॉम्बे जाकर पुस्तक छपवाकर ले आए। फिर हमें भी एक खण्ड उपहार में दिया है। खूब भले व्यक्ति हैं वे लोग। बिशप वेलस कॉलेज के प्रिन्सीपल हैं। वे भी खूब अच्छे हैं। हफ्ते में एक दिन किसी बाग में जाते हैं। सारा दिन fast (उपवास) करते हैं और निर्जन में ईश्वर का जप करते हैं। आजकल कितने कितने महत् लोग ठाकुर की बातें सुनकर यहां पर आते हैं।

रात्रि आठ। श्री म नैश भोजन के लिए तीन तले पर जाते हैं। जिल्द बंधा हुआ "कथामृत" कक्ष से लाकर पाठ करने के लिए बोले। तृतीय भाग, दशम खण्ड निज निकाल दिया। अन्तेवासी पाठ करते हैं। दो अध्याय पाठ शेष होते ही श्री म लौट कर आ गए।

श्री म (पाठक के प्रति)— क्या पाठ हुआ ?

पाठक — ठाकुर कहते हैं, उत्तम भक्त देखते हैं सब ही ईश्वर देते हैं अकबर से एक फकीर ने कहा, देखता हूं सब ही हैं भिखारी। मांगना होगा तो खुदा के पास से ही मांगूंगा।

और तीन प्रकार के साधु की बात हुई। ठाकुर कहते हैं उत्तम साधुओं की अजगर वृत्ति। वे देखते हैं ईश्वर ने ही सब ठीक कर के रखा हुआ है पूर्व से ही। बच्चा होने के पूर्व ही ईश्वर ने मां के स्तनों में दूध रख दिया है। सुनकर ब्रह्मचारी फिर और भिक्षा करने नहीं गए। सोचा जो इतनी चिन्ता करते हैं वे ही मेरे आहार की बात सोचते हैं। मध्यम साधु की चेष्टा होती है, 'नारायण हरि' बोलकर गृहस्थ के द्वार पर खड़ा होता है। अधम साधु, भिक्षा न देने पर झगड़ा करता है।

श्री म (भक्तों के प्रति, सहास्य)— विजय कृष्ण गोस्वामी ने कहा था कि ना, भक्तों के विना दिए कौन देगा, कुरता शुरता। जभी ठाकुर ने protest (प्रतिवाद) किया। वे बोले, नहीं, ईश्वर देते हैं, मां देती हैं।

पाठक —ठाकुर ने पूर्णिमा के दिन हलधारी से पूछा, आज क्या अमावस्या ? हलधारी को सुनकर लगा, यह तो बिलकुल अव्यवस्थित चित्त है। ऐसे व्यक्ति को सब मानते हैं। कैसे मूर्ख हैं सब लोग ! (सब का हास्य।)

श्री म— यही तो है पूर्ण ज्ञान का लक्षण। हनुमान की भी वैसी ही अवस्था होती थी। तब तिथि नक्षत्र का ज्ञान रहता नहीं। दिवारात्रि का ज्ञान रहता नहीं। तब अन्य कर्म नहीं, मन ईश्वर में प्रायः लीन। ये सब ठाकुर ने निज वर्णना की हैं निजी अवस्थाएं, पढ़कर वा सुनकर बोले नहीं। हलधारी कैसे बूझेंगे यह अवस्था ?

वेद में जिसको कहा गया है,'आप्तकामः', 'आत्माराम','आत्मतृप्त' ये सब अवस्थाएं ठाकुर में देखी गई हैं। एक दम सोलह आना मन

भगवान में। जब जगत् चतुर्विंशति तत्त्व ये सब नेत्रों में पड़ते ही नही। देखते हैं केवल उनको। नामरूप का ज्ञान बिल्कुल बिलुप्त हो जाता कभी कभी। एक बार छः मास लगातार सतत यही अवस्था थी। इससे थोड़ा सा नीचे मन आने पर नामरूप देखते हैं, किन्तु उसमें अभिनिवेश नहीं, तैरता तैरता सब, जैसे निद्रा के पूर्व लोगों का होता है। तब भी देखते हैं उनको ही, सच्चिदानन्द इसी नाम रूप में विद्यमान हैं, ये सब होकर रह रहे हैं। बताते, जिनको पूर्णज्ञान होता है उनका मन-प्राण-आत्मा सब उनमें समर्पण होता है। ऐसा व्यक्ति ईश्वर की बात के अतिरिक्त अन्य बात बोलेगा भी नहीं, सुनेगा भी नही।

पाठक— एक कव्वे की गल्प सुनाई। एक कव्वा जल के निकट जाता है और लौट आता है। राम ने लक्ष्मण से कहा, यह है महाज्ञानी। जल पीने लगने पर ईश्वर का नाम बन्द हो जाता है। तभी लौट आता है। इधर तृष्णा से छाती फटी जा रही।

श्री म — जैसे चातक। फटिक जल पिएगा। फटिक जल माने वृष्टि का निर्मल जल। अर्थात् भगवान का प्रेमरस। अन्य जल छूएगा भी नहीं। यह भी ठाकुर की अवस्था। और क्या हुआ ?

पाठक —कुम्भ की कथा हुई। 'मैं' कुम्भ जाता नहीं।

श्री म— वेदान्तवादियों का है यही भाव — मैं वही 'सोऽहम्'। समाधि में जाता है, नीचे उतरने पर फिर वही 'मैं'। न्यांटा (तोतापुरी) ने ठाकुर से कहा था, मनको बुद्धि में लय करो, बुद्धि को आत्मा में। वह होने पर ही स्वस्वरूप में रहेगा। ठाकुर ने हरीश से कहा था, सोने के ऊपर कितनी मिट्टी पड़ी हुई है। वही मिट्टी हटा देना।

बताते 'मैं' जाता नहीं। हजार चेष्टा करो फिर आ पड़ता है। जभी व्यवस्था दे दी— रहे साला 'दास मैं' होकर। भक्तगण यही 'मैं', रख देते हैं, जैसे हनुमान प्रह्लाद। इन का ब्रह्मज्ञान भी था और फिर 'भक्त का मैं' भी था। नारद, शुकदेव का भी 'दास मैं', 'विद्या का मैं' था। शंकराचार्य का भी 'विद्या का मैं' था। ठाकुर का था 'शिशु मैं'

'सज्ञान मैं', 'नाबालिग मैं', 'विद्या का मैं' भी कभी कभी दिखाई देता।

मोहन — अच्छा, समुद्र में कुंभ तैरता है। उसके भीतर बाहर जल है। यदि फूट जाय, तब तो फिर कुंभ रहता नहीं। जल ही जल हो गया — सब जल।

श्री म — ये सब ऐसे विचार करके समझा नहीं जाता। वैसी अवस्था होने पर समझा जाता है। कुंभ ही जो फूटता नहीं। समाधि में थोड़ा थोड़ा फूटता है और फिर जोड़ लग जाता है। (हास्य) उसका क्या करना? अहंकार जाना नहीं चाहता। अभी उनके अधीन होकर रहना। ब्रह्मज्ञान होने पर शरीर ठीक ही रहता है, मन की आसक्ति नहीं रहती। बताया था, वज्रपात होने पर काशीपुर के कपाट ठीक ही थे, किन्तु स्क्रूओं की टोपियां गिर गई थीं। अर्थात् ब्रह्मज्ञान के उपरान्त मन में आसक्ति नहीं रहती। अहंकार का लेश रहता है, नहीं तो शरीर नहीं रहता। उससे ज्ञान की कोई भी क्षति अथवा कमी नहीं होती।

'मैं उनका' यह भी ज्ञान है, 'मैं ही वे हूँ' यह भी ज्ञान है। एक को भक्ति कहते हैं और दूसरे को कहते हैं ज्ञान। ठाकुर बोलते, शुद्धा भक्ति और शुद्ध ज्ञान एक।

ठाकुर की अवस्था जैसे सूखी दियासलाई। अल्प घिसने से ही आग निकल आती है। लेशमात्र से ही भगवान का उद्दीपन। एक आध बात अथवा गाना या कीर्तन हुआ, झट बेहोश, समाधिस्थ। ऐसा क्या और दिखता है कोई?

भक्तों ने प्रायः सब ने ही विदा ली। डाक्टर, जगबन्धु, विनय रह गए। डाक्टर बातें करते हैं।

डाक्टर (श्री म के प्रति) — पुत्रशोक से डाक्टर चारुबाबू का वैराग्य हुआ है।

श्री म — देखा, ये बाहर के शोकादि रखे हैं कि इधर का चैतन्य

होगा इसलिए और भीतर के कामक्रोधादि हैं इसलिए कि ये दमन कर सकने पर majestic height अति (उच्च भूमि पर) चढ़ाएंगे। उन्होंने यह सब व्यवस्था कर रखी है। वे तो हैं मां, सर्वमंगला।

29 मार्च, 1924 ई०।
14 वां चैत्र, 1330 (वं०) साल, शुक्रवार।
मॉर्टन स्कूल, 50 अमहर्स्ट स्ट्रीट, कलकत्ता।

अष्टम अध्याय

अमेरिका की फॉक्स भगिनियों की दृष्टि में स्वामी जी

(1)

मॉर्टन इन्स्टिट्यूशन। दोतले का बैठकखाना। अपराह्न साढे छः।

आज 2 अप्रेल, 1924 ई०; 19 वां चैत्र, 1330 (बं०) साल, बुधवार। अमेरिका निवासिनी परम भक्तिमती फॉक्स भगिनीद्वय आई हैं। ये सानफ्रानसिस्को के आश्रम में सर्वदा यातायात करती हैं। स्वामी विवेकानन्द के दर्शन किए थे एवं उनकी वक्तृता और उपदेश सुनकर धर्मपथ पर अग्रसर हुई हैं।

स्वामी सारदानन्द ने उद्बोधन से एक संन्यासी सेवक को उन के संग में भेजा है। संन्यासी दोतले के कमरे में प्रवेश करके प्रणाम करके बोले, "शरत् महाराज ने भेजा है अमेरिका के भक्त आए हैं।"

श्री म ससंभ्रमे उठकर बाहिर वराण्डे में जाकर प्रतीक्षमाण भगिनीद्वय को घनिष्ट आत्मीयवत् आनन्द से आह्वान किया, "Come in, please. Namaskar !" (कृपया अन्दर आइए, नमस्कार।) उन्होंने नत होकर दोनों हाथों से श्री म के पादस्पर्श करके हास्यमुख से गृह में प्रवेश किया। भगिनीद्वय चेयर पर बैठीं पश्चिमास्य। श्री म और संन्यासी उनके सम्मुख पूर्वास्य बैठे — श्री म दाएं हाथ।

भक्तगण भी कोई कोई बैठे हैं पूर्व से ही। सब ही खड़े होकर उनका अभिवादन और सादर अभ्यर्थना करने लगे। सदानन्द और

मनोरंजन फर्श पर चटाई पर बैठे हैं। जगबन्धु श्री म के पास खड़े हुए हैं। अल्प क्षण के मध्य ही छोटे अमूल्य और शांति ने प्रवेश किया।

श्री म को पहले से ही इनका संवाद मिला है कि ये मठ में है। सान फ्रानसिस्को के अध्यक्ष स्वामी प्रकाशानन्द सम्प्रति मठ में आए हैं। उनके ही आह्वान से ये आई हैं। उभय ही शिक्षयित्री। श्री म आनन्द से उनके साथ बातें करते हैं। मठ द्वारा दिये नाम हैं प्रेमिका और राधिका। प्रेमिका ज्येष्ठा।

M. (to Premika)—When did you meet Swamiji (Vivekananda) and where ?

Premika — I met him twice : once at Sanfrancisco and the second time at Okland.

M. (to Radhika)— And you ?

Radhika — Only once at Sanfrancisco.

M. (to Premika) Were you young then ? I suppose very young.

Premika (with a smile)— No, not very young.*

संन्यासी (श्री म के प्रति)— इनकी वयस अब पैंसठ है। और इनकी.........

श्री म (विस्मये, बात पूरी होने के पूर्व ही)— कितनी होगी ?— यही चौंतीस-पैंतीस ?

भगिनीद्वय हंस रही।

---

*श्री म (प्रेमिका के प्रति)— आपने कब और कहां स्वामी जी का दर्शन लाभ किया ?

प्रेमिका— मैंने दो बार उनके दर्शन किए—एक बार सानफ्रांसिस्को में, द्वितीय बार ऑकलैण्ड में।

श्री म (राधिका के प्रति) और आपने ?

राधिका — मात्र एक बार सानफ्रांसिस्को में।

श्री म (प्रेमिका के प्रति) —आपकी वयस तब शायद कम थी —लगता है खूब कम थी ?

प्रेमिका (सहास्ये) —ना; उतनी कम नहीं।

M. (to Radhika) What is your present age ?

Radhika (joyfully smiling)— The spirit was never born !

M.— Oh I see, you live and speak in terms of the Absolute ! Very good. Yes, we are all the same spirit, partitioned through Maya or Ignorance into infinite bodies.§

संन्यासी (धीरे धीरे) — इनकी वयस प्राय: साठ ।

M. — How did you both get interested in religion ?

Premika—Our mother was very devoted. We got inspiration from her ! She won't go so much to the Church. But she would pray at home closing the door for long hours. That impressed us very much. This impression ultimately led us to Swamiji.

M. — Do you remember what did you find in Swamiji that impressed you most.

Both sisters— His snow-white purity and dynamic spirituality.

Premika (Radhika supporting) —When we heard him we felt his spirit was lifting our soul per force much against all our intellectual barrierrs, to a serene and beatific stage. This living religion we hankered after. And Swamiji quenched that long thirst. So

---

§श्री म (राधिका के प्रति)--- आपकी वयस अब कितनी होगी ?

राधिका (साह्लदे सहास्ये) — आत्मा अजन्मा ।

श्री म—बहुत खूब ! देख रहा हूं आप हैं परमात्म चिन्तन में सदा निमग्न और उसी भाव में ही बात भी करती हैं । सत्य ही तो हम सभी एक अद्वितीय सत्ता हैं -- केवलमात्र माया के कारण अज्ञानवश अनन्त रूपों में प्रतिभात ।

pure, so high and yet so humble, he was.†

अब भक्त मिष्टिमुख करेंगे। सन्देश, रसगुल्ले, सन्तरे तीन प्लेटों में भाग करके दिए गए। और तीन कांच के ग्लासों में डाब का जल। श्री म के ज्येष्ठपुत्र प्रभासबाबू के लड़के अरुण, अजय, अजित और अनिल और शोभा आकर दर्शन करते हैं। शोभा की वयस नौ वर्ष, हाथ में एक प्लेट 'खाबार' (नाश्ता)। वह वराण्डे में खड़ी है लज्जा

---

†श्री म — आप कैसे धर्मपथ पर आकृष्ट हुईं ?

प्रेमिका — हमारी मां खूब भक्तिमती थीं। हमने उनसे ही प्रथम प्रेरणा पाई। वे चर्च उतना नहीं जाती थीं। किन्तु दरवाजा बन्द किए अपने कमरे में बैठीं दीर्घकाल ईश्वरचिन्तन किया करतीं। इससे हम खूब आकृष्ट हुईं, धर्म के प्रति। इसी आकर्षण के फलस्वरूप अन्त में हम स्वामी जी का दर्शनलाभ कर धन्य हुईं।

श्री म — आपको क्या याद है कि स्वामी जी के भीतर क्या गुण देख कर आप इतनी आकृष्ट हुईं।

उभय भगिनी (समस्वरे) — स्वामी जी चरित्र की तुषार-धवल पवित्रता और उनकी प्रचण्ड जीवन्त धर्म की मूर्तिमानता।

प्रेमिका (राधिका के अनुमोदन सहित) — उनका कण्ठस्वर हमारे कर्णों में प्रवेश करते ही लगता कि विचारबुद्धि के सुहृढ़बन्धन छिन्न कर न जाने कौन हमारे मन को अदम्य आकर्षण पूर्वक एक दिव्योज्ज्वल प्रशान्त गंभीर आनन्दमय राज्य में ले जा रहा है। यही मूर्तिमान जीवन्त धर्म ही था हमारा एकान्त चिरकाम्य। स्वामी जी ने हमारी उसी तृष्णा का निवारण किया। उनकी कथा कितनी कहूं — जितना शुद्ध पवित्र था उनका चरित्र, उतना ही था उनका हृदय सुमहान, उतने ही व्यवहार में थे वे विनम्र और अमायिक।

से। श्री म सस्नेह उसको आह्वान करते हैं, आओ ना देओ इनको 'खाबार'। ये देवियां। शोभा ने प्रेमिका के हाथ में वह खाबार प्लेट दे दी। प्रेमिका नें शोभा के थाल से एक सन्देश उठाकर हाथ में दिया। राधिका और संन्यासी ने उनके थालों से मिष्ठि उठाकर अजित और अनिल के हाथों में दी।

आहारान्ते श्री म भगिनियों के साथ पुनः मधुरालाप करते हैं।

M. (to sisters)—We will be very glad to hear a song from you. (आपलोगों से एक गाना सुन पाएं तो बड़ा ही आनन्द होगा।)

दोनों भगिनियें मिलकर गाने लगीं Nativity of Christ—क्राइस्ट का जन्म संगीत। गाने का शेष चरण का स्वर उच्च होकर क्रमशः मृदु होकर अनन्त में मिल गया — 'ओह, जीसस्……ओ…… ……ह, जी………स ………स् !

श्री म निज एक गान गाते हैं।

गान : चिन्तय मन मानस हरि चिद्‌घन निरंजन।
कि अनुपम भाति, मोहन मूरति, भकत हृदय रंजन॥
नवरागे रंजित कोटि शशी विनिन्दित
कि वा बिजली चमके से रूप आलोके, पुलकें शिहरे जीवन॥
हृदि कमलासने, भावो ताँर चरण,
देखो शांत मने प्रेमनयने अपरूप प्रिय दरशन॥
चिदानन्दरसे भक्तियोगावेशे होओरे चिर मगन॥

प्रेमिका गाने का अर्थ समझे बिना ही प्रेमाश्रु विसर्जन करती है। भाव के आवेग में श्वेतवर्ण मुखमण्डल रक्तिमाभ हो गया। और नयन-द्वय के कोणों से बहकर शुभ्र अश्रुकण मुक्ता-मालावत् अजस्त्र निर्गत होते हैं।

श्री म के आनन पर प्रतिफलित गाने के दिव्य भाव और सुमधुर कण्ठस्वर ने लगता है भक्तिमती भगिनी को अभिभूत कर लिया है।

अब श्री म गाने का संक्षेप अर्थ अंग्रेजी में बोलते हैं।

M.—Oh my mind, think on Him who is the essence of spirituality, and is stainless. Of lustre unparallelled is He charming and sweet to the heart of devotee. His lustre has dimmed thousands of moons. My mind, meditate on Him in the lotus of your heart with love and devotion. And then shall you have peace everlasting and love divine!

M. (to sisters)— Narendra (Swami Vivekananda) sang this song in the northern vernadah leading to the Master's chamber. And the Master was plunged in 'SAMADHI' standing. I had not seen 'SAMADHI' before, so I stood bewildered. A gentleman whispered to me, it was 'SAMADHI'. Narendra was then only nineteen years old. He had connection with the Brahma Samaj. And there he learnt this song.*

कुछ क्षरण श्री म नीरव रहे। संभवतः वही अपरूप दिव्य दृश्य देख रहे हैं! ठाकुर वराण्डे में दक्षिरण पूर्व कोरणे दण्डायमान प्रस्तरवत् निश्चल। किन्तु मुख पर कैसी प्रशान्ति और सजीव आनन्द।

श्री म पुनराय बातें करते हैं

M.— Do you know the parable of two men entering into a mango garden?

Radhika— Yes, yes.

M.— One man is eating mangoes to his heart's content; and another counting the trees, different varieties and so on. He is engaged in superficial matters. 'But one thing is needful in life and

---

*श्री म (भगिनियों के प्रति)—नरेन्द्र ने यही गान गाया था ठाकुर-घर के उत्तर बरामदे में। ठाकुर गाना सुनते ही खड़े खड़े एकदम समाधिस्थ होगए। मैंने इससे पूर्व समाधि देखी नहीं थी। तभी विस्मय से निर्वाक् खड़ा रहा। एक भद्र जन मेरे कान में बोले, इसी का नाम है समाधि। नरेन्द्र की वयस थी तब उन्नीस। ब्रह्मसमाज में यातायात था। यह गान वहां पर सीखा था।

Mary has chosen that."

Radhika—But a man lives even without this question.

M.—Yes, in the impurest state such a question does not come in. If a man wants everlasting peace then this question arises. That means he is not satisfied with the changing states of the mind—now joy, now sorrow ! And so on. He wants a changeless stage. That is what Mary has chosen for love of God.

Sri Ramakrishna said, pure love and pure knowledge are one and the same thing.*

भगिनिएं विदा लेती हैं। भारतीय प्रथा से वे पुनः श्री म के पांव में हाथ देकर प्रणाम करती हैं। श्री म ने भी उनके जानु (घुटने) स्पर्श करके प्रत्यभिवादन किया। ग्रीष्म में इनको कष्ट हो रहा है । शीघ्र ही अलमोड़ा पहाड़ पर चली जाएंगी। वर्षा में ठंडा होने पर फिर नीचे उतर आएंगी।

---

*श्री म— आप क्या ठाकुर की वह गल्प जानती हैं—आम खाने दो जन आम बागान में गए ?

राधिका—हां, हां ।

श्री म —एक जन ने बाग में प्रवेश करते ही भरपेट आम खाना आरम्भ कर दिया। और एक जन हिसाब ले रहा है, कितने पेड, कितनी प्रकार के आम —यही सब । उसने अनावश्यक विषयों में मनोनिवेश किया है। किन्तु जीवन में एक ही वस्तु मात्र काम्य है —भगवत्प्रेम, और मेरी उसे ही लिए मग्न हैं।

राधिका—किन्तुमनुष्य इस प्रकार प्रश्न के बिना भी जगत् में जीवित है।

श्री म — हां अज्ञानावस्था में तो यह प्रश्न ही नहीं उठता। अर्थात् किन्तु मनुष्य जब शाश्वत सुखशांति चाहता है, तभी इसका प्रयोजन होता है। अर्थात् जब मनुष्य सुख दुःख के सतत भवर से उद्वेलित होता है तभी वह इस शाश्वत शान्तिमय आश्रय को चाहता है। इसे ही मेरी ने आश्रय किया है—यही ईश्वर प्रेम ।

श्री रामकृष्ण ने कहा था, शुद्ध प्रेम और शुद्ध ज्ञान---- एक ही वस्तु है।

श्री म निम्नतले पर उनके संग में उतरे । स्कूल बाड़ी के सामने अमहर्स्ट स्ट्रीट के पूर्वपाथ पर खड़े होकर श्री म उनको विदा देते हैं। श्री म के इंगित से भक्तगण भगिनियों के पांव में हाथ देकर प्रणाम करते हैं । प्रभासबाबू और उनके पुत्रकन्यागण उसी प्रकार प्रणाम करते हैं। संन्यासी संग में भगिनीद्वय चली गईं ।

(2)

संध्या । श्री म चार तल की छत पर बैठे ध्यान करते हैं चेयर पर उत्तरास्य । भक्तगण भी बैंचों पर बैठे हैं । श्री म के सम्मुख ध्यान करते हैं । ध्यानान्ते आज केवल अमेरिका के भक्तों का प्रसंग ही चलनें लगा ।

श्री म (भक्तों के प्रति) — जिन सब भक्तों ने स्वामी जी (विवेकानन्द जी) के दर्शन किए हैं वे धन्य हैं । उनको जिन्होंने प्यार किया है, आदर किया है, श्रद्धाभक्ति दिखाई है, वे हमारे परमात्मीय हैं । हम उनके निकट ऋणबद्ध क्यों ? इसीलिए ना कि स्वामी जी और ठाकुर अभेद । सुना है ठाकुर सर्वदा छायावत् स्वामीजी के संग में थे उस देश में। एक बार स्वामी जी कर्मक्लान्त होकर ज्योंहि समाधिस्थ होनें की चेष्टा करते हैं त्योंहि ठाकुर आकर सम्मुख खड़े हो जाते । अर्थात् उनको समाधिस्थ होने दें तो कौन उनका नाम प्रचार करे और नाम प्रचार न हो तो भक्तों को शांति लाभ क्योंकर हो ? स्वामी जी का यह सब कार्य एक master plan (बृहत् परिकल्पना) का अंग है । ठाकुर अवतार कि ना ! उनकी चिन्ता जगत् के लिए । पाश्चात्य जगत् के लिए विशेष करते हैं । कारण, वे विज्ञान की सहायता से जागतिक विषय में खूब अग्रसर हो गए हैं । ऐश्वर्य में भगवान को भूल जाते हैं । जभी उनको भगवान के पास लौटा लाना होगा । इसी कार्य में स्वामी जी को लगाया ।

अहा, कैसा प्यार इनका स्वामीजी के ऊपर ! अनेकों ने ही देश,

आत्मीय कुटुम्ब, राजसुख त्यागा है। स्त्री-पुरुष भक्तों ने कितने प्रकार से प्यार किया है! अज्ञात कुलशील स्वामीजी, किन्तु ठाकुर ने उनके हृदय से प्यार की प्रेरणा दी। कोई भाई कहकर प्यार करता, कोई बन्धु, कोई पिता, और फिर गुरु — नाना प्रकार से इन्होंने प्यार किया है। धर्म धर्म ! करते हैं लोग, मिशनरी लोग कितनी ही व्याख्या करते हैं, किन्तु धर्म का रूप क्या है वह वे दिखला नहीं सकते। उसी रूप को देखा था स्वामी जी में। आज भी भगिनिएं बोलीं, उनको 'snow-white purity' (तुषारधवल पवित्रता) और 'dynamic spirituality' अर्थात् उनको धर्म का मूर्तिमान विग्रह देखकर स्वामी जी पर आकृष्ट हुईं। कितने करोड़पतियों के घरों में उनकी परम आत्मीय की भांति सेवा की गई है। अवतार लीला के वे भी अंग हैं। ये सब पूर्व से ही आयोजित था।

इन्हीं फॉक्स सिस्टरों को देखिए ना। कहां से आई हैं भारत में धर्म के संधान में। सात समुद्र तेरह नदी पार होकर आई हैं यहां। ये ही पूर्वजन्म में गोपियां थी वृन्दावन में। उनका ग्राम तो फिर भी पास ही था। किन्तु इन का आठ हजार दस हजार मील दूर घर। कैसा आकर्षण ! जभी ठाकुर ने कहा था, 'जो आन्तरिक ईश्वर को पुकारेगा उनको यहां आना ही होगा।' यहां पर माने ठाकुर के पास, अर्थात् उनका भाव लेना होगा। तभी पूर्णकाम होगा। वे आए ही हैं इसीलिए, भक्तों को उठाने। सारे जगत् भर में जो जहां पर आन्तरिक ईश्वर को पुकारता है सब को ही ठाकुर का उदार भाव लेना होगा। और व्याकुलता। बोले थे, 'जिस भाव से हो पुकारो, आन्तरिक होने पर वे सुनेगें ही सुनेगें।' कितने भक्त उनके पास आए थे, नाना सम्प्रदायों के, सब ही पूर्णकाम होकर गए। अब भी आते हैं, भविष्यत् में भी आएंगे। और दूसरे अवतार के होने तक ठाकुर का भाव ही युगधर्म है।

इदानीं श्री म नूतन कथामृत लिखते हैं — परिशिष्ट रूप में

मासिक "वसुमती" में निकलता है। पुस्तकाकार में शीघ्र ही प्रकाशित होगा। बेलुड़मठ के स्वामी माधवानन्द ने श्री म से कई दिन पूर्व कथाप्रसंग में अनुरोध किया था कि "कथामृत" के परिशिष्ट में श्री रामकृष्ण-बंकिम-संवाद दें। वह "उद्बोधन" में प्रकाशित हुआ था पंचम वर्ष में। इसी विषय पर विशेषभाव से "उद्बोधन" में अनुसंधान करने के लिए अगले दिन बृहस्पतिवार को प्रातः श्री म ने अन्तेवासी को स्वामी माधवानन्द के निकट अद्वैताश्रम भेजा था। अद्वैताश्रम में "उद्बोधन" नहीं हैं। श्री म ने जभी अन्तेवासी को उद्बोधन ऑफिस में जाकर उसी प्रबन्ध को लिपिबद्ध करके लाने के लिए कहा था। अन्तेवासी रात्रि दस बजे के समय प्रबन्ध का अर्धेक लिखकर लाए हैं। श्री म ने भक्तों को नूतन कथामृत परिवेशन के लोभ में अटका रखा है।

अन्तेवासी ने अनुलिपि-पाठ समाप्त किया रात्रि ग्यारह बजे।

अगले दिन शुक्रवार को भी उद्बोधन ऑफिस से लौट कर आने में विलम्ब होने पर भी भक्तगण बैठे रहे। आज अन्तेवासी के संग विनय गए थे। पाठ शेष होने पर श्री म बोले, "इससे लोगों का खूब उपकार होगा। बंकिमबाबू विख्यात जन हैं। उनके संग ऐसी बातें हुई थीं, लोगों के यह जानने से ठाकुर के ऊपर दृष्टि पड़ेगी। (सहास्य) ठाकुर ने कहा था बाबूओं ने जब खाई है तब आमड़ा की चटनी बढ़िया। (सब की हंसी) हां, लोगों के ग्रहण करने पर साधारण लोग लेते हैं।"

उसके अगले दिन शनिवार। श्री म शाम को डाक्टर बक्शी की घोड़ा-गाड़ी में काँकुड़गाछि गए थे। प्रधान उद्देश्य— एक पीड़ित वृद्ध साधु को देखना। द्वारकादास बाबा जी एक अंग में कठिन पीड़ा से आक्रान्त हुए हैं। श्री म भक्तों के द्वारा नित्य संवाद लेते हैं और उनके लिए औषध पथ्य और डाक्टर की व्यवस्था करते हैं। जभी आज डाक्टर की गाड़ी में उनके संग ही गए। इनके संग ठाकुर के

समाधिस्थान, योगोद्यान और सुरेश बाबू के बागान के भी दर्शन हो गए। लौटे तो रात्रि तब प्रायः नौ। दारुण गरम । थोड़ा अतिशय क्लान्त । श्री म ने गाड़ी से उतर कर सईस से डेढ़ बालटी शीतल जल मंगवाकर घोड़े के लिए पीने को दिलवाया। जब घोड़े का जल पान समाप्त नहीं हुआ तब तक श्री म देहकष्ट होते हुए भी खड़े रहे। जल पान के पश्चात् घोड़े के लिए घास दिलवाई खाने को।

छत पर नित्यकार भक्तगण प्रतीक्षा कर रहें हैं। श्री म ऊपर चढ़ते चढ़ते भक्तों से कह रहे हैं, ठाकुर पशुओं के ऊपर बड़ी ही दृष्टि रखते थे। और फिर सईसों पर भी। बोलते, ये मुख से कह बोल नहीं सकते। उनकी सेवा लेने से सेवा करनी चाहिए। वैसा कहेंगे नहीं? वे ही तो अन्तर्यामी रूप में पशुओं के भीतर रहते हैं। उनका सुख दुःख सब जानते हैं। घोड़े वाली गाड़ी पर अधिक लोगों को चढ़ने नहीं देते, घोड़े को खींचने कष्ट होगा इसलिए। करुणामय भगवान जो हैं वे।

श्री म छत पर बैठे हैं। रात्रि प्रायः दस। अनेक भक्त श्री म की प्रतीक्षा में बैठे हैं। कथामृत पाठ करने के लिए बोले, किन्तु फिर कुछ सोचकर उसका अनुवाद 'Gospel of Sri Ramakrishna', प्रथम भाग पढ़ने के लिए बोले। बड़े अमूल्य पढ़ते हैं— श्री राकृष्ण ने काँकुड़गाछि में सुरेन्द्र के बागान में शुभागमन किया है। श्री म ध्यानस्थ होकर सुनते हैं। पाठ शेष होने पर पुनः बातें करते हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)— यह सब विवरण literature में landmark (साहित्य का दिक् दर्शन) हो गया है। जितना समय जाएगा उतना ही लोग अधिक पढ़ेंगे। और वे ही सब स्थान दर्शन करने जाएंगे। और फिर इन सब खण्ड लीलाओं का अभिनय भी होगा जैसा यात्रा (नाटक) में होता रहता है। ये सब स्थान हैं अब भक्तों के पास अति पवित्र। किन्तु पीछे समग्र देशों के पास पवित्र मानकर गृहीत

होंगे। परे ये सब national property (जातीय सम्पद्) होंगे ।

क्यों जाया करते दौड़े-दौड़े ? भक्तों के भीतर प्रवेश करवा देते निज भाव। ब्राह्म भक्त उन्हें प्यार करते. किन्तु इतना आते नहीं थे । जभी निज कलकत्ता जाकर उन्हें निमंत्रण करके बुलवाते। सुरेश बाबू के बागान में प्रताप मजुमदार को भेजकर बुलवाया। प्यार करते थे कि ना खूब। यह बात ही बोलने के लिए बुलवाया— वक्तृता प्रचार, झगड़ा फसाद तो बहुत हो चुका। अब कुछ दिन सब छोड़कर उन्हें पुकारो— 'Dive deep into the immortal sea of His love !'

मनुष्य की दृष्टि कितनी थोड़ी सी ! यही जो नरेन्द्र की प्रशंसा की। इस का अर्थ है। वे जानते हैं नरेन्द्र जगत् पूज्य होंगे। प्रताप मजुमदार को उन दिनों के एक विख्यात धर्मवक्ता के नाम से वेस्ट के लोग जानते थे — जभी यहां पर विशेष परिचय करवा दिया। इसके पश्चात् हम देखते हैं, नरेन्द्र और प्रताप मजुमदार "पार्लियामैन्ट ऑफ रिलिजियनज" के सदस्य हैं । यह सब ही भविष्यत् घटनाएं (योगायोग) उन्हें विदित थीं। पूर्व से ही निश्चित किया हुआ था।

(सहास्य) और एक भक्त भी, कुछ दिन दक्षिणेश्वर जा नहीं सके कार्य के आधिक्य के कारण। उनको भी सवाद द्वारा बुलवा लिया। बोले, 'अनेक दिन से आए नहीं, तुम्हारे लिए मन कैसे करता था ?' देखिए, कैसा प्रेम ! यही अहेतुक प्रेम द्वारा ही तो भक्तों को बांधा है। भगवान मनुष्य होकर आए । बिल्कुल मनुष्य का व्यवहार । जो सच्चिदानन्द-घन-विग्रह उनका फिर मन "कैसे करना" क्या ? किन्तु अब लीला के लिए अवतीर्ण कि ना, जभी ठीक मनुष्य का व्यवहार ।

और एकजन को लक्ष्य करके सुनाया, 'March on until you see God, the greatest ideal of your life ?" (अग्रसर होओ जब तक न ईश्वर दर्शन हो।)

(3)

मॉर्टन स्कूल। चारतले का कक्ष। संध्या के आठ। श्री म अपने बिछौने के ऊपर बैठे हैं, पश्चिमास्य। भक्तों के साथ बातें करते हैं। श्री म के बाईं ओर बेंच पर छोटे अमूल्य और छोटे जितेन हैं। जगबन्धु ने घर में प्रवेश किया। ………बाबू के संबंध में समालोचना सुन पाए।

श्री म (भक्तों के प्रति)— बड़ा आलसी व्यक्ति……बाबू। उसके संग जो रहेगा वह भी आलसी हो जाएगा। हमें भरोसा नहीं हुआ, ठाकुरों के बरतन मांजने की बात बोलने का। कहने पर शायद 'ना' ही कह बैठेगा। पूजा-शूजा होगी नहीं उसके द्वारा। जभी कहा था, वे सब तैयारी कर देंगे, तुम केवल निवेदन करोगे फल मिठाई। आप लोग तो वह कह कह कर करा सकें तो जानूं। (हास्य) कितनी बार मांजने पड़ते हैं बरतन ?

छोटे अमूल्य — प्रातः बाल्यभोग और आरती के बासन, और फिर दोपहर, शाम और रात्रि के भोग के बरतन।

श्री म —क्यों, प्रातः पत्ते में देने से नहीं चलता ? भक्ति ही सार। भक्ति होने से ही हुआ। और एक बार जो मंजेंगे वे ही चलेंगे सारा दिन रात। अन्य समय केवल गंगाजल से धोने से ही हुआ। गंगाजल तो उधर मिलता है। तब फिर क्या ? कार्य-संक्षेप कर लेना चाहिए।

श्री म (सब के प्रति) —ठाकुर बाड़ी के निकट एक बहू है। पांच वर्ष हुए विवाह हुआ है। अब वयस चौदह। अति झगड़ा करती है सास के संग। पति की वयस तीस थी विवाह के समय। उसकी फिर रखेली भी है। (सहास्य) सास कहती है, "तुझे तब समझूंगी यदि उसका 'मां' पुकारना बन्द करवा सके।" (उच्च हास्य)। "और यदि रखेली छुड़वा सके।" (सब का हास्य)। हम सुनते हैं कि ना वहां ठाकुर बाड़ीं में रहते हुए। रोज नित्य झगड़ा। हां उस (भक्त) के

द्वारा वह (पूजा) करवा सको तो समझूंगा आप लोग कैसे योग्य हो (हास्य)।

काशीपुर में डाक्टर बक्शी के गृह में ठाकुर की नित्य पूजा है। मनुष्य के अभाव में इदानीं सेवा का कष्ट होता है। छोटे अमूल्य देश से आकर वहां पर रहते हैं। सेवा की असुविधा देखकर वे पूजा करते हैं। उनके संग उसी विषय पर परामर्श करते हैं।

भक्तों के चरित्रगठन करने की अद्भुत प्रणाली है श्री म की। इसे double operation (एक साथ दो अस्त्रोपचार) कहा जा सकता है। एक आॅपरेशन स्वयं करते हैं — हंसी ठट्टे के भीतर से अपराधी को उसके दोष की बात कह कह कर। दूसरा आॅपरेशन करवाते हैं अपराधी के बन्धुओं द्वारा। जभी डबल आॅपरेशन से भक्तों के मन का रक्त मवाद शीघ्र निकल जाता है। शीघ्र ही चरित्र संगठित होता है। श्री म का हृदय शत मातृस्नेह का निर्झर है।

सतीश का प्रवेश। ये बड़े जितेन बाबू के ज्येष्ठ पुत्र हैं। श्री म को प्रणाम किया। वे एम० ए० पास। हाथ में एक नूतन चटाई लाए हैं। बोले, "पिता जी ने यह भेजी है भक्तों के बैठने के लिए।" श्री म बोले, "रख दो यहां इस बिछौने के ऊपर।" इनके आसन ग्रहण कर लेने पर उनके साथ बातचीत होती है।

श्री म (सतीश के प्रति) — इस घड़ी को एक अमरीकन भक्त ने दिया है। इसका नाम यंकि रेडिओ लाइट है। Yankee is a slang term (for American). (यंकि शब्द का अर्थ ग्राम्य भाषा में है अमरीकन।)

महत् जन। डाक्टर (इ० डब्ल्यू० हामेल) एम० डी० पास हैं। Elderly—वयस फॉरटी एट (अड़तालीस)। बोले, "क्राइस्ट को क्या वे लोग समझ सकते हैं? उनको समझना हो तो पहले ठाकुर को समझें। नहीं तो नहीं।" खूब sound man, cool head (विज्ञलोक और

शांत मस्तिष्क) । और फिर बीच बीच में निर्जनें कुटीर वास करते हैं।

फॉक्स सिस्टरें आई थीं तीन चार दिन हुए। उन्होंने बताया, हमारी मां चर्च जाती थीं। घर में द्वार बन्द करके प्रार्थना करती थीं।

डार्लिंग नामक एक साहब भक्त हैं। उन्होंने भी खूब स्पष्ट करके कहा, "चर्च में वे सब जाते हैं लड़किएं देखने। ये उन इशारा करते हैं, वे इनकी ओर। यही चलता है चर्च में।"

जे० चौधुरी हैं बैरिस्टर। उन्होंने बताया था, हम जब पढ़ते थे तब हक्सले (Huxley) ने एक दिन लैक्चर दिया था। मैंने अपने कान से सुना। कहा था, "इस देश का सायन्स से जितना होना था हो गया है—यही agnosticism तक। (ईश्वर हैं तो रहें हमें प्रयोजन नहीं, उदासीनतावाद पर्यन्त।) अर्थात् इस बुद्धि द्वारा ईश्वर को नहीं जाना जाता। ईश्वर-तत्त्व जानना हो तो आस्तिक्य बुद्धि लेकर इन्डिया की ओर हमें ताकते रहना होगा। वे उस दिशा में बहु दूर अग्रसर हुए हैं।" राममोहन राय लाइब्रेरी में बोले थे, जे० चौधरी।

देखो ना पार्शि साहब हैं बहुत highly educated attorney (खूब उच्चशिक्षित एटोर्नी) और सूर्य-उपासक। वे भी ठाकुर को ले रहे हैं। इनका नाम है जीनवाला। एम० ए० पास। उस दिन मुझे लेकर दक्षिणेश्वर गए। भूमिष्ठ होकर प्रणाम किया, रुपया (प्रणामी) दी, कपाल पर सिन्दूर का तिलक दिया, और हाथ में चरणामृत। और फिर एक हांडी रसगुल्ले ठाकुर भोग में दिए। ठाकुर का भाव कितना फैल रहा है।

पार्शि साहब से पूछा, एम० ए० में क्या लिया था। बोले, हिस्ट्री और Economics (अर्थशास्त्र)। हमने कहा बहुत अच्छा। फिलोसफी में कुछ नहीं है—हिस्ट्री अच्छी। Philosophy makes darkness visible. (दर्शनशास्त्र अन्धेरे को दृष्टिगोचर कर देता है।)

सतीश उठेंगे। उनकी वयस है तीस वर्ष। उन्होंने बी० एल० भी पास किया है। विवाह नहीं किया।

श्री म (सतीश के प्रति)—बड़ा मुश्किल संसार। ठाकुर कहते, 'संसार ज्वलन्त अनल।' माँ— ठाकुरण भी वैसा ही कहतीं। ठाकुर ने छोकरे भक्तों से कहा था, विवाह मत करो विवाह करना ज्वलन्त आग में छलांग लगाना है।

रात्रि आठ। चारतले की छत पर श्री म भक्तों के संग बैठे हैं। कभी कभी दो एक बातें होती हैं, कभी कभी नीरव। अच्छी गर्मी पड़ी है। श्री म को गर्मी में बड़ा कष्ट होता है। निम्नतले पर दक्षिण दिक् के गृह में खूब संकीर्तन हो रहा है। खोल, करताल और कण्ठ शब्द क्रमशः ऊंचा होता जा रहा है। धूम मची हुई है। श्री म का मन उसी दिक् में हैं। कुछ क्षण पीछे बातें कहते हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)— आप लोग यदि नवद्वीप की echo (प्रति ध्वनि) सुनना चाहते हैं तो वही सुनिए— कीर्तन हो रहा है खूब उत्साह के संग—'प्राणगौर नित्यानन्द।' ऐसा कीर्तन नवद्वीप में होता था, चैतन्य देव के समय।

जो कर्म लेकर हैं उनको यह सब भला नहीं लगता। काज की खूब क्षति होती है। जिनका वह नहीं है उनको खूब अच्छा लगता है। वे जभी कहते, काजी के पास शिकायत करेंगे।

आहा, यह वस्तु केवल बंगाल में पाएंगे, अन्य देश में नहीं। ऐसा नियम किया था, चौबीस घण्टे कीर्तन। इच्छा करके नाम तो लेगें नहीं। अच्छा, अनवरत चौबीस घण्टे कीर्तन होता है जभी। अनिच्छा से ही कान में प्रवेश करेगा नाम। तब संभवतः नाम लेंगे लोग। कितनी चिन्ता भगवान को भक्तों के लिए। ठाकुर गृह के पास हुआ था चौबीस प्रहर कीर्तन।

श्री म पुनराय नीरव कुछ काल। और फिर कथा आरंभ हुई।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति) — विद्यासागर महाशय की एक बात

याद आ रही है। चण्डीबाबू उनके बड़े भक्त थे, सर्वदा यातायात किया करते। साधारण ब्राह्म समाज में लोगों को बिठाने के लिए इन्स्पेक्टर रहता है। चण्डीबाबू वही थे। अब स्कूल कॉलेज के लड़के जाते हैं, वहां पर लड़कियां गाना गाती है वह सुनने के लिए। गाना समाप्त होता है और वे भी उठ कर चले जाते हैं। कोई कोई फिर रूमाल में रोड़े बांध लाते और उनके ऊपर फेंकते। एक दिन शायद कुछ गोलमाल हो गया। प्रथम मुख से, फिर प्रहार। चण्डीबाबू को ऐसा प्रहार किया, एकदम black and blue (काले-नीले दाग शरीर पर पड़ गए।) विद्यासागर महाशय खबर पाकर प्रातः उन्हें देखने के लिए गए उनके घर। खूब अनुगत उनके थे कि ना। उनके निकट सर्वदा बैठा करते। चण्डीबाबू ने ही तो उनकी life (जीवनी) लिखी है। पीछे चण्डीबाबू बैठे। (हुक्का खींचने का अभिनय करते हुए) ऐसे हुक्का पीते हैं। समझ गए कि गत रात के प्रहार की बात सुनकर देखने आए हैं। जभी बोले, नहीं, ऐसा कुछ विशेष नहीं हुआ, यही सामान्य थोड़ा सा (सबका उच्च हास्य)। विद्यासागर महाशय बोले, तो भी भाई, हमारे बाप पितामहों का ऐसा नहीं था। वे अकेले अकेले बैठकर ईश्वर को पुकारते थे। तुम लोगों ने ही आजकल एक संग बैठकर प्रार्थना करने का नियम किया है। वह तो चलो हुआ। किन्तु यह फिर क्या? लड़कियों, नारियों को फिर आने दिया ही क्यों (हास्य)?

डाक्टर हमेल, फॉक्स सिस्टरस और मिस्टर डाउलिंग की बातें होती हैं। सकाल समय भी हुई थीं।

श्री म (भक्तों के प्रति)– उन्होंने बतलाया, क्राइस्ट-धर्म उस देश में फैशन हो गया है। भले जन नहीं है, ऐसा भी नहीं है। किन्तु अधिकांश लोगों के निकट वही फैशन है। अनेक जन इसीलिए चर्च में नहीं जाते। फॉक्स सिस्टरस की माता जी द्वार बन्द करके घर में

बैठकर पुकारतीं। डाक्टर हमेल ने बताया था, उस देश के लोग क्राइस्ट को तनिक भी नहीं समझते।

कैसे समझें वे लोग ? चर्च में जो शिक्षा देते हैं वे ही जो, बिल्कुल ही त्यागी नहीं है। कितने आराम में रहते हैं। ऐसी प्रकाण्ड अट्टालिका, असबाब— चीज बस्त, मोटर, दास-दासी, उत्तम आहार और वस्त्र। कैसा भोग ! किन्तु क्राइस्ट का जो प्रचार करेंगे उनका बिना त्यागी हुए होगा नहीं। कोई सुनता नहीं उनकी वाणी। तभी कुछ होता नहीं, इतना करते हुए भी।

क्राइस्ट का आदर्श था 'but the son of man, hath not where to lay his head.' (मेरा सिर छुपाने को स्थान नहीं।) यही सर्वत्यागी का आदर्श। और अब क्या बन गया है !

'Provide neither gold, nor silver, nor brass in your purses, nor scrip for your journey, neither two coats, neither shoes, nor yet staves.' (क्राइस्ट ने शिष्यों से कहा था, एक वस्त्र में आओ प्रचार करने के लिए — वस्त्र, कोट, आहार कुछ संग में नहीं लोगे।)

यही थी प्रचारक की सम्पद। यही आदर्श। और अब क्या होता है ? वह आदर्श आकाश से गिर कर मिट्टी में लुटता है। इतना उतर गया है। जभी काज भी नहीं होता, सुनता नहीं कोई उनकी बात।

धर्म की ऐसी ग्लानि अवश्य ही होगी। चेष्टा करके भी कोई उसको रोक नहीं सकेगा। तथापि कर्त्तृपक्ष का चेष्टा करना उचित। सर्वदा सचेष्ट रहने से ग्लानि कम होगी।

बुद्धदेव के संघ में क्रमशः यह सब प्रवेश कर गया था। घर-द्वार कितना कुछ हुआ। कहां गया सब ?

धर्म में राजनीति प्रवेश करके सब उच्छेद कर देती है मूल भाव। power, politics, enjoyment (कर्तृत्व भोग) ये सब हैं धर्म के महाशत्रु।

अब वैस्ट के political organisation का influence (राजनैतिक दल का प्रभाव) धर्मसंघ में भी प्रवेश कर गया है। कितना बड़ा organisation Vatican पोप का विराट संघ और फिर प्रोटैस्टैंट और कितने ही मत हैं। ये सब ही क्राइस्ट के नाम पर हो रहे हैं। किन्तु क्राइस्ट का सिर छिपाने को स्थान नहीं था।

Organisation (संघ) बिना हुए कार्य नहीं होता। आर फिर organisation (संघ) में धर्म की spirit (व्याकुलता) रहती नहीं। क्रमशः hollowness and rottenness (शून्यगर्भता मलिनता) प्रवेश कर जाती है।

ठाकुर अभी अभी आए हैं धर्म का स्वरूप दिखाने। उनकी भी बाड़ी नहीं, घर नहीं, पहनने के कपड़े पर्यन्त भी रख नहीं सकते — ऐसा त्याग। मिट्टी की डली पर्यन्त हाथ में ठहरती नहीं। बिलकुल त्याग, हाड़मांस तक में त्याग। अज्ञात में भी अपवित्रता उनकी देह का स्पर्श नहीं कर सकती। करते ही skin (चर्म) पर्यन्त उसे resist (प्रतिरोध) करती। मन सदा निमग्न ब्रह्मानन्द में। इतना तेज उनका कि जैसे हाड़मांस पर्यन्त चेतन हो चुके थे — चेतन पवित्र और विशुद्ध।

मॉर्टन स्कूल, कलकत्ता।
6 अप्रैल, 1924 ई०।
23 वां चैत्र, 1330 (बं०) साल, रविवार।

नवम अध्याय

जडचेतन भेद विलुप्त— श्री रामकृष्ण देह में

(1)

मॉर्टन स्कूल की चारतले छत। अपराह्न साढ़े पांच छत के दक्षिण प्रान्त में श्री म चेयर पर बैठे हैं, दक्षिण-पश्चिम में मुख करके। श्री म के सम्मुख टीन का कक्ष। इसी घर में अन्तेवासी रहते हैं। श्री म के बाईं ओर सर्वदा ही दो तीन पुराने टूटे फूटे बेंच पड़े रहते हैं। उन्हीं बेंचों पर उत्तरास्य बैठे हैं अन्तेवासी, मनोरंजन, शांति और गदाधर। श्री म के हाथ में कथामृत की डायरी है। वे निविष्ट होकर डायरी देख रहे हैं।

आज 22 अप्रैल, 1924 ई०; वैशाख 1331 (बं०) साल; कृष्णा चतुर्थी, मंगलवार। अब बातें होने लगीं।

श्री म (अन्तेवासी के प्रति) — एटीन एटी फोर, फोरटीन्थ जनवरी (अठारह सौ चौरासी, चौदह जनवरी) को क्या बार था? पंजिका मिलेगी कहीं?

अन्तेवासी— भाटपाड़ा के ललितबाबू से पूछा जा सकता है। किंवा गुप्तप्रेस में देखूंगा।

श्री म— तिथि का सब कुछ, बंगला तारीख और वार आदि चाहिए। श्री म पुनः डायरी में निमग्न। भक्तों का श्री म के मुखपान में चित्त है। कितने ही क्षण पश्चात् श्री म डायरी पढ़ते हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)— सुनिए, ठाकुर बोलते हैं, निराकार

निराकार करने से क्या होता है ? कलि में अन्नगत प्राण—आयुकम । अब उनका नामगुण कीर्त्तन करना, पुकारना, प्रार्थना करना ।

(सहास्य) किन्तु दयानन्द ने कहा था, उसका (ईश्वर का) नाम करने की अपेक्षा 'सन्देश सन्देश' करने से भी होता है (हास्य) । कप्तान बैठे राम राम कर रहे थे । उस पर ही दयानन्द ने वह बात कही, (हास्य) । निराकार का ध्यान कैसा— मैं सूर्य नहीं, चन्द्र नक्षत्र नहीं, जगत् नहीं । खाली नेति नेति । और भी तो एक है, क्या है वह ? मैं देह भी नहीं । अभी अभी विचार हुआ । इसके पश्चात् ही जल पिपासा हुई । झट विचार छोड़कर जल पीने गया ! यदि वैसा ही है तो किस प्रकार कहना चलेगा कि मेरी देह कुछ भी नहीं है । किंवा, घर में एपल (सेब) पड़ा है । उसकी याद आई । और तत्क्षण उसको खाने गया । वैसा होने पर तब तो नहीं हुआ, मैं देह नहीं । केवल मुख से बोलने से क्या मैं निराकार हूँ 'निराकार' हो जाता है ?

इसीलिए ठाकुर ने बताया था, कलि के लिए वह नहीं, कालि में भक्तियोग ।उनको पुकारना, उनका नाम गुणकीर्तन करना, प्रार्थना करना । इसके अतिरिक्त और उपाय नहीं है । कभी कभी गाना कर लिया अथवा कभी कभी नाम कर लिया । और प्रार्थना भी खूब आवश्यक । क्राइस्ट भी प्रार्थना की बात खूब कह गए हैं । नवद्वीप में चैतन्यदेव ने भी इसी भक्तियोग की बात ही कही है । उन्होंने भक्तियोग-प्रचार किया है ।

श्री म (जनैक के प्रति)— सारादिन आंखें मूंदे रहने से ही क्या हुआ ?

श्री म (सब के प्रति)— ज्ञान योग से पहले होता था । अब बड़ा कठिन है । पहले लोग कितना जीते थे । सुना जाता है ऋषिगण पहले एक हजार डेढ हजार वर्ष जीते थे । वे कर सकते थे । छः महीने ही बिना खाए शायद रह लिए । अथवा एक कंदबेल खा ली ।

जगन्नबन्धु–ध्रुव रोज एक कंदबेल ही मात्र खाते ।

श्री म— हां तब iron constitution (सुदृढ देह) थी । कई मास रहे, केवल हवा खाकर । जल की बात का जब उल्लेख नहीं है तब infer (अनुमान) किया जाता है उसे ही लिया था । (परिहास से) दशरथ भी तो नौ सौ वर्ष बचे रहे थे, उस पर भी उनकी अकाल मृत्यु कहते हैं (हास्य) ।

श्री म पुनराय डायरी देखते हैं । और फिर कथा ।

श्री म (भक्तों के प्रति) आहा, अब मन में होता है क्यों रोज ठाकुर के संग रहा नहीं । तब कितनी हुज्जत आपत्तियां । कहते, आज रह जाओ, कहां जाओगे । जी नहीं, यह है, वह करना होगा— इसी प्रकार पांच सात बातें हम कहते । अब समझता हूँ किया क्या ? कहावत है ना, "साधले जामाई ना खाय कोश । परे जामाई भुतुरि चोष । " (सब का हास्य) । हां जमाई को कहा तो बोला, "नहीं नहीं, अब कटहल नहीं खाऊंगा ।" किन्तु तत्पश्चात् ही इच्छा हुई खाने को । "अच्छा भुतुरि (फोकसा) ही दे दो ।" उसको ही चूसता है (हास्य) ।

श्री म चेयर से उठकर छत के उत्तर प्रान्त में अकेले पायचारी करते हैं ।

भक्त मुड़ि (मुरमुरे) लाए हैं । तेल लगाकर उसमें महीन कटा हुआ अदरक और लवण मिलाया हुआ है । किन्तु खाते नहीं । श्री म को देकर तब खाएंगे । कुछ क्षण पश्चात् श्री म आकर चेयर पर बैठे । उनके सामने मुड़ि रखने पर एक मुट्ठी लेकर खाते हैं । भक्तगण आनन्द से प्रसाद पा रहे हैं ।

पास ही एक बेंच के ऊपर एक सुराही में ठंडा जल है । सारा ग्रीष्मकाल श्री म यही जल पीते हैं । भक्तगण गर्मी में क्लान्त हुए आकर यही जल पीते हैं । बीच बीच में ठाकुर की भांति हाथ में लेकर जल की परीक्षा करते हैं ठंडा है कि नहीं । और फिर कभी कभी

अन्तेवासी से कह कर शरबत की व्यवस्था करवाते हैं, भक्तलोग आकर पान करेंगे ।

श्री म के दांत नहीं हैं, मुड़ि खाने में कष्ट होता । तथा फ भक्तों की प्रार्थना से मुड़ि चबाते हैं ।

एक कव्वा मुड़ि देखकर अन्तेवासी के घर की टीन की छत पर आकर बैठ गया । श्री म एक मन से उसको लक्ष्य करते हैं। बोले, " यह जीव आहार अन्वेषण सारा दिन करता है । मनुष्य भी करता है, किन्तु मनुष्य की उच्च चिन्ता भी हो सकती है— भगवान की चिन्ता ।" कव्वे को गंभीर दृष्टि से देखते हैं । और फिर कहते हैं, आहा, "कैसा किया है देखो । पंख, पंजे, चोंच— जहां जो दरकार सब बना रखी है । इतना देखकर भी चैतन्य कहां होता है हम लोगों को ? जन्म के पहले की खबर वे जानते हैं । और फिर मृत्यु के परे की खबर भी जानते हैं। नित्य देखता हूँ किन्तु विश्वास होता है कहां ? कर्तागिरि ही, जितना भी है सब गोलमाल करती है ।"

फिर डायरी पढ़ते हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति) मोटे ब्राह्मण ठाकुर से कहते हैं, "वे तो बालक— नरेन्द्र आदि । इन के लिए आप इतने पागल क्यों हैं ? पढ़ना— लिखना कर रहे हैं वही करें ।" महिमा चक्रवर्ती कहते हैं, नरेन्द्र की अब जो अवस्था है, बारह वर्ष पूर्व मेरी वह अवस्था थी (हास्य) । उनकी वयस उस समय तीस वर्ष और नरेन्द्र की उन्नीस थी । ऐसा कहेंगे उसमें आश्चर्य ही क्या ? तब तो वे फिर अब वाले स्वामी जी थे नहीं । छोकरे थे, पढ़ते लिखते थे । (शान्ति के प्रति) कल्पना करो, तुम यदि इसके पश्चात् अमेरिका जाकर लेक्चर दो और उससे खूब सुनाम हो जाय, तब सब तुम्हारी पूजा करेंगे । अब तो तुम्हारा कोई आदर नहीं करता । (जगबन्धु के प्रति) क्या कहते हो महाशय (हास्य) ?

भक्तगण सकल मौन ।

श्री म (स्वगत) — नरेन्द्र छोकरा, इसका फिर है क्या, इस प्रकार सोचने में आश्चर्य भी क्या? ठाकुर ही पर विश्वास होता नहीं। बोलते हैं, वे पहले खूब ऊंचे थे, अब उतर गए हैं (हास्य)।

श्री म (भक्तों के प्रति)— ठाकुर ने फिर यह बात सुन ली। वे हंसते हंसते महिम चक्रवर्ती से पूछते हैं, क्यों जी, तुम शायद कहते हो मैं उतर गया हूँ। (हास्य) किन्तु उनके प्रति रोष नहीं था। प्रकृति ही है वैसी। और फिर चिन्ता करते हैं क्योंकि अब यहां आ गया है, मेरे प्रति प्यार है। गीता में है— 'अवजानन्ति मां मूढाः मानुषीं तनुमाश्रितम्।' और क्या है? — 'मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम्।'

श्री म (अन्तेवासी के प्रति)— 'मामजमव्ययम्'— अर्थात् अखण्ड सच्चिदानन्द जो, वे ही श्री कृष्ण के रूप में अवतीर्ण हैं। अब फिर वे ही श्री रामकृष्ण विग्रह हैं। उनको जानना क्या छोटी-सी बात? उनकी कृपा हो तो जाना जाता है। उनको जान लो तो सांगोपांगों को जानोगे।

श्री म (भक्तों के प्रति) भगवान दर्शन हो जाय तब समझ में आता है वे विभूरूप में सर्वभूतों में हैं तो, किन्तु आधार विशेष में अधिक प्रकाश है। उनका तो फिर वैसा हुआ नहीं है, कैसे जानेंगे (नरेन्द्र को)? ठाकुर ही केवल निज को निज जानते थे और अन्तरंगों को जानते थे।

जगबन्धु –ठाकुर का तो वे सामने ही दर्शन करते हैं। तो फिर भगवान दर्शन का बाकी रहा ही क्या? मिरच अनजाने खाने से भी झाल, यह भी तो है ठाकुर का महावाक्य।

श्री म -हाँ यह दर्शन अवश्यंभावी, फलेगा ही। मृत्युकाल में उनका दर्शन पाएंगे स्वरूप में। शरीर के लिए बीच में व्यवधान है। वे भाग्यवान हैं। जभी तो अन्तरंग एक स्वतंत्र क्लास हैं। वे लोग पहले इस जीवन में ही उन्हें जानते हैं।

श्री हट्ट जिले के होबिगंज से एक भक्त आए हैं। श्री म उनके साथ बातें करते हैं। परिचय आदि के उपरान्त श्री म स्वयं बातें करने लगे।

श्री म (स्वगत) क्या फिर और करेंगे लोग, उनके नाम गुणकीर्तन के अतिरिक्त ? नाम गुणकीर्तन करते रहो।

श्री म (भक्तों के प्रति)—मोहल्ले में आज एक जन मरे हैं मैंने देखा। रोज ही तो लोग मरते हैं। किन्तु स्मरण नहीं रहता कि हम मरेंगे। सब भुला देती है मां। क्यों भुला देती हैं ? विचार करने पर यही सिद्धान्त होता है; अन्य विषयों में अर्थात् संसार के काम में कमी होगी इसलिए। काज कर्म दान आदि इन सब में कमी हो जाएगी। यदि कोई विचार करेगा, मैं मर जाऊंगा तो फिर कौन करेगा तुम्हारा काज कर्म ? तब केवल ईश्वर को ही पुकारेगा। यह सब उनकी इच्छा से ही होता है - संसार बंधन और फिर मोक्ष की वांछा।

एक दिन देखा था, कालीबाड़ी में बहुत से बकरे घास खाते हैं। एक खरीददार ने पूछा, इसके दाम कितने ? वह कुछ मोटा था। दाम चुकाकर उसको पकड़कर 'हांड़काटे' में रखता है। तब एक बार आर्त-नाद किया। अन्य बकरे खाते रहे। आर्त्तनाद सुनकर सिर उठाकर एक बार देखा। वह तो क्षण भर में दो भाग हो गया। और उन्होंने भी खाना आरम्भ कर दिया। ऐसा काण्ड, सब भुला देती हैं मां।

छोटे जितेन का प्रवेश। प्रणाम करके आसन ग्रहण करने पर उनकी कुशल प्रश्नादि जिज्ञासा करते हैं। छोटे जितेन सरकारी कर्म करते हैं।

श्री म (छोटे जितेन के प्रति)—घर की खबर सब अच्छी तो ?

छोटे जितेन—जीं नहीं, असुख।

श्री म—किस का ?

छोटे जितेन—स्त्री का।

श्री म—क्या रोग ?

छोटे जितेन—Asthma (दमा)। अकेले सब करना पड़ता है फिर बच्चों का। और फिर ज्वर भी है।

श्री म (उद्वेग से)— तो फिर आप शीघ्र छुट्टी लें। उनकी help (सहायता) करना उचित। अन्ततः सात दिन की छुट्टी लें। Casual Leave (सामयिक छुट्टी) तो प्राप्य है। वे ही लें। उनको rest (विश्राम) देना बड़ा आवश्यक। यदि शरीर चला जाय तो फिर कैसी विपद्! आप के कंधों के ऊपर सब बच्चों को पालने का भार पड़ जाएगा। हो सकता है, दो एक संग संग चले जाएं। सचराचर देखा जाता है मां के चले जाने पर संग में ही दो एक शिशु भी चले जाते हैं।

श्री म—भोजन कौन बनाता है ?

छोटे जितेन—वे ही। बरतन चौके के लिए हर रोज थोड़ी देर के लिए एक लड़की आती है। वह जल भर देती है, कपड़े भी धोती है।

श्री म—आप पास रहें। और उनको rest (विश्राम) दें। भात चढ़ा दिया है, आप जाकर पतीली उतार लें। आप के मन में नहीं उठी ये सब बातें ?

छोटे जितेन—घर रहते समय उठी थीं ये बातें। उसके पश्चात् ही यहां पर आ गया (परामर्श के लिए)।

श्री म—हां, हां। आप कल ही जाएं।

बड़े जितेन का प्रवेश, ये वकील हैं, हाईकोर्ट के बेंच क्लर्क।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)-इनकी स्त्री को बड़ा असुख है। अभी इन को देश जाकर उनकी help (सहायता) करने के लिए कहता हूं।

बड़े जितेन (छोटे जितेन के प्रति)—हां भाई, तुम कल ही जाओ। नहीं तो महाविपद् में पड़ोगे।

सब ही कुछ काल नीरव। कोई कोई सोचते हैं, अभी तो श्री म उच्च वेदान्त का उपदेश कर रहे थे— ईश्वर, माया, जीव, जगत्, मृत्यु, अमृत। और फिर यह क्या ? भक्तों के घर का छोटा-छोटा

संवाद लेते हैं। अन्य उपदेशकों के पास तो ऐसा देखा नहीं। भगवा श्री रामकृष्ण भी इसी प्रकार किया करते थे। दिवानिशि ब्रह्मध्यान में मग्न हैं। तथापि भक्तों के गृह का सब संवाद लेते हैं। गुरु श्री रामकृष्ण के पास श्री म को यह शिक्षा प्राप्त हुई है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है, वेदान्त practical अर्थात् व्यावहारिक होगा, दैनन्दिन जीवन में लाना होगा। तब ही वह प्रकृत धर्म है।

बड़े जितेन (श्री म के प्रति) –चार दिन आ नहीं सका, थोड़ा ताश खेला था।

श्री म—कहां, छत पर तो ? हवा खूब लगती है ?

बड़े जितेन--नहीं, गरमी।

श्री म--खूब पसीना छूटता है ?

बड़े जितेन--नहीं, वैसा नहीं।

श्री म (व्यंग्य से)--थोड़ा तो पसीना निकलता ही है, आहा ! (सब का हास्य)।

बड़े जितेन---कुछ क्षण आनन्द में रहा जाता है ताश लेकर।

श्री म (सहास्य) हां, पसीने से।

जनैक भक्त (स्वगत) — अभी गंभीर वेदान्त। तत्पश्चात् ही परिवारिक ज्ञानोपदेश। अब फिर बालक की रसिकता। इन्हें समझना कठिन, जैसे वहुरूपी।

बड़े जितेन (नैराश्य से) — नहीं महाशय, फिर नहीं हुई—व्याकुलता।

श्री म (सस्नेह, गाम्भीर्य से) — आपने कैसे जान लिया ? आप तो निद्राविष्ट, गाड़ी में हैं। गाड़ी तो वनारस आकर पहुंच गई है। आप कैसे जान गए ? रिप वैन विन्कल (Rip Van Winkle) बीस बरस सोए थे –लगातार। बाल-दाढ़ी सब पककर सफेद हो गए थे। वह क्या फिर जानता था कि सफेद हो गए हैं।

(आकाश दिखाकर) यही देखिए ना, आकाश में मेघ गड़गड़ा रहा

था, निमेष में उड़ गया। वैसा ही अज्ञान अन्धकार जाने पर ज्ञान मुहूर्त्त में झट से दिखाई देता है।

श्री म (तिरस्कार के स्वर में)— अनेक ही इस प्रकार बोलते हैं। उनको लज्जा नहीं आती ऐसा कहते हुए। इतना सब advantage (सुविधा) है उसको वे देखते नहीं। ईश्वर ने सब कितनी सुविधाएं करके रखी हुई हैं। एक तो भारत में जन्म। और फिर बंगाल में। अभी उस दिन ही तो यहां अवतार आए हैं। और फिर उनके हाथ के गढ़े हुए लोग देखे जाते हैं। उनके मुख से उनकी कथामृत सुन पाते —सब message of hope (अभयवाणी)। भरोसे की वाणी सब। इतना सब होते हुए भी वैसी बात! बोलते लज्जा नहीं होती? Advantage (सुविधाएं) नहीं देखेंगे ऐसे अन्धदृष्टि लोग।

ठाकुर कहते, अविद्या का जोर अधिक है विद्या की अपेक्षा। विद्या को धक्का देकर गिरा देती है। देखा जाता है Western civilisation पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से लोग भेड़ बन गए हैं। किन्तु इतने निर्यातन के भीतर होकर भी लोग सब ऊपर उठ रहे हैं। क्यों हो रहा है ऐसा? इसीलिए ना, कि भारत के लोगों के पीछे tremendous spiritual force (प्रचण्ड अध्यात्मशक्ति) रहती है। कितने युग-युगान्तरों से संचित यह शक्ति, यही है भित्ति।

श्री म (भक्तों के प्रति, आकाश दिखाकर)— यही देखिए कैसा विराट दिखाई देता है। इतनी सब advantage (सुविधा), वह देखते नहीं। खाली बोलते हैं, 'दादावत् यदि भातार होता" (भाई जैसा यदि पति होता)। (हास्य) जो प्राप्त है उसे देखना चाहिए पहले। फिर अन्य कुछ मांगना।

दुःख विपद् क्यों आती है? Majestic height उच्च श्रृंग में, ईश्वर में चढ़ाएगी इसलिए। In a calm sea every one is a pilot. किन्तु जो तरंगायित समुद्र में जहाज चला सकता है वही है पक्का

कैप्टन। यही जो दुःख विपद् दिखाई देती है ये सब हमारे ही निकट है, ईश्वर के पास ये कुछ भी नहीं है। जिसे दुःख कहते हैं वह दुःख नहीं है। उनकी लीला कौन समझेगा ? अन्धकार का experience क्यों चाहिए है ? कि आलोक ज्ञान होगा। वैसे ही थोड़ा सा वह (तुच्छ भाव से) रख दिया है। उनका दर्शन होने पर तब ज्ञान- अज्ञान के पार हुआ जाता है।

बड़े जितेन—सुनता हूं साधुगण नित्यानन्द भोग करते हैं।

श्री म —हां, जब उनका दर्शन करके ज्ञान-अज्ञान के पार हो जाता है, उनका दर्शन होता है। अंधेरा है इसलिए ही आलोक रख दिया है। जब दुःख को दुःख नहीं समझा जाएगा, हजार विपद् ही पड़े और जो भी हो, तब नित्यानन्द लाभ होता है।

ठाकुर कहते, parent bird (मां) जानती है, कब अंडा फोड़ना होगा।

श्री म (भक्तों के प्रति)—शिष्यगण कहते हैं वृद्ध ऋषि से, "उपनिषद् कहिए,"—'उपनिषदं भो ब्रूहि।' ऋषि ने उत्तर दिया, यही जो कहा है उसका नाम उपनिषद् है। सुनता है कौन ? केवल उपनिषद् उपनिषद् करता मरता है।

इतना सब है (मठ, साधु) और उस पर उन्होंने फिर जब यह (साधु भक्त संग) रखा है, और वे यह सब करवा रहे हैं, तब कैसे आप कहते हैं, हुआ नहीं।

बड़े जितेन—इतना सब क्या ?

श्री म— साधुसंग, साधुसेवा, साधुओं के संग में वास, उत्सव, नित्य उनकी बातें सुनना, और फिर पालन की चेष्टा, ये सब।

गृहस्थ का अड्डा अर्थात् भोग अड्डा। शरीर पर वर्म पहनकर हाथ में sword (तलवार) लेकर वहां जाना चाहिए— with a coat of mail and a sword in hand. तो फिर और भय नहीं रहता।

(सहास्य) उसको (जितेन बाबू को) तो इन सब का अभाव नहीं है। अब जाते हुए भय क्या ? भक्तों को भय क्या ? छुरि का व्यवहार जानकर छुरि चलाने पर फिर और भय नहीं।

डाक्टर, विनय और बलाई का प्रवेश।

श्री म डाक्टर के घर का कुशल संवाद लेते हैं। विनय डाक्टर के भाई हैं। उनका वासस्थान काशीपुर में है। निकट में प्रायः भद्रलोगों का वास नहीं। डाक्टर विवाहित हैं।

श्री म (डाक्टर और विनय के प्रति) — आप लोगों को alternately (एक एक जन करके) आना उचित। एक जन को वास-प्रहरी रहना चाहिए। खाली वास छोड़कर आना उचित नहीं हुआ — स्त्रियें हैं कि ना। आश्रम में रहने पर उसको भांति काज करना चाहिए। आश्रम में रहना अथच उसकी भांति काज नही करूंगा, यह व्यवहार भला नहीं। यदि ना करो तो हटकर खड़े रहो। पता लगेगा कैसा साहस। मठ कितने हैं, जाओ ना, रहो ना जाकर वहां पर। किंवा भिक्षा करके खाकर वृक्षतले पड़े रहो। देखूं कैसा वीर! (भक्तों को लक्ष्य करके विनय के प्रति) भक्त की सेवा करना उचित। भक्त का हृदय है भगवान जी का बैठखाना, ठाकुर कहा करते। तब तो फिर भक्त की सेवा माने भगवान की ही सेवा करना है।

डाक्टर बाबू को help (सहायता) करना उचित है। गृह में तो कितने ही principles नीति, नियमों में रहना उचित है। वे न हों तो संसार चलेगा नहीं। एलोमेलो (अव्यवस्थित) हो जाएगा। गृह कर्त्ता को सब मानेंगे।

(2)

सकाल छः। श्री म अगले दिन चारतले की छत पर बैठ हैं, गीता पढ़ रहे हैं पंचम अध्याय। बड़ी गर्मी है। श्री म को कष्ट होता है।

आज 23 अप्रैल, 1924 ई० 10 वां वैशाख, 1331 (बं०) साल, बुधवार। भक्तों के संग श्री म छत पर बैठे हैं। अब संध्या। कुछ क्षण ध्यान के उपरान्त सब बैठे हैं। श्री म क्लान्त। बड़े जितेन, योगेन, शुकलाल, मनोरंजन, योगेन का पुत्र खोका, माखन, बलाई, रमणी, शान्ति, डाक्टर, गदाधर, बड़े अमूल्य, जगबन्धु, मोटा सुधीर और उनका संगी प्रभृति श्री म के पास उपविष्ट।

भक्तगण इधर उधर की बातों के पश्चात् एक साधु की बात करते हैं। सम्प्रति वे मध्यभारत भ्रमण पर गए हैं। सम्बलपुर में एक वक्तृता में कहा है, गोमांस खाना शास्त्र-निषिद्ध नहीं है, पहले हिन्दू लोग खाते थे। यही बात लेकर संवाद पत्रों में वाद प्रतिवाद चल रहा है। वहां के पंडितों ने इसी उक्ति को challenge (प्रतिवाद) किया है. विचार के लिए आह्वान किया है। किन्तु वे गए नहीं।

श्री म— जाना उचित था। दोनों पक्ष ही बोलने चाहिएं। पहले गो-मांस खाते थे। और फिर अब क्यों खाया नहीं जाता, दोनों दिक् ही बोलना उचित था। लगता है वे tactful, विशेष चतुर नहीं हैं। Followers (भक्त) नहीं होंगे। Cause, प्रचारकार्य खराब कर देगा। मठ के संग योग करके काज करने से अच्छा होता है।

ठाकुर बोलते माधव की गल्प। "मन्दिरे तोर नाइको माधव शांख फूके तुई करलि गोल।" तेरे मन्दिर में माधव तो है नहीं, शंख बजाकर तूने गड़बड़ मचा दी है।

श्री म— (माखन के प्रति)— क्या है वह गल्प ?

माखन—एक ग्राम में एक भग्न मन्दिर था। एक दिन संध्या के समय ग्राम के लोगो ने उसी मन्दिर से शंख की ध्वनि सुनी। सब दौड़े आए यह सोच कर कि संभवतः भगवान की प्रतिष्ठा हो गई है, अब आरती होगी। वहां झांकर देखा, मोहल्ले का पद्मलोचन शंख बजा रहा है। तब सब यही कहते कहते लौट आए–मन्दिरे तोर नाइको माधव शांक फूके तुइ करलि गोल।

श्री म (भक्तों के प्रति)—आदेश बिना पाए वक्तृता देने से सुनेगा कौन ? पहले माधव प्रतिष्ठा करके तब फिर फूंक दो। उनका आदेश लेकर चलने से सब सुनते हैं काज होता है । वैसा न हो तो दो एक जन सुनेंगे।

परीक्षित को भागवत सुनानी होगी । शुकदेव पर आदेश हुआ । शुकदेव समाधिमग्न। कैसे बाह्यज्ञान वापिस लाया जाए । नारद ने जाकर कान के पास हरिगुणगान कीर्तन आरंभ कर दिया । कितना कीर्तन, कितना बाजा । समाधि तो टूटती ही नहीं। बहुत चेष्टा के पश्चात् दिखाई दिया, चक्षु कोने में प्रेमाश्रु, और शरीर रोमांचित। तब जोर से कीर्तन चला । इनकी चेष्टा से तब बाह्य चेतना लौट आई। तब गए सुनाने भावगत । ऐसा काण्ड है आदेश का । आदेश पाकर बोले बिना उपाय नहीं । फिर लोगों की भी बिना सुने रक्षा नहीं । बोलना ही पड़ेगा सुनना ही पड़ेगा —divine command (दैवादेश)।

अगले दिन संध्या के पश्चात् श्री म छत पर बैठे हैं । अनेक भक्त श्री म के दोनों ओर बैठे हैं । बड़े अमूल्य, बड़े जितेन, मनोरंजन, शांति, बलाई, सुरपति, विनय और जगबन्धु उपस्थित । डाक्टर बक्शी अल्पक्षण रहकर बाड़ी चले गए । आज 'भालो' आए हैं। ये बात बात में 'भालो' बोलते हैं। जभी भक्तों ने उन्हें 'भालो' नाम दिया है । ये नूतन आना जाना करने लगे हैं ।

श्री म का शरीर उतना अच्छा नहीं है आज । जभी बातें खूब अल्प होती हैं। पाठ ही अधिक ।

श्री म (भक्तों प्रति)—हमारा आकाश देखिए । देखिए ना, कैसा व्यापार चलता है ! (सब के प्रति) यही देखिए, हम मां का दूध पान करते हैं। यह हवा, आलोक, चन्द्र, सूर्य, खाद्य, जल, ये सब ही हैं मां का दूध । वे सब न हों तो शरीर रहता नहीं । किन्तु लोग समझ नहीं सकते यह बात । लक्ष्य नहीं अन्तर में । दो-चार जनों को वे समझाते हैं । यह एक डिपार्टमेंन्ट । उनके अनेक डिपार्टमेंट हैं कि ना । एक है सृष्टि

का डिपार्टमेन्ट। (क्या सोच रहे हैं, सहास्य) हां। एक बार मैं कनखल में था। सड़क पर एक सांड दौड़ता हुआ जा रहा है। पीछे से सब लोग चीत्कार कर रहे हैं "बचो बचो"। ओ मां, आंख उठाकर देखा वह procreation (सृष्टिकार्य) के लिए निकला है। उसकी mate (संगिनी) आगे आगे चल रही है, डकारती हुई। "फलटान" हुई है। गौओं के "फलटान" होने से डकारती हैं। "फलटान" माने फल अर्थात् सन्तान कामना। ये सब हुआ सृष्टि डिपार्टमेन्ट का काज। और फ़िर पागलों का डिपार्टमेन्ट भी है, और फिर विनाश का भी डिपार्टमेन्ट है।

श्री म पुनः दीर्घकाल तक मौन रहे, क्या सोच रहे हैं? और फिर बातें।

श्री म (भक्तों के प्रति)— एक दिन ठाकुर अपने कमरे में बैठे हैं, छोटी खाट के ऊपर। निकट और कोई नहीं। एक भक्त को इशारा करके निकट बुला लिया। वे बरान्डे में थे। बोले, "तुम काम जय कर सकोगे।" बस यही एक ही बात। फिर चुप हो गए। भक्तों के भीतर self-respect (आत्मसम्मान) लाने के लिए कितनी चिन्ता है उन्हें!

शुक्र-शनि-रविवार को श्री म अस्वस्थ रहे। जभी पाठ ही चलता रहा।

(3)

मॉर्टन की छत, संध्या। श्री म चेयर पर उपविष्ट उत्तरास्य। सम्मुख दोनों ओर भक्तगण बैठे हुए हैं बेंचों पर—रमणी, शान्ति, कालिदास, जगबन्धु प्रभृति। एक घण्टा ध्यान के उपरान्त श्री म उठ कर जाकर उत्तर की छत पर पायचारी करने लगे। बीच बीच में दक्षिण बाहुतल द्वारा ताल पर बोझ डालते हैं।

कुछ क्षण परे श्री म ने पुनः आसन ग्रहण किया—बातें होती हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)— मनुष्य जन्म के समय जैसे आंख खोलकर सब देखता है, वैसे ही मृत्यु के समय भी (चक्षु अर्धमुद्रित करके) ऐसे करके रहता है। सब इन्द्रियों ने जवाब दे दिया है। तो भी जो तनिक चेष्टा भीतर रहती है वह केवल आत्मरक्षा-जन्य होती है। वह ही तो अविद्या।

जगबन्धु— समझ में नहीं आया, कैसी चेष्टा ?

श्री म —अर्थात् जिससे मृत्यु न हो। यह चेष्टा-यत्न क्यों रखा है ? क्योंकि, तभी देह रक्षा होगी। सब जीव ही बचने की चेष्टा करते हैं। तभी देह के लिए यत्न लेते हैं। यह भी उन्होंने ही दी है। बच्चे का जन्म हुआ और तत्क्षण हवा के संग योग कर (फेफड़ों का संकोचन और प्रसारण दिखाकर) ऐसे ऐसे करने लग गया। और सारा जीवन ऐसे ही चलने लगा। बीच बीच में चाहे कभी बन्द होता है, जैसे मूर्च्छा में, किन्तु फिर दुबारा चलता है। कैसी आश्चर्य कल बनाई है !

यह सब देखकर भी कैसे बोलते हैं वे लोग (बाइओलोजिस्ट और एवोल्यूशनिस्ट)— biologists and evolutionists कि यह chance (दैवयोग) से हुआ है। ऐसी well organised mechanism chance (सुसंबद्ध सृष्ठि दैवयोग से) कैसे होती है ? एवोल्यूशनिस्ट कहते हैं कीट, पक्षी, पशु, फिर मनुष्य हुआ।

Struggle for existence (बचने की चेष्टा) जीव का धर्म है। मनुष्य में दया, परोपकार, ईश्वर चिन्तन की शक्ति ये सब कैसे हुए ? यह भी क्या chance (दैवयोग) का कार्य ? नीचे की stage (अवस्था) से अपने आप ऊपर चढ़ता है कैसे ? पशु stage (अवस्था) में खाली आहार, विहार, मैथुन और भय —यही प्रचेष्टा रहती है। इस से ऊपर उठने की चेष्टा ही क्यों हुई, कहां से आई, किस ने दी ? कहते हैं कि दस लाख बर्ष तक यह ऊपर उठने की चेष्टा चली थी। हठात्

दिखाई दिया, इस चेष्टा के पश्चात् मनुष्य के भीतर कितने ही morals (उच्च नीतियां) कार्य करती हैं। इतने दिन तक मनुष्य पशुवत् केवल मारधाड़ करके चोरी करके खाकर बचा रहा। दस लाख वर्ष पश्चात् कितने ही लोग ठीक उल्टे पथ पर चलते हुए दिखाई देते है। दूसरे को बचाने में निज मरता है। हत्या, चोरी, व्यभिचार को पाप बोलता है। यह सत्गुण समूह आया कहां से ? Chance (दैवयोग) इस के विषय को explanation (व्याख्या) नहीं कर सकता।

जभी ईश्वर को मानना चाहिए। यह सब ही उनका प्लान। यह सब उन्होंने ही दिया है, यह द्वन्द्व आदि। इन विरुद्ध tendency (भावों) द्वारा जगत् को चलाते हैं।

बिल्ली का बच्चा अभी कुछ दिन हुए जन्मा है। इस बीच ही नखों से ऐसे ऐसे करता है (खरोंचता है)। संभवतः वाह्य-पिशाब अभी तक भी किया नहीं है, तब भी ऐसे करता है। पीछे जो करेगा। जभी तो वह tendency (संस्कार) उसके भीतर पूर्व से हैं। ये सब हैं automatic action (यंत्रवत् कर्म)। एक बकरे के काट कर दो भाग कर दिये गए। तब भी वह शरीर छटपट करता है। यह भी वही।

शान्ति—बकरे को अनुभूति होती है क्या तब ?

श्री म—वह कैसे होगी ? Nervous centre (स्नायुकेन्द्र) अलग जो हो गया है। फिर जो ऐसे करता है, इसका कारण है उसमें tendency (संस्कार) रहते हैं। Self preservation instinct (आत्मरक्षा के संस्कार) कहते हैं इसे। यह तो शरीर के संग मिलकर एक हो गया है। एक जन सो रहा है— नाक बज रही है। गाढ़ी निद्रा में है अभिभूत। एक मच्छर घुटनों पर काटता है, झट मच्छर को मार भगाता है हाथ से रगड़ कर। अथवा कमर बन्ध के स्थान पर खुजली हुई, झट नख से खुजलाता है। किस लिए करता है ऐसा ? तुम क्या जवाब दोगे ? यह सारा सहजात संस्कारों का काज है। भीतर सब मन में हैं। वही मन शरीर के साथ एक हो गया है। आत्मरक्षा के लिए ऐसा सब होता है अनजाने भी।

साधारण जीव का यही काज है। ठाकुर के शरीर में उसका उलट देखा गया है। ब्रह्मानुभूति मज्जा अस्थि शोणित चर्म के संग एक हो गई है। जभी तो अज्ञात में भी मलिन स्पर्श सहन नहीं कर सकते थे। इतना शुद्ध उनका शरीर। जड़ वस्तु सब जैसे चैतन्यमय हो गई थीं।

मोहन–शास्त्र में है जड़ चेतन की सत्त्वा ले लेता है। चेतन जड़ की सत्त्वा ले लेता है।

श्री म— हाँ, यही शास्त्र प्रमाण करने के लिए तो ठाकुर का आगमन। ये सब sealed books (अज्ञात विषय) थे। उनके आगमन से इन सब का आदर हो रहा है। जड़ ने चेतन की सत्त्वा ली ठाकुर के शरीर में। और साधारण जीव में चेतन जड़ की सत्त्वा लेकर रहता है।

मन भी जड़ वस्तु। उसमें देहरक्षा का ज्ञान रहता है। वही ज्ञान देह के संग एक होकर रहता है।

श्री म (शांति के प्रति)— इमली तुम्हारी जिह्वा के सामने रखें; जल आएगा। क्यों आता है ? यही है कारण।

चीत्पुर से बहुत लोग जाते हैं। वराण्डों में छतों पर अनेक लड़कियां खड़ी हैं, सब बहुत सुन्दरी। लोग सिर घुमाकर इनको देखते हैं। चाहे घोड़ा गाड़ी पीछे से गर्दन पर चढ़ती है, होश नहीं। घोड़ा एकदम सिर के ऊपर, तब भी होश नहीं। कोचवान चीत्कार करता है, तब भी होश होती नहीं! क्यों ऐसा हुआ? यह किस का दोष है ? इसका उत्तर, किसी का भी दोष नहीं। यौवन वयस में ऐसा होता है। भीतर sex, काम भाव हुआ है। विषय देखकर जाग्रत हो उठा है।

मनुष्य अर्थात् a bundle of tendencies (संस्कारों का एक गुच्छ।) तब फिर और क्या! मनुष्य का दोष क्या ? जो सृष्टि स्थिति विनाश करते हैं इस जगत् का, यह उनका ही किया हुआ है, उनका खेल है। इन सब के द्वारा जगत् रक्षा होती है।

श्री म (भक्तों के प्रति)-इन सब निम्न भावनाओं का निवास स्थल है मन। बाहर के रूपरसादि विषय सर्वदा आकर्षित करते हैं मन को। अचेतन अवस्था में खेंचातानी चलती है।

ठाकुर ने कहा था, इसी मन को ईश्वर के पादपद्मों में बांध दो। तब फिर बाहर जाएगा नहीं। इसे छोड़ इस रोग को हटाने का अन्य पथ है नहीं। अन्य वैद्य भी है नहीं उनको छोड़। जिन्होंने आगे पीछे से बांध रखा है अन्तर बाहर से, उन्होंने ही मुक्ति का पथ भी बोल दिया है। मन उनके पादपद्मों में बेच दो।

श्री म (जनैक भक्त के प्रति)—गीता का वह श्लोक क्या है ?

भक्त—यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥

श्री म संग संग आवृत्ति करते हैं। और फिर बातें होती हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—ये ही वीर। उनका मन ईश्वर के पादपद्म में लग्न होकर रहता है। जैसे कच्छप को कुल्हाड़ी से काट कर टुकड़े टुकड़े कर दो— मुख हाथ पांव बाहर करेगा नहीं। वैसे ही ये लोग। इनकी बुद्धि ही है स्थिर। इनकी मन बुद्धि ब्रह्म पर (ब्रह्मपरायण)।

मनुष्य के मन की है स्वभावतः ही वह गति, बाहर जाएगी। वेद में है यह बात। ईश्वर ने मन को बहिर्मुखीन करके बनाया है। 'परंचिखानी व्यतृणत स्वयम्भुः।' किन्तु जो वीर हैं केवल वे ही इस दुर्दमनीय मन को ब्रह्मपद में बांधकर रख सकते हैं भीतर से। ढाल-तलवार वाला वीर, वीर नहीं। वे ही यथार्थ वीर जिन्होंने मन को वशीभूत किया है— जो मन के वश में नहीं। दो चार जन होते हैं ऐसे।

बाहर आकाश गाढ़ा मेघाच्छन्न — बीच बीच में गर्जन कर रहा है। और दो चार बून्द जल भी पड़ रहा है।

बड़े जितेन का प्रवेश।

बड़े जितेन (श्री म के प्रति)— जन्न बन्द हो गया। जो पड़ा था वह भी evaporate (वाष्प) हो गया………।

श्री म (बड़े जितेन के मुख से बात पकड़कर)— वैसे ही साधु का का मन। काम क्रोध साधु के मन में उठने पर झट evaporate (वाष्प) हो जाता है। नीचे आने नहीं देता। ऊपर ही सूख जाता है मन में ही। मन में ही उठे, मन में ही नाश। किन्तु अन्य लोगों का वैसा नहीं। उनके मन से उठता है फिर body (शरीर) ले लेता है। साधु के मन में वैसा नहीं होता। ब्रह्माग्नि में सब भस्मीभूत।

यौवन में ऐसा ज्वार आता है। खूब सावधानी से साधुसंग में रहकर साधु सेवा करनी चाहिए। उससे उस शक्ति का सद्व्यवहार हो जाता है और जीवन मधुमय हो जाता है।

उनका क्या दोष जो गर्दन टेढी करके देखते हैं स्त्रियों की ओर? प्रकृति में वही भाव ही घनीभूत होकर रहता है। बाहर उसका खाद्य देकर उसी दिशा में मन को खेंच कर ले जाता है। सदसत् ज्ञान हो तो विचार करके मन को भीतर अटकाए रख सकता है। इसके लिए मुनिगण कितनी तपस्या, कितनी चेष्टा करते हैं। ईश्वर की सहायता से ही केवल प्रकृति की इस गति को रोका जाता है। केवल विचार चेष्टा द्वारा भी सम्पूर्ण रूप से वश में होती नहीं। ठाकुर जभी तो कहते, यह क्या मेरी चेष्टा से कामदमन हुआ है? मां ने मन को खींच कर रखा हुआ है अपने पादपद्मों में — जभी यह अवस्था।

श्री म क्या सोचते हैं? क्षणकाल परे फिर कथा होती है।

श्री म (सहास्य, भक्तों के प्रति)— एक बार सुना था अफगानिस्तान में एक नियम किया है, इस अमीन ने या इसके पहले के अमीन ने। रास्ते में जाते हुए किसी स्त्री के ऊपर एक बार नजर पड़ने पर दोष नहीं होगा। किन्तु द्वितीय बार देखने से ही दोष होगा। और तब पुलिस arrest(गिरफ्तार) कर लेगी। यह सुन्दर नियम।

साधु द्वितीय बार आंख उठाकर नहीं देखे स्त्री को। अन्य लोग अन्य प्रकार। इसी के कारण तो साधुसंग है आवश्यक। खराब प्रकृति से यदि खराब की ओर मन जाता है, तो फिर भली प्रकृति भले की ओर ले जाएगी। साधुसंग करने से प्रकृति भली होती है। उसी भली प्रकृति द्वारा खराब को जय किया जाता है।

साधना माने क्या ? प्रकृति के संग struggle (युद्ध) करना, with a view to realise God (ईश्वर दर्शन के लिए)।

सब बातें क्या सब ही लेते हैं ? अब जो पक गए हैं उन्हें कहने से क्या लेंगे ? कहावत है, 'काठि उठले पाखी बोल शेखेना" — बूढ़े तोते पढ़ाए नहीं जाते। बहु दिन संसार करने पर प्रकृति मलिन हो जाती है। और नये सिरे से भला होने की चेष्टा कम हो जाती है। ठाकुर तभी तो किशोरों को इतना प्यार करते। चट करके ले सकते हैं। जिन के मन formed (गठित) हो गए हैं, उनके पक्ष में लेना बड़ा कठिन। ठाकुर बोलते, एक सेर दूध में एक मन जल मिला हुआ है। अब कौन जाय बैठे बैठे उसे उबाले देने। बूढ़ों का वैसा ही। शीघ्र बात प्रवेश नहीं करती। किशोरों का मन जैसे परिष्कृत स्लेट, जो दाग डालो वही पड़ेगा।

ऐसे लोग भी उन्होंने किए हैं जिन का मन है कच्छपवत्— भीतर रहता है भगवान के पादपद्मों में। वहां से मन को बाहर नहीं करेंगे। इन्हें ही कहते हैं महात्मा।

श्री म ने घर के भीतर प्रवेश किया, आहार करेंगे। बलाई और डाक्टर बक्शी आए हैं। श्री म का आहार शेष होने पर गृह में डाक्टर ने प्रवेश किया। ये दीर्घकाल पर्यन्त अपने व्यक्तिगत जीवन की आलोचना करते रहे। भक्तों ने प्रणाम करके विदा ली। रात्रि के साढ़े दस।

कलकत्ता, मॉर्टन इंस्टिटयूशन।
28 अप्रैल, 1924 ई०।
15 वीं वैशाख, 1331 (बं०) साल, सोमवार।

दशम अध्याय
चित्रों में 'कथामृत'

(1)

मॉर्टन इंस्टिटयूशन । चारतले की सीढ़ी का कक्ष । अपराह्ण पांच । श्री म चेयर पर दक्षिणास्य बैठे हैं सीढ़ियों के सामने । नीचे चटाई पर दुर्गापद मित्र (हिलिगवाम), बड़े अमूल्य, शांति और जगबन्धु ।

आज 29 अप्रैल, 1924 ई०; 16वां वैशाख, 1331 (बं०) साल । मंगलवार । कृष्णा एकादशी, 46/46 पल ।

बाहिर आकाश खूब मेघाच्छन्न । दो चार बिन्दु जल भी बीच बीच में पड़ रहा है । भक्तगण बाहिर ही बैठे हुए थे । जल के लिए भीतर आ गए हैं ।

अमूल्य श्री जगन्नाथ दर्शन के लिए पुरी जाएंगे, सोच रहे हैं । और फिर यह भी विचार कर रहे हैं कि ऑफिस से छुट्टी प्राप्य होते हुए भी पच्चीस रुपया नुकसान होगा । ये सब विचार सुनकर श्री म बातें करने लगे ।

श्री म (भक्तों के प्रति)— ठाकुर ने मां से जभी कहा था, "क्यों फिर विचार करवाती हो ?" किस विषय पर विचार करोगे, finite (जागतिक) या infinite (ईश्वरीय) विषय पर ? बाजार गया, यह खरीद किया, इसमें छः आने खरच हो गए । यह विचार तो ठीक चलता है । किन्तु उस विषय, ईश्वर संबन्ध में क्या विचार करेगा ?

ठाकुर ने जभी तो प्रश्न उत्थापन किया, एक सेर के घट में क्या दस सेर दूध समाता है? कोई उसका जवाब दे नहीं सका आज भी। वाक्यमन के अतीत जो, जिसके संबंध में तुम्हारा कोई भी ज्ञान नहीं है, देखा नहीं, उनके सम्बन्ध में तुम कैसे बोलोगे ? कहनें पर भी दूसरा लेगा क्यों ? यही तो है अनधिकार चर्चा।

चीनी के पहाड़ पर एक बार एक चींटी गई थी। एक बड़ा सा चीनी का दाना मुख में डाल ले गई। जाते जाते सोचने लगी, एक बार फिर आकर सारा का सारा पहाड़ मुख में डालकर ले जाऊंगी।

जैसे ये सब विचार हैं, ईश्वरीय विषय में भी सोचना वैसा ही है। अनधिकार चर्चा। इस विषय में केवल expert opinion अभिज्ञ जनों का मत कार्यकरी है।

Dialogue of Plato (प्लेटो कथोपकथन) में बड़ा सुन्दर है। सोक्रेटीज कहते हैं उनसे, जो तर्क करने आते हैं, कल्पना करो तुम्हें असुख हुआ है। अब किस का advice, परामर्श लेंगे ? —डाक्टर का या layman (अनभिज्ञ) जन का। और फिर कहते हैं, जब किसी सम्पत्ति के विषय में रक्षा के लिए परामर्श लेना होगा तब lawyer वकील के पास जाओगे तो ? उसकी बात सुनोगे। वैसें ही infinite (ईश्वर) के संबंध में उपदेश लेना हो तो अवतार की बात सुननी चाहिए। जिसने ईश्वर को देखा है उसकी बात ही लेनी चाहिए।

इसी विचारधारा को मैक्समूलर ने डायलेक्टिक प्रोसेस (कथोपकथन विधि) से कहा है। Questions and answers (प्रश्नोत्तर) द्वारा कॉर्नर करना। जो expert, विशेषज्ञ है उसका उपदेश लेना चाहिए। अवतार आते ही हैं इसीलिए।

श्री म (अमूल्य के प्रति)— इतना हिसाब करने से भगवान दर्शन नहीं होता। ईश्वर दर्शन के लिए सर्वस्व छोड़ने के लिए कहते हैं। पच्चीस रुपये का दाम ही कितना ? ठाकुर बोले थे, पुरी का जगन्नाथ मैं ही हूँ। विश्वास करने से ही हो गया।

श्री म कुछ काल मौन हुए रहे। कुछक्षण पश्चात् दुर्गापद बातें करते हैं।

दुर्गापद (श्री म के प्रति) — मां की वाणी भी प्रचार हो रही है। रामानन्द बाबू ने लिखी है।

श्री म— हां, "प्रवासी" में उन्होंने मां की जीवनी निकाली है। इससे लोगों का खूब उपकार होगा। और कहां मिलेगा ऐसा ideal (आदर्श) ? जितना spread (प्रचारित) हो उतना ही भला है। ऐसे संयम और सेवा और किसके हैं ? आपामर सब के ऊपर ऐसा मातृभाव और कौन दिखा सकता है ? साक्षात् जगन्माता। क्रमशः देख लेगा। भारतीय नारी का आदर्श मां है।

जगबन्धु — "आनन्द बाजार" ने भी निकाली है वह जीवनी।

श्री म (अतिशय आह्लाद से)— निकाली है ? खूब खूब ! कितना उपकार होगा लोगों का ! इस जटिल समय में अविश्वास के अन्धकार में आलोक का कार्य करेगी। पाश्चात्य शिक्षा से लड़कियां अन्य प्रकार की हो होती जा रही हैं। वे आलोक पाएंगी। आह, कितना बड़ा ideal आदर्श, चैतन्य हो जाएगा लोगों को, स्त्री पुरुष दोनों का।

श्री म क्या भाव रहे हैं ? पुनः बात चली योगेन के पुत्र खोका के संबंध में।

श्री म (जगबन्धु के प्रति)— कल वह चला गया था ?

जगबन्धु— जी हां।

दुर्गापद— क्या पढ़ता है ?

श्री म— अब की बार मैट्रिक देगा। (सहास्य) हम ने उससे पूछा, a3+b3 (ए क्यूब प्लस बी क्यूब) वाला फारमूला बोल तो ? उसने उत्तर दिया, मैंने उसे ठीक से पढ़ा नहीं है।" (सब का हास्य)। फिर बोला, अच्छा "अस्मद्" शब्द का रूप बोल तो ? बहु कष्ट से किसी प्रकार बोला।

दुर्गापद— तब तो होता नहीं।

श्री म — ना, होगा। आजकल ऐसे ही सब पास करते हैं। पूछने पर कहता है, मैंने उस को छोड दिया था (सब का हास्य)। पास तो चाहे कर लेते हैं, ज्ञान होता नही। मुखस्थ करते हैं खाली, समझ नहीं सकते। समझने की चेष्टा भी नहीं है।

यही जो इतने पास कर देते हैं आजकल, इसके भीतर ब्रिटिश पॉलिटिक्स है। यूनिवर्सिटी के लोग समझते नहीं। हमने पकड़ लिया है। इसका effect (परिणाम) हुआ अधिक ग्रेजुएट निकालना। अधिक को पास करने पर अधिक ग्रेजुएट होंगे। उनमें से मुसलमान ग्रेजुएटों को बड़ा-बड़ा काज देकर गवर्नमेंन्ट हाथ में रखेंगे। आपत्ति करने पर कहेंगे, क्यों, ये भी तो ग्रेजुएट हैं। Divide and rule (भेद और शासन) की नीति का कार्य है यह तो। अब गवर्नमैंट के हाथ में यह favourable policy (अनुकूल नीति) है। यूनिवर्सिटी इसको foresee (अनुधावन) नहीं कर पाती। पहले की तरह परीक्षा हो तो एक जन भी पास नहीं कर सकेगा।

लॉर्ड लिटन बड़ा tactful (अतिशय चालाक) व्यक्ति है। इसी लिए वाइसराय होने के उपयुक्त जन है। आते ही tactics (कौशल) दिखाया है। उनको सब parliamentary tactics (पार्लियामैन्ट कौशल) पता हैं कि ना। उनके पिता भी वाइसराय थे। उनका बड़ा भाई तो renowned writer (लब्धप्रतिष्ठ लेखक) थे, सद्वश है।

आज के समाचार पत्र में देखा मुसलमानों के द्वारा गवर्नमैंट ने एक सभा करवाई है। एक पार्टी तैयार करवा रहे हैं जैसे दास महाशय की स्वराज पार्टी। गवर्नमैन्ट की backing (सहायता) से होता है यह सब।

बाहर प्रबल वृष्टि हो रही है। उत्तर की दीवार की कांच की खिड़की टूट गई है। उस के झरोखे से जल की बौछाड़ आ रही है। श्री म ने आसन से उठकर एक एक टाट लाकर अन्तेवासी के हाथ में दी। उसी टाट से खिड़की का झरोखा बन्द किया गया। श्री म ने पुनः

आसन ग्रहण किया चेयर पर –अब की बार पूर्वास्य। श्री म के बाएं हाथ भग्न खिड़की। अब तक दक्षिणास्य थे। चेयर पर बैठे श्री म कुछ भावना कर रहे हैं ?

वृष्टि में भीगे हुए बड़े जितेन, बलाई, मनोरंजन और विनय आकर उपस्थित हुए। भक्तों को भीगते हुए आने पर स्वागत आदर करके श्री म पुनः ईश्वरीय कथा कहते हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)— कैसा व्यापार है, एक बार देखिए ना ! सृष्टि-रक्षा जन्य बाहर यह सब होता है "जलवल"। तभी शस्य होगा। और फिर species (जीवकुल) बढ़ने का कैसा कौशल ! अन्तर में sex (काम) प्रवेश करवा दिया।

प्रणयी प्रणयिनी का love letter (प्रेम पत्र) छाती के ऊपर रख कर सो गया है उसको भावते भावते। इसका अर्थ क्या है ? In the nakedness (नग्नसत्य तो यही) बच्चा होना।

यही काण्ड है सर्वत्र सृष्टि में। वृक्ष के पिस्टिल और स्टेम का योग होता है तभी फल होता है। इसी स्त्री पुरुष के आकर्षण को औरतें कहती है "फलटान" — फल के लिए आकर्षण, बच्चा होने की इच्छा।

मनुष्य तो जानता नहीं कि किस की इच्छा से होता है। इस सृष्टि की रक्षा के लिए यह भी उनका कार्य है। लोक में कहते हैं love (प्रेम)।

ठाकुर ने स्त्रियों के दो भाग किए हैं—विद्याशक्ति और अविद्या शक्ति। विद्या शक्ति स्त्री पति की help (सहायता) करती है भगवान के पथ पर पर जाने में। और अविद्या शक्ति पति को संसार में बद्ध करती है, ईश्वर से उल्टे पथ पर विषय भोग में ले जाती है।

भारतीय विवाह का meaning, मर्मार्थ क्या है ? स्त्री की सहायता से ईश्वर दर्शन करने की प्रचेष्टा। महाशक्ति का अंश है कि ना स्त्री। अविद्याशक्ति का एक रूप ही तो। ईश्वर दर्शन पति की

अकेले की शक्ति से हो पाएगा नहीं । जभो पति-पत्नी की सम्मिलित शक्ति का प्रयोजन है। तभी विवाह ।

विवाह के समय देखा जाता है वर तो गूंगे की न्याई बैठा रहता है। और कन्या इधर उधर करती है खूब । शक्ति है कि ना, जभी कुछ चंचल ।

पश्चिम (बंगाल के पश्चिम) में वर. के हाथ में विवाह के समय sword (तलवार) रहती है। ठाकुर कहते, इसका अर्थ क्या है जानते हो ? यही ना, कि इस शक्ति के प्रभाव से संसार-पाश कच् कच् करके काट डालेगा ।

देखो ना, लोग कितना परिश्रम करते हैं सारा दिन भर। घर आकर पांच मिनट स्त्री के पास बैठने से ही श्रान्ति दूर हो जाती है। (जनैक भक्त का उच्च हास्य)। Stimulus, उत्साह पाता है कि ना ! नावल में है किस ने कहा था, कोई lady love (प्रेमिका) न हो तो chivalrous (वीर) नहीं होता ।

सत्य ही तो स्त्री शक्ति है । देखो ना सारा दिन इतना परिश्रम, एकदम पसीना पसीना, किन्तु सन्ध्या के समय घर आकर ज्योंहि पास बैठकर दो-एक बात सुनता है त्योंहि एकदम refreshed (सजीव) हो जाता है। (बड़े जितेन का म्लान हास्य) । हंसी की बात नहीं। इस पर यदि स्त्री विद्याशक्ति हो तब ईश्वर दर्शन कर सकता है उसकी सहायता से। शक्ति तो है ही—वह विद्या शक्ति हो, अथवा अविद्या शक्ति हो। भक्तों की स्त्री भोग के लिए नहीं, ईश्वर दर्शन के लिए ।

इतिहास के जितने बड़े बड़े काण्ड हैं सब स्त्री लेकर ही हुए हैं। ट्रोजन war (युद्ध) हेलेन को लेकर, रामायण, महाभारत सब स्त्री लेकर। संयुक्ता को लेकर भारत का नवीन इतिहास ।

तो भी selected few जन हैं कि जिन्हें वे बिल्कुल चैतन्य करवा देते हैं। उन्हें संसार, गृहस्थ में आरंभ से प्रवेश नहीं कराते । एकदम

चैतन्य, वे खूब कम। सब को करने से इधर वाला खेल चलेगा कैसे ? यह कैसे, जैसे कार्ड द्वारा प्रवेश limited number of cards, अल्पसंख्यक कार्ड। चुन कर कुछ जन लेते हैं। अधिक लेने से भीतर जाकर सब गोलमाल जो करेंगे, जभी अल्प लोग। तभी गीता में कहते हैं भगवान, "कश्चिद् यतति सिद्धये।" उनके भीतर से और फिर एक आध जन को निज स्वरूप दिखा देते हैं—"कश्चित् मां वेत्ति तत्त्वतः"।

ठाकुर ने काशीपुर में कहा था, "कुछ दिन और रहने से कम से कम और कई लोगों को चैतन्य होता। मैं तो मूर्ख हूं। सब को मां की सब बातें बोल देता हूं। जभी मां मुझे ले जा रही हैं। यहां पर और रखेंगी नहीं।"

श्री म (मोहन के प्रति)— सब उनकी इच्छा से ही होता है। सब वे ही करवाते हैं। सब के लिए भात एक हांडी में चढ़ा है। तैयार होने पर मालिक की इच्छा अनुसार बांट देंगे।

क्राइस्ट ने भी ठीक यही बात ही कही है। कर्तार-इच्छा से ही सब होता है। एक गल्प कहकर इस बात को अच्छी तरह समझाया। बहुत लोगों को कार्य करने के लिए नियुक्त किया। सारा दिन उन्होंने परिश्रम किया। और फिर कुछ जनों को मात्र दो-एक घण्टा पूर्व नियुक्त किया। दिन की समाप्ति पर वेतन देने के समय सब को ही एक जैसा ही वेतन दिया गया। जिन्होंने सारा दिन परिश्रम किया था उनके आपत्ति करने पर मालिक कहता है, तुम्हारे संग कितना देने की बात हुई थी? उन्होंने कहा, "इसी वेतन की ही बात थी, किन्तु……।" मालिक ने उत्तर दिया, इस में किन्तु-विन्तु नहीं। मेरा धन है मैं दूंगा, तुम्हें इससे क्या? तुम्हारा प्राप्य तो तुम ने पा लिया है। जभी सब ही उनकी इच्छा।

श्री म अन्यमनस्क। कुछ क्षण पश्चात् जगबन्धु को "कथामृत" का 1885 खृष्टाब्द की दिनपंजिका, synopsis पढ़कर सुनाने के लिए कहा। सम्प्रति "कथामृत" के चार भागों की दिनपंजिका नूतन करके

प्रस्तुत की गई है। पाठ शेष होने पर श्री म बातें करते हैं।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)— आह! यदि क्राइस्ट और चैतन्य देव की डेट आदि देकर minute details (विस्तृत वर्णन) रहता तो कितना उपकार होता। "कथामृत" जैसा है वैसा और कहीं नहीं पाओगे। लोग आजकल कितनी ही बातें कहते हैं अपने मन की भांति। कोई कोई कहता है क्राइस्ट थे ही नहीं। किन्तु ठाकुर ने जो दर्शन किए उनके! और फिर कहा था, "मैं ही क्राइस्ट था। मैं ही चैतन्य था।" उसका क्या हुआ? उनकी बात क्या फिर मिथ्या? किसकी इतनी बड़ी चौड़ी छाती है उनकी बात को मिथ्या कहे। कितने evidence (प्रमाण) जो हैं उनके। सबसे बड़ा evidence प्रमाण है मनुष्य समूह जिनको उन्होंने तैयार किया है। उनका जीवन, उनके कार्य देखकर, वे थे ही नहीं, उनकी वाणी मिथ्या है, ऐसा कौन कह सकता है? और एक evidence (प्रमाण) उनकी वाणी। उनके पास जो बैठे थे उनके द्वारा कथित। और फिर तिथि नक्षत्र वार तारीख सहित लिखित। यही direct message (प्रत्यक्ष वाणी) यही direct evidence (प्रत्यक्ष प्रमाण) होने के कारण वह बात कहना इतना सहज नहीं है। क्राइस्ट चैतन्य देव की वाणी का इस प्रकार का रिकार्ड होता तो वह बात बोलना कठिन होता।

रात्रि के दस। भक्तगण विदा लेते हैं। दुर्गापद अनमने से बैठे हैं। सब के अन्त में ये उठकर श्री म को प्रणाम करके अनुतप्त स्वर से मनस्ताप निवेदन करते हैं।

दुर्गापद (श्री म के प्रति)— पचास वर्ष वयस हो गई, कुछ भी तो हुआ नहीं। इतना आपकी बातें सुनता हूं, संग करता हूं। ऐसी है कठोर प्रकृति!

श्री म (भरोसे सहित)— कैसे जाना कि आपका कुछ हुआ नहीं? गाड़ी में निद्रित हैं आप। गाड़ी तो काशी चली गई है। आप तो देख नहीं पा रहे। सोचते हैं, हावड़ा में ही बैठा हुआ हूं।

अवतार जो आए थे अभी अभी। भगवान मनुष्य होकर आए थे। इसी दक्षिणेश्वर में कितना कांड करके उसदिन मात्र गए हैं। आप लोग तो हैं उनके आश्रित। वे तो आए ही हैं आप लोगों के लिए। उनके संग जोत दी गई है गाड़ी। इंजिन खेंचे लिए जा रहा है goal (गन्तव्यस्थल) पर। चिन्ता क्या ? उनका नाम लीजिए और आनन्द कीजिए। ठाकुर अवतार हैं कि ना, स्वयं ही कहा है उन्होंने।

यही महावाक्य सुनते-सुनते भक्तगण सीढ़ियों द्वारा नीचे उतरते हैं। दुर्गापद भी सुप्तोत्थितवत् नीचे उतर रहे हैं। श्री म सीढ़ियों के ऊपर खड़े हुए हैं, मुख पर करुणा की छवि। श्री म के दाएं हाथ में लालटेन जल रही है। सीढ़ी का पथ दिखाते हैं।

(2)

मॉर्टन इन्स्टिट्यूशन। चारतले की छत। सकाल सात। छत के पूर्व-दक्षिण कोने में श्री म बैठे हैं— प्रथम चेयर पर, फिर मादुर पर। भोर-वेला में इसी मादुर पर बैठ कर दीर्घकाल ध्यान किया है। चेयर पर बैठने से धूप लगती है। तभी मादुर पर बैठे हैं। अकेले क्या सोच रहे हैं ? अन्तेवासी इतनी देर तक श्री म के सम्मुख ही थे। अब दस हाथ पश्चिम में अपने वास-स्थान टीन के घर में प्रवेश किया।

अब आठ बजे हैं। वरदा दास का प्रवेश। ये प्रणाम करके श्री म के पास मादुर पर बैठ गए। वरदा की वयस पच्चीस होगी, श्री हट्ट में बाड़ी है, भक्तिमान व्यक्ति हैं। ये श्री म के यहीं प्रथम दर्शन करने आए हैं। श्री म ने पांच मिनट में उनका जितना भी सब प्रयोजनीय था, सब परिचय संग्रह कर लिया।

वरदा आर्टिस्ट हैं, अवनी बाबू के स्कूल में पढ़े हैं। अब समवाय बिल्डिंग में रहते हैं। श्री म उनके साथ आर्ट की बात ही करते हैं। जो जिस विषय में अभिज्ञ होता है श्री म उनके साथ उसी विषय की बातें करते हैं।

श्री म—अवनी बाबू की पेन्टिंगों में से आप को कौन सी अधिक अच्छी लगती है ?

वरदा—"दिनेर शेष" नामक ऊंठ की पेन्टिंग मुझे बड़ी अच्छी लगती है। और एक है "शाहजहां का प्रेम"।

श्री म— मेरे देह पर रोमांच हो रहा है सुनकर। आह, ऐसा प्यार, ऐसा प्रेम ईश्वर पर होने से होता है। ईश्वर दर्शन हो जाता है इससे। ठाकुर ने इसीलिए तो कहा था, जो नमक का हिसाब कर सकता है वह मिश्री का हिसाब भी कर सकता है। जो जागतिक किसी भी विषय में बड़ा है वह इच्छा करने से ईश्वर के पथ में बड़ा हो सकता है। मन तो एक ही वस्तु है। इधर जितना गया है, मोड़ फिरा देने पर उधर भी उतना ही जाएगा।

ताजमहल बनवाने के पूर्व, सुनते हैं शाहजहां आकाश की ओर तन्निविष्ट मन से ताकते रहते। मुमताज़ की बात संभवतः उद्दीपन हुई है। मुमताज़ में मन डूबा हुआ है। मृत्यु के समय भी सुना जाता है, शाहज़हाँ ने ताजमहल की ओर ताकते हुए शेष निश्वास त्याग किया था।

शाहज़हां का ऐसा मधुर भाव, और उनके पुत्र औरंगज़ेब का कैसा उग्र स्वभाव! पिता को बन्दी बनाकर रखा। और भाइयों के ऊपर कितना अत्याचार! हिन्दुओं को समझते काफिर। जभी तो एक हाथ में कुरान और दूसरे हाथ में तलवार लेकर शायद कहा करते थे—जो खुशी हो ले लो— कुरान नहीं तो तलवार। तलवार लेना माने मृत्यु, और कुरान लेने का अर्थ हुआ मुसलमान धर्म ग्रहण करना। व्यक्तिगत जीवन तो उनका भला था, खूब सरल, सादा। किन्तु धर्म का ऐसा fanaticism (पागलपन) ही कलंक हुआ। एकदम direct challenge (सुस्पष्ट आह्वान) था— कुरान अथवा कृपाण।

शाहजहां और औरंज़ेब, कैसा आश्चर्य, एकदम विपरीत स्वभाव। ये builder (स्रष्टा) और वे destroyer (विनाशक)। ये मधुर और और वे उग्र। ये उदार और वे संकीर्ण। ये विलासी और वे तपस्वी।

श्री म (वरदा के प्रति)—अच्छा, आपने कुछ अंकन किया है क्या? शिव की समाधि की एक छवि आप अंकन करें। समाधि में मन एकदम

विलीन। व्युत्थित होकर मन तनिक नीचे उतरते ही "मैं कौन ?" कह कर नृत्य। समाधि में नामरूप के पार परम ब्रह्म सच्चिदानन्द में निमग्न — जसे नमक के पुतले का समुद्र में उतरकर जो होता है। समाधि भग्न हो गई, नामरूप में मन नीचे आने पर देखते हैं, वही सच्चिदानन्द परमब्रह्म ही नामरूपवान् जगत् होकर रह रहे हैं। जो निराकार निगु ण वाक्यमानातीत, उन्होंने ही साकार सगुण विश्वरूप धारण किया है। मन के निन्यानवे भाग ही सच्चिदानन्द में लगे हुए हैं, मात्र एक भाग नामरूप में उतरा है, जगत्रूप में तैर रहा है। उसी अवस्था में विस्मय से मग्न होकर—नृत्य करते हैं, 'यह क्या ? यह क्या ?' संग संग ही विचार आकर पथ रोककर खड़ा है तो फिर "मैं क्या हूँ—मैं ?" समाधि में यह "मैं" नहीं था। समाधि टूट गई "मैं" अर्थात् individuality लौट आई। समाधि में देखा था सच्चिदानन्द सागर, जिस एक के संग में दुई नहीं है वही एक। और अब देखते हैं, इसी एक ने ही बहु अर्थात् नामरूपवान् जगत् का रूप लिया है। जभी प्रश्न होता है तो फिर यह "मैं" क्या है ? "मैं" यह आया कहां से ?

यह "मैं" ही तो माया, — यह है, इसी लिए जगत् है। जभी माया को शंकराचार्य ने "अनिर्वचनीय" कहा है— "है" कहने से भी चलता नहीं; "नहीं" कहने से भी चलता नहीं। अर्थात् बातों से वा भाषा से समझाया नही जाता।

ये ही सब अवस्थाएं ठाकुर के भीतर देखी गई हैं। मन एकदम अरूप में विलीन। और फिर नामरूप में जब लौट आया तब देखते हैं, सब मोम से मढ़ा हुआ है। मोम अर्थात् चैतन्य, सच्चिदानन्द में। तभी विस्मय से बोले, सब तो मोम का जो है—बाग, पेड़, पौधा, फूलफल–माली पर्यन्त मोम का। जभी भक्तों से कहा था, "मैं विचार क्या करू ? देखता हू , मां ही सब हो कर रह रही हैं।"

"मैं" –तत्त्व का समाधान किया — समाधि में चला जाता हैं नीचे उतरने पर लौट आता है। जभी दास "मैं", भक्त का "मैं" लेकर रहने के लिए कहते हैं। और बोले, जीव का यह "मैं" बिल्कुल जाता नहीं। अवतार आदि का "मैं" जाता है। यह तो मूली का पौधा और वह अश्वत्थ। जगत् रहने मे ही द्वैत होता है। जभी व्यवस्था दे दी, साले का (भगवान का) "दास मैं" होकर रहो।

क्राइस्ट और चैतन्य देव की छवि कोई आंके तो भला हो। उनकी विशेष घटनाएं अवलम्बन करके। हमारी बहु दिन की इच्छा है, ठाकुर के जीवन की घटनाओं की छवि को कोई अंकन करे। छवियों में "कथामृत" हो। अब वर्णरूपी कथामृत है। आप लोग ये सब कीजिए ना। इससे कठोर तपस्या हो जाएगी। हृदय में गुंथ जाएगी उनकी सब लीला-कथा। ये सब लीला और कथा महाशक्ति का केन्द्र हैं। जैसे छत की मुन्डेर पर बीज पड़ने पर वृक्ष जन्मता है, वैसे ही ये सब दैव भाव और भाषा भीतर रहने पर, अपने आप उसी बीज से धर्मतरु का जन्म होता है। अब जो सुनते हैं वा पढ़ते हैं उनकी कथा, ये दोनों ही श्रवण के अन्तर्गत हैं। तत्पश्चात् मनन—अर्थात् deep thinking उन सब महा वाक्यों को लेकर, लीला लेकर। इसके उपरान्त निदिध्यासन अर्थात् continuous and unbroken thought (सतत अविरल विचार) होता है। सब लीला छविएं आंकते हुए एकदम निदिध्यासन हो जाएगा। राफेल की मेडोना की वह छवि ही इस की साक्षी है। बौद्धयुग की बहु छविएं ऐसी हैं— एकदम जीवन्त। कीजिए कीजिए ये सब। इससे इधर का भी लाभ, उधर का भी लाभ।

Music, painting and poetry (संगीत, चित्रांकन और कविता) इन तीनों द्वारा उनको प्राप्त किया जाता है। ये तीनों ही हैं fine arts (चारुशिल्प), Sculpture (भास्कर्य मूर्तिकला) भी और एक है। उससे भी होता है। ठाकुर के मुख से सुना है. नवीन भास्कर सारे दिन में वेला तीन के समय एक बार केवल मात्र हविष्यान्न भोजन किया

करते थे। इतना संयत होकर, इतनी तपस्या करके फिर ही दक्षिणेश्वर की मां काली को बनाया है। जभी तो है इतनी जीवन्त ! जो बनाएगा उसका मन उसी देवभाव में एकदम मिल जाएगा। तभी हाथ द्वारा ही भाव पत्थर में प्रस्फुटित हो उठेगा।

Fine arts (चारु शिल्प) मन को refined (निर्मल) करता है—मन में एकाग्रता होती है। जो जन आर्ट को प्यार करता है वह इच्छा करने से ईश्वर की ओर जा सकता है। उसका मन संस्कृत हो जाता है, इसे ही Culture (संस्कृति) कहते हैं।

पेंटिंग, पोएट्री, ये सब ही सुन्दर की उपासना के उपकरण है। समस्त सौन्दर्य का आधार हैं श्री भगवान। इन सब के उपासकगण इसी पथ द्वारा उनके निकट अग्रसर होते हैं। जिस जाति का इस ओर अनुशीलन नहीं, वे धरापृष्ठ पर अधिक दिन टिक नहीं सकते। इन सब की pragmatic value (सांसारिक मूल्य) उतना न होने से जातीय संस्कृति की ओर से, जाति के सुदीर्घ जीवनलाभ की ओर से, इन सब का मूल्य है अति उच्च। भारतीय संस्कृति ने जो इतना सुदीर्घ जीवन काम किया है उसके मूल में वही भाव है। संस्कार का शेष पोयेन्ट (बिन्दु) है ईश्वर दर्शन, आत्मज्ञान। अर्थात् "जीव का शिवत्व लाभ"। उसे ही लक्ष्य रखकर नाना पथों पर उपासकगण चलते हैं उसी के संग एकत्व लाभ के लिए। सुन्दर के उपासकगण जागतिक सकल सौन्दर्य त्याग करके परम सुन्दर का सन्धान, क्रमशः पाते हैं। ऊंची वस्तु का चिन्तन करते करते मन उसी भाव में रंजित हो जाता है। अन्त में वस्तु लाभ। तब head और heart (बुद्धि और हृदय) का व्यवधान चला जाता है ! दोनों ही एक हो जाते हैं हृदय और अनुभव, तब जीव होता है "शिव"।

आहार, विहार, वासस्थान ही मनुष्य का सब कुछ नहीं है। पशु को भी यह सब आवश्यक है। मनुष्य का कार्य और भी ऊंचा है। मनुष्य ईश्वर चिन्तन कर सकता है, ईश्वर दर्शन कर सकता है, ईश्वर हो सकता है। इसी को ही तो ऋषियों ने मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ कर्तव्य

बतलाया है। इसी ईश्वर में आर्ट है खूब सहायक। मन तो एकाग्र और संस्कृत हो चुका है। तत्पश्चात् उसी को हीं उसी पथ पर चला देना।' आप ने सुन्दर कर्म लिया है।

अपराह्न छः। श्री म छत पर चेयर पर बैठे हैं उत्तरास्य। उसके सम्मुख दाएं हाथ बैंच पर दो नवागत भक्त बैठे हैं पश्चिमास्य। ये अब झामापुकुर से आए हैं। इन में से एकजन पुरुलिया में रहते हैं, किसान का कर्म करते हैं। बीच बीच में दक्षिणेश्वर काली मन्दिर य तयात करते हैं। श्री म आनन्द से इनके संग बातें करते हैं। इसी बीच ही श्री म के सम्मुख के बैंच पर पूर्वमुखी होकर आकर बैठे बड़े अमूल्य, सुखेन्दु, छोटे रमेश और जगबन्धु। एकजन नवागत भक्त उपेन्द्रबाबू डिप्टी मैजिस्ट्रेट की बातें कहते हैं।

नवागत भक्त (श्री म के प्रति)— वे पहले अच्छे थे। खूब ईश्वरीय बातें होतीं। कितने लोग जाते। अब वह भाव नहीं है। अब विषय की बातें ही अधिक भाग होती हैं।

श्री म — वे जब लकड़ी खींच लेते हैं तब सब ठंडा। लकड़ी थी इसलिए दूध फोंस फोंस करता था। खींचते ही फोंस फोंसानी बन्द हो गई। भगवान जब तक इच्छा करते हैं तब तक ही मनुष्य उनका काज कर सकता है। उनकी इच्छा बिना कुछ नहीं होता।

श्री कृष्ण ने देह रखने के पूर्व अर्जुन की समस्त शक्ति हरण कर ली। काज हो गया है, धर्म संस्थापन का काज। अर्जुन के लिए और प्रयोजन नहीं है। कुरुक्षेत्र युद्ध हो गया, धर्मराज्य पर पांडवगण बैठे हैं। फिर क्या आवश्यकता शक्ति की ? जभी हरण कर ली शक्ति।

श्री कृष्ण बाणविद्ध हुए पड़े हैं। अर्जुन को निकट बुलवाया। अर्जुन जानते हैं अब अन्तर्धान का समय आ गया है। जभी निकट तो गए चाहे, किन्तु थोड़ी दूर खड़े रहे, जिससे श्री कृष्ण स्पर्श न कर सकें। बार बार कहते हैं अर्जुन को और भी निकट आने के लिए। अर्जुन आते नहीं।

इधर अर्जुन की शक्ति हरण हुए बिना श्री कृष्ण का शरीर भी नहीं जाएगा। दैवी शक्ति का काज हो गया है, अब और प्रयोजन नहीं। शक्ति का अपव्यवहार हो सकता है। वह छोड़ पांडवों के महाप्रस्थान का समय निकट है। श्री कृष्ण के शरीर त्याग के संग संग ही पांडव गण महाप्रस्थान करेंगे।

श्री कृष्ण नाना छलना करने लगे ताकि अर्जुन पास आकर बैठें। किन्तु अर्जुन किसी तरह भी निकट नहीं जाते। अर्जुन की इच्छा है जितनी देर श्री कृष्ण का शरीर रहे उतना ही जगत् का कल्याण है, उनका कल्याण है। यह भी जानते हैं शक्ति हरण बिना हुए शरीर जाएगा नहीं। दोनों पक्षों में ही छलना चलती है। किन्तु श्री कृष्ण की मोहिनी माया के पास कौन ठहर सकता है? अभिमान के सुर में कहने लगे, श्री कृष्ण— यही क्या पांडवश्रेष्ठ अर्जुन! इसके लिए इतना किया? उसका फल यही! इतना करके कह रहा हूँ एक बार निकट आओ, किन्तु आता ही नहीं। हाय, यही प्रतिदान अर्जुन का। अर्जुन और रह नहीं सके। क्या कोई उनकी मोहिनी माया के पास ठहर सकता है? अर्जुन निकट आए। गाण्डीव द्वारा श्री कृष्ण को स्पर्श किया। बस गाण्डीव फिर और उठता ही नहीं। अर्जुन तो अब सामान्य एक मनुष्य। दैवी शक्ति, अवतार की लीला की शक्ति उनके भीतर से मुहूर्त में अन्तर्हित हो गई।

श्री म (नवागत भक्त के प्रति)— उनके शक्ति देने पर ही मनुष्य उनकी कथा कह सकता है। उनकी कथा कहने में भी विपद् है। ठाकुर ने कहा था घटक घटकाली करने गया, अन्त में निज ही विवाह करके बैठ गया। अर्थात् उनकी कथा कहते कहते निज फिर credit (सम्मान) लेकर न बैठ जाय। ठाकुर का जीवन देखिए। अवतार कहते हैं मैं अवतार। सच्चिदानन्द इसके भीतर आए हैं। किन्तु निज कोई भी credit (नामयश) लेते नहीं। जो कुछ बोलते हैं सब मां का नाम करके, जगदम्बा के नाम में। इससे भी प्रकट हो रहा है वे और जगदम्बा एक। तो भी जब संसार के अज्ञानी लोगों के

निकट बातें करते हैं तब सब मां के नाम में। उनकी सब में मां—आहार, विहार, शयन, सपन, श्वसन, सब काज में मां। जभी कहते हैं, "तुम मां यंत्री, मैं यंत्र। जैसा करवाती हो वैसा ही करता हूँ, जैसा बुलवाती हो वैसा ही बोलता हूं।" निज तनिक भी credit (सम्मान) लेंगे नहीं। देखते हैं, एक कर्ता धर्ता विधाता मां। लोकशिक्षा के लिए अवतार आदि इस प्रकार आचरण करते हैं। संसार के साधारण लोगों के विपरीत सम्पूर्ण आचरण। अज्ञानी जन कहता है, मैं कर्ता। ठाकुर बोले, नहीं, मां कर्ता। इस lower (निम्न "मैं") को sublimate (ईश्वरमिलित) कर सकने पर तब होती है, ठाकुर की अवस्था—सब कार्य में मां। Lower (जागतिक 'मैं") completely conquered (सम्पूर्ण विजित) होती है जब higher (उच्च "मैं") के द्वारा—एक दम absolute surrender and subordination (पूर्ण शरणागति और आधीनता) हो जाती है तब। द्वैतभूमि जगत् में रहने की इच्छा कैसे हो, यही शिक्षा देने के लिए वैसा आचरण ठाकुर का। इसके भीतर एक एक बार अद्वैत में चले जाते हैं, मां और पुत्र एक—जिस एक की "दुई" नहीं है वही एक अखण्ड सच्चिदानन्द, जो वाक्यमन के अतीत हैं, वे ही हो जाते हैं। किन्तु देहबुद्धि रहने से ही अर्थात् "मैं" जब तक रहता है तब तक द्वैत। बड़ा कठिन, जभी कन्या सुन्दर देखकर निज ही विवाह करके बैठ गया। उनकी कथा बोलना जभी तो इतना कठिन है। किसी किसी के द्वारा बुलवाते हैं। नहीं तो जगत् की लोक शिक्षा होगी किस प्रकार? उनके भीतर के उस अंहकार को धो पौंछकर साफ कर देते हैं। वे उनका यंत्र बनकर कार्य करते हैं। बड़ा कठिन कार्य लोकशिक्षा।

ठाकुर जो सर्वदा मां का यंत्र बनकर काज करते हैं, एक एक बार भक्तों के निकट उसे जैसे प्रत्यक्ष करवाए जा रहे हैं। विज्ञान का युग है कि ना, जभी संशय-समाधान का उपाय भी सम्पूर्ण विज्ञान-सम्मत है। विवेकानन्द ने कहा, "आपका ईश्वरीय दर्शन hallucination

(मन का भ्रम) है।" तत्क्षण सब के सामने ही बोलते है, "हां, मां, क्या यह सब मेरे मन का भ्रम है? नरेन्द्र जैसे कहता है— तुम्हारा दर्शन, तुम्हारे संग मेरा वार्तालाप— ये सब।" मां ने उत्तर दिया, वह कैसे बेटा? मैं ही जो तुम्हारे मुख द्वारा बातें करती हूं। और तुम जो बोलते हो, वह वास्तव के संग मिलता जाता है। तो फिर इन सबको मन की भूल कैसे कहा जाय? इससे दो काज हुए। एक से तो जैसे मां को प्रत्यक्ष करवा दिया। दूसरे से अपनी अधीनता स्वीकार करनी हो गयी।

इतनी बातें मां के संग नित्य। इतना गाना, इतना नाच, इतना आनन्द, किन्तु शेष समय की ओर ठीक विपरीत भाव। तब प्रार्थना करते हैं, मैं और बक बक नहीं कर सकता। मेरे लिए शुद्ध भक्त ला दो-दो चार बातों से जिनको चैतन्य हो जाए। और अन्य सब को सेन-टेन के निकट भेजो।

उनकी कथा कहना बड़ा कठिन काज है। जभी तो गोपियों ने कहा, जो खूब उदार और महत् हैं, केवल वे ही तुम्हारी कथा कहने के उपयुक्त हैं— "भुवि गृन्वन्ति ये "भूरिदा जनाः।" भूरिदा जनाः" माने खूब उदार चित्त है जिनका। संसार की भोगवासना जिनकी चली गई है, जो केवल ब्रह्मानन्द भोग करना चाहते हैं केवल वे ही उनकी कथा बोलने के योग्य हैं। श्रोताओं का भी वही। अन्य वासना रहने पर ईश्वरीय कथा श्रवण में रुचि नहीं होती। वे जिनके द्वारा इच्छा करते हैं केवल वे ही उनकी कथा बोल सकते हैं। और फिर जब तक इच्छा करते हैं तब तक ही बोल सकते हैं।

ठाकुर ने जभी तो एक भक्त से कहा था,-कोई अपने मन में यह न सोचे कि मेरे न करने से मां का काज अटका रहेगा। वे इच्छा करने से तिनके से महापुरुष तैयार कर सकती हैं।

यह क्या लेक्चर देने का कार्य? जैसे देते हैं लोग गोलदिघि* पर।

*गोलदिघि College square in calcutta, कलकत्ते का कालेज स्क्वेयर।

उनका आदेश बिना पाए बोलने से गड़बड़ करते हैं। कहते हैं, मेरे मामा के घर एक गौशाला भर ओड़े हैं। वक्ता श्रोता दोनों ही भोगते हैं— "अन्धेन नीयमाना यथान्धाः।" देखा देखी अनेकों ने प्रचार किया था किन्तु कुछ भी टिका नहीं। और जिस के द्वारा उन्होंने बुलवाया है, या बुलाते हैं, वे शत बाधाविघ्नों के भीतर भी बोलते हैं और उससे काज भी होता है, लोग सुनते हैं। ईश्वर के पथ पर जाने से सुनते हैं। नहीं तो "हेगो गुरूर पेदो शिष्य" हो जाता है, वह भी कहा करते।

एक जन भक्त—यह तो प्रत्यादिष्ट गण की बात हुई। किन्तु क्या साधक को उनकी कथा बोलने का अधिकार नहीं है ?

श्री म— हां है, यदि सेवा के भाव में उनकी कथा बोले। उनके निकट प्रार्थना करे, शरणागत होकर, गुरुजनों का आदेश लेकर, इससे अपरजन की सेवा की जाती है, इस प्रकार करने से चल सकता है। किन्तु गुरुभाव में नहीं। गुरुभाव में कर सकते हैं अवतार आदि। फिर भी वे भी सेवा के भाव में ही रहते हैं अधिक भाग, लोकशिक्षा-जन्य। नहीं तो दूसरों के भीतर भी गुरुगिरि प्रवेश कर जाएगी। ठाकुर का जीवन ही हुआ है a standing criticism (गुरुगिरि की मूर्तिमान समालोचना)। ऐसा करने से मनुष्य नीचे उतर जाता है, जड़ित हो पड़ता है। बड़ा कठिन काज। धन दौलत, मान-सम्मान, कामिनी कांचन सब हाथ की तली में आ जाता है ईश्वरीय कथा कहने से। तब यदि निज को पृथक् न कर सके तो डूब जाता है। बड़ा कठिन। कहां से आ जाता है अहंकार ? Credit (नामयश) निज ले लेता है।

ग्रामोफोन जैसा होने पर चल सकता है। गाना तो 'His Master's Voice'— गाना तो दूसरे का, मैं तो यंत्र। वह भी क्या सहज ? जो चौबीस घण्टे उनका चिन्तन कर सकता है वही केवल ग्रामोफोन बन सकता है ठीक ठीक। नहीं तो बीच बीच में सिर उठा लेती है यही "मैं"।

यह एक कठिन साधन है। ज्योंहि सिर उठाए त्योंहि मुदगर का एक वार मारो सिर पर। माने, उनका नाम, उनकी स्मृति। तब

स्मरण करना चाहिए ठाकुर का आचरण। मां तुम यंत्री, मैं यंत्र; तुम कर्ता, मैं अकर्ता। ऐसा करके relentless war declare (अविश्रान्त युद्ध घोषणा) करना। कभी "तुम" की, कभी "मैं" की जय, 'मैं' की जय ह अधिक भाग। अन्त में समस्त "तुम" की जय हो जाती है उनकी कृपा से।

निष्कामभाव से उनकी कथा कहने से चित्तशुद्धि होती है, जैसे निष्काम भाव से रोगी की सेवा करने से अथवा निरन्नक को अन्न देने से होता है। कोई सेवा करता है स्थूल शरीर की, कोई सूक्ष्म शरीर की, कोई कारण शरीर की। तीनों शरीरों की सेवा ही निष्काम होकर करने से चित्तशुद्धि होती है। तब ईश्वर में शुद्ध ज्ञान-भक्ति लाभ होता है।

संध्या समागता। भृत्य सीढ़ी के कक्ष में हरिकेन रख गया। आलोक देखकर श्री म ने बातें बन्द कर दीं, ईश्वर चिन्तन करेंगे। इसी बीच "हुड़ हुड़" करके झड़ - तूफान उठा। पूर्व आकाश गाढ़ा मेघाच्छन्न हो गया। देखते देखते प्रबल वृष्टि। तूफान और वृष्टि एक संग चले। श्री म भक्तों के संग उठे और जाकर सीढ़ी के कक्ष में बैठ गए। ये बैठे दक्षिणास्य चेयर पर द्वार के मूल में सीढ़ी के सामने। भक्तगण बैठे श्री म के बाईं ओर और सम्मुख बेंचों पर। श्री म ध्यान करते हैं। भक्तगण भी ध्यान करने की चेष्टा करते हैं। कोई कोई बाहर का तुमुल काण्ड झड़ देखते हैं। कुछ क्षण ध्यान करने पर श्री म नवागत भक्तों से भजन गाने के लिए बोले। एक जन गाते हैं— "शुक डाले बसि डाकिछो कि पाखी, डाकिछो कि परम पितारे।" (सूखी डाली पर बैठकर हे पक्षी क्या पुकार रहे हो, क्या परमपिता को पुकारते हो?") धीरे धीरे तूफान का वेग कम हो गया। किन्तु टिप टिप करके जल पड़ रहा है। पुनराय कथावार्ता होती है।

श्री म (नवागत भक्तों के प्रति)— अन्य का भला लेना ही भला है। अन्य का खराब देखते देखते निज भी खराब हो जाता है। एक आदर्श पकड़े रहना और अन्य का भला ही लेना।

ठाकुर कहते, श्री कृष्ण बड़ी मुश्किल में पड़े हैं। रानी, अर्थात् मां यशोदा खींचती हैं अंक की ओर, गोपाल खींचते हैं वन में, और राई (राधा) खींचती है नयन में। अब श्याम कहां जाएं ? यही अवस्था है मनुष्य की। नाना ओर नाना आकर्षण आ जाते हैं। उद्विग्न हो उठता है। तभी अशांति।

जभी एक ही आदर्श पकड़े रहना अच्छा। नाना चीजों के विषयों में घूमने से एक में मन बैठता नहीं। सब मत ही पथ, ठाकुर का महावाक्य। सब मतों को ही (नमस्कार मुद्रा में) नमस्कार करता हूँ! हम उनकी (ठाकुर की) वाणी ही एक प्रकार से बालकपन से ही चिन्तन करते हैं। इसीलिए उनकी वाणी के अनुसार चलने की चेष्टा करते हैं। यह क्या बोलता है, वह क्या बोलता है, सब देखने जाने पर समय कहां ? इधर "जो" हो जाती है। (मृत्यु किसी समय ही आ जाती है।)

दक्षिणेश्वर में एक भक्त तपस्या के भाव में रहते हैं। नवागत भक्त गण उनकी प्रशंसा करते हैं।

श्री म (नवागत भक्तों के प्रति) — क्या क्या सब बातें हुईं, बताइए बताइए—दो एक बातें तो बोलिए।

नवागत एकजन भक्त—उन्होंने कहा था और क्या कहूँगा ? शायद कहते हुए एक गौशाला छोड़े कह जाऊंगा अन्त में। आजकल कम बोलते हैं। पहले और भी अधिक बोलते थे।

श्री म—हां, अधिक बातें करना ठीक नहीं। भीतर खाली हो जाता है। और प्रशंसा मन मन में करनी चाहिए। बाहर करने पर सर्वनाश। अभी हुआ ही क्या है ? तनिक आंख बन्द करने से ही सब हो गया ? वैसा होता तो फिर रक्षा थी नहीं।

श्री म (अन्यमनस्कभावे)—एक जीव ने रास के फूल खाना चाहा था। मां ने कहा, ठहरो–अष्टम फष्टम गण कट लें। माने आश्विन मास की अष्टमी नवमी में पाँठा बलि होते हैं। ये सब पार होने दो, तब फिर देखा जाएगा। बकरे ने खाना चाहा था 'रास का फूल'। कार्तिक मास में रास के समय बहुत फूल आदि से रासतला सजाया जाता है। वे ही

सब फूल खाना चाहता था एक बच्चा। माँ प्रवीण, सब जानती है। जभी बोली, ठहरो पहले नवरात्रि निकल जाए तत्पश्चात् देखा जाएगा। अर्थात् विपद् से उत्तीर्ण हो जाओ पहले, फिर तब सब।

अभी हुआ ही क्या है, जो इतनी प्रशंसा करना। और जो प्रशंसा करते हैं उनका ही अथवा क्या अधिकार? ईश्वर के विषय में अथवा समझते ही क्या हैं? ठाकुर ने केशवसेन से कहा था, तुम्हारी बात नहीं ले सकता। दूसरे की तो क्या बात? इतना बड़ा भक्त केशवबाबू और कितने लोग उनको मानता देते हैं। उनकी बात ही लेते नहीं। बोले थे, नारद शुकदेव कहते तो सुनता। जो संसार (गृहस्थ) में रहते हैं, कामिनी कांचन में मन है, बीच बीच में कुछ उनकी कथा स्मरण मनन करते हैं, उन्हें क्या अधिकार है बोलने का? जो बोलते हैं उन्हें अधिकार नहीं बोलने का और जो सुनता है उसको अधिकार नहीं सुनने का। इस पर भी यदि dare (साहस) करते हो प्रशंसा करने का तो वह होगा at the risk of both (दोनों का विनाश बुलाना)। छिः, ऐसा काज क्या करना उचित? निहात् प्रशंसा करनी ही हो तो मन मन में करो।

जभी तो कहते हैं, 'मरबें साधु उड़बें छाइ तबें साधुर गुण गाइ।' ऐसा व्यापार! न जाने किस ओर से लोकमान्य आकर सब पण्ड (समाप्त) कर दे। जभी तो ठाकुर इतना 'लंका फुरन' दिये* कहते—झाड़ मारता हूँ लोकमान्य को।' तनिक आंख बन्द करने से ही हो गया? तब तो फिर रक्षा नहीं।

इसके लिए mutual admiration society (परस्पर स्तावक सभा) नहीं बनाते। उससे ideal आदर्श खूब low (नीचा) हो जाता है। राम, राम। वह (प्रशंसा) करते नहीं। सर्वदा ही mouth watered (मुख जलसिक्त) रहता है कि नी नाम के लिए, यश के लिए। (छोटे रमेश के प्रति) बोलो, करता है कि नहीं?

श्री म क्या सोचते हैं? पुनः कथा होती है। श्री म (सब के प्रति)—

*लंका फुरन दिये=लाल मिरचों का छौंक देकर, जोर से।

एक जन बहु परिश्रम करके पैदल पैदल पुरी में गया छः मास में। पांव तो कट कुट के रक्तारक्त। उन्हें लेकर ही जगन्नाथ मन्दिर के सामने जा उपस्थित हुआ। अरुणास्तम्भ के निकट खड़े हो कर हाथ जोड़ कर नमस्कार करता है। मन में हर्ष है, इतने दिन का परिश्रम सफल प्रायः। इसी समय एक बैलगाड़ी सामने से जा रही है। पूछने पर पता लगा गाड़ी कलकत्ता जा रही है। तब तो ठीक हुआ। मैं भी तुम्हारे संग चलता हूँ, भक्त बोला। गाड़ीवान ने उत्तर दिया, तो फिर चढ़ जाओ। भक्त बोला, अभी आया हूँ थोड़ा सा ठहरो, एक बार जगन्नाथ दर्शन करके आता हूं। नहीं, मैं प्रतीक्षा कर नहीं सकूंगा, कहते ही गाड़ी हांक दी। पथश्रान्ति से क्लान्त वह जन दौड़कर गाड़ी में चढ़ गया। उसका भाग्य से दर्शन नहीं हुआ। देह सुख ने आकर इतने दिन का परिश्रम पण्ड (गुल) कर दिया। ये सब है उनकी महामाया का काण्ड—लोकमान्य, देहसुख। किस ओर से आ जाते हैं, यह तो पता लगने वाला ही नहीं। जभी ठाकुर प्रार्थना किया करते, "मां अपनी भुवनमोहिनी माया में मुग्ध न करो। शरणागत, शरणागत मां।"

श्री म क्षणकाल नीरव। पुनः कथा।

श्री म (नवागतों के प्रति) — ऐसा कान्ड, समझ पाये ? इतना कष्ट करके जाकर भी जगन्नाथ दर्शन हुआ नहीं। जभी कुछ कहने का अधिकार नहीं है कि किस का क्या होगा। अष्टम षष्टम इत्यादि कट जाएं।

क्यों ठाकुर ने प्रार्थना की ? भक्तों की शिक्षा के लिए। जिस की माया से जगत् मुग्ध है उसी महामाया के शरणागत होकर रहना।

बड़े अमूल्य और सुखेन्दु का प्रस्थान। डाक्टर और बलाई का प्रवेश।

श्री म (डाक्टर के प्रति) — इन्होंने एकजन की प्रशंसा की थी। हम ने कहा, आगे अष्टम षष्टम इत्यादि करने दो। हुआ ही क्या है अभी जो प्रशंसा। अल्प आंख बन्द करने से ही यदि होता, तो फिर रक्षा नहीं थी।

डाक्टर की प्रशंसा करते रहते हैं। पूर्व ही उनको सावधान किया था। आज फिर और दृढ़ता सहित पुनराय सावधान करते हैं।

श्री म (डाक्टर के प्रति) — ठाकुर बोलते, 'झाड़ मारि लोकमान्ये।' इतना मिरचों का छौंक देकर क्यों बोलते यह बात? क्या वैसे ही बोलते अथवा उसका अर्थ है। सर्वनाश होगा इससे, जभी बोलते। उभयपक्षों के लिए खराब है। एक पक्ष में लोकमान्य आ जाने पर सब परिश्रम व्यर्थ कर देगा। जो बोलते हैं उनका ideal lower (आदर्श नीचा) हो जाएगा। आंख बन्द करने से ही हुआ नहीं। जीवन में कितना ईश्वर का भाव प्रकाश पाता है वही तो है असल वस्तु— उनके प्रति प्रीति। ईश्वर दर्शन के लिए व्याकुलता। जभी इतना कठिन व्यापार। अनधिकारी को तो कुछ भी बोलने का अधिकार नहीं। प्रशंसा यदि अवश्य करनी ही हो तो मन मन करो। उससे उसका अनिष्ट नहीं होगा, किन्तु निजी आदर्श नीचे उतर जाएगा।

क्यों ठाकुर ऐसी अग्निवाणी बोलते? तभी तो लोगों को चैतन्य होगा। अनधिकार चर्चा और नहीं करेगा। यह क्या संसार का व्यापार? यह याद रखो highest ideal (सर्वश्रेठ आदर्श) लेकर बातें हो रही हैं। क्या अधिकार है उन्हें जो लोग बोलते हैं? उन्होंने क्या ईश्वर दर्शन किया है? तो फिर क्यों उस विषय में opinion pass (मत प्रकाश) करना? शास्त्र में जभी कहा है "प्रतिष्ठा शूकरी विष्ठा।"

श्री म क्षणकाल नीरव रहकर फिर बातें करते हैं। जगदानन्द और ज्ञानेश्वरानन्द काशी से देओघर विद्यापीठ में जा रहे हैं। ग्रीष्म की छुट्टियों में विद्यापीठ से लड़के घर जाते हैं। तब साधुगण शास्त्रालोचना करते हैं और भजन करते हैं। वृन्दावन आश्रम से भी पत्र आया है। आहा, मनसा की देह ही गई सर्पाघात से।

एकजन भक्त ने सम्पूर्ण विवरण पाठ किया। पाठान्ते पुनः बातें।

श्री म (नवागत भक्तों के प्रति) — यही मनुष्य जीवन। यही संसार। कुछ भी रहता नहीं। तो भी इसके लिए इतना क्यों? Death

(मृत्यु) जब abolished (विनष्ट) नहीं होती तब फिर इन सबमें इतना मग्न क्यों ? इतनी नाचानाची क्यों— इसी अनित्य वस्तु को लेकर ?

लोग अपने को बड़ा बुद्धिमान समझते हैं, किन्तु यह क्या बुद्धि का काज, या बुद्धिमान का काज ? कितने सब व्यर्थ के पदार्थ लेकर एकदम डूबे रहना। राम, राम।

आंखों के सामने देख रहे हो, कौन कब चला जाता है। यही बात ही तो सुनाने आते हैं अवतारगण। वे बार बार आकर एक ही बात सुनाते हैं— अनित्य वस्तु लेकर इतनी नाचानाची मत करो। नित्य वस्तु ईश्वर का स्मरण करो। यदि कहो, इनकी बात क्यों सुनूं, क्या प्रमाण है कि जो ये अभ्रान्त हैं ? सूर्यकिरण देखने के लिए अन्य आलोक जलाना पड़ता है क्या ? स्वतः सिद्ध सूर्य—अपना तेज ही अपना साक्ष्य। वैसे ही अवतार गण। वे निज शांत हैं— दूसरों को भी शांति दी है, अभय दिया है। जो उनकी कथा सुनते हैं वे ही निःस्वार्थ, अभय, और और प्रशांत। उनका काज, उनका नाम ही जगत् की अक्षय कीर्ति है।

जभी तो जो अनन्तकाल के बंधु हैं उनका ही स्मरण करना उचित। समय जा रहा है, कब बुलावा आ जाय उसका निश्चय नहीं। जभी शीघ्र शीघ्र समाप्त कर लेना चाहिए। यह भी और एक है महावाक्य ठाकुर का 'ताड़ाताड़ि सेरे न्याओ।' (जल्दी जल्दी खत्म कर लो।)

मॉर्टन इंस्टिट्यूशन, 30 अप्रैल, 1924 ई०।
कृष्णा द्वादशी, 47 दण्ड 2 पल।
17 वां वैशाख, 1331 (बं०) साल; बुधवार।

—०—

एकादश अध्याय

ट्रामकार की ट्राली और श्रीरामकृष्ण

(1)

मॉर्टन स्कूल । चारतल की छत । सकाल आठ । आकाश खूब परिष्कृत था । हठात् एक खण्ड मेघ ने आकर प्रभात सूर्य को ढक लिया ।

आज मई 1, 1924 ई०, 18वां बैशाख, 1331 (बं०) साल, बृहस्पतिवार, कृष्णा त्रयोदशी, 48 दण्ड 46 पल ।

श्री म छत पर चेयर पर बैठे हैं पश्चिमास्य । सामने बेंच पर विनय, जगबन्धु और छोटे जितेन बैठे हैं। मनोरंजन नीचे गए थे । वे भी आकर बैठ गए हैं । श्री म बीच बीच में इधर उधर की बातें पूछ रहे हैं छोटे जितेन से गृह के संबंध में । इति मध्य स्वामी सम्बुद्धानन्द आकर उपस्थित हुए । ये सियालदह स्टेशन से उतरकर सीधे यहां पर आए हैं। ये सम्प्रति ढाका जिले के सोनारंगा से आए हैं । वहां पर एक नूतन श्रीरामकृष्ण आश्रम उनकी विशेष चेष्टा से स्थापित हुआ है । वे उसके महन्त हैं । नूतन मन्दिर में श्रीरामकृष्ण की छवि प्रतिष्ठित होगी । स्वामी संबुद्धानन्द श्री म को निमंत्रण करने के लिए आए हैं ।

स्वामी सम्बुद्धानन्द (करजोड़े)—अनेक चेष्टा के उपरान्त यह मन्दिर हुआ है । शीघ्र ही प्रतिष्ठा होगी । आप एक बार तो चलिए ही । कुछ भी कष्ट नहीं होगा । मठ के अनेक साधु जाएंगे । आप लोगों के जाने से ये सब स्थान शीघ्र जाग्रत हो उठेंगे— तीर्थ में परिणत होंगे ।

श्री म (सहास्य)— इच्छा तो खूब होती है। किन्तु वृद्ध मनुष्य का कुछ भी स्थिर नहीं। इच्छा होने से क्या होता है ? शरीर रोके खड़ा है।

स्वामी सम्बुद्धानन्द (विनीत भाव से)— हमारी सब की इच्छा है आप एक बार चालिए ही। उस देश में तो बिल्कुल ही गए नहीं, एक बार देश देखना भी हो जाएगा। क्यों इतना कहता हूँ ? वहां पर अच्छे भक्त लोग हैं। सब तो आ नहीं सकते संसार के नाना प्रकार के झंझटों में। आपका दर्शन करने पर भक्ति लाभ होगा उन्हें ठाकुर के प्रति। मैंने स्वयं भक्तिलाभ किया है आपके निकट रहकर, ठीक जैसे एक मनुष्य रुपया पैसा लाभ करता है अन्य के पास से। दया करके चलिए एक बार।

श्री म (सहास्य)— मन ही मन जाना होगा। शरीर जो चलता नहीं।

स्वामी संबुद्धानन्द ने प्रणाम करके बेलुड़ मठ गमन किया। अब सकाल नौ। भक्तगण इधर-उधर की बातें करते हैं।

एक जन भक्त—मौलाना मोहम्मद अली की बात का प्रतिवाद किया है आज के समाचार पत्र में दिलीप कुमार राय ने।

श्री म— क्या कहते हैं वे ?

भक्त—उन्होंने ठाकुर के 'यत मत तत पथ' महावाक्य का आश्रय लिया है। सब धर्म ही समान हैं। मुसलमान हिन्दू धर्म की अपेक्षा बड़ा नहीं हैं। मोहम्मद अली की उस प्रकार की उक्ति और गांधी जी का उसका समर्थन तब तो उभय ही भ्रान्त हैं।

श्री म—गांधी महाराज की वाणी तो हमें ठीक ही लगती है। वैसा बिना हुए इष्टनिष्ठा नहीं रहती। छत पर चढ़ना होगा। सीढिएं नाना प्रकार की होती हैं। लोहे की, ईंटों की, काठ की, बांस की और फिर रस्सी की—इतनी प्रकार की सीढियां हैं। इनमें से जिस किसी एक से छत पर चढ़ जाता है। एक आश्रय करना होगा मन स्थिर करके। इस पर एक पांव, उस पर एक पांव देने से क्या होता है ?

छोटा लड़का कि ना जभी समझता नहीं। महात्मा गांधी की ही बात ठीक है। उन्होंने कितना कष्ट उठाया है, कितनी तपस्या की है। एक एक बार तो प्राण जाय-जाय हुआ है।

मोहम्मद अली की बात का अर्थ यही है कि अपने अपने धर्म को बड़ा नाम कर मानने में क्षति नहीं है। किन्तु अन्य से घृणा मत करो— उसका धर्म मिथ्या कह कर। गांधी महाराज को देखिए ना, अपने धर्म में अटल विश्वास है। और फिर इस्लाम, कृस्तान, पार्शी प्रभृति सब धर्मों पर ही श्रद्धा करते हैं।

ठाकुर की 'यत मत तत पथ' वाणी का अर्थ भी यही है। सब ही पथ हैं, किन्तु एक को ही पकड़कर चलो। इष्टनिष्ठा का खूब प्रयोजन है। मोहम्मद अली की उक्ति इष्टनिष्ठा का परिचय ही है, ऐसा लगता है। हिन्दू धर्म की निन्दासूचक नहीं।

अपराह्न पांच। मॉर्टन स्कूल की छत। श्री म चेयर पर बैठे हैं पश्चिमास्य। और बैंच पर बैठे हैं, शांति, सुरपति, मनोरंजन, छोटे रमेश, सूर्य ब्रह्मचारी, जगबन्धु प्रभृति। भक्तगण अनेकक्षण से श्री म की अपेक्षा में थे। वे निज कक्ष में थे। अभी अभी बाहर आकर छत पर बैठे हैं। नमस्कारादि हो गया। अब कथाप्रसंग।

श्री म (स्मित हास्ये)—सूर्य बाबू, तुम्हारी वही बात स्मरण होने से अब भी हंसी आती है। क्या बात, बोलो देखूं।

सूर्य (अज्ञ की हंसी सहित)— कौन सी बात ? याद नहीं आ रही।

श्री म (सहास्य, भक्तों के प्रति)— कई वर्ष पूर्व हमने इन्हें भेजा था कार्त्तिक बोस की डिस्पेन्सरी में औषध लाने। हम तब उसी 'सादा बाड़ी' में रहते थे। इन्होंने लौट आकर देखा, घर में आग लगी हुई है। ये भय से जड़ जैसे होकर बोलने लगे, हरिबोल हरिबोल। उनका नाम कीजिए। अन्तिम समय उपस्थित ! तनिक उनकी वाणी का चिन्तन कर लीजिए ! (हास्य)

भक्त कि ना, जभी ऐसी वाणी । अन्य लोगों की अन्य वाणी । उद्देश्य, अर्थात् ईश्वर लाभ की वाणी जिनको सर्वदा स्मरण रहती है उनको ही कहते हैं भक्त । भक्त क्या कम ?

वृन्दावन से लिखा है— मनसा माला पर ईश्वर का नाम रूप करते करते शरीर छोड़कर चला गया । ऐसे समय अन्य अन्य लोग सब बातें करते है ।

श्री म क्या सोच रहे हैं ? पुनः कथा ।

श्री म—क्या कहते हो सूर्य बाबू—ठाकुर बोले थे, मां ही सब हो कर रह रही हैं । तब तो फिर हम लोग ये सब जो देखते हैं उनमें उनको ही देखते है । यदि कहो, तो फिर इन सब के संग बातें करी क्यों नहीं जातीं ? वह भी (अवतार) वे ही कहते हैं निज, मनुष्य बनकर अवतार होकर आते हैं जब । ठाकुर कहते थे, 'जाऊं उसी कुत्ते के मुख द्वारा शायद मां कुछ बोलेंगी, सुनकर आता हूं ।' ठाकुर और फिर अपना मुख दिखलाकर बोले थे, 'इसी मुख से मां बातें करती हैं ।'

जगबन्धु—बाहर की सब वस्तुओं को देखकर एक जन को ईश्वर का उद्दीपन हुआ, उससे क्या कहा जाए कि वह व्यक्ति सर्वदा योग में है ?

श्री म— वैसा होता है । किन्तु उद्दीपन होने ही कहां देते हैं—सब जो भुला देते हैं ।

श्री म चेयर से उठ गए । लम्बी छत पर उत्तरदिक् में एकाकी कुछ काल पायचारी करने लगे । मन अन्तर्मुखीन, कभी कभी दीर्घ पदक्षेप से चल रहे हैं ।

आजकल बीच बीच में वृष्टि होती रहती है । आज अभी से ही सूर्यकिरण काफी तेजोमय है । गर्मी में श्री म को कष्ट होता है । अल्पक्षण टहल कर फिर दक्षिण की ओर चेयर पर बैठ गए । पुनः बातें ।

श्री म (दृष्टि अन्तर में निबद्ध रखकर)— छत पर टहलते टहलते देखा, कोई (शीतल) घाटी उठाता है, कोई अथवा चेयर पर बैठा है । और फिर कोई खड़ा है । मैंने सबको ही देखा, किन्तु वे कोई

मुझे नहीं देख पाए। यह देखते ही मन में हुआ था, ब्रह्माण्ड के अनन्त काण्ड ही तो इसी प्रकार चलते हैं। हम कितने जन यहां पर बैठे हैं, एक दूसरे को देखते हैं। अन्य कोई हमें देख नहीं पाता। वैसे ही इस विश्व के अनन्त काण्ड ही इस प्रकार चलते हैं। कोई किसी को देख नहीं पाता— सब wall up (दीवार के घेरे में) किया हुआ है। केवल मात्र एक जन सब देखता है।

श्री म क्षणकाल क्या भावना कर रहे हैं? पुनः कथा प्रवाह।

श्री म (विस्मय सहित, भक्तों के प्रति)—एटीन एटी फोर(1884) में नाइन्थ क्लास का एक शिशु छात्र बोला था, सब ईश्वर तो चाहे हैं, किन्तु दिखाई नहीं देते। अब उसकी दाढी मूंछ हो गई हैं। अनेक दिनों से देखा नहीं।

जगबन्धु -मॉर्टन स्कूल की सेवेन्थ क्लास में एक लड़का पढ़ता है— भूधर मल्लिक। वह ईश्वर के संबंध में इसी प्रकार की सब बातें करता है। उसको नित्य नूतन सूट न दिया जाय तो वह आना नहीं चाहता।

और थर्ड क्लास में पढ़ता है महिमारंजन भट्टाचार्य। वह भक्त लड़का है। पंचानन घोष लेन में बाड़ी है। मठ में जाना चाहता है, किन्तु घर के लोग जाने नहीं देते।

श्री म— इन सब छात्रों का मठ के साधुओं के संग आलाप करवा दीजिएगा। और हमारे संग भी आलाप करवा दीजिएगा। संस्कार हैं। अनुकूल सहायता पाने पर real life lead (सत्यकार जीवन यापन) कर सकेंगे। यत देखे तत सीखे, शेष नहीं।

संध्या समागता। भृत्य सीढ़ी के कक्ष में हरिकेन (लान्टेन) रख गया। श्री म सर्वकर्मपरित्याग करके ईश्वर चिन्तन करने के लिए बैठ गए।

भक्तगण भी संग संग ध्यान करते हैं। अब रात्रि के आठ। श्री म ध्यानान्ते गान करते हैं।

गान : निविड़ आंधारे मा तोर चमके ओ रूप राशि।
ताइ योगी ध्यान धरे होय गिरिगुहावासी॥ इत्यादि।

गान : नाहि सूर्य नाहि ज्योति नाहि शशांक सुन्दर हे।

गान के भाव ने श्री म के मन को खींच कर रखा हुआ है। अस्फुट प्रशान्त स्वर में श्री म बातें करते हैं।

श्री म (स्वगत)— वे ही तो सब करते हैं। मनुष्य बोलता है मैं करता हूँ। कहां तुम्हारी कर्तागिरी ?

श्री म (छोटे रमेश के प्रति) — यही देखो हम सर्वदा उनके संग योग में हैं। मां का स्तन पान करते हैं। बोलो, खाते हैं कि ना ? हवा, जल, फूड (आहार) इन सब के द्वारा सर्वदा योग में हैं। सर्वदा ही मां का स्तन पान करते हैं। वे अकातरे सकल को स्तन देती हैं।

श्री म ने मत्त होकर गान पकड़ लिया।

गान : अन्तरे जागिछो गो मा अन्तरयामिनी।
कोले करे आछो मा गो दिवस रजनी ॥
करि मातृस्तन्य पान होबो बलवीर्यवान।
आनन्दे गाहिबो जय ब्रह्म सनातनी ॥

बड़े जितेन, बलाई, भौमिक और पंडित का प्रवेश।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति) — जितेन बाबू, बताइए हम सर्वदा मां का स्तन पान करते हैं कि ना ?

बड़े जितेन—जी हां।

श्री म—ठाकुर किसी किसी से कहते, तुझे और भय नहीं। (तोर आर भय नेइ।) मां ने तुझ को खींच लिया है।

श्री म (सब के प्रति)—डेथ (मृत्यु) माने क्या ? जब सब की सब favourable conditions (अनुकूल व्यवस्था समूह) वे withdraw (हरण) करके ले जाते हैं, उसका ही नाम डेथ। इसमें कुछ जरा सा भी horrible (भंयकर) नहीं है।

बच्चे को असुख। मोहल्ले की स्त्रिएं कहती हैं, देखो देखो, स्तन पीता है कि नहीं। झट मुख में स्तन दिया। ना, पीता नहीं। मुख में ही दूध जमा होकर पड़ा है, भीतर नहीं जा सकता। स्तन पकड़ नहीं सकता।

इसलिए ऋषिगण कहते हैं, हमारी मृत्यु नहीं। हम अजर, अमर अभय और अमृत। (रमेश के प्रति) किस प्रकार कहो, देखें ?

रमेश "आम्‌ता आम्‌ता" करता है, उत्तर ठीक नहीं हो पा रहा।

श्री म (रमेश के प्रति)— मैं तो आत्मा। देह की ही मृत्यु, मेरा क्या ? जैसे पक्का नारियल— जल पृथक् और गोला पृथक्। यह सब ही ऋषियों ने प्रत्यक्ष किया है। वेद में है 'मुंजादिव ईषिका'— मुंजा से, कुश से, छर खींचकर बाहर कर लेता है। वैसे ही शरीर से आत्मा पृथक् देखता है। देखने में किन्तु कुश और सरकंडा जैसे एक अछेद्य वस्तु है। किन्तु वस्तुतः वैसा नहीं है। दोनों पृथक् पृथक् हैं। योगीगण देह अलग, आत्मा अलग देखते हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)— ठाकुर एक एक बार पागलों की भांति नाचते, यह गाना गाकर— 'आमार मन कि बोलो रे, श्यामा मा कि आमार कालो रे ?' (मेरे मन क्या कहते हो रे, श्यामा मां क्या मेरी काली हैं रे ?)

श्री म ने मत्त होकर समग्र गाना ही गाया। किन्तु फिर गाने का एक ही पद बार बार गाते हैं— 'कालो रूपे दिगम्बरी आमार हृदिपद्म करे आलो रे।' श्री म ने स्वामी जी रचित गाना भी इसके पश्चात् गाया— "एकरूप अरूप……देशहीन, कालहीन, सर्वहीन—'नेति नेति' विराम यथाय।" गान शेष हुआ। कुछ क्षण सब नीरव। पुनः श्री म बातें करते हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति) — आहा, वैसा रूप देखने पर पागल हो जाता है। ठाकुर जभी कहते, कभी उन्मादवत्, कभी पिशाचवत्, कभी बालकवत्, कभी जड़वत् हो जाता है—मां का वही रूप देखकर।

जड़वत् क्यों ? इसीलिए ना, सब हो देखता है मां ही करती हैं। तब तो फिर मेरे लिए तो और कुछ भी करने का नहीं, यही सोचकर जड़वत् हो जाता है। सर्वदा आनन्दमय और निश्चिन्त, जभी बालकवत्। वे ही सब होकर रहती हैं, सब ही पवित्र जभी पिशाचवत्। यह रूप देखकर अन्य रूप अच्छा नहीं लगता, जभी उन्मादवत्।

श्री म फिर और गाते हैं।

गान : आन रे भोला जपेर माला, भासि गंगा जले
आमार मन यदि जाय टले।

गान : मायेर कोले बोसे आछि।

श्री म (भक्तों के प्रति)—ठाकुर तब इसी गाने को ही गाते थे जब देखते थे मन मां के अंक में बैठा हुआ है। जभी इतना सदानन्द और निश्चिन्त भाव। मैं तब सोचता था गाना figurative (भावात्मक) है। अब देखता हूं, वह नहीं। सचमुच ही वैसा है, सर्वदा ही हम सब मां के अंक में बैठे हैं।

जैसे ट्रामकार और उसकी ट्राली। ट्राली ज्योंहि पृथक् हुई, ट्रामकार बन्द। वैसे ही मनुष्य भी ईश्वर के संग युक्त है। ये यंत्री और सब यंत्र। यदि question (प्रश्न) करो, तो फिर क्यों हम यह सब कहते हैं? उसका उत्तर है वे करवाते हैं, तभी करते हैं। वह हम अपनी इच्छा से करते हैं? सब उनकी इच्छा। यह हुआ इसका easiest solution (सहज समाधान।)

अमहर्स्ट स्ट्रीट से एक विवाह की शोभा यात्रा (बारात) दक्षिण की ओर जाती है। श्री म क्षणभर नीरव रहे। शोभा यात्रा के मेछुआ बाजार के मोड़ पर पहुंचने पर पुनः बातें होने लगीं।

श्री म (भक्तों के प्रति)— यही एक जीव जा रहा है विवाह करने। वह भी मां की इच्छा। वे ही बद्ध करती हैं और फिर वे ही मुक्त करती हैं। जभी ठाकुर ने भक्तों से कहा था, जिन्होंने विवाह नहीं किया है वे क्यों जाएंगे फिर शोक से बद्ध होने? और जिनका विवाह हो गया है, वे भी अधिक जड़ित नहीं होंगे। दो एक ही सन्तान होने पर भाई बहन की भांति रहेंगे। सब ही मां की इच्छा से चलता है, वे यंत्री।

ठाकुर किसी किसी से कहते, मां पर विश्वास करो। तो फिर तुम्हें और कुछ करना नहीं होगा।

श्री म (एक भक्त के प्रति)— यह विवाह आदि, हद्द चुपचाप एक आधा देख सकते हो। किन्तु वह भी साक्षीस्वरूप होकर। निज कोई भी interest (भोग) नहीं लेना।

श्री म फिर और गाने पर गाना गाने लगे।

गान : सकलइ तोमार इच्छा, इच्छामयी तारा तुमि।
तोमार कर्म तुमि करो मा लोके बोले करि आमि।।
गान : श्यामा मा कि कल करेछे. काली मा कि कल करेछे।
चौद्द पोया कलेर भितरे कत रंग देखातेछे।।
गान : कखनओ कि रंगे थाको मा श्यामा सुधा तरंगिनी।
गान : मजलो आमार मन भ्रमरा श्यामापद नील कमले।
गान : गया गंगा प्रभासादि काशी कांची केवा चाय।

श्री म को बीच बीच में एक आनन्दमय उज्ज्वल भाव होता है, जैसे परदे की अन्तराल से मां को देख रहे हैं। और परदे की इस ओर उसका विचित्र खेल— संसार का यह ताज्जब काण्ड। तभी विस्मित होकर कभी गाने में स्तव करते हैं मां का। और मां का रूप गुण कीर्तन करते हैं भक्तों के निकट। तब जैसे आलो-आंधार के बीच अवस्थान है। एक बार मां का स्वरूप दर्शन और फिर उनकी जगल्लीला दर्शन करते हैं स्तम्भित होकर। आज भी उनका वही दुर्लभ भाव है। रात्रि के साढ़े दस।

मॉर्टन स्कूल की छत। संध्या का ध्यान अभी अभी शेष हुआ है। श्री म चेयर पर ही उत्तरास्य बैठे हैं। भक्तगण सम्मुख बेंचों पर— शुकलाल, मनोरंजन, शांति, बड़े अमूल्य, छोटे जितेन, सुखेन्दु, जगबन्धु प्रभृति। आकाश मेघाच्छन्न।

श्री म ने गाने गाने आरंभ किए। अफुरन्त अविरल गानों का प्रवाह चलने लगा। गंभीर भावावेश में गाते हैं। गतकल ईश्वर के मातृभाव का समस्त गान हुआ था। आज चला गुरुभाव— पितृभाव।

गान : हरि जगत् जवीन जगबन्धु कृपामय करुणार इन्दु।
सुनेछि पुराण कथ पुनर्जन्म नाहि होय हेरिले तब मुख इन्दु।। इत्यादि।

गान : (सुरसंयोगे) अन्तर्बहिर्यदि हरिस्तपसा ततः किम् ।
नान्तर्बहिर्यदि हरिस्तपसा ततः किम् ।। इत्यादि ।

गान : दयाल गुरु नामे सुखे भासरे मन आमार ।
गुरु नामेर मंत्र लिए गुरु नाम साधन करे
दयाल गुरु नामे भवसागरे देओरे साँतार ।।
तरंग गर्जन शंका पेयो ना, कलुष कुम्भीर पाने
फिरेओ चेयो ना, भय कि रे महामंत्र भूल ना ।
(किछुतेइ भूलो ना ।)
यदि पडोरे आवर्त जले उध्र्वे दुइ बाहु तुले,
बोलो कोथाय रइले गुरु भवेर काण्डारी ।।

गान : चल गुरु दुजन जाई पारे । आमार एकला जेते भय करे ।।
ए देह छिलो श्मशानेर समान ।
गुरु एसे मंत्र दिये करलो फूल बागान ।
ओ तार सौरभेते आकुल करे । मुनि ऋषिर मन हरे ।

गान : पतित पावन दयाल हरि ।
बोसिया विरले एकान्त विरले विचित्र जगत् प्रकाशिले ।।
गुरु होय ज्ञान उपदेश दिले भवार्णव होइले काण्डारी ।
अशेष गुण मानव सन्ताने कत भालोवासा, आहा मरि मरि ।

गान : हरि हरि बोल निताई जाय आर गौर जाय ।
मधुर हरि नाम बोले जाय रे ।
जे नाम नारद जये दिवानिशि
(आय सेइ हरि नाम दिबो तोरे) ।।
जे नाम शिवजपे मंच मुखे
(आय सेइ हरि नाम दिबो तोरे) ।।
(मधुर हरि नाम बोले जाय रे) ।।

गान : सुरधुनी तीरे हरि बोले के जाय रे ।
बूझि प्रेमदाता निताई एसे छे रे ।

गान : आमार गौर नाचे ।

नाचे संकीर्तन माझे श्रीवास अंगने भक्तसंगे आमार गौर नाचे ।
हरि बोल हरि बोल चाय गदाधर पाने इत्यादि ।। इत्यादि ।

गान समाप्त हो गया । श्री म आसन से उठ गए। उत्तर के ओर की छत पर जाकर एकाकी विचरण करने लगे । भक्तगण भी पीछे कोई कोई उठ गए ।

आकाश गंभीर मेघाच्छन्न, स्तब्धभाव धारण किया है । श्री म चलते हैं और बातें करते हैं— ठाकुर यही गान ही नाचते नाचते गाया करते । श्री म भी अर्धनृत्य में गाते हैं— 'जय काली जय काली बोले' —(भला मन्दा दो ही बातें हैं । भला पकड़े रहो ।)

प्रबल झड़ आंधी चढ़ी है । श्री म और भक्तों ने सीढ़ी के कक्ष में प्रवेश किया । बड़े जितेन, छोटे रमेश, बलाई, सूर्य प्रभृति भी इसी बीच आ गए ।

अल्प काल पश्चात् "कथामृत" पाठ चलने लगा । ठाकुर का हाथ भग्न हुआ है । शिवपुर के भक्तों के संग इसी अवस्था में बातें करते हैं ।

श्री म (एकजन भक्त के प्रति) — चक्र समूह के क्या नाम पढ़े गए हैं ?

भक्त—मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा, सहस्रार ।

श्री म — अनाहत चक्र से ही साधक-जीवन आरंभ होता है । साधारण मनुष्य का मन मूलाधार, स्वाधिष्ठान और मणिपुर में रहता है । अर्थात् लिंग, गुह्य, नाभि में रहता है । ये तीनों ही हीनस्थान । इन तीनों के ऊपर है अनाहत चक्र । यही उत्तम स्थान । यहां पर मन चढ़ने से ईश्वरीय विषय प्रिय लगता है । विचार करके यह सब क्या समझेगा मनुष्य ? और फिर शरीर डाइसेक्शन करके कुछ भी देख पाएगा नहीं । योगियों की दृष्टि में ही केवल यह सब दिखाई देता है, मन के विशुद्ध चक्र में आरोहण कर लेने पर केवल ईश्वरीय कथा कहना और सुनना प्रिय लगता है दिन रात । इसके ऊपर है आज्ञा चक्र । यहां पर ईश्वर दर्शन होता है । किन्तु उसके संग में मिलकर एक

नहीं हो सकता तब भी। सहस्रार में जाने पर एक हो जाता है। 'देशहीन कालहीन नेति नेति विराम जथाय।'

कैसे आश्चर्य पुरुष ठाकुर! सहस्रार यह नाम उच्चारण करते करते एकदम समाधि। कैसे महायोगी! अपर योगियों को सारे जीवन में संभवतः बहुकष्टों से एक बार यह समाधि होती है। और इनकी बात बात में समाधि! जैसे सूखी दियासलाई—अल्प सी रगड़ पड़ने से ही फस् करके जल उठती है। एकतला से एकदम साततला पर चढ़ जाता है। कौन हैं ये, जिनकी मुहुर्मुहु यह दुर्लभ समाधि।

(सहास्य) एक एक बार भक्तों से जिज्ञासा करते। कहते, 'मेरी यह कैसी अवस्था हुई है, बताओ? कुछ सुनने से वा बोलने से बेहोश हो जाता हूँ।' क्यों कहते? भक्तगण उन्हें पहचान पा रहे हैं कि ना, वही देखते। जब तक भक्तगण उनको पूर्णरूप से ईश्वर कह कर नहीं समझ पाते हैं तब तक चिन्तित हैं। ज्योंहि अन्य लोगों के संग तुलना करके देखते कि भक्तगण समझ सक रहे हैं कि ये साधारण मनुष्य नहीं हैं, साधारण योगी नहीं हैं, तब ही निश्चिन्त होते हैं। कैसा परिश्रम भक्तों को तैयार करने के लिए। क्यों यह सब परिश्रम? कारण, संसार के नाना घात-प्रतिघातों से मनुष्य का मन छिन्न विच्छिन्न हो जाता है। केवल मात्र वही मन स्थिर रहता है जिस मन का आश्रय हैं भगवान स्वयं। ठाकुर ही भगवान। उनमें आश्रय लेने पर भक्तों का मन फिर कभी भी विभ्रान्त होगा नहीं। तभी तो जगत् के लोगों के विच्छिन्न मनों को लाकर उनके संग बांध देंगे। तभी तो जगत् का कल्याण और उन व्यक्तियों का भी कल्याण। जभी तो भक्त तैयार करते इतना परिश्रम करके! ये भक्तगण ही जगत् के लोगों के शिक्षक होंगे कि ना, जभी इतना काज उनका।

उनको जो जितना समझेगा उतना ही ऊपर उठेगा। (सहास्य) ठाकुर का यह सब कार्य पक्षियों का बच्चों को सिखाने के कार्य जैसा है। बच्चे किस प्रकार आत्मरक्षा करेंगे, किस प्रकार आहार संग्रह करेंगे, किस प्रकार युद्ध करेंगे सब सिखाते हैं।

भक्त नोा संसार में किस प्रकार रहेंगे उसका भी दिग्दर्शन देते हैं। कहते हैं ठीक ठीक संसार में निर्लिप्त रहोगे। सब करोगे जब जो प्रयोजनीय, किन्तु व्यर्थ अन्य लोगों को भांति इतनी चिन्ता नहीं करो। क्यों चिन्ता नहीं करेगा ? क्योंकि, मां जानती हैं सब। और मां सब मंगल करती हैं। तुम्हारा अहंकार है तो कुछ चेष्टा करो। जब फिर चेष्टा भी नहीं चलती, शरीर मन में शक्ति नहीं, अर्थवित्त लोकजन नहीं, तब उनके ऊपर निर्भर करके बैठे रहो। अब वे सब करेंगी मां। वे मंगलमयी कि ना, बस।

इसीलिए तो हकारत से कहा, 'औगुनो एतो भेबो ना।' 'ओगुनो' अर्थात् जिसको 'these things' (ये वस्तुएं) क्राइस्ट ने कहा है। अर्थात् रुपया पैसा, देह सुख— Physical sense of security. आदर्श भी रख दिया सामने— 'यदृच्छालाभ'। रुपया पैसा आता है और खरच हो जाता है। संचय नहीं, उधार नहीं। एक ही कितनी बड़ी problem solve (समस्या समाधान) कर दी है।

यह solution (व्यवस्था) क्या सब लेंगे ? वे ही लेते हैं जो भगवान लाभ करना चाहते हैं, उनके लिए हैं यह व्यवस्था।

'कथामृत' पाठ चलता है। श्री म नीरव ध्यानस्थ हुए सुनते हैं। कितने ही क्षण उपरान्त पुनः कथा।

श्री म (पाठक के प्रति)— भक्ति लाभ के steps (पैड़ियां) क्या हैं, ठाकुर ने जो बतलाए हैं। (पाठक के न बता सकने पर एक भक्त के प्रति) क्या हैं जी ?

भक्त – एक, सत्संग; दो, सत्संग से ईश्वरीय कथा में श्रद्धा; तीन, ईश्वर में निष्ठा; चार सेवा, पांच, भक्ति; छः, भक्ति पकने पर भाव; सात, महाभाव; आठ, प्रेम; नौ, वस्तुलाभ। नौ पैड़ियां— धाप।

श्री म— ठाकुर कहते, जीव का भाव पर्यन्त होता है। किन्तु ईश्वर कोटि जैसे चैतन्य देव, ठाकुर, इनका महाभाव, प्रेम। इन सब का मूल साधुसंग। जभी साधुसंग करना आवश्यक है। (भक्तों के प्रति) यही आप लोग सब जो कर रहे है, नित्य मठ में जाते हैं।

और फिर देखिए कैसा आयोजन ! ठाकुर ने क्या केवल साधुसग की बात कही ही है ? साधु तैयार भी कर गए हैं वे — जिससे दूसरों का कल्याण हो। इतनी चिन्ता है उन्हें भक्तों के लिए, जगत् के लिए। ये साधु मानो समाज-शरीर का सिर हैं। ये समाज-शरीर को चलाते हैं। सिर जैसे शरीर का श्रेष्ठ अंग है, वैसे ही साधु समाज-शरीर का श्रेष्ठ अंग हैं। ये लोग अपने जीवन देकर समाज को शिक्षा देते हैं— ईश्वर में मन रखकर और सब कुछ करो।

जो लोग साधुसंग करते हैं समझना होगा उनकी पूर्वजन्म की तपस्या थी। तभी तो साधु का मूल्य समझ सकते हैं। साधु अर्थात् जो दिवानिशि केवल एक ईश्वर को ही लेकर रहने की केष्टा करते हैं। जैसे एक वकील मुकद्दमा लिए रहता है, डाक्टर रोगी लेकर रहता है, वैसे ही साधु ईश्वर को लेकर रहता है।

जभी साधुसंग पकड़कर रहने से बाकी सब अपने आप आएंगे। जैसे बछड़े को पकड़ कर रखने पर गाय आ जाती है। साधु को पकड़कर रहने से ईश्वर लाभ होता है।

रात्रि बहुत हो गई है। श्री म का रात्रि का आहार अभी भी नहीं आ रहा। तीन तले पर परिवार वर्ग रहता है। अन्तेवासी इसके बीच तीन बार नीचे जाकर डांट देकर कहकर आ चुके हैं। तथापि आहार आया रात्रि पौने ग्यारह बजे। अन्तेवासी श्री म को खिला रहे हैं। ये विरक्त हुए हैं घर के लोगों के ऊपर। श्री म उनको शांत करते हैं। बोले, फिर क्या हुआ ? अल्प देरी ही तो हुई है। ना मुझे कोई कष्ट ही हुआ।

एक भक्त (स्वागत) — अद्भुत व्यक्ति श्री म। निज घर में जैसे अतिथिवत् रहते हैं। अथवा बड़े घर की दासीवत्। किंवा सर्वत्यागी साधुवत् —जगदम्बा भिक्षा देंगी, तब ही आहार करेंगे।

अभी अभी कथामृत पाठ हुआ है। ज्ञानी भक्त संसार में निर्लिप्त होकर रहते हैं। कथामृतकार श्री म के निजी जीवन में ही देख रहा हूं कथामृत कथित आदर्श, 'निर्लिप्त संसारी' का उज्ज्वल दृष्टान्त।

रात्रि साढे ग्यारह। आहारान्ते श्री म सीढी के घर में बैठे हैं। पास अन्तेवासी। श्री म नीरव। कुछ क्षण परे निजे निजे करूण भाव से प्रार्थना करते हैं—"देह सुख चाइ ना मां, लोकमान्य नहीं चाहता मां। अष्टसिद्धि नहीं चाहता मां। शत सिद्ध चाइ ना मां। तोमार पादपद्मे शुद्धा भक्ति दाओ। आर तोमार भुवनमोहिनी मायाय मुग्ध करो ना।'

लगता है अन्तेवासी को शिक्षा-जन्य ही प्रार्थना !

मॉर्टन स्कूल, कलकत्ता; 2 मई, 1924 ई०।
19 वां वैशाख, 1331 (बं०) साल।
शुक्रवार, कृष्णाचतुर्दशी, 51 दण्ड 44 पल।

—o—

द्वादश अध्याय

मन के विनाश पर ब्रह्मज्ञान

(1)

मॉर्टन स्कूल की छत। संध्या का ध्यान हो गया है। श्री म चेयर पर बैठे हैं उत्तरास्य। श्री म के सम्मुख तीनों दिक् बैंचों पर भक्तगण बैठे हैं—बड़े जितेन, छोटे नलिनी, फाकर, धर्मपद, विनय, बलाई, मोटा सुधीर, मनोरंजन, छोटे रमेश, गदाधर, जगबन्धु प्रभृति। अब रात्रि के आठ।

आज शुक्रवार, 26वां वैशाख, शुक्ला पंचमी, 19 दण्ड 5 पल 1331 (बं०) साल।

श्री म ने कथामृत पाठ करने के लिए कहा। निज ही बाहर कर दिया, तृतीय भाग, पंचदश खण्ड—बलराम मन्दिरे श्री रामकृष्ण। उस दिन थी मई मास को नौ तारीख, आज भी 9 मई; जभी जैसे वात्सरिक स्मृति उत्सव। जगबन्धु पढ़ते हैं।

पाठक पढ़ते हैं, श्री रामकृष्ण बोले थे, 'कि जानो, जरा भी कामना रहने से भगवान को पाया जाता नहीं। धर्म की सूक्ष्म गति।...

श्री म (भक्तों के प्रति)—देखिए, ठाकुर बोल रहे हैं वासना त्याग हुए बिना भगवान लाभ होता नहीं।

तो भी होता है यदि उनकी कृपा, उनकी दया हो, तब तो इसी क्षण सिद्धिलाभ हो सकती है।

कृपा कैसे होती है ? उसके लिए कोई भी condition (शर्त) नहीं। उनकी इच्छा होने से ही उनकी कृपा होती है।

ठाकुर बतलाते, ईश्वर का बालक स्वभाव है। अंटी (गांठ) में

रत्न हैं। मांगो, वह नहीं देगा। एक ने मांगा नहीं। वह पास से जा रहा है। उसको तो बालक बुलाकर चाहे सब दे देगा।

उपाय क्या, वह भी बता दिया है— विद्यामाया का आश्रय करके पड़े रहना। साधुसंग, तीर्थ, साधुभक्त की सेवा, ईश्वर की सेवा, दया, ज्ञान, भक्ति, विवेक, वैराग्य, ये सब लिए पड़े रहना चाहिए।

बोल रहे हैं, इसके उपरान्त और एक धाप (सीढ़ी) चढ़ने पर ही ईश्वर दर्शन, ब्रह्मज्ञान। ब्रह्मज्ञान के उपरान्त देखा जाता है ईश्वर ही सब होकर रह रहे हैं। नित्य के पश्चात् लीला। दो वेश्याएं एक रास्ते पर खड़ी थीं। देखते ही ठाकुर ने हाथ जोड़ कर प्रणाम किया। क्यों? वे साक्षात् भगवती जो देखते हैं उन्हें। आहा, यह दृष्टि किस की है— कितनों की होती है?

मन का नाश होने पर ब्रह्मज्ञान होता है। मन का नाश होता है कब? जब वासना जाती है। जब सोलह आना मन ईश्वरमय हो जाता है तब वासना जाती है। इसको ही कहते हैं मन का नाश, इसका ही नाम ज्ञान। अब मन में है मेरा घर, मेरा लड़का— सब में मेरा मेरा। ज्ञान होने पर देखता है, ईश्वर का घर, ईश्वर का लड़का— सब ईश्वर का, सब ही ईश्वर। इसको ही चित्तशुद्धि कहते हैं। मन का नाश, चित्तशुद्धि और ज्ञान एक ही बात।

ठाकुर कहते, आन्तरिक जो ईश्वर को जानना चाहेगा उसका ही होगा – 'होबे-इ-होबे।' (होगा ही होगा।) जो व्याकुल है, और ईश्वर बिना कुछ जानता नहीं, उसका ही होगा।

कौन इस प्रकार प्रतिज्ञा करके कह सकता है, ईश्वर को छोड़?— 'होबे-इ-होबे।'

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)— नरेन्द्र को प्यार करते हैं, तभी उनकी बात पर ठाकुर विश्वास करते हैं। ईश्वरीय दर्शनादि मन की भूल है—नरेन्द्र ने ज्योंहि यह बात कही, त्योंहि ठाकुर को संशय आ पड़ा और रो-रो कर जगदम्बा से कही यही बात। मां ने दिखा दिए सब चैतन्यमय ये सब रूप—चैतन्य, अखण्ड चैतन्य।

उह, नरेन्द्र को कितना प्यार करते हैं!

एक जन भक्त— ईश्वर भी जब अवतार रूप में अविद्यामाया से बद्ध होते हैं— 'पंचभूतेर फांदे ब्रह्म पड़े कांदे।' (पंचभूत के बन्धन ब्रह्म करे क्रन्दन।) तो फिर जीव के संग उनका अन्तर कहां ?

श्री म— अवतार मन में चाहने से ही मुक्त होते हैं, जीव का वह होता नहीं।

भक्त— साधारण जीव सिद्ध होने के पश्चात् भी क्या अविद्या में में पड़ सकता है ?

श्री म— पड़ सकता है। तो भी उसका फिर जन्म नहीं। भीतर ज्ञान रहता है प्रारब्ध का भोग होता है केवल। ठाकुर जभी कहते, बाप लड़के का हाथ पकड़ ले, फिर बेताला पड़ता नहीं। अवतारादि का हाथ पकड़े रहते हैं ईश्वर। एक मत है, प्रबल प्रारब्ध के लिए जन्म होता है।

उनकी कृपा से हठात् सिद्ध जो हो जाता है वह, जैसे गरीब का लड़का हठत् एक बड़े आदमी की नजर में पड़ गया। तदुपरान्त उसकी कन्या से विवाह करके बड़ा हो गया। अथवा हजार वर्षों का अन्धेरा घर जैसे आलोकित हो जाता है सर्चलाइट पड़ने पर, एक मुहूर्त में, वैसे ही।

श्री म क्या भाव रहे हैं ?

श्री म (स्वगत)— ईश्वर की विचित्र लीला, कौन बूझेगा ! इतने लोग ठाकुर के पास आए, कोई बीस वर्ष, कोई पच्चीस वर्ष। किन्तु कोई उनको पहचान न पाया अवतार कहकर। परन्तु अन्तरंगों के निकट पकड़वा दिया।

श्री म (भक्तों के प्रति)— कौन जानता था जो शरीर त्याग का का इंगित कर रहे हैं। यही जो पढ़ा गया है, ठाकुर बोलते हैं, 'यहां वाले जो लोग वे सब मिल गए हैं।' अर्थात् अन्तरंगगण सब आ गए हैं।

यह बात बोले मई मास में। इसके छः मास परे ही असुख का सूत्रपात हुआ। इसके दस मास परे शरीर गया। उन्होंने इंगित किया था लीला संवरण का। किन्तु भक्तगण पकड़ नहीं पाए।

बोले, इसके पश्चात् भी लोग आएंगे। वे बाहर के। उनसे मां बोल देंगी, यह करो— इस प्रकार से ईश्वर को पुकारो।

इसका अर्थ— इनका भी काज हो जाएगा उनके दर्शन से। किन्तु अन्तरंगों का डबल काज— निज का कल्याण और जगत् का कल्याण, दोनों ही करने होंगे।

पाठ शेष हुआ। श्री म ने भोजन करने निज कक्ष में प्रवेश किया। भक्तगण सब छत पर बैठे हैं। इस समय बोले, "जगबन्धु बाबू, हारमोनियम लाना होगा।" हारमोनियम आने पर एक नूतन भक्त गाना गाने लगे।

श्री म ने भोजन करके छत पर प्रत्यावर्तन किया। बोले, जगबन्धु नहीं यहां? "जी हां", कहकर जगबन्धु के निकट जाने पर बोले, यह बेल सब को ही देनी होगी— 'बेलतला' की बेल।

श्री म और जगबन्धु दोनों ने गृह में प्रवेश किया। श्री म बोले, "यह (कलई की हुई) डिश लें और यह छुरी। सब धोकर लेनी होगी। बीज यथासंभव बचाकर सबको देनी होगी।"

जगबन्धु छत पर टीन के दरवाजे के सम्मुख बैठकर बेल भाग कर रहे हैं और विचार कर रहे हैं, यह सामान्य सी एक बेल। इसे परिवेशन करते हैं भक्तों को—मानो अमूल्य रत्न। क्यों इतनी श्रद्धा इसके ऊपर? दक्षिणेश्वर के बेलतला की है, क्या तभी? श्री म का भाव देखकर मन में हो रहा है, जैसे ठाकुर का साक्षात् कृपारूप महाप्रसाद बेलरूप में वितरण किया जा रहा है।

श्री म छत पर मादुर के ऊपर आकर बैठ गए भक्तों के संग दक्षिणास्य। कथावार्ता चलती है।

एक जन भक्त (श्री म के प्रति)— विवाह का अन्न, श्राद्ध का अन्न खाना क्यों मना करते थे ठाकुर?

श्री म— विवाह में मना करते इसलिए, कि इसमें योगदान करने से फिर संसार का उद्दीपन होगा। और श्राद्ध में क्यों खाते नहीं? उसके दो कारण हैं। प्रथम करण है, 'मेरा मेरा' करना अज्ञान है। उस से ही शोक होता है इस अज्ञान शोक का अन्न खाने से अज्ञान वृद्धि होती है। वह अन्न खा सकता है यथार्थ ब्राह्मण–उसके पेट में वैश्वानर अग्नि जाग्रत होती है ना, तभी हजम हो जाता है। और द्वितीय कारण यह

कि इतना शोक और इधर पन्द्रह दिन जाते न जाते ही भोजन उत्सव। कैसी निष्ठुरता ! आह, अथवा कैसा शोक ! सिर मुंडा कर कुटुम्बियों को खिलाता है और फिर निज भी खाता है। शोक मानो समाता नहीं।

अनेकों का नियम होता है, घर में श्राद्ध होने पर मुड़ि मुड़कि (चने मुरमुरे) भिगोकर खाते हैं। वे ऐसे शोक का आहार कुछ भी नहीं खाएंगे।

श्राद्ध का संकल्प अपने शरीर के नाम पर करने से मुसीबत में पड़ना पड़ता है। सब भगवान के नाम पर समर्पण करके देना चाहिए। सत् ब्राह्मण के खाने से मृत का पारलौकिक फल अच्छा होता है।

भक्त— संन्यासीगण भी यही मृतोत्सव करते हैं तेरहवें दिन ?

श्री म— संन्यासी आनन्दोत्सव करते हैं, ब्रह्मोत्सव। मृत व्यक्ति की निर्वाण मुक्ति होने पर वे लोग आनन्द करते हैं। वह शोकमोहमय संसार त्याग करके ब्रह्म में लीन हो गए हैं जभी यह आनन्द। संन्यासियों का जीवितावस्था में भी आनन्द, मृत्यु में भी आनन्द। उन्होंने शोकमोहमय संसाराश्रम त्याग करके परमानन्द में आश्रय लिया है। मृत्यु के समय वे आनन्द से हंसते हंसते जाते हैं। जभी दूसरे साधुगण भी आनन्दोत्सव करते हैं। सब भगवान में निवेदन करके प्रसाद पाते हैं। हमारे शशीमहाराज (स्वामी रामकृष्णानन्द) ने मृत्यु के पूर्व आनन्द में गाना गया था— "पोहालो दुःखरजनी" (दुःख की रात्रि समाप्त हुई) यह कहकर। यह प्रथम पद उन्होंने गाया था। बाकी पद-योजना की थी गिरीश बाबू ने। फिर सारा ही गिरीश बाबू ने निज गाकर सुनाया था शशी महाराज को। उन्हें सब आनन्द, जीवन-मरण सब कुछ।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)— संसारियों की कैसी दशा है देखिए। कितने incosistencies (विरुद्ध आचरण) हैं। मां की स्नेह ममता कितनी। कितना कोमल उनका प्राण ! किन्तु कहां, "मागुरमाछ" को कैसे पीट पीट कर मारती है देखिए। क्यों, क्योंकि पुत्र अस्वस्थ है, उसको पथ्य देना होगा। इधर स्नेह उधर निष्ठुरता। पुत्र का रोग। मां बड़ी व्याकुल। एक ज्योतिषी ने आकर कहा, नरबली देने से पुत्र चंगा

हो जाएगा। मुहल्ले का लड़का मित्र को देखने आया। झट उसको पकड़ कर बलि दे दी मां ने। आह, कैसी कोमलता, अथवा कैसा स्नेह ! ऐसे ही beautiful incosistencies (सुन्दर विशुद्ध आचरण) हैं संसार में।

श्री म ब्राह्म समाज के लोग और अब भी पोलिटिशियन्ज कहते हैं— all men are equal (सकल मनुष्य समान) हैं। ठाकुर सुनकर बोले, अहा, equal (समान) तो कितने ! समाते नहीं, जरा भी। एक साधु गृह में आया, चार पैसे वा आठ पैसे का "खाबार" (खाने को) आया। और जमाई बाबू के आने पर शहर की जितनी भी दुष्प्राप्य वस्तुएं मंगवाई जाएं थीं। कहां का "खोइचुड़", कृष्णनगर का 'कांचागोल्ला' और बागबाजार का क्या ?

बड़े जितेन बोले, "रसगोल्ला"। श्री म भी संगे संगे सहास्ये बोले, "रसगोल्ला"।

श्री म (सब के प्रति)— एक गुरु को ग्रन्थ बांधने के लिए एक टुकड़ा कपड़े का प्रयोजन हुआ था। गुरुपत्नी ने शिष्य से कहा। उसकी दुकान है। शिष्य बोला, "हां मां, भेज दूंगा। टुकरा पड़े।" छः मास हो गए और टुकड़ा पड़ता नहीं, टुकरा पड़ेगा (बचेगा) तो गुरु का ग्रन्थ बन्धेगा (सब का हास्य)।

एक व्यक्ति मच्छली पकड़ता है। गुरु के पास अतिथि आया। मछली देनी होगी, एक ने जाकर खबर दी। बहुत "माछ" पकड़ता है —रांगाचोख बड़ी रूइ माछ (लाल लाल आंखों वाली बड़ी बड़ी रोहू मछली) बीस पच्चीस सेर वजन। उस व्यक्ति ने कहा, दे दो ना, ये तो बहुत सी मछलियां हैं। शिष्य बोला, ये सब बड़ी बड़ी मछलिया हैं। ठहरो, कोई "काटिबाटा" (छोटी) आए (सब का हास्य)। हां, गुरु के घर के लिए वैसी तक ही, इससे अधिक नहीं।

ये सब beautiful inconsistencies (सुन्दर असमंजस व्यवहार) भक्ति के। ठाकुर ने ये सब देखकर ही सावधान कर दिया था। गुरु

करना कोई छोटी सी बात नहीं है। जिसका गुरु लाभ हुआ है उसको और भय नहीं, कहा था। गुरुवाक्य पर विश्वास एकमात्र उपाय ईश्वर लाभ का। गुरुवाक्य कैसा ? जैसे अनन्त समुद्र में भेला (life boat जीवन तरी)। यह बात कौन लेगा ? जिसका आश्रय हुआ है विद्यामाया। जो हैं ईश्वर के लिए व्याकुल। अन्य लोग अविद्यामाया में पड़े हैं। तब वैसा ही होगा— छः मास पश्चात् एक टुकड़ा कपड़ा देगा गुरु को।

लोग कहते हैं वे बड़े दयाल हैं। बाजार से कुली लेकर आए हैं। एक मन वजन का बोझ सिर पर— धूप में पसीने से अस्थिर। तीन पैसे ही निकाल कर दिए बाबू ने। और एक पैसे के लिए कितनी विनति। बाबू का प्राण गलेगा नहीं। उसका honest labour (सत् परिश्रम)। उसका एक भी पैसा देगा नहीं, उसका प्राप्य। इधर कहा जाता है, बाबू दयावान। आहा, कितनी दया, एकदम उछल पड़ रही है।

और एक देखिए ना— घर में लड़के बच्चे को असुख हो जाय तो राज्य भर के जितने सब बड़े बड़े डाक्टर लाएगा। और नौकरों को असुख होने पर मुड़कर पूछेगा भी नहीं, क्या हुआ है। ये सब हैं beautiful inconsistencies (सुन्दर असमंजस व्यवहार)। ठाकुर कहते, माया के काण्ड में अल्प ऐलो मेलो रहेगा ही।

श्री म (भक्तों के प्रति)— नारद गए रामचन्द्र के दर्शन करने को। देखते ही सीताराम ने सिंहासन से उतर कर नारद को साष्टांग प्रणाम किया। तत्पश्चात् हाथ जोड़कर बोले, ...प्रभो, हम विषय में डूबे हुए हैं, आप लोगों का शुभागमन हो तभी हमारा चैतन्य होता है। आप लोगों का आगमन हमारे जैसे संसारियों के कल्याण के लिए है।" राम humanity (मनुष्यसमाज) के प्रतिनिधि के रूप में यह prayer (प्रार्थना) करते हैं। राजा जनता का representative (प्रतिनिधि) कि ना! जभी सब के पक्ष से स्वागत करते हैं।

संसार में कपटता है ही, रहेगी ही।

पुरी में राजा प्रतापरुद्र ने चैतन्य देव के दर्शन करना चाहा। सार्वभौम, राय रामानन्द प्रभृति भक्त थे कि ना, जभी उन्होंने चैतन्य देव से अनुरोध किया। सुनते ही चैतन्य देव एकदम खड़े हो गए और बोले,

"तो फिर मैं चला अलालनाथ को। मैंने क्या इसीलिए संसार त्याग किया है ?" क्यों किया ऐसा अभिनय ? राजा विषयीश्रेष्ठ, जभी मिलेंगे नहीं। पीछे दर्शन हुआ जब राजभाव छोड़ दीन भाव से रथ के आगे झाड़ू दे रहे हैं प्रतापरुद्र। और मुख से गोपीगीता आवृत्ति कर रहे हैं— "तव कथामृतं तप्तजीवनम्।" तब भाव में आविष्ट हुए दौड़ते हुए जाकर प्रतापरुद्र को आलिंगन करते है।

(सहास्य) एकदम खड़े रह गए सब कुछ लिए चैतन्य देव। वे जो सच्चे संन्यासी, तभी उनका "सब कुछ" (तल्पी-तल्पा) केवलमात्र कौपीन। अन्य संन्यासियों का "तल्पी-तल्पा" बहुत—बक्स, पिटारा कितना क्या क्या !

राम अवतार में गृहस्थ सजकर आए हैं—और फिर राजा। जभी वैसा व्यवहार नारद के संग। चैतन्य अवतार में संन्यासी होकर आए हैं। संन्यासी जगत् गुरु। जभी वैसा व्यवहार।

ये सब ही लोक शिक्षा जन्य। उनका क्या फिर किसी के ऊपर घृणा व विद्वेष है ? वैसा नहीं। राजा को शिक्षा देने पर अन्य जन भी सीखेंगे। जभी चैतन्य देव ने इतना कठोर रूप धारण किया।

जब तक अंहकार था कि "मैं राजा" हूँ, तब तक दर्शन नहीं दिया। ज्योंहि भगवान के निकट दीन हुए त्योंहि दर्शन दिये—राजा ने एकदम आलिंगन लाभ किया।

श्री म (बड़े जितेन को लक्ष्य करके, भक्तों के प्रति) — कोई कोई सोचता है मेरे निकल जाने पर लड़के बच्चे खाएंगे क्या ? सब मर जाएंगे। किन्तु कैसा अज्ञान ! यह बात नहीं सोचते, आज यदि मैं मर जाऊं तो फिर बच्चे भी मर जाएंगे क्या ? यदि बोलो, हां, दो तीन मर जाएंगे। तो पहले ही चाहे दो मर गए।

देखो क्या ही beautiful inconsistency (सुन्दर विरुद्ध आचरण।)

छिपाकर रखने से तो बच्चों का अमंगल होता है। अपने पांव पर खड़े होने की शिक्षा देनी चाहिये।

बहुत पहले की बात है। हमारे घर किसी एक को उसकी नानी लेकर आई थी। मां बाप कोई नहीं था। गले में शोकचिन्ह था, श्राद्ध करना था। बहुदिन फिर उसकी खोज (खबर) नहीं मिली। Lost sight of (आंख से ओझल) हो गया था। अब सुना है उसका आठ सौ रु० महीना है, रेलवे में नौकरी करता है। लड़कों बच्चों ने बी. ए., एम. ए. पास कर लिया है। किन्तु पूर्व वाली चाल ठीक वैसी ही रखी हुई है। निज जानता है कि ना संसार का रूप। इसने अपनी energy (शक्ति) के ऊपर अपने को खड़ा किया है। अब कितने गाड़ी-घोड़े।

बाप को उचित है लड़कों को छोड़ दे। छोड़ देने पर वे निज पथ निज ही बना लेंगे। इससे निज पांव पर खड़े होंगे और बाप को भी बन्धनमुक्त करेंगे।

ये सब महामाया का खेल है। देख समझ कर भी पालन नहीं कर पाता। उनकी कृपा होने पर दो-एक जन ठीक ठीक पथ पर चल सकते हैं।

(2)

मॉर्टन स्कूल। अपराह्ण दो बजे हैं। स्वामी विवेकान्द के कनिष्ठ भ्राता महिम बाबू (श्री महेन्द्रनाथ दत्त) श्री म के दर्शन करने आए हैं। अन्तेवासी ने उनको दोतला की सीढ़ी के पास की बैठक मे बिठाया। गदाधर भी आए हैं।

आज 10 मई, 1924 ई०, 27वां वैशाख, 1331 (बं) साल, शनिवार, शुक्ला षष्ठी, 21 दण्ड 53 पल।

श्री म चारतल के अपने कक्ष से नीचे उतरते हैं। अब अढ़ाई बजे हैं। महिम बाबू ने उठकर प्रणाम किया। श्री म ने उन्हें पकड़कर अति आत्मीय की भांति बैठने के लिए कहा। आनन्द से देह पर हाथ फेर रहे हैं। श्री म के चक्षु में आनन्द की छटा। बार बार पूछते हैं, "कैसे हो—आए कब ? खूब आनन्द में थे—सुना है। वैसा क्यों नहीं होगा, उत्तराखण्ड, गंगा, महातीर्थ और फिर-साधुसंग में वास। ऐसा संयोग कपाल में हो तो होता है।"

श्री महिम बाबू—कनखल में था—सेवाश्रम में। कल्याण स्वामी और निश्चय स्वामी इन्होंने छोड़ा ही नहीं। फिर आश्रम के साधु, ब्रह्मचारी पढ़ना चाहते थे। कितनी सेवा की है। तीन मास के लिए गया था, चौदह मास हो गए तब भी छोड़ना चाहते नहीं।

श्री म—वह होगा ही। तुम्हारे मुख से स्वामी जी की कितनी बातें सुनते हैं। वे लोग खूब भाग्यवान हैं। मिलता ही कहां है ऐसा जन ? जभी छोड़ना नहीं चाहते हैं। बाप, मां, घर-द्वार सब छोड़कर आए हैं ईश्वर लाभ के लिए – किस प्रकार व्याकुल हैं सब !

पूर्व पश्चिम लम्बमान कक्ष में तीन बैंच हैं—हाई बैंच समेत। उत्तरदिक् के बैंच पर श्री म बैठे हैं दक्षिणास्य घर के मध्यस्थल पर। और एक पर बैठे हैं महिमबाबू उत्तरास्य, श्री म के सम्मुख।

महिबाबू हरिद्वार, कनखल, लछमन भूला, स्वर्गाश्रम, ऋषिकेश आदि तपोभूमि और महात्माओं की बातें बतलाते हैं। मथुरादास की बातें खूब उत्साह से बताते हैं— बालक की न्याईं स्वभाव, खूब कठौरी एक गुहा में रहते हैं। अमेरिका की फॉक्स सिस्टरज् दोनों ही कनखल सेवाश्रम में थीं।

अन्तेवासी महिमबाबू की पसन्द अनुसार कुछ जलयोग लाए। दो पैसे का चिनाबादाम (मूंगफली) लाए प्रथम। महिमबाबू खाते हैं और बातें करते हैं। तत्पश्चात् आई दो पैसे की मुड़ि तेल लगी हुई। उस पर गोटा (बारीक कटी हुई कच्ची मिर्च) और अदरक। सर्वशेष आए कितने ही गरम सिंघाड़े (समोसे)। महिम बाबू हाथ से उठाकर भक्तों को उसका भाग देते हैं और बातें कहते हैं, उत्तराखण्ड के तपस्वी और तपस्या की।

श्री म—आहा, कितनी ईश्वर की कथा सुनाई है लड़कों को। जभी तो तुम्हारी उन्होंने इतनी सेवा की है। यह क्या फिर personal credit (व्यक्तिगत सम्मान) है ? तुमने दिनरात कुछ न कुछ से उनको आनन्द दिया है, उद्दीपना दी है—कभी शास्त्रपाठ, कभी भजन में लगाया है।

(जगबन्धु के प्रति)—देखो ये गए थे तीन मास के लिए और रख लिया चौदह मास। वे छोड़ते नहीं। कितनी ईश्वर की कथा सुनाई है

उन्हें। साधुओं ने फिर पका परोस कर इन्हें खिलाया है, ठाकुर-सेवा, नारायण-सेवा की है। और फिर साधुसेवा! (एक जन को दिखलाकर) और ये पकाने के भय से आलस करते हैं। साधु और फिर संग ही चातुर्मास्य व्रत पालन किया है। साधुओं ने निज ही प्रस्तुत करके सब को खिलाया है। आहा, करेंगे नहीं वे, वे तो सब छोड़कर ईश्वर को पुकारते हैं, अधिक पहचान सकते हैं ईश्वर को। और जो पांचों कार्य लेकर रहते हैं, उन्हें ईश्वर चिन्तन करने का अवसर वैसा नहीं होता। इसीलिए त्यागी दल की सृष्टि हुई है। वे लोग whole-time men (सर्वदा एवं सारे जीवन के लिए) ईश्वर भक्त।

ऑफिस से प्रत्यावर्तन करते हुए भक्तगण आ उपस्थित हुए हैं— भाटपाड़ा के ललित राय, "भवराणी" (भोला चाटुज्य), लक्ष्मण, बड़े अमूल्य प्रभृति। महिम बाबू साढ़े पांच बजे उठ गए विदा लेकर। बाहर दो-एक बिन्दु वारिपात हो रहा है। श्री म ने जभी छाता देकर जगबन्धु को महिम बाबू के संग भेज दिया, बाड़ी पर पहुंचाने के लिए। महिमबाबू ठनठनेर मां-काली को दर्शन करके बाड़ी पहुंचे सिमला स्ट्रीट में। अब अच्छी वृष्टि।

चार तले की छत। अब संध्या समागता। श्री म सीढ़ी के कक्ष में बैठे हैं दक्षिणास्य द्वार के निकट। भक्तगण अनेक आ गए हैं। बाहर सामान्य वृष्टि। एक वयस्क भद्रलोक आकर प्रणाम करके बैठे, निजी परिचय देकर बोले, नाम रजनी, अवसरप्राप्त सरकारी वकील, नोआखाली बाड़ी। वे श्री कामारपुकुर और श्री जयरामवाटी दर्शन करके आए हैं। वे बातों बातों में तुलसी रामायण और गीता के श्लोक आवृत्ति करते हैं। अनर्गल बोलते जाते हैं। बड़े चंचल, बहुत जल्दी जल्दी बातें कहते हैं। श्री म जो बोलते हैं, उसके ही अनुरूप गीता और तुलसीवाणी सुनाते हैं। कभी कभी श्री म के (घुटने) गोड़े पर मृदु आघात करके उनका मनोयोग फिराते हैं, कभी अपने हाथ पर ही मृदु आघात करते हैं। भक्तगण अतिष्ठ हो गए, कोई कोई मृदु हास्य भी करते हैं। अच्छा सुन्दर एक शुगल हो गया। उस भक्त वकील का स्वभाव नहीं बदला।

रजनी — मैं चारों युगों में ही भक्त होकर रहूँगा। जल का बुलबुला जल में मिलना, इस बात को मैं समझा नहीं, यह मेरे मस्तक में प्रवेश नहीं करती।

श्री म (रजनी के प्रति) — ठाकुर ने कहा था, आम खाने आए हो, आम खाओ। कितनी लाख डालें, कितने करोड़ पत्ते, इस खबर से क्या काम ? तुम केवल आम खाकर जाओ।

रजनी -- हां, आम खाने आए हो, खाली आम खाओ।

श्री म — ठाकुर ने कहा था, वह भी एक श्रेणी है, नित्य भक्त —तुम प्रभु मैं दास।

रजनी — हां, कहा है। वह भी एक श्रेणी है, नित्य भक्त की। यही मुझे अच्छी लगती है।

रजनी बड़े प्रगल्भ हैं। मुख से बात निकाल कर बात बोलते हैं। आज के कथाप्रसंग में विघ्न उत्पन्न होने से भक्तगण अतिष्ठ हो गए हैं। इसी बीच उन्होंने विदा ले ली।

अब रात्रि के पौने आठ। श्री म सीढ़ी के घर में ही बैठे हैं द्वार के निकट, चेयर पर, दक्षिणास्य। नित्यकार भक्तगण कोई कोई आए हैं। अच्छी वृष्टि हो चुकी है। अब भी दो चार बिन्दु ऊपर के टीन की छत पर पड़ती है। घर अल्प परिसर। श्री म के सामने दो बेंच हैं पूर्व-पश्चिम लम्बमान। पश्चिम वाले पर बैठे जगबन्धु, बड़े अमूल्य, छोटे रमेश, सुखेन्दु और गदाधर। पूर्व बेंच पर पीछे आकर बैठ गए डाक्टर बक्शी, उसके पश्चात् बड़े जितेन। श्री म बातें करते हैं।

श्री म—आज दो जन आए थे। एक जन, स्वामी (विवेकानन्द) जी के छोटे भाई महिम बाबू। वे एक वर्ष से अधिक रह कर आए हैं कनखल में। उनके मुख से उधर के महात्माओं की कथा सुनी गई। उस ओर अनेक तपस्वी साधु हैं। इनकी कथा सुनकर प्राण शांत होता है। ये आम खाते हैं सर्वदा। यह व्यवस्था भी होती आ रही है अनन्तकाल से। एक क्लास संसार-सुख को काक-विष्ठावत् छोड़कर ब्रह्मानन्द के संधान में तत्पर। और एक क्लास संसार-सुख में मग्न।

इन दोनों क्लासों के लोग दो उल्टे पथों पर चलते हैं। साधुओं का पथ ही पथ। उसके बीच में और भी एक क्लास की सृष्टि हुई है। उनको कहते हैं भक्त। योग और भोग दोनों ही हैं इनके। प्रकृति में अधिक भोग रहता है अभी भी। जभी वे महात्माओं की भांति छोड़ नहीं सकते। और फिर केवल भोगियों के संग भी रह नहीं सकते। ये ही साधुओं के पास जाते हैं, साधुओं की सेवा करते हैं, साधुसंग में भोगक्षय होता है। तब वे दोनों हाथ से भगवान को पकड़ लेते हैं, जैसे साधु पकड़े हुए होते हैं। साधु हुए जगत् के conscience (विवेक बुद्धि)।

महिमबाबू निज भी साधु हैं, और थे भी कनखल सेवाश्रम में साधुओं के संग में। उस ओर सर्वदा ही आनन्द का प्रवाह चलता है।

बड़े जितेन—और एकजन कौन आए थे ?

श्री म—वे इस ओर के जन-वकील। नोआखाली बाड़ी। नाम रजनी बाबू। अवसर ले लिया है। बोले, वयस में हमारे से दो बरस छोटे हैं, किन्तु बड़े सशक्त हैं।

जगबन्धु — वकील सशक्त रहते हैं, किन्तु बड़ी मिथ्या बातें करते हैं।

श्री म — तभी तो प्रेक्टिस् न करने से ही होता है। "लॉ" पढ़ना भला, जान रखना भला। अर्थ के लिए सत्य को विसर्जन देना भला नहीं।

जगबन्धु ने "लॉ" पढ़ा है श्री म की प्रेरणा से।

श्री म—महिमबाबू की युवक साधुओं ने कितनी सेवा की है। हमने कहा, यह जो सेवा तुमने पाई है, इसमें personal credit (व्यक्तिगत सम्मान) नहीं हैं। कितनी भगवान की कथा तुमने सुनाई हैं उन्हें। जभी सेवा की है। इस सेवा में मुक्त होता है। हम भी थे कनखल आश्रम में। उह, कैसी सेवा करते हैं साधु रुग्ण नारायण की ! आश्रम के समस्त काज निज करते हैं। सेवा बिना किए ज्ञान लाभ नही होता। निष्काम सेवा से चित्त शुद्ध होता है। शुद्धचित्ते ईश्वर दर्शन होता है, जैसे दर्पण में मुख देखा जाता है। वे कितनी सेवा करते हैं ईश्वर के

लिए ! और (एक जन को दिखलाकर) ये सेवा करने से भय पाते हैं, कामचोर।

गदाधर आश्रम के ठाकुर (पाचक) और चाकर (नौकर) दोनों जन ही चले गए हैं, बड़ा कष्ट होता है आश्रम सेवा में। ललित महाराज यहां आए थे सहायता मांगने के लिए। दो जन यहां पर थे। ये और एक जन (सूर्य ब्रह्मचारी) | ये यहां पर कोई काज नहीं करते। इन्हें कहा जाने के लिए। सूर्य तो चले गए। और ये गए नहीं। डांट खाकर ये शायद अगले दिन गए। (हास्य)। "पाचक" के नाम से भय पाते हैं। खाली चक्षु बन्द करने से नहीं होता। संग संग सेवा चाहिए। ऐसा सुयोग कहां होता है ? चौबीस घण्टे वहां पर सेवा होती है— ठाकुर-सेवा, साधुसेवा। कितने उत्सव, कितनी पूजा होती है वहां पर ! कितना बड़ा सौभाग्य यह सेवा करना।

श्री म नीरव क्षणकाल। फिर कथा-प्रवाह चला।

श्री म (भक्तों के प्रति)— गुरु क्या दोष देखते हैं ? नहीं, वे तो अहेतुक कृपासिन्धु हैं। ठाकुर को किसी किसी एक जन ने कितना जलाया है। देखा है, उन्होंने किसी का भी दोष नहीं लिया। क्राइस्ट क्या जानते नहीं थे कि जुडास इस्केरियट विश्वसघातकता करेगा। तो भी उन्होंने उसको द्वादशजन अन्तरंगों का एक जन बनाकर पास रखा था। और फिर "किस" (चुम्बन) करने दिया था। पीछे जुडास ने विश्वासघातकता की। चैतन्यदेव भी हरिदास को जानते थे, तो भी संग में रखा था।

बड़े अमूल्य—छोटे हरिदास का त्याग किया क्यों ?

श्री म— गुरु का आदेश सुना नहीं, तभी। मना किया था स्त्रियों, लड़कियों के संग बातें करने तथा मिलने के लिए। बार बार वह आदेश अमान्य करने पर पीछे त्याग कर दिया लोक-शिक्षा-जन्य। चैतन्य देव का न क्रोध था, ना द्वेष। तो भी छोड़ा क्यों ? वैसा न होने से अन्य भी बिगड़ जाएंगे। ये ढेले के द्वारा ढेला तोड़ते हैं। लोकशिक्षा के लिए यह बाह्य कठोरता दिखाई थी।

डाक्टर बक्शी—इधर जो भक्त का प्राणान्त होता है ? (त्याग करने से ।)

श्री म— वह सब वे जानते हैं, वे अन्तर्यामी । और फिर चाहे खींच लेंगे । गुरु किसी का दोष पकड़ते नहीं । जब देखते हैं कि भक्त बड़ा जलाता है । किसी तरह से भी नियंत्रण, control में नहीं आता तब अल्प मात्र सूत छोड़ देते हैं ।

दिन में अच्छी गरमी पड़ी है । अब सुन्दर ठंडी हवा चल रही है । श्री म ने जगबन्धु से इसके पूर्व "कथामृत" पाठ करने के लिए कहा था । कथाप्रसंग चल रहा था, इसलिए पाठ इतनी देर हुआ नहीं । तीव्र गरमी के पश्चात् ठंडा होने से जगबन्धु को तन्द्रा का आवेश हुआ है — हाथ में कथामृत है । श्री म ने उसे लक्ष्य करके व्यंग्य से छोटे रमेश से कहा, "तुम पढ़ो । ये (जगबन्धु) फिर देखेंगे वे (डाक्टर बक्शी) कितना सोते हैं । (सब का हास्य) । डाक्टर बक्शी बोल उठे उसी तन्द्रा अवस्था से ही जड़ित कण्ठ से, "नहीं, मुझे कोई surpass (अतिक्रम) नहीं कर सकेगा ।" (सबका उच्च हास्य ।)

रात्रि दस ।

(3)

आज रविवार, 11 मई, 1924 ई० । स्कूलबाड़ी के भक्तगण जगबन्धु, विनय, गदाधर, लक्ष्मण, छोटे नलिनी प्रभृति ने श्री म की अनुमति लेकर श्री दक्षिणेश्वर काली मन्दिर में प्रातः काल से सारा दिन रहकर साधन भजन किया है । अपराह्न पांच बजे रामराजातला में शंकर मठ में शंकराचार्य के जन्मोत्सव में योगदान करके मॉर्टन स्कूल लौट आए है । श्री म ने भक्तों को भी अटका के रखा हुआ है दक्षिणेश्वर दर्शन और उत्सव का विवरण सुनाने के लिए । अब रात्रि के नौ ।

एक भक्त सारे दिन की दिनचर्या श्री म को बताते हैं । भक्त गण सुनते हैं । प्रवीण भक्त शुकलाल और अमृत ने कौतुक से जिज्ञासा की, "आप लोगों ने दो बजे के समय दक्षिणेश्वर में मां का प्रसाद पाकर फिर साढ़े छः बजे शंकर मठ में खिचड़ी और तरकरी प्रसाद कैसे पा

लिया ?" एकजन भक्त ने कौतुक करके उत्तर दिया, "कहते क्या हैं, जानते नहीं प्रसाद की महिमा ही कैसी आश्चर्य ! प्रसाद जितना ही क्यों न खाओ, अप्राकृत वस्तु है कि ना, अपना स्थान आप कर लेती है उदर में— विशेष यदि उत्तम द्रव्य का भोग हो। इसे एक बार try (परीक्षा) करके देखिए" (सब का हास्य)।

श्री म परिहास रस किंचित् मार्जित करके, भक्ति रस से सिंचित करके बोले-- वह क्या फिर आपने खाया ? उन्होंने खिलाया तभी तो खाया गया । वे ही अपने भक्तों के लिए सब संग्रह करके रखते हैं। भक्त लोग जिससे आनन्द में रह सकें वे सर्वदा वही करते हैं। जिनको जिससे आनन्द होता है वे पहले से ही सब व्यवस्था करके रखते हैं। भोजनानन्द भी चाहिए । तभी देखिए उपवास के उपरान्त ही उत्सव। उसके बिना तो कल विकल हो जाएगी। एक स्थान से ही आता है सब ही आनन्द–भोजनान्द से आरंभ करके ब्रह्मानन्द तक। देह धारण करने से बीच बीच में इस ओर का आनन्द भी आवश्यक है। नहीं तो देह रहेगी नहीं। और फिर मन भी तो अविराम ब्रह्मरस सहन नहीं कर सकता। ऐसा करके उन्होंने इस कल (देह) को बनाया है। गिरीश बाबू के गाने में यही बात है। अधिक खींचो, फट जाएगी। जभी व्यवस्था दे दी है— जो कुछ करो सब मुझे निवेदन करके करो, वैसा होने पर फिर दोष नहीं होगा। समग्र मन ही क्रमशः उनमें जाएगा अन्त में तो, तभी समाधि। इसके पूर्व—ईशा वास्यमिदं सर्वम्। जिसे जो अच्छा लगे करो। किन्तु सब उन्हें निवेदन करके करो— उससे तो फिर ऐसे सब कामों में ही उपासना हो जाती है।

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय, तत्कुरुष्व मदर्पणम् ॥

अगले दिन सोमवार, शुक्ला अष्टमी तिथि, 23 दण्ड 47 पल। मॉर्टन स्कूल के चारतले की सीढ़ी का घर। अब रात्रि साढे आठ।

श्री म जोड़ा–बेंच पर दक्षिणास्य बैठे हुए हैं। भक्तगण क्रमशः आ आकर श्री म के सम्मुख और बाएं बेंच पर बैठते हैं। अब आए हैं बड़े

सुधीर, बड़े अमूल्य, छोटे जितेन, डाक्टर बक्शी, विनय, सुखेन्दु और उन का संगी, बलाई, छोटे रमेश, जगबन्धु प्रभृति। कथोपकथन होता है।

श्री म (भक्तों के प्रति)— बताइये तो, हम अब क्या कर रहे है ?

बड़े सुधीर— ईश्वर चिन्तन कर रहे हैं ।

श्री म (सहास्ये)— ना, वह चिन्तन तो है ही। उसके ऊपर भी चलता है— हम मां का स्तन पान कर रहे हैं। स्तन मुख में पड़े तब शिशु बचा रहता है। असुख हो तो कहते हैं, देखो, स्तन खींचता है कि नहीं। वैसे ही हम भी सर्वदा स्तन पान कर रहें हैं। यह हवा, जल, ये सब ही स्तन—बड़ी मां का स्तन। सर्वदा ही इसी स्तन को पी रहे हैं। जब हवा लेना बन्द हो गया तब शेष हो गया (मृत्यु)।

एक जन भक्त ने प्रवेश किया।

श्री म— कहिए तो जितेन बाबू, हम क्या कर रहे हैं ? हम मां का स्तन पान कर रहे हैं— सर्वदा कर रहे हैं।

"उपनिषदं भो ब्रूहि"— छोटे ऋषियों ने बड़े ऋषियों से कहा, उपनिषद् बताइए। किन्तु वे जानते नहीं कि बड़े ऋषि जो कहते हैं वह सब ही तो उपनिषद् है।

एक भक्त (स्वगत)— श्री म की ये सब बातें भी क्या उपनिषद् हैं— हम मां का स्तन पान कर रहे हैं !

एक भक्त तन्द्राविष्ट। वे उठ के छत पर जाकर बैठ गए।

श्री म (भक्तों के प्रति)— उस देश (पाश्चात्य) के बड़े बड़े लोग क्या कहते हैं, सुना है आप लोगों ने ? बैरिस्टर जे. चौधरी राममोहन राय लाइब्रेरी में मीटिंग में बोले थे, मैंने अपने कानों से सुना है, हक्सले (Huxley) कहते हैं— हमारी इस बुद्धि, इस ज्ञान द्वारा जितना तक बाहर होने वाला था हो गया है। इससे अधिक कुछ भी बाहर नहीं होगा। इससे अधिक कुछ जानना हो तो इण्डिया (भारत) से जानना होगा। उस देश के ऋषिगण इससे भी आगे की खबर जानते हैं।

वह (ब्रह्मदर्शन) क्या इस आंख द्वारा होता है ? अथवा इस बुद्धि से होता है ? ठाकुर कहते, इस (स्थूल देह) के भीतर और भी दो देह हैं–सूक्ष्म और कारण देह । इसके परे ब्रह्म । स्थूल के भीतर सूक्ष्म, सूक्ष्म के भीतर कारण, कारण के भीतर महाकारण (ब्रह्म) हैं। कारण-देह को 'भागवती तनु' योग देह कहते हैं । इसी कारण देह में महाकारण का दर्शन होता है । लेटते, बैठते, निद्रा में, जागरण में, सर्वदा उनके संग में युक्त होकर रहने का अभ्यास करते करते उसी भागवती तनु का विकास होता है । समस्त जीवन द्वारा ही उनकी उपासना करनी चाहिए, सकल कार्य द्वारा उनकी आराधना चाहिए— "तत्कुरुष्व मदर्पणम् ।" तभी भगवती तनु का जन्म होता है और उसमें ईश्वर को जाना जाता है ।

ऋषिजन स्थूल का संवाद जानते थे— अरण परमाणु से स्थूल की सृष्टि । उससे भी सूक्ष्म परमाणु की समष्टि है मन-बुद्धि । यह भी उन को पता था । तत्पश्चात् कारण शरीर, Causal or spiritual body, ठाकुर इसको ही 'भागवती तनु' कहते । कहते, इस स्थूल शरीर की भांति इस कारण शरीर के आंख मुख सब हैं, अति सूक्ष्म हैं । वर्तमान वैस्ट केवल स्थूल की ही आलोचना करता है । उससे ही science of the matter (जड़विज्ञान) की सृष्टि हुई है । इसके परे है science of the spirit (ब्रह्मविज्ञान) । उसके भी परे हैं परमब्रह्म, महाकारण, ईश्वर ।

यह बात कहते कहते श्री म को एक भावावेश हो गया । स्वभावगाम्भीर्य भेद करके मस्त होकर गाने पर गाना गाने लगे । जैसे इन तीन शरीरों के परले पार अवस्थित ब्रह्मवस्तु महाकारण को देख कर उनका स्तव करते हों गाने में ।

गान : श्यामा मां कि कल करेछे, काली मां कि कल करेछे ।
चौद्द पोया कलेर भितरि कत रंग देखातेछे ॥
आपनि थाकि कलेर भितरि कल घुराच्छे धरे कल डोरि ।
कल बोले आपनि घुरि, जाने ना के घुरातेच्छे ॥
जे कले जेनेछे तारे कल होते होबे ना तारे ।
कौनओ कलेर भक्तिडोरे आपनि श्यामा बांधा आछे ॥

गान : सुरापान करि ना आमि, सुधा खाइ जयकाली बोले।
मन माताले माताल करे, मद माताले माताल बोले ॥
गुरुदत्त बीज लये, प्रवृत्ति ताय मशला दिये,
ज्ञान शुंड़िते चोयाय भाटी, पान करे मोर मन माताले।
मूलमंत्र यंत्रभरा शोधन करि बोले तारा,
प्रसाद बोले एमन सुरा खेले चतुर्वर्ग मिले ॥

भावातिश्य में श्री म और गा नहीं पा रहे हैं। तभी माखन से कहने लगे, आप गाइए। माखन गाते हैं श्री म के इंगित से।

गान : डुब दे रे मन काली बोले, हृदि रत्नाकरेर अगाध जले।
रत्नाकार नय शून्य करबनो दुचार डुबे धन ना पले।
तुमि दम सामर्थ्ये एक डुबे जाओ, कुल कुण्डलिनीर कुले ॥
ज्ञान समुद्रेर माझे रे मन, शान्तिरूपा मुक्ता फले।
तुमि भक्ति करे कुड़ाये पाबे, शिवयुक्ति मत चाइले ॥
कामादि छय कुम्भीर आछे, आहार लोभे सदाइ चले।
तुमि विवेक हलदि गाये मेखे जाओ, छोंबेना तार गंध पेले ॥
रतन माणिक्य कत पड़े आछे सेइ जले।
रामप्रसाद बोले, झम्प दिले, मिलबे रतन फले फले ॥

श्री म बोले—और वही जो डुब डुब।

माखन फिर और गाते हैं।

गान : डुब डुब डुब रूप सायरे, आमार मन।
तलातल पाताल खुंजले, पाबिरे प्रेम रत्न धन ॥
डुब डुब डुब डुबले पाबि, हृदय माझे वृन्दावन।
दीप् दीप् दीप् ज्ञानेर बाति, हृदय ज्वलबे अणक्षण ॥
ड्यां ड्यां ड्यां डांगाय डिगे, चालाय आबार से कोन जन।
कुबीर बोले शोन् शोन् शोन्, भावो गुरूर श्री चरण ॥*

*अर्थ के लिए श्री म दर्शन, द्वितीय भाग, पृष्ठ 262 द्रष्टव्य।

रात्रि साढ़े दस। श्री म का नैश आहार आते ही भक्तगण उठ गए। श्री म भी उठे। सकल विदा ले रहे हैं। श्री म आहार करने जाएंगे। ऐसे समय बड़े जितेन के पुत्र ने आकर कहा, मां आई हैं दर्शन करने। श्री म बिना खाए ही नीचे तीनतल पर उतर गए।

मॉर्टन स्कूल, कलकत्ता।

12 मई, 1924 ई०।

29वीं वैशाख, 1331 (बं) साल, शुक्रवार।

त्रयोदश अध्याय

विश्वास से अर्धजीवन्मुक्ति

ग्रीष्म का प्रभात। मॉर्टन स्कूल की चारतल की छत पर बैठे ध्यान करते हैं भक्तगण— विनय, जगबन्धु और छोटे जितेन। श्री म पास ही निज कक्ष में बैठे ध्यान करते हैं। चटांग शब्द से दरवाजा खुल गया। श्री म चकित की भांति बाहर आकर बोले— "ध्यान करो, सर्वदा ध्यान करो। ठाकुर कहते। वह होने पर योग में रह सकता है मनुष्य सर्वदा। और योग में रहने से ही इस ओर की वस्तु कम आएगी मन में।" पुनः चकितवत् गृह में प्रवेश फिर लिया। भक्तगण दैववाणीवत् इसी महावाक्य चिन्तन में निमग्न।

आज 13 मई, 1924 ई०; 30वां वैशाख, 1331 (बं०) साल; मंगलवार, शुक्ला नवमी; 22 दण्ड 47 पल।

अब अपराह्ण साढे पांच। खूब प्रबल वृष्टि हुई है। श्री म सीढ़ी के घर में बैठे वर्षा दर्शन कर रहे थे। जल पड़ना बन्द होने पर छत पर आकर चारों दिक् देखते रहे। कुछ क्षण पश्चात् फिर आकर सीढ़ी के कक्ष में बैठ गए, निकट एक युवक शिक्षक के संग। श्री म इस स्कूल के रेक्टर हैं। उन्होंने सम्प्रति स्कूल में शिक्षा की नवीन पद्धति का प्रचलन किया है। बंगला भाषा हुई है शिक्षा का वाहन। छात्रों के ऊपर बोझ न पड़े तभी शिक्षकों को पाठ्य विषय मुखस्थ गल्प और प्रश्नोत्तर के रूप में बताना पड़ता है। शिक्षकों का कार्य बढ़ गया है। केवल कर्णेन्द्रिय की सहायता से इतना समय शिक्षा चलती रही। अब चक्षु इन्द्रिय ने प्रधान स्थान अधिकार किया है। श्री म कहते हैं, पांचों ज्ञानेन्द्रियां जिस दिन प्रयोग करके चलेंगे, उसी दिन ही आदर्श शिक्षा-पद्धति का जन्म होगा।

श्री म (शिक्षक के प्रति)— अच्छा, Questions discussion (प्रश्नपत्र की आलोचना) से छात्रों का कुछ उपकार होता है क्या ?

शिक्षक— जी हां। तो भी attendance (उपस्थिति) बड़ी कम है।

श्री म— वह जो मैनेज करते हैं उनका दोष है। Absence fine (अनुपस्थिति दंड) अदा नहीं किया जाता, इसी कारण ऐसा होता है। कल ही तब तो यह समाप्त हो जाएगा।

इस नवीन प्रथा से साप्ताहिक, मासिक और त्रैमासिक परीक्षा के सकल प्रश्न एक संग आलोचना के पश्चात् छात्रों को पुनः उनका उत्तर लिखना पड़ता है। इससे छात्रगण पुस्तक बिना पढ़े समस्त पुस्तक की विषय-वस्तु अधिगत कर सकते हैं सहज में ही। इससे शिक्षकों का परिश्रम यथेष्ट बढ़ गया है।

एक भक्त— छोटे अमूल्य मेरी डायरी पढ़ना चाहते हैं— जब वे यहां पर उपस्थित नहीं रहते तब की रिपोर्ट। पढ़ने को दूंगा क्या ? एक बार आपने मना किया था सबको दिखाने से।

श्री म—कैसी डायरी—private (व्यक्तिगत) हो तो क्यों दोगे ?

भक्त— यहां का ईश्वरीय प्रसंग।

श्री म— अच्छा, एक दिन हमें दिखाना।

माखन होड़े का प्रवेश। संग में एक युवक— वयस वाईस वर्ष। खूब हास्यरसिक। छत पर बैठे श्री म उसके साथ कथोपकथन करते हैं। युवक ने असहयोग आन्दोलन में योगदान किया था। उसकी इच्छा है जीव-शिव की सेवा करना— निज उन्नत होकर अन्य को उन्नत करना।

श्री म (माखन के प्रति)— ठीक तो, इसको ले जाइए ना गदाधर आश्रम में। वहां पर सेवक का प्रयोजन है। ठाकुर-सेवा, साधुसेवा करेगा। कुछ दिन साधुसंग, साधुसेवा, देशसेवा करने के उपरान्त दरिद्रनारायण की सेवा करना भला।

बाहर ठंड होने से श्री म आकर फिर सीढ़ी के घर में बैठे। कथा प्रसंग चलता है।

श्री म (जनान्तिक से, माखन के प्रति)— विवाह करने की इच्छा नहीं होती—लगता है कभी कभी होती तो है एक विदुषी मिल जाने पर। तो फिर दोनों द्वारा मिल कर देशसेवा की जाएगी। (सब का हास्य) (रसिकता पूर्वक, बड़े जितेन के प्रति) क्या कहते हैं महाशय ?

बड़े जितेन— विवाह करने से फलवृद्धि जो हो जाती है। तब उनके खिलाने पिलाने के लिए होती है पैसे की आवश्यता। इस पैसे की चेष्टा में तब अतल जल में डूब जाती है सदिच्छा।

और फिर बाल बच्चों का लालन पालन शिक्षा। और फिर कन्याओं का विवाह। उससे भी तो अन्त नहीं हुआ। कन्या के श्वसुर-घर जाने पर उसके लिए चिन्ता–आज यह विपद्, कल वह विपद्। आपने सुना था, प्रह्लाद ने दैत्य बालकों को उपदेश दिया था— भाइयो, विवाह मत करो। विवाह करने से ऐसी विपद् लगी ही रहती है।

श्री म (कल्पित विस्मय से और नयनों में हास्य से)—- अच्छा। तब तो फिर ठीक नहीं।

लोकशिक्षा में श्री म का यह भी और एक आर्ट है—- अन्य के मुख द्वारा उपदेश दिलवाते हैं। प्रवीण भक्त जितेन के मुख द्वारा सुनवा दीं, विवाहित जीवन के विघ्न की बातें। साक्षात् रूप से निज कहने पर युवक संभवत. बिल्कुल भी ग्रहण नहीं करते यह उपदेश।

श्री म (माखन के प्रति)—देख रहा हूं निज analysis (विश्लेषण) करना सीख लिया है। यह ठोकरें खा खा कर सीखा है।

श्री म का ज्येष्ठ पौत्र अरुण हारमोनियम बजाते हैं तीनतला पर।

श्री म का मन हरण कर लिया उसी सुमिष्ट सुर ने। अरुण की वयस बरस सोलह प्रायः।

श्री म ने निविष्ट होकर कुछ क्षण सुना। अन्तेवासी से बोले, जाइए आप नीचे जाकर उसको congratulate (उत्साह दान और आनन्द प्रकाश) कर आइए। (सब के प्रति) यही महीन सुर निकालना ही है उस्तादि। यह मन को खींचकर भीतर ले जाती है।

"कथामृत" पाठ होता है। अब रात्रि साढ़े आठ। संध्या का ध्यान समाप्त हुआ है अभी अभी।

छोटे रमेश पढ़ते हैं— तृतीय भाग, षोडश खण्ड। ठाकुर ने राम के घर शुभागमन किया है। अश्विनीदत्त, नरेन्द्र, महिमाचरण प्रभृति आए हैं— 23 मई, 1923 ई०।

पाठक पढ़ते हैं, श्री रामकृष्ण महिमा से बोले– वह भी वही कहता है।

श्री म (भक्तों के प्रति)— गिरीश बाबू श्री रामकृष्ण को अवतार कहते हैं। "वह" माने केदार चाटुर्ज्ये। वे भी कहते हैं, ठाकुर अवतार। तब तो फिर हुआ कि ठाकुर इन दो जनों की बात ही मान ले रहे हैं। प्रकारान्तर से कहते हैं, मैं अवतार। ऐसी स्पष्ट उक्ति करते हैं अपने संबंध में आप ही। तब भी समझ में तो आने वाला जो नहीं हैं, जब तक वे न इच्छा करें। समस्त कर्म शेष होने पर यह समझ में आता है अथवा इसको समझ सकने पर सकल कर्म समाप्त हो जाते हैं। स्वामी जी ने आरती में कहा है, 'कर्म-कठोर'। स्तव में बोलते हैं 'तेजस्तरन्ति तरसा त्वयि तृप्त-तृष्णा।' रजः पलायन करता है उनके आने पर। उनके दर्शन करके फिर अवतार जानकर समझता है, वह केवल उनकी इच्छा से होता है। अन्य पथ नहीं।

पाठ चलता है।

पाठक ने पढ़ा— महिमाचरण कहते हैं, भक्त का एक समय तो निर्वाण चाहिए।

श्री म — महिमाचरण का यही मत निर्वाण मुक्ति, सायुज्य मुक्ति—नमक का पुतला समुद्र मापने जाकर समुद्र हो जाता है। यह अद्वैतवादियों का मत है।

मुक्ति और भी चार प्रकार की है — सालोक्य, सामीप्य, साष्ठि और सारूप्य। इन सब मतों में निर्वाण-मुक्ति नहीं मानते। ठाकुर जभी तो महिमा की बात का उत्तर देते हुए बोले, सब को ही जो निर्वाण-मुक्ति लाभ करनी होगी, ऐसी कुछ बात नहीं हैं। नित्य कृष्ण, नित्य भक्त यह भी है। चिन्मय श्याम, चिन्मय धाम, चिन्मय भक्त। नित्य और लीला दोनों ही सत्य हैं, ठाकुर कहते। और भी बोलते हैं,

जो अखण्ड सच्चिदानन्द, वे ही अन्तर्यामी, वे ही जीवजगत्, वे ही अवतार। जिनका नित्य उनकी ही लीला। नित्य भी सत्य, लीला भी सत्य। स्वराट विराट वे ही। कैसा सुन्दर दृष्टान्त दिया, चन्द्र रहने पर तारागण भी रहेंगे। भगवान मानने से भक्त भी चाहिए। जभी नित्यकृष्ण, नित्य उनका भक्त। ठाकुर बोले थे कि उत्तर दिशा में बरफ गलती नहीं। कोई कोई भक्त नित्य कृष्ण चाहता है, नित्य विष्णु चाहता है। निजी बात में कहा, इतनी जड़ समाधि, निर्विकल्प समाधि के पश्चात् भी, 'मां' 'मां'।

महिमाचरण शास्त्र विचार करते हैं। जभी कहा ठाकुर ने, साधना करना दरकार, केवल शास्त्र पढ़ने से होता नहीं। विद्यासागर महाशय का नाम करके बोले, उनका अनेक (शास्त्र) पढ़ा हुआ है। किन्तु अन्तर में क्या है, देखा नहीं। छात्रों को लिखना पढ़ना सिखाकर आनन्द। भगवान के आनन्द का आस्वाद नहीं मिला। यह क्या फिर उनको छोटा करने के लिए बोलते ? वह बात नहीं, सर्वोच्च आदर्श को ही सामने रखने के लिए यह तुलना करके दिखाया। ईश्वरानन्द, ब्रह्मानन्द लाभ ही मनुष्य जीवन का श्रेष्ठ कर्त्तव्य। उनमें क्या फिर मान अभिमान ईर्ष्या द्वेष था, वह बात नहीं। देखो ना, निज ही हमें लेकर विद्यासागर के संग मिलने गए। उनसे किन्तु ठाकुर ने कहा था, 'वहां (दक्षिणेश्वर) जाइयो, माणिक बाहर कर दूंगा।'

वे फिर गये नहीं यदि बोला भी था कि जाएंगे। जाते, तब तो चाहे इस जन्म में ही ईश्वर-दर्शन हो जाता।

साधरण मनुष्य इन्हें ही आदर्श लोग समझते हैं। क्यों ? इसलिए कि इतनी दया, परोपकार, दान सेवा की हुई है। किन्तु ठाकुर की दृष्टि और भी ऊंचे, ब्रह्म में। वह लाभ हुए बिना सब मिथ्या। ब्रह्मदर्शन सबके ऊपर। ब्रह्मद्रष्टा श्रेष्ठ मनुष्य!

जभी साधना प्रयोजनीय। तभी धारणा होती है। ईश्वरीय भाव की। वही लिए पड़े रहने पर उनकी कृपा से दर्शन होता है।

साधना के विषय में बोले,— साधुसंग, ईश्वरीय कथा सुनना सहज साधन। कामिनीकांचन में संसारी लोग मस्त हैं— एकदम डूबे पड़े हैं।

साधुसंग करनें पर सद्गुरु लाभ हो सकता है। सद्गुरु माने जिन्होंने ईश्वर-दर्शन किया है। तब ही तो difference (पार्थक्य) समझता है। 'सद्गुरु पावे भेद बतावे।'

सत्संग करने पर ईश्वर सत्य, संसार अनित्य, यह बोध होता है। और तब विद्यामाया का आश्रय लाभ होता है। ध्यान, जप, नाम, गुणकीर्तन, तीर्थ, व्रत, उपवास, प्रार्थना ये सब लिए रहता है। यह सब विद्यामाया का ऐश्वर्य।

देखिए, कैसे भरोसे की बात कहते हैं, विद्यामाया जैसे छत पर चढ़ने वाली सीढ़ी के अन्तिम कई (पद) धाप (steps) हैं। और एक धाप चढ़ते ही छत, माने ईश्वर लाभ।

श्री म ने आहार करनें के लिए अपने कक्ष में प्रवेश किया। कह गए—अब जो पढ़ा गया है आप लोग बैठकर उसका चिन्तन करिए।

श्री म आहार करके आए हैं। एक भक्त से जिज्ञासा की, क्या क्या बातें आप लोगों ने चिन्ता कीं। भक्त बोले, ठाकुर अवतार। ठाकुर नित्य से लीला में जाते हैं और फिर लीला से नित्य में। नित्य लीला दोनों को ही वे ग्रहण करते हैं। और फिर, और किसी के पास नित्य कृष्ण, नित्य भक्त। लीला भी सत्य। ईश्वर लाभ करने से ही यथार्थ सुखशांति लाभ होता है।

श्री म बोले, "वाह, अच्छी ही तो उन्होंने स्मरण रखी हैं सार सार सब बातें। (भक्तों के प्रति) इस समय आप लोग उठिए और रास्ते में भावते भावते जाइए—ठाकुर अवतार, अखण्ड सच्चिदानन्द, वाक्य मन के अतीत जो हैं वे ही नररूप में अवतीर्ण हुए हैं।"

रात्रि दस।

(2)

मॉर्टन स्कूल की चारतले की छत। बहुत सारे भक्त बैठे हैं, श्री म की अपेक्षा में। संध्या होने पर सब ध्यान करते हैं, बड़े जितेन, छोटे जितेन, डाक्टर, जगबन्धु, मनोरंजन, छोटे रमेश, बुकबॉण्ड (यतीन), बड़े अमूल्य, छोटे नलिनी, लस्कर प्रभृति। गतकल के "असहयोगी"

युवक भो आए हैं। संग में और भी नूतन जन हैं। अमृत आए हैं सब के अन्त में।

आज 14 मई, 1924 ई०, 31वां वैशाख, संक्रान्ति, 1331 (बं०) साल, बुधवार, शुक्ला दशमी, 20 दण्ड 35 पल।

आकाश में उज्ज्वल चन्द्रमा। कई दिन वृष्टि के उपरान्त आज आकाश निर्मल और मेघ-मुक्त। असंख्य तारका निकले हैं। सब सुन्दर। इसी सुन्दर को और भी सुन्दर किया है सुशीतल वायु ने। भक्तगण मादुर पर बैठे हैं। चारों ओर से बाहर का कुछ भी दिखाई नहीं देता। दिखाई देता है सुविस्तृत आकाश, चन्द्रमा और तारागण। दारुण ग्रीष्म पर सुशीतल समीरण जैसे अमृत वर्षण करती है—'मधु वाता ऋतायते।'

स्वीय कक्ष से श्री म भक्तों की मजलिस में आए रात्रि आठ बजे, हाथ में 'भागवत'। दक्षिणास्य चेयर पर बैठते बैठते आकाश में दृष्टि निबद्ध करके भक्तगणों से आनन्द से बोले — "बताइए तो हम यहां पर बैठे क्या कर रहे हैं? हम मां का स्तनपान कर रहे हैं। केवल क्या गर्भधारिणी के स्तन में ही दूध है? उसे छोड़ भी (भागवत को पंखे की भांति आन्दोलन करके) दूध है सर्वत्र। यही हवा, यह भी मां का दूध—जगन्माता का दूध। यही हवा सर्वव्यापी। Per square inch air pressure fourteen pounds. (प्रतिवर्ग इंच स्थान पर हवा का दबाव है चौदह पाउंड।) यही pressure (दबाव) सर्वत्र–ऊपर, नीचे और पार्श्वे। इस हवा की सहायता से हम उनके संग में युक्त होकर रहते हैं, ट्राम की ट्राली की न्याईं। ट्राम की ट्राली को संयोग करते हैं ट्राम के संग विद्युत्-वाही wire (तार) से। ज्योंहि ट्राली पृथक् हो गई त्योंहि ट्राम अचल। यह air pressure (वायु का दबाव) समझ में आता है एक स्थान को वैक्यूम (वायु शून्य) कर लेने पर।

आज केवल क्या मां का स्तन ही पान कर रहे हैं, उनका दर्शन भी हो रहा है। एक बार दृष्टि डालिए ना आकाश पर, कैसा सुन्दर दर्शन। गीता में भगवान कहते हैं, 'नक्षत्राणामहं शशी।'

श्री म ने आहार करने निज घर में प्रवेश किया, संग में एक भक्त। भक्त के हाथ में "कथामृत" देकर बोले, पाठ आरंभ कर दो, नहीं तो हो सकता है अन्य बातें होने लगेंगी। भक्त ने ग्रन्थ को लाकर बड़े अमूल्य से पढ़ने के लिए कहा। चतुर्थ भाग, द्वात्रिंशत् खण्ड पाठ चलने लगा। भक्तगण नीरव हो सुनने लगे। कोई कोई कुछ क्षण पाठ सुनकर फिर छत के उत्तर प्रान्त में, तपोवन में जाकर ध्यान करते हैं। श्री म ने प्रत्यावर्तन किया है। तब त्रयोत्रिंश खण्ड पाठ चल रहा है। वे मादुर पर उत्तर प्रान्त में बैठ गए दक्षिणास्य।

श्री म (एकजन भक्त के प्रति) — क्या पाठ हुआ इतने क्षण ? मुद्दा मुद्दा बताइए।

भक्त—ठाकुर कहते हैं, ईश्वर को विचार करके जाना नहीं जाता। विश्वास से ही लाभ होता है — ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, आलापन सब।

श्री म— आहा, क्या बात ही बोले। उनके इसी महावाक्य पर विश्वास होने से अर्धजीवन मुक्त हो जाता है मनुष्य। बाकी के लिए लड़ाई करते रहो अब उनका यही महावाक्य आश्रय करके। इतना सीधा पथ रहते हुए भी लोग इस पर जाते नहीं। संस्कार पथ रोके बैठा है।

विचार प्रथम प्रथम अल्प करने की इच्छा होती है। ठाकुर जभी मां के पास plead (आवेदन) करके कहते भक्तों के लिए— मां क्या करें अल्प विचार बिना किये ? मां, साक्षात् बोलती हैं, ठाकुर के मुख द्वारा। इस वाणी को छोड़ फिर विचार करना— ईश्वर है कि नहीं, इन सब की क्या आवश्यकता है ? इससे मां को अमान्य करना होता है तभी अपराध होता है। उसे क्षमा करने के लिए ठाकुर भक्तों के लिए मां के पास, जगदम्बा के निकट प्रार्थना करते हैं। आह, कैसी कृपा, अहेतुक कृपा ! बिना मांगे ब्रह्मज्ञान से योगीगण योग करते हैं। ठाकुर एक मुहूर्त में उसको बांट रहे हैं भक्तों को, अन्तरंगों को।

विश्वास भी फिर कैसा, बालक का विश्वास, सरल विश्वास ! मां ने कहा है, उस घर में हौवा है। बालक सोलह आना विश्वास करके उस घर में जाता नहीं। हौवा क्या है, वह जानता भी नहीं है। यही विश्वास हुआ alternative (उपायान्तर) शांति और आनन्द लाभ का। एक नम्बर पथ हुआ उनके दर्शन लाभ करके, उनके संग बातें करके, शांति और आनन्द लाभ करना। और वैसा न कर सके तो दो नम्बर पथ— गुरुवाक्य पर विश्वास करना। गुरुवाक्य पर बालकवत् विश्वास हो जाने पर चौदह पन्द्रह आना कार्य हो गया। शेष भी ईश्वर की कृपा से हो जाएगा— मां ठाकुरुण ने यही प्रार्थना ही की है भक्तों के लिए— 'ठाकुर मरण के समय बालकों को दर्शन दिओ।'

श्री म क्या भाव रहे हैं ? और फिर बातें।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति)— एक मत में विश्वास भी intensified (घनीभूत) विचार है। जन्म जन्म विचार करके फिर चप्पु में पानी न मिलने पर तब विश्वास करता है गुरुवाक्य पर, शास्त्र पर।

इतना सीधा पथ, है किन्तु लेता है कौन ? उनकी ही अविद्या माया का तो काज है यह। यदि ले लें तो फिर संसार नहीं रहता। जभी यह "मैं" project (योग) बना दिया है। विद्यामाया की कृपा से यह "मैं" ही "तुम" हो जाता है। तुम्हारा दास मैं, भक्त मैं, सन्तान मैं, हो जाता है नहीं तो मैं ब्रह्म, "अहं ब्रह्मास्मि" हो जाता है।

विश्वास द्वारा, गुरुवाक्य पर विश्वास से ईश्वर दर्शन होता है। ठाकुर ने एक गल्प कही थी। एक गरीब विधवा थी। गुरु ने क्रोध में उसको नदी में डूबकर मरने के लिए कहा। नदी में डूबने गई और डूबना नहीं हुआ— सारी नदी में कमर जल। तब रोने लगी कि डूब नहीं सकी इसलिए। भगवान ने तब उसको दर्शन दिया। गुरु को भी फिर ईश्वर दर्शन करवाया शिष्या ने। विश्वास की है ऐसी महिमा !

श्री म चांद की ओर देखते रहे अनेक क्षण। स्वीय गुरुदेव भगवान श्री रामकृष्ण की पुण्य स्मृति में क्या मन डूब गया है — अहेतुक कृपा सिन्धु में ? दीर्घ समय परे भक्तों से कहते हैं, कैसी सुन्दर

आज की रात, और फिर संक्रान्ति। एक बार हम इसी दिन ठाकुर के वहां पर गए थे। उस दिन फिर पूर्णचन्द्र भी था। ठाकुर खूब आनन्द करने लगे। बोले, अच्छे दिन में आए हो।

उह, कितना करते हैं भगवान भक्तों के लिए! मनुष्य शरीर पर्यन्त लेकर आए हैं।

एकजन भक्त—वैशाखी पूर्णिमा में बुद्धदेव का जन्म, निर्वाण लाभ और महानिर्वाण लाभ हुआ था।

श्री म—हां, हो सकता है। जभी ठाकुर ने कही थी वह बात, बहुत अच्छे दिन में आए हो। हम गत वत्सर इसी पूर्णिमा को बुद्ध विहार में गए थे, कॉलेज स्क्वेयर में। और कपालिटोला के बुद्ध मन्दिर में भी गया था और एक बार।

अब भागवत पाठ होता है, एकादश स्कन्ध, द्वादश अध्याय। साधुसंग माहात्म्य। श्री म ने बाहर कर दिया है। बड़े जितेन पढ़ते हैं, अति द्रुत।

श्री म (पाठक के प्रति)—ठहरो, एक एक को समझ लूं। पढ़िए तो फिर दुबारा।

पाठक साधुसंग माहात्म्य पढ़ते हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)—"ज्ञानी" अर्थात् शास्त्र-ज्ञानी। आत्मद्रष्टा ही ठीक ज्ञानी है। जो आत्मदर्शन करके उसके संग बातें करते हैं वे ही जीव जगत् हुए हैं। ठाकुर ने देखा था, सब मोम का "बागान, गाछ पाला" माली—दक्षिणेश्वर का समस्त बाग ही मोम से तैयार अर्थात् सच्चिदानन्दमय देखा।

तुलाधार व्याध थे आत्मज्ञानी। उनका दर्शन करके भी प्रारब्धवश मांस काटते है और बेचते हैं बैठे बैठे। और फिर ब्रह्मज्ञान उपदेश भी देते हैं।

पाठ चलता है।

श्री म (डाक्टर बक्शी के प्रति)—यही सुनिए, कहते हैं, साधुसंग, गुरुशुश्रुषा और निर्जनवास द्वारा जो होता है, इतना और किसी से

भी नहीं होता। जभी देखता हूँ सब ठाकुर की बातों के संग मिलता जाता है। ठाकुर बोलते, नित्य साधुसंग दरकार। और बीच बीच में निर्जनवास। और व्याकुल होकर प्रार्थना। करो तो साधुभक्त संग, नहीं तो असंग (निर्जन)।

ठाकुर एक एक बार कहते, उपनिषद् की बातें तो काटने वाली नहीं। क्यों ? ये सब ऋषियों के मुख से बाहर जो निकलती हैं कि ना, जभी। ऋषियों ने जो कुछ कहा है सब उन (ईश्वर) को आश्रय करके कहा है। वेद में एक बात है "अतिवादी" — ईश्वर को छोड़कर कुछ कहना। ऋषिगण थे उसके विपरीत।

बड़े अमूल्य – पाठ में हैं, जगत् की सीमा है सूर्य मण्डल पर्यन्त, तो फिर ब्रह्माण्ड अनन्त-कैसे हुआ ?

श्री म—यहां पर "जगत्" अर्थ में यही हमारा सूर्य मण्डल नवग्रह वेष्टित, पृथ्वी जिस के मध्य में एक ग्रह ही है। किन्तु वे जो आकाश में नक्षत्रगण देखते हो, सुना जाता है इनका प्रत्येक का ही एक एक सूर्य है। हमारे सूर्य से भी शायद बड़ा। उन समूहों के फिर इस सूर्य मण्डल की भांति satellites (ग्रह नक्षत्र) हैं। अब कुछ समझे, किस प्रकार से अनन्त ? ऋषि दिव्यदृष्टि से ये सब देख कर बहु पूर्व ही बता गए हैं। जब भी साइन्स ने ये सब बातें विश्वास करनी आरंभ की हैं।

उठिए अब आप लोग, बहुत रात हो गई है। और "भावते भावते" घर जाएं—इस अनन्त ब्रह्माण्ड में एक बाह्य मनुष्य कितना सा ! तुच्छ, अति तुच्छ। किन्तु यदि वही मनुष्य निजी अंहकार को इस ब्रह्माण्ड के अधीश्वर के संग योग कर दे, तो फिर यही नगण्य तुच्छ-सा जीव ही विशाल, विराट हो जाता है— नमक का पुतला समुद्र हो जाता है।

रात्रि साढ़े दस।

(3)

मॉर्टन इंस्टिट्यूशन। चारतला का श्री म का कमरा। प्रातः साढ़े नौ। श्री म चेयर पर बैठे हैं दक्षिणास्य। सामने श्री म के बिछौने पर

बैठे हैं दो युवक साधु— प्रीति और इन्दु। प्रीति स्टुडेण्टस् होम के सेवक और इन्दु (स्वामी देवात्मानन्द) का कर्मस्थल —देओघर विद्यापीठ।

स्कूल के प्रांगण में "सत्प्रसंग सभा" अभी मात्र शेष हुई है। श्री म इसके प्रतिष्ठाता हैं। प्रति रविवार प्रातः इसका अधिवेशन होता है, स्कूल-शिक्षकों और छात्रवृन्दों का सम्मिलन होता है। धर्म, नीति, शिक्षा, विज्ञान, इतिहास, महापुरुषगणों के जीवन चरित आलोचित होते हैं इसी सभा में। श्री म प्रायः ही उपस्थित रहते हैं। आज शरीर थोड़ा अवसन्न होने के कारण आए नहीं। आज 1 ला ज्येष्ठ, 1331 (बं०) साल, बृहस्पतिवार, शुक्ला एकादशी, 17 दण्ड 8 पल; 15 मई, 1924 ई०।

एक युवक शिक्षक का प्रवेश। उनको देखते ही प्रीति आनन्द से बोल उठे "इनके संग आलाप है खूब।" श्री म ने भी आनन्द से जिज्ञासा की, "लॉ पढ़ने के समय शायद ?"

साधुगण मिष्टिमुख करते हैं। इन्दु की चक्षु परीक्षा के लिए सुबोध गांगुली के घर जाएंगे।

मठ में सम्प्रति "याज्ञवल्क्य प्ले" साधुओं द्वारा अभिनीत हुआ है। इन्दु ने गार्गी की भूमिका ग्रहण की थी। स्वामी शुद्धानन्द इसके प्रेरणा दाता हैं। मॉर्टन स्कूल के भक्तगण भी अभिनय देखकर आए हैं। देओघर और काशी आश्रम में भी वही अभिनय हो चुका है।

श्री म अति आह्लाद से बोले, "चैतन्यदेव के समय भी इस प्रकार देवनाटकों का अभिनय हुआ था। चैतन्यदेव स्वयं जगदम्बा की भूमिका में अवतीर्ण हुए थे।

साधु लोग विदा लेते हैं, श्री म ने इन्दु से कहा, (विद्यापीठ का) वह समस्त कार्य खूब responsible (दायित्वपूर्ण) है, उसके लिए सर्वदा होशियार रहना चाहिए। सुना है एक (छात्र) वृक्ष से गिर कर मर गया है। खूब सावधान रहो।

एक भक्त साधुओं को निकट ही डाक्टर सुबोध गांगुली की बाड़ी ले गए।

अब वेला एक। ब्रह्मचारी भैरव चैतन्य आए हैं बेलुड़ मठ से। संग में एक मदरासी युवक भक्त हैं। युवक श्री म का दर्शन करने आए हैं।

श्री म ने एक सेवक से कहा, उनको कमरे में ले आएं। वे लेटे हुए हैं, शरीर बड़ा अवसन्न है। भक्तों के घर में आने पर श्री म उठ कर बैठ गए बिछौने पर। युवक का परिचय ले रहे हैं और मदरास के विशिष्ट भक्त राम और रामानुज का संवाद लेते हैं।

ब्रह्मचारी ने स्वामी अभेदानन्द सहित काश्मीर, लद्दाख और तिब्बत भ्रमण किया हुआ है। उन सब स्थानों और लोगों की गल्प करते हैं। स्वामी अभेदानन्द श्री रामकृष्ण देव के एक अन्तरंग शिष्य हैं। और फिर रहे स्वामी विवेकानन्द के विशिष्ट सहकर्मी, अमेरिका में। सुदीर्घ पच्चीस बरस अमेरिका में धर्मप्रचार करके अभी अभी देश में लौटे हैं। उनकी प्रेरणा से श्रीरामकृष्ण वेदान्त सोसाइटी प्रतिष्ठित हुई है, कलकत्ता में।

श्री म कहते हैं वे यदि मठ के संग मिलकर कार्य करते तो फिर अच्छा होता। Supplement and complement (परिवेशन और परिपूरण) दोनों ही होते। इनकी energy (शक्ति) है, और उनको समाज की needs (आवश्यकताएं) पता हैं। ये (ब्रह्मचारी) जैसे बतलाते हैं, उससे तो लगता है कि विलायत से लौटे हुए लोग अनेक ही followers (शिष्य) होंगे।

ब्रह्मचारी— मां बेलुड़ में कब कहां थीं? नानाजन नाना प्रकार से कहते हैं।

श्री म— प्रथम थीं राजु गुमाश्ते की बाड़ी में। द्वितीय बार मुर्दा जलाने वाले घाट पर। तृतीय बार, नीलाम्बर मुखुज्य की बाड़ी में। इन तीनों स्थानों पर ही थीं बेलुड़ में। चतुर्थ बार बागबाजार में, एक बड़े गोदाम-घर के ऊपर के कक्ष में, मन्दिर के निकट थीं। नीचे गोदाम पाट की गांठों से पूर्ण था। इसके भीतर से ही ऊपर जाने का रास्ता था। फिफ्थ, गिरीश बाबू की बाड़ी के सामने। और सिक्स्थ,

निवेदिता जहां पर रहतीं उसके निकट। तत्पश्चात् मायेर बाड़ी (उद्‌बोधन) हुआ।

ब्रह्मचारी — बराहनगर मठ में, वा आलमबाजार मठ में क्यों रहती थीं ?

श्री म (विस्मय से)— पुरुषों के संग रहेंगीं ? उनको क्या कोई देख पाता था ? सर्वांग वस्त्रावृता।

अब दर्शकगण विदा लेंगे। अति आग्रह के साथ मदरासी भक्त कहते हैं, "I do not know if I shall be lucky enough to have your Darshans again in my life. So, I am very eager to have your autograph written here in my notebook. I will presesve it as a sacred memento." (मेरे जीवन में पुनः आप का दर्शन लाभ होगा कि नहीं, जानता नहीं। तभी मेरी आन्तरिक इच्छा यही है कि आप दया करके मेरी इस नोट बुक में अपना नाम लिख दें। मैं इसकी पवित्र स्मृतिचिन्हरूप से सयत्न रक्षा करुंगा।)

श्री म ने अपना नाम लिख दिया। उन्होंने विदा ली।

संध्या के सात। श्री म चारतला की छत पर मादुर के उपर बैठे हैं उत्तरास्य। सम्मुख मादुर पर ही बैठे हैं बड़े जितेन्, "हिंलिग बाम" (दुर्गापद मित्र), सुखेन्दु, जगबन्धु, "ब्रुकबाण्ड" (यतीन) प्रभृति। अल्पक्षण परे आए इन्दु महाराज और प्रीति महाराज। वे प्रातः भी आए थे।

संध्या का आलोक आते ही श्री म युक्तकर से प्रणाम करके बोले, "नमाज पढ ली जाए।" आध घण्टा ध्यानान्ते श्री म उठकर अपने कक्ष में जाते हैं, संग में बुला लिया अन्तेवासी को। घर में प्रवेश करके बोले, "साधु आने से घर में कुछ हो तो खाने के लिए देना चाहिए।" ये दोनों बड़े लंगड़े आम काटकर उनको दें। (सुखेन्दु का प्रवेश)। अरे ये तो सुखेन्दु बाबू, एक टुकड़ा चखकर देखिए तो, मिष्टि कि नहीं ? सुखेन्दु बोले, "बेश मिष्टि।" श्री म बोले, ठाकुर देवता, साधुभक्तों को उत्तम वस्तु देनी चाहिए — चखकर देना भला। इसमें दोष नहीं।

अपने लोभ के लिए खाने पर दोष है। यह तो भगवान की सेवा है। साधुभक्त तो नारायण तुल्य।"

साधुगण छत पर बैठकर आम खाते हैं।

श्री म की दृष्टि आकाश पर निबद्ध है। कितने ही क्षणों के पश्चात् बातें करते हैं।

श्री म (साधु और भक्तों के प्रति) — रविबाबू को एक कविता है— "तारार आत्महत्या"। भाव तो सुन्दर है। ऊपर का ही सब देखते हैं। कैसा सुन्दर! किन्तु भीतर जल रहा है। सूर्य का भी वैसा ही है। साधुओं का भी वैसा ही है। साधुओं के भीतर भी सर्वदा जलता है। सर्वदा वे व्याकुल हैं किस प्रकार भगवान का दर्शन हो। किन्तु बाहर से देखने में सब की भांति हंसते हैं, खेलते हैं।

एकजन भक्त (स्वगत) — कैसा अपूर्व कौशल है उपदेश देने का। मर्यादा रख करके साधुओं को आदर्श की बात स्मरण करवा दी। इससे भक्तों को चैतन्य होता है। ये जैसे ढेले से ढेला तोड़ते हैं।

क्षण काल मौन रहकर श्री म पुनः बातें करते हैं।

श्री म (दुर्गापद के प्रति)— आपने शायद सुना नहीं? आज निकला है "वसुमती" में श्री रामकृष्ण-बंकिम-मिलन। बंकिमबाबू से संग जैसे बोले हैं, छोटों के अनेकों के संग भी वैसा ही बोले हैं। किन्तु मनुष्य बड़ा curious (उत्सुक) रहता है यह जानने के लिए कि इनके संग क्या-क्या बातें हुईं। यह जैसे "जैम्स सेटिंग", रत्न-विन्यास। 'जैम्स' को एक काठ के ऊपर रखो और एक प्रकार का दिखेगा। 'गोल्डनफ्रेम' के ऊपर रखो और एक प्रकार का दिखेगा। और फिर black precious stone (दुष्प्राप्य कृष्ण प्रस्तर) के ऊपर इनकी brilliance (उज्ज्वलता) सब की अपेक्षा अधिक होगी। बंकिमबाबू केशवसेन ये लोग इसी प्रकार हैं।

एक ही सूर्य का आलोक मिट्टी पर पड़ने से एक रकम। जल पर पड़ने से अन्य रकम। वृक्ष के ऊपर पड़ने से एक रकम। किन्तु कांच पर सब से उज्ज्वल होता है।

इनके संग में जो बातें हुई हैं इनसे समाज का खूब उपकार होता है।

श्री म (जगबन्धु के प्रति)— आज जो निकला है "वसुमती" में, इन्हें सुना दें।

पाठक पढ़ने के लिए प्रस्तुत हुए। किन्तु श्री म अन्यमनस्क हो गए। क्लेरिओनेट का सुमधुर सुर आ रहा है पास की एच. बोस की बाड़ी से। श्री म का मन उसी सुरमाधुर्य में विमग्न है।

श्री म (विमुग्ध होकर)–आहा, आहा। सुनिए वही, श्याम की बंसी ध्वनि, इसको ही वृन्दावन भावने से हो जाय। यही चांद और यही सुर। हमारे तारागण अभी भी निकले नहीं। (सहास्य) और हमारा यहा चांद (सब का उच्चहास्य)! अजी हां, हमारा ही चांद। (जगबन्धु के प्रति) ठहरो, बंसी बज रही है। अब क्या पढ़ना होगा फिर?

श्री म एक मन से बंसी की तान सुनते हैं— "आमार-कुटीराणी से जे अमार हृदय राणी।"

श्री म (साधुओं के प्रति)— स्वदेशी गान गा रहा है। मोड़ फिरा देने से ही हुआ। 'विद्यासुन्दर' यात्रा (गीति-नाटिका) सुनकर ठाकुर ने कहा था, मोड़ फिरा दो। यात्रा गान लोग सुनते हैं आमोद के लिए। जो पार्ट लेते हैं, उनका भी आमोद। दक्षिणेश्वर नाटमन्दिर में हुआ था रात को। सुबह ठाकुर के घर में प्रणाम करने गया। जो 'विद्या' बना था, उसको ठाकुर ने कही थी यही बात—मोड़ फिरा दो। उसका पार्ट सुनकर मुग्ध हुए थे। बोले थे, जागतिक ऐसी सब शक्ति से ही ईश्वर दर्शन होता है, मन का मोड़ फिरा देने से।

श्री म (भक्तों के प्रति)— यही जो पुत्र कन्या की सेवा इससे भी ईश्वर लाभ होता है— इनके भीतर ईश्वर रहते हैं उनकी ही सेवा करता हूँ, इस भाव से करने पर। तब फिर मोहबन्धन का भय रहता नहीं। "ठाकुर-बाड़ी" के पास एक दो-एक बरस का लड़का मर गया है। आह, मां का कैसा क्रन्दन, पत्थर गल जाता है सुनकर। यही प्राणघाती मोह चला जाता है यदि ईश्वर की सेवा सोचकर करें।

इस को ही कहते हैं, 'मोड़ फिरा देना'। जिस विष से प्राण जाता है, अभिज्ञ डाक्टर के हाथ में वही विष प्राणदान करता है।

श्री म (सब के प्रति)—अवतार आते हैं यही व्याकुलता सिखाने। कोई कोई बाह्य मौखिक आवेग दिखाकर कहता है, आहा कैसा beautiful flower (सुन्दर फूल) उन्होंने किया है ! आहा कहने से ही क्या सब हो गया ? त्रैलोक्य सांन्याल को धमक दी थी ठाकुर ने। ठाकुर बोले, मां ने मुझे दिखा दिया है फूलों का एक एक पेड़ मानो फूलों का एक एक 'तोड़ा' है— विश्वनाथ की सेवा में समर्पित। यह बात सुनकर त्रैलोक्य सांन्याल बोल उठे, "आहा कैसा सुन्दर दर्शन !" ठाकुर झट धमक देकर बोले, अरे भाई, वह मुख की बात नहीं है। मां ने मुझे धप् करके दिखा दिया आखों से सामने।

यही जो है common parlance (मौखिक वाणी) इसके ऊपर और एक कुछ सिखाने के लिए आते हैं अवतार। वे आकर बोलते हैं, ईश्वर हैं प्राण। हमारा अति अपना जन—हमारी अन्तरात्मा। वे ही हैं दण्डदाता पिता और फिर स्नेहमयी माता। वे ही सहाय-सम्पद् बल-भरोसा, सर्वस्व वे। उनको पहले जानो, तो फिर इस दुःखमय संसार में परमानन्द में रहोगे। मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ कर्तव्य है उनको जानना। व्याकुल होकर उन्हें पुकारना— शिशु की भांति। वे दर्शन देकर कृतार्थ करेंगे।

स्थूल, सूक्ष्म, कारण—मनुष्य के ये तीन ही शरीर हैं। इनकी रक्षा के लिए जो जो प्रयोजनीय है सब ईश्वर ने कर रखा है। यही जो हवा ही देखते हो इसके द्वारा स्थूल शरीर की रक्षा होगी। जभी इसे बना कर रखा हुआ है पहले से ही। वैसे ही जल, अग्नि, सूर्य, चन्द्र, वर्षा—सब करके रखे हुए हैं हमारी रक्षा के लिए। और फिर मातृस्तन में दूध, शस्य, फलफूल कितना क्या क्या ! जभी उनको कहते हैं प्राणों के प्राण। ये सब ही मातृस्तन का दूध। सर्वदा हम पान कर रहे हैं।

ट्रामकार का एक योगसूत्र है। उसका नाम है ट्रॉली। इलैक्ट्रिक तार के संग इसी ट्रॉली का योग रहता है। तभी गाड़ी चलती है।

गाड़ी चलती नहीं, क्यों, क्या हुआ ? ट्रॉली जो अलग हो गई है। ट्रॉली अलग होने से फिर गाड़ी नहीं चलती। हम वैसे ही सर्वदा उनके संग युक्त हैं, इसी योगसूत्र द्वारा। हवा, जल, खाद्य ये सब ही योगसूत्र।

कॉलेज स्क्वेयर या बीडन स्क्वेयर में जैसे लेक्चर देते हैं बाबू लोग — अवतार आकर भी क्या वही करते हैं ? नहीं, वैसे नहीं। कैसे ईश्वर को पाया जाए, वही पथ ही दिखा देते हैं। व्याकुल जो हैं बहुत, थोड़ों को ईश्वर दर्शन करा देते हैं। निज सर्वदा ईश्वर के संग युक्त रहते हैं। कैसा beautiful flower कैसा सुन्दर फूल, यह बात बोलने नहीं आते वे। उनकी बातें प्राणों की बातें हैं।

अश्विनी दत्त के पिता थे सब जज। रिटायर होकर ठाकुर के पास आए थे। स्वभाव बहुत ही भला था। लक्षण अच्छे देखकर ठाकुर अपने निकट रख लेते थे अन्ततः तीन दिन। उनको भी तीन दिन रखा था। एक दिन घरभरा लोग बैठे थे। वे दूसरी बातें करने लगे। ठाकुर इतनी देर समाधि में थे। व्युत्थित होने पर ये सब बातें कानों में आते ही हाथ जोड़ कर कहने लगे, बाबू, मुझे ईश्वर की कथा बिना अन्य कथा अच्छी नहीं लगती।

अवतार आकर आंख में उंगली देकर दिखा देते हैं। हमारे सब के सब शरीरों के चालक ही वे हैं। एक ही नहीं, तीन-तीन शरीरों को वे ही चलाते हैं।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति) — जल में डुबाकर पकड़े रखने पर जैसे होता है, वैसे व्याकुल थे ठाकुर ईश्वर के लिए। एक बार नहीं, सारा जीवन ही यही एक ही अवस्था। डिमस्थेनिस जब बातें कहते तब सब ही कहते — Let us march against Phillip. (चलो, सब फिलिप के विरुद्ध अस्त्रधारण करें।) उनकी वाणी में अन्तर का आवेग इतना था ! और सिसरो की बातें सुनकर भी लोग कहते— What a splendid orator (कैसा अदभुत वाग्मी !) एक जन की वाणी से मरण प्रण करके शत्रु सम्मुखीन होते हैं। और एकजन की वाणी सुनकर केवल तालियां बजाते हैं। ये दोनों ही क्या एक हैं ? एक प्राणों की वाणी और एक मौखिक, आवेग मात्र।

एक का पुत्र मर गया है। उस समय जाकर यदि कोई कहे अरी बहन, तुम्हारा पुत्र बड़ा सुन्दर था। यह बात क्या मां सुनेगी? या इससे उसका शोक थमेगा? शोकार्त्त मां की भांति थे ठाकुर, ब्रह्म में निमग्न सारा ही जीवन।

श्री म का नैश भोजन आया ठाकुर-बाड़ी से। अन्तेवासी ने गृह में प्रवेश करके आहार का स्थान प्रस्तुत कर दिया। श्री म आहार करने बैठे हैं। छत पर भक्त सभा में श्रीरामकृष्ण-बंकिम-संवाद पाठ होता है। अन्तेवासी ने कमरे से झांककर देखा पाठक — प्रीति महाराज। पाठ के समय आए अमृत, बलाई, विनय और छोटे जितेन। श्री म आहार समाप्त करके पुनः जाकर छत पर बैठ गए। पाठ शेष हुआ रात्रि दस बजे।

साधु भक्तगण विदा लेते हैं। श्री म सबसे बोले, "आप लोग भावते भावते घर जाएं, ठाकुर का यही महावाक्य—जीव का कर्तव्य उनके शरणागत होना, और जिससे उनका लाभ हो, दर्शन हो, इसके लिए व्याकुल होकर उनके पास प्रार्थना करना।"

अब रात्रि दस।

अगले दिन प्रातः आठ। श्री म सीढ़ी के कक्ष में बैठे हैं। एक भक्त ने पूछा कि, "होग मार्केट में" कितनी ही मांस की दुकानें हैं, उन में कितना पशुवध होता है, इससे क्या पाप होगा उन्हें? आज मैस में इस विषय पर आलोचना हुई थी। श्री म ने उत्तर दिया, "पाप नहीं करता हूँ यह बोलने से ही तो नहीं होगा। एक जन के भीतर यदि पाप करने की possibility सम्भावना रहे, तो भी पाप हुआ।" केशव सेन यही बात कहते थे।

रात्रि की बैठक बैठी है छत पर। श्री रामकृष्ण-बंकिम-संवाद सुनने के लिए भक्तों की खूब भीड़ है। नित्यकार भक्त सब ही आए हैं। अधिक आए हैं स्टुडेण्टस् होम के स्वामी निर्वेदानन्द, विद्यापीठ के स्वामी सद्भावानन्द और सुरपति और संगी। एक भक्त ने श्री राम कृष्ण-बंकिम-संवाद पढ़कर सुनाया प्रथम। तत्पश्चात् कथामृत की "देवी चौधुराणी" पाठ हुआ। बड़े जितेन ने जिज्ञासा की, "वह भक्त कौन है,

जिसके संबंध में ठाकुर ने कहा है तुम्हारे दोनों ही भाव हैं— स्वस्वरूप की चिन्ता करना ही चाहे हो, और फिर सेव्य-सेवक का ही भाव हो चाहे। प्रह्लाद की भांति ऊंचा भाव— ज्ञान भक्ति एकाधार में।" श्री म ने मुस्करा कर उत्तर दिया— "वह एकजन है। अनेक जन ही गोपन में रहना चाहते हैं कि ना। उनके लिए असाध्य क्या ? उनकी कृपा से सब होता है। भक्तों को साकार निराकर दर्शन हुआ है।"

जान पड़ता है यही भक्त ही तो हैं श्री म स्वयं।

मॉर्टन स्कूल, कलकत्ता।
16 मई, 1924ई०
2रा ज्येष्ठ, 1331 (बं०) साल; शुक्रवार, शुक्ला द्वादशी।

चतुर्दश अध्याय

समाधि मनुष्य की सहजावस्था

(1)

आज प्रभात में श्री म ने अन्तेवासी को विलिंगटन स्क्वेयर श्री बलाई चंद मल्लिक के पास भेजा। वे एंड़देह के गदाधर की 'पाटबाड़ी' के अधिकारी हैं। श्री महाप्रभु नित्यानन्द के प्रिय अन्तरंग शिष्य थे दास गदाधर। यह पाटबाड़ी उनका ही साधन और समाधि पीठ है। कालना के सिद्ध वैष्णव संन्यासी श्रीभगवान दास बाबा जी के आदेश से यह स्थान निर्मित हुआ है। यह स्थान खूब निर्जन है— एक दम गंगा के पूर्व तट पर अवस्थित। भारी प्रशान्त भाव उद्दीपक। युगपीठ दक्षिणेश्वर मन्दिर के निकट।

युगावतार भगवान श्रीरामकृष्ण देव इस पीठ-भूमि में प्रायः ही आया करते। कभी कभी संग में ले आते विजयकृष्ण गोस्वामी प्रभृति भक्तगणों को। मन्दिर के द्वार पर श्रीचैतन्य संकीर्तन की बृहत् प्राचीन छवि है। यह छवि भक्तों को दर्शन करवाते। कभी कभी वे छवि देखकर भावस्थ हो जाते।

श्री चैतन्य भाव में विभोर होकर नाम संकीर्तन करते करते अग्रसर हो रहे हैं नवद्वीप में सुरधुनी के तीर पर। गाभीगण (गौवें) आहार छोड़कर विमुग्ध हुई चैतन्यदेव के दर्शन करती हैं। नौका के नाविकगण हाथ से चप्पू छोड़कर अवाक् हुए ताक लगाए हैं। स्नानरता कुलवधुगण की कलसी तैर रही है — उस ओर लक्ष्य नहीं। मन निमग्न श्री चैतन्य रूपसागर में। एक पवित्र दैवी-मादकता से विमोहित समग्र प्रकृति, नरनारी, पशुपक्षी सब।

श्री म की एकान्त इच्छा है इस पवित्र पीठ में गंगातट पर कुछ काल वास करें। अन्तेवासी के मल्लिक महाशय से बोलते ही वे आनन्द से उत्फुल्ल होकर कहने लगे, "मैं धन्य हुआ। महापुरुष की मेरे ऊपर इतनी कृपा ! मैं उनके श्रीचरण दर्शन करने जाऊंगा। और उनके रहने का सब बन्दोबस्त कर दूंगा। मेरा कुल धन्य हुआ।" बलाई बाबू आनन्द और उत्साह में उन्मत्त प्रायः।

अपराह्न तीन। शनिवार के भक्तगण एक एक आकार उपस्थित होते हैं। भाटपाड़ा के ललित राय, 'भवरानी' और संगी, लक्ष्मण, वसन्त और सुशील और 'उपनिषदं भो ब्रूहि' —भक्त छत पर बैठे हैं। श्री म निज कक्ष से आकर चेयर पर बैठ गए चार बजे के पश्चात्। उन्होंने ललितबाबू के हाथ में इसी मास की "वसुमती" दी। ललित श्रीरामकृष्ण-बंकिम-संवाद सुनाते हैं।

पाठक पढ़ते हैं — श्री राम ने बंकिम से पूछा कि आप क्या कहते हैं, मनुष्य का कर्तव्य क्या है ? बंकिमबाबू ने हंसते हंसते उत्तर दिया— जी, यदि वैसा कहें, तो आहार, निद्रा और मैथुन हैं। श्री रामकृष्ण, विरक्त होकर बोले— "एः। तुमि तो बड़ छयाचरा।" (तुम तो बड़े छेंछरे हो।)

श्री म— यही जो बंकिम बाबू को हक कथा (सत्य वाणी) सुना दी है, इसमें क्या फिर विद्वेष भाव है ? नहीं; वह नहीं। उनके कल्याण के लिए कहते हैं। और सकल के कल्याण के लिए कहते हैं। ये लोग हुए type of man (नरश्रेष्ठ), इनकी बात सब सुनते हैं। जभी इनको यदि दबाकर सीधा कर दें तब अपर लोगों का मन भी ठीक हो जाएगा। जगत् के कल्याण के लिए महापुरुष एक एक बार अप्रिय सत्य भी प्रयोग करते हैं — जैसे डाक्टर छुरी से काटता है। इससे कल्याण होता है। बंकिम बाबू जाते समय परिपूर्ण शांति लेकर गए।

पाठ चलता है।

श्री म (भक्तों के प्रति)— यहीं सुनिए, ठाकुर बोलते हैं जो परोपकार करता है वह भी भला है। उसकी अपेक्षा भला है शुद्ध भक्त। ईश्वर वस्तु और सब अवस्तु, यह बोध होने पर शुद्ध होता है। वह

जाना जाता है, संसार अनित्य, ईश्वर सत्य— नित्य।

कहते हैं, इस संसार में मनुष्य आया है भगवान-लाभ-जन्य। इसे छोड़ अन्य काज करने से दुःख बढ़ जाता है— जन्म मरण चक्र में पड़ना पड़ता है बार बार। "नोचेदिहावेदीन्महती विनष्टिः," वेद कहता है।

जिनका शेष जन्म वे ईश्वर जन्य पागल। उनके पास आगे ईश्वर परे संसार। शुद्ध भक्त अन्तर में समझता है आगे ईश्वर लाभ, परे संसार का ज्ञान, संसार करना। वे विद्या माया का आश्रय लेते हैं। अपर लोग सोचते हैं पहले संसार का ज्ञान लाभ करना चाहिए, परे ईश्वर। ये अविद्या माया के अधीन हैं। अनेक जन्मों में संसार दुःखमय बोध होगा, तब ये विद्यामाया का आश्रय लेंगे। गीता में यह बात है— अशुभ आसुरी योनि में उनका जन्म होता है। तत्पश्चात् दैवी सम्पद् लाभ करता है। तब बुलडॉग (Bull dog) की भांति दांत से गड़ाकर पकड़े रहता है। और अविद्या ले जाती है संसार भोग में।

पाठ चलता है।

श्री म (सकल के प्रति)—- यही देखिए, भलाई के लिए जो कड़ी बात सुना दी, इसका प्रमाण है। बंकिमबाबू निज ही पूछते शुद्धा भक्ति कैसे होती है। और ठाकुर से अनुरोध करते हैं उनके कुटीर में पदार्पण करने के लिए ठाकुर का फिर जाना हुआ नहीं - गिरीश बाबू और हमें भेज दिया था बंकिमबाबू के सानकी भांगा निवास स्थान पर।

ठाकुर कहते हैं, ईश्वर के लिए व्याकुल होने से ईश्वर-दर्शन पर्यन्त होता है— भक्तिलाभ की तो फिर बात ही क्या! कैसा व्याकुल ?— जैसे शिशु मां को छोड़ कुछ भी जानता नहीं, वैसी व्याकुलता चाहिए।

और व्याकुलता होती है साधुसंग में। साधुगण सर्वस्व त्याग कर उनके लिए व्याकुल हैं। जभी नित्य साधुसंग दरकार।

आप लोग धन्य ! यही जो साधुसंग करते हैं, मठ में जाते हैं। इससे ही भक्ति-लाभ होता है।

पाठ समाप्त हुआ। वही "वसुमती" श्री म के हाथ में है। वे पन्ने उलटते हैं और प्रबन्धों का नाम पढ़ते हैं। एक प्रबन्ध चैतन्यदेव के संबंध में है। कहते हैं, यह तो readable (पठनीय) है। शनिवार के भक्तों ने विदा ली।

संध्या हो गई है। भृत्य तीनतला से एक हरिकेन जलाकर ले आया। श्री म हाथ जोड़कर प्रणाम करके उठ गए। भक्तों से बोले, "आप लोग अल्प ध्यान कीजिए।" उन्होंने हरिकेन को हाथ में लेकर स्वीय कक्ष में प्रवेश किया। घर में दीवार पर देवदेवी की छविएं टंगी हुई हैं। और श्रीरामकृष्ण गोष्ठी (धर्मपरिवार) की छवि और अन्य महापुरुषगणों की छविएं हैं। श्री म सत्र को आलोक दिखाते हैं। बीच बीच में बोलते हैं, "हरि बोल, हरि बोल।" हृदय का अन्तःस्थल भेद करके यह हरिध्वनि आ रही है — कैसी मधुर। कैसी शांतिपूर्ण ! अब अपने बिछौने पर बैठकर ध्यान करते हैं।

छत पर नित्यकार भक्तगण आकर एकत्र होते हैं। शुकलाल आए हैं। उनके हाथ में मां काली का "सन्देश" प्रसाद प्रचुर। उनके संग आए मनोरंजन। बड़े जितेन, ललित बैनर्जी, विनय, बलाई, बड़े अमूल्य, मणि, छोटे रमेश, सुखेन्दु, जगबन्धु प्रभृति भक्तगण मादुर पर बैठे हैं।

श्री म निज घर से आकर पुनराय छत पर बैठे हैं। भक्तगण प्रसाद खाते हैं। ललित राय प्रसाद हाथ में लेते ही उठ खड़े हुए— भाटपाड़ा जाएंगे। अब प्रायः आठ।

एक युवक आए हैं नूतन। वह बीच बीच में कहते हैं, ईश्वर की बात कुछ सुनाइए। श्री म उसके साथ फष्टि-नष्टि (हंसी) करते हैं। श्री म के चक्षुमुख पर बालक की दुष्ट हंसी है। श्री म बोले, "आहा, ये बड़े भक्त लोग। अवश्य भक्तों के लिए सुराही में जल ले आएंगे— सब ने प्रसाद खाया है।"

युवक सुराही लेकर जल लेने नीचे के तल पर गए। श्री म जगबन्धु से बोले, "यह एक क्लास के लोग— 'उपनिषदं भो ब्रूहि' — (उंगली द्वारा आकाश, वायु, चन्द्रमा, तारका प्रभृति इंगित करके)

आहा, ये ही तो सब मूर्तिमान उपनिषद् हैं। इन सबको देखने से ईश्वर का स्मरण हो आता है। हम उनकी सन्तान—'अमृतस्य पुत्राः'। ईश्वर सत्य, संसार अनित्य—दो दिन का। जीवन के सकल कार्य के भीतर यही बात ही स्मरण रखना। यही तो उपनिषद्।"

युवक जल लेकर लौटे।

श्री म (सस्नेह युवक के प्रति) — ये भी सब साधु सफेद कपड़ा पहने। केवल क्या लाल कपड़ा पहनने से ही साधु हो गया? इनकी सेवा करने से भगवान की सेवा ही करना हुआ। ठाकुर बोलते थे कि ना, 'भक्त भागवत भगवान एक।'

भक्तगण जलपान करते हैं।

श्री म (शुकलाल के प्रति) — यदि कहो समाधि होती नहीं क्यों? उसका उत्तर — यह निश्वास बन्द होता नहीं क्यों? अर्थात् जब तक निश्वास चलता है तब तक sense world (बाह्य जगत्) के संग योग है। यह निश्वास चलता है, इसी कारण मन बुद्धि अंहकार कार्य करते हैं। निश्वास बन्द होने पर, निश्वास स्थिर होते ही समाधि। अतीन्द्रिय के दर्शन करने से निश्वास बन्द हो जाता है। निश्वास ही तो हुआ इन्द्रियग्राह्य जगत् का व्यापार। यह समाधि ही मनुष्य की normal state (साधारण अवस्था)। इसीलिए मनुष्य तब होता है प्रशान्त—स्वरूप में अवस्थित।

श्री म मस्त हुए गाने लगे— कबे समाधि होबे चरणे?

बड़े अमूल्य— उसके लिए ही क्या प्राणायाम करते हैं— यही निश्वास बन्द करने के लिए?

श्री म— हां। प्राणायाम तो है artificial process, अस्वाभाविक अवस्था। मन स्थिर होता नहीं। जभी चेष्टा करता है नाक दबा-दबू कर, कान दबा-दबू कर यदि कुछ कार्य हो। यह हुआ putting the cart before the horse (घोड़े के आगे गाड़ी जोतना)। ठाकुर और भी सीधा पथ दिखा गए हैं। ईश्वर में प्यार आने से मन अपने आप ही स्थिर हो जाता है। यही तो है natural path (स्वाभाविक पथ), सहज पथ।

(व्यंग्य स्वर में, विलम्बित उच्चारण करके)— के—म—न—क—रे—हो—बे ? (कैसे होगा ?)

नेवला बैठा खूब प्राणायाम कर रहा था। ज्योंहि पूंछ में एक ईंट बान्ध दी गई त्योंहि शुरु हो गई जितनी भी सब गड़बड़।

जभी ठाकुर constructive way point out (संगठनात्मक उपाय निर्देश) कर गए हैं। यह पथ ही normal (स्वभावसुन्दर)। प्राणायाम श्राणायाम, ये सब abnormal (स्वभावविरुद्ध) पथ। उससे तो फिर समाधि होगा नहीं, शुद्ध सत्त्व बिना हुए। शुद्ध सत्त्व अर्थात् जिस अवस्था में मनुष्य ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ नहीं जानता। ठाकुर ने बंकिम बाबू से यही बात कही थी, ईश्वर के लिए व्याकुलता चाहिए। जैसे बालक होता है मां के लिए व्याकुल। जैसे जल में डुबाए रखने पर प्राण छटपट करता है, वैसी व्याकुलता! साधुसंग से, साधुसेवा से होती है व्याकुलता। साधुगण सब कुछ त्याग करके ईश्वर के लिए व्याकुल हैं। उनके पास जाने से यही व्याकुलता संचारित होती है, सहज में।

शास्त्र में है यह सब नाक दबाने-दबूने की बातें। किन्तु ठाकुर सीधा पथ, सहज पथ, सुलभपथ दिखला गए हैं। साधुसंग करो, क्रमशः ईश्वर में प्रीति आएगी। तब मन आप ही स्थिर हो जाएगा। अपने घर आने पर साधारणतः मनुष्य का मन स्थिर होता है। वैसे ही भक्तों का मन स्थिर भगवान के निकट जाने पर। क्यों? क्योंकि, वही जो है भक्तों का अपना घर। ईश्वर ही भक्तों का home (वासस्थान)।

अमहर्स्ट स्ट्रीट से एक बैण्ड पार्टी जा रही है दक्षिण दिशा में।

श्री म—वह सुनो बाजा बज रहा है। एक जन खाली 'पों' पकड़े हुए है। इसको शायद कहते हैं—बैग पाइप। और अन्य जन सब नाना राग-रागिणी पर आलाप करते हैं। ऐसे ही एक भाव एक सुर आश्रय करके रहने पर अन्य सब भाव आप ही आते हैं। ठाकुर जभी तो कहते, संसार में एक संबंध पक्का करके रहो उनके संग। शांत, दास्य, सख्य, वात्सल्य मधुर ये सब भाव हैं। इनमें से एक चुनकर वही सम्पर्क पक्का करना चाहिए ईश्वर के संग में। एक ही भाव लेकर दांत गड़ाए पड़े रहो।

बाकी सब वे ही कर देंगे।

श्री म के हाथ में "वसुमती" है इसो मास की। इसमें ठाकुर की एक अति सुन्दर छवि निकली है। श्री म भक्तों को वह दिखलाकर कहते हैं, "पुस्तक में लिखा हुआ सब स्मरण नहीं रहता। यही छवि ही स्मरण रहेगी। कोई जड़वाकर रखे, अच्छा हो। हम सभा समिति में जाकर एक मिनट खड़े होकर देखकर आ जाते हैं। लेक्चर स्मरण नहीं रहता– सीन ही मन में रहता है। ब्राह्म समाज में जाकर भी वैसा ही करते हैं और गान हो तो सुनते हैं। यही चालकी करके ही रहते हैं हम। कौन सुने इतनी सारी बातें— waste of time (समय का अपव्यवहार केवल)।

श्री म कुछ काल नीरव रहकर भक्तों के संग रंगरस उपभोग करते हैं।

श्री म (प्रच्छन्न हास्य से) — 'बांगाल बड़ो हियान्*।' (सहास्य) कोई है कि ना बांगाल*?

प्रवीण भक्त शुकलाल—अनेक मोशाय !

श्री म (कल्पित विस्मय से)—अब भी है "बांगाल" का अभिमान ! ना, वे शहरी हो गए हैं।

श्री म (प्रशान्त गाम्भीर्य से) — "चिदानन्दरूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्" इस प्रकार शंकराचार्य कृत 'निर्वाणाष्टकम्' में है। ठाकुर ने कह दिया है : चिदानन्दरूप: दासोऽहम् दासोऽहम्।

बांगाल भी रहेगा नहीं, 'मैं शहरी' भी रहेगा नहीं। मैं बंगाली, मैं इन्डियन, यह भी रहेगा नहीं। मैं मनुष्य, मैं मन बुद्धि, देहवान— ये सब कुछ भी रहेगा नहीं। रहेगा केवल 'दासोऽहम् दासोऽहम्'। मैं भगवान का दास, पुत्र, सेवक, सन्तान— मात्र यही रहेगा। वेद में जभी ऋषियों के मुख द्वारा बोले हैं भगवान— मनुष्य तो 'अमृतस्य पुत्रा:' है।

---

*हियान् = पूर्व बंग (बंगला देश) में सियाना को हियान् कहते हैं।

*बांगाल = पूर्वबंगवासी "बांगाल" और पश्चिम बंगवासी "घटी" के नाम से परस्पर परिचित हैं।

अमृत का अर्थ भगवान की, ब्रह्म की सन्तानें— children of Immortal Bliss.

भृत्य श्री म का रात्रि का आहार लेकर आया ठाकुर-बाड़ी से। अन्तेवासी उसे रखने के लिए कक्ष में गए। श्री म ने भी संग ही संग प्रवेश किया। श्री म ने अन्तेवासी से कहा, "ये 'संदेश' और तरबूज ठाकुरों के भोग में लगेंगे— ठाकुर-बाड़ी पहुंचाना होगा।" पुनराय छत पर आकर बातें करने लगे।

श्री म (भक्तों के प्रति)— ठाकुर बताते, जीव की समाधि होने से शरीर इक्कीस दिन ठहरता है। हम जो बचे हुए हैं, यही तो है प्रमाण कि हमारी समाधि नहीं होती। अब हमारा उपाय क्या ? हम करें क्या ? जभी भगवान मनुष्य शरीर धारण करके आते हैं, अवतार होकर नरलीला करते हैं। भक्तगण इसी नरलीला के संगी होते हैं। पीछे जो आते हैं वे भी इसी नरलीला में विश्वास करके उसी लीला का अनुकरण और अनुसरण करते हैं। जीवन्त रहते हुए, जाग्रत रहते हुए भी प्रायः समाधि का आनन्द उपभोग होता है। इससे अखण्ड सच्चिदानन्द वाक्यमन के अतीत जो हैं वे ही अभी अभी मात्र नररूप में आकर दक्षिणेश्वर में यही अवतार लीला कर गए हैं। हम धन्य हैं इस लीला में संगी हो पाए हैं। आप लोग भी धन्य हैं यह दिव्य लीला-कथा हमारे मुख से सुन पा रहे हैं, विश्वास करते हैं, उसी लीला का अनुसरण करते हैं।

भगवान का जितने भी प्रकार का दान है उसमें सबसे बड़ा दान है अवतार लीला।— The greatest gift of God to man is this Avatara. अवतार लीला का चिन्तन करना हुआ ध्यानयोग का सहज पथ। निर्जन में निराकार परब्रह्म का चिन्तन करने से जो फल होता है, वही फल ही लाभ होता है अवतार के संग में लीला सहचर होने से। जीवन्त मनुष्य बनकर आकर ठीक मनुष्य का व्यवहार! इसी दिव्य व्यवहार की बात कहने से, सुनने से अथवा देखने से मन सहज ही भगवान में निर्विष्ट होता है और जभी आनन्द लाभ होता है

सहज ही। जीवित रहते हुए भी आनन्द और फिर मरने पर भी आनन्द भक्तों को।

इसीलिए भगवान की इतनी सब अवतार लीलाएं हैं —रामलीला, वृन्दावन लीला, क्राइस्ट-लीला, गौर-लीला, रामकृष्ण लीला।

जिन्होंने अवतार का दर्शन तो नहीं किया है, किन्तु उनकी वाणी सुनकर विश्वास करते हैं वे भी श्रेष्ठ मनुष्य हैं—क्राइस्ट ने यही बात कही थी — 'blessed are they that have not seen, and yet have believed !'

श्री म—ठाकुर कहते, मैं देख रहा हूं, मां ही सब होकर रह रही हैं — सब वे ही। वही यदि हो तो इच्छा करने मात्र से ही एकजन सर्वदा योग में रह सकता है। मनुष्य की दृष्टि में तो यही सब पड़ेगा — मनुष्य, पशुपक्षी, वृक्षलता — समग्र प्रकृति। उसी के संग यदि मनुष्य भावना कर सके ठाकुर का यही महावाक्य, वेदवाक्य – 'मां-इ सब होये रोयेछेन,' इससे फिर ये सब ही क्रम-क्रम से मां–मय, सच्चिदानन्दमय हो जाएंगे। यह भी है योग का सहज उपाय। ठाकुर का यह महावाक्य भी है वेद — revelation.

श्रीकृष्ण ने अर्जुन को यही उपदेश ही दिया था। चन्द्र, सूर्य, हिमालय, गंगा—ये सब ही मैं हूँ। बड़ों बड़ों के नाम उल्लेख किए थे मात्र। यदि इनमें श्रीकृष्ण, अर्थात् ईश्वर भावना कर सकता है तो सर्वदा योग में रहेगा। योग है खूब बढिया—'तस्मात् योगी भवार्जुन।'

श्री कृष्ण गीता में जब जिस विषय पर बोलते हैं उसी को ही खूब बड़ा करके उठाते हैं— खूब importance (प्राधान्य) देते हैं।

श्री म (बड़े जितेन को लक्ष्य करके) — अगडम-बगडम बोलने से क्या फिर योग होगा? (कुक्षिभेदी गंभीर हास्य से) एकजन को ठाकुर ने कहा था, तुम्हारी फड़र-फड़र कब जाएगी? — When are you going to stop? ठाकुर एक एक बात कहकर भक्तों को खूब हंसाते–हास्यरस की मानो बाढ ला दिया करते।

बड़े जितेन (अपराधीवत्) — मोशाय, आज promise (संकल्प) करके आया था कि बोलूंगा नहीं, किन्तु बात रख नहीं सका। (पालन नहीं कर सका)।

श्री म (सहास्य) — The cat is out of the bag. (अब तो मन की बात ही प्रकट हो गई।) (सब का उच्च हास्य)।

श्री म (सब के प्रति) — चुप करके रहना बड़ा अच्छा है। वह न हो तो रसभंग हो जाता है। पांच मिनट बैठकर मां का दूध पीना, मन स्थिर करना, और वह भी नहीं हुआ।

बड़े जितेन (अन्तेवासी को दिखलाकर) — ये भी जानते हैं अनेक बातें, किन्तु कहते नहीं।

श्री म — बातें न करना खूब भला। चुप करके बैठे रहना ही भला। ठाकुर बोलते, पांच मिनट ईश्वर चिन्तन करने से changed man (नूतन मनुष्य) हो जाता है। पांच मिनट उनका चिन्तन करना अर्थात् मां का दूध पीना। जभी वे भक्तों को निर्जन में ध्यान करने के लिए कहते। क्यों कहते निर्जन में ध्यान करने के लिए ? इसका अर्थ यही है कि मैं जो बोलता हूँ वह तो समझ नहीं सकते, इसीलिए ध्यान करें। निर्जन में चिन्तन करने पर समझ सकेंगे धीरे धीरे।

बाजे के बोल मुखस्थ करना खूब सहज। किन्तु हाथ में जो लाना होगा, उसके लिए अभ्यास आवश्यक। यदि बोलो, लोग ठट्ठा करेंगे, इसीलिए उन्होंने सिखा दिया 'लोक-पोक'। जो भगवान के पथ के प्रतिबन्धक वे त्याज्य—वे तुच्छ, पोक (कीड़े) की भांति।

धारणा करना बड़ा कठिन। धारणा माने पकड़े रखना—अपने जीवन में apply (प्रयोग) करने की चेष्टा। मन को क्या स्थिर रख सकता है एक ही वस्तु में, एक ही भाव में ? सर्वदा घूमता है। कभी कभी विलायत, कभी अफ्रीका, कभी अमेरिका और फिर कभी कभी अन्य जन्म में, सर्वदा दौड़ता है। तभी समय नहीं पाता। और फिर जब समय होता है तब भी करता नहीं, अभ्यास छोड़ दिया है।

एक जन अन्धेरे घर में है। अब घर के बाहर आएगा। द्वार खोजता है हाथ से, मिलता नहीं। फिरते फिरते जब द्वार के निकट

आया तो बगल में खुजली उठ पड़ी। खुजलाते खुजलाते फिर सामने अल्प अग्रसर हो गया। द्वार फिर मिलता नहीं। फिर घर से बाहर हो सका नहीं।

श्री म ने उठकर निज कक्ष में प्रवेश किया। आहार करेंगे। और विनय और जगबन्धु के हाथ "सन्देश" और बड़ा एक तरबूज ठाकुर-बाड़ी भेज दिया, कल ठाकुर के भोग में लगेगा। जगबन्धु सामने के मेस में आहार करके आ गए।

अब रात्रि दस। श्री म आकर फिर छत पर बैठे, फिर बातें होने लगीं। कोई कोई भक्त बैठे हैं।

श्री म (बड़े जितेन के प्रति) — ठाकुर कहते, पांच मिनट ध्यान से ही changed man (उन्नततर मनुष्य) हो जाता है। पांच मिनट मां का स्तन पान करना क्या कम ?

एच. बोस के गृह से बंशी की ध्वनि आ रही है। श्री म का मन है उसी ध्वनि में निमग्न। और फिर कथा प्रसंग।

श्री म (भक्तों के प्रति)— ऐसे ही बंशी बजाया करते श्री कृष्ण। यहां पर बैठे हुए स्मरण करने से ही वृन्दावन का उद्दीपन हो जाता है। वही चांद, वही वंशी और वैसी रात— ठीक जैसी मधुयामिनी।

श्री कृष्ण उद्धव को कहते हैं हाथ पकड़कर, जाओ उद्धव, तुम उनका संवाद लाओ जाकर। बहुत दिनों से उनका संवाद ले नहीं सका हूं। मथुरा में नाना कार्यों में लिप्त था। जाओ जाओ उद्धव, इसी क्षण जाओ। शीघ्र उनका संवाद लेकर आओ। मैं जब राखाल (गोप) बालक था, वन वन में गोचारण करता था, कोई भी ऐश्वर्य जब मेरा नहीं था, तब उन्होंने प्राण देकर मुझको प्यार किया था। उनका ऋण मैं कभी भी शोध नहीं कर सकूंगा।

अब वे king-maker— अपर जनों को राजसिंहासन पर बिठाते हैं, निज कभी भी king (राजा) नहीं हुए। उग्रसेन को किया था राजा। चानूर मुष्टिक-बध, कंस-बध, शिशुपाल-बध इन कार्यों में लिप्त थे— गोपियों की बात भूल गए थे। जभी कहते हैं—जाओ, जाओ

(एकजन भक्त के प्रति)— यही देखो, कर्मकाण्ड कैसा है ! सब समय खींच कर ले जाता है। बड़ा कठिन पथ कर्मकाण्ड !

श्री म का मन वृन्दावन लीला में निमग्न है— श्री कृष्ण और राखालों (गोपों) के संग में वन वन घूम रहे हैं। कुछ काल पश्चात् भक्तों के मन को भी खींच कर ले गए उसी वन में।

श्री म (भक्तों के प्रति)— श्रीदाम ने एक फल पाया था वन में। दांत से काटकर देखा, खूब मीठा। झट थोड़ा सा डाल दिया श्री कृष्ण के मुख में और थोड़ा सा गया बलराम के मुख में।

फल खाते, दौड़ भाग, खेलकूद करते हुए टहलते थे राखालगण सख्यभाव, प्रेमभाव। श्री कृष्ण को पहचान लिया था उन्होंने, अपने मुख से निकाल कर श्री कृष्ण के मुख में डाल देते हैं। कोई संकोच नहीं, यही प्रेम लीला।

श्री म की श्री कृष्ण चिन्ता श्री रामकृष्ण में संचारित हो गई। श्री म कहते हैं, "वही प्रेम-लीला की थी फिर दक्षिणेश्वर में, श्री राम-कृष्ण रूप में। हम धन्य उसी लीला के संगी होने के कारण—निज चक्षु से देखा है इस कारण। अब भी देख रहा हूँ चक्षुओं के सामने वही लीला।"

"ऐश्वर्य की नामगंध भी नहीं, एकदम नंगे। धोती पर्यन्त भी रखने योग्य नहीं ! उसी अवस्था में भक्तगण दौड़े दौड़े जाते उनके पास कलिकाता से पैदल-पैदल, शरीर पसीना-पसीना। कैसा आकर्षण ! जभी तो उनके लिए इतने पागल। न जाने पर, स्वयं दौड़े आते। भक्तों ने पहचान लिया था उनको ?

आहा, एक दिन की बात खूब मन में आ रही है। ठाकुर टेबिल के ऊपर हाथ रखकर कहते हैं, गोपी-प्रेम का एक कण भी यदि कोई पाए, उसका परिपूर्ण हो जाय।

मछेरे मछली पकड़ेंगे। क्राइस्ट उनसे कहते हैं, 'Come ye after me, and I will make you to be fishers of men.' (चले आओ तुम लोग मेरे पास, मैं तुम्हारे द्वारा मनुष्य-माछ पकड़वाऊंगा।)

श्री म (भक्तों के प्रति)— एक क्लास के भक्त हैं। वे अहेतुक भक्ति मांगते हैं। इसका ही नाम शुद्धा भक्ति। इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं लेंगे वे। उनकी संख्या अति अल्प—They can be counted on one's fingers. इन्हें कहते हैं निष्काम भक्त। अन्य सब ऐश्वर्य चाहते हैं। इसे छोड़ उनका चलता नहीं। ईश्वर इनके लिए भी चिन्ता करते हैं। ये जो चाहते हैं वही देते हैं। वे जो ऐश्वर्य प्रकाश करते हैं वह केवल इनके लिए ही करते हैं। इनकी विचार धारा इसी प्रकार की है– "इनके शिष्यों को अमेरिका योरोप के लोग मान देते हैं। शिष्य उस देश में अंग्रेजी में वक्तृता देकर सब को मुग्ध करते हैं। तब तो फिर उन्हें लिया जाय, क्या कहते हो ?" अधिकतर लोगों का ऐसा ही भाव है।

इस क्लास के लोग साधुभक्त के पास आकर कहेगा, मोशाय, बड़ी विपद् में पड़ा हूँ-मुकद्दमे में फंस गया हूँ। धन-प्राण सब जाय-जाय। दया करके मुकद्दमा जिता देना पड़ेगा। किंवा आकर बोलेंगे, हमारी जोएन्ट स्टाक कम्पनी खराब हो गई है। जिससे इसकी फिर और उन्नति हो, यह कर देना होगा। अथवा कहेगा, आह, उनके पांव की धूल हमारे गृह में पड़ी थी कि ना, तभी राम की नौकरी हुई, और फिर राम ने पुत्रमुख दर्शन किया। इस क्लास के भक्त ही अधिक हैं। उनको कहते हैं सकाम भक्त।

ये सब ऐश्वर्य प्रकाश करने से ही तब खूब बड़े बड़े लोग आएंगे। गाड़ी मोटरों की लाइन लग जाएगी। काशी में भास्करानन्द के पास ऐसे लोग बहुत जाते थे। राजाओं ने किसी ने शायद कम्बल खरीद दिए पांच हजार रुपयों के। कहा, गरीबों को बांट दीजिए आप। बड़ौदा के राजा गायकवाड़ जाते उनके पास। अधिकतम लोग ही ऐश्वर्य चाहते हैं। जभी उनको ऐश्वर्य-प्रकाश करना पड़ता है।

सकाम भक्त भी अच्छा है। गीता में कहा है, ये भी उदार। क्यों, इसीलिए ना कि उनको— ईश्वर को सर्वशक्तिमान कहकर मानते हैं। ये जन्म जन्म सकाम भोग करके जब देखते हैं कि इससे शाश्वत सुख शांति लाभ नहीं होता, तब वे केवल ईश्वर को ही चाहते हैं— ऐश्वर्य

देने पर भी लेंगे नहीं। केवल भक्ति विश्वास ज्ञान विवेक वैराग्य दो—यही प्रार्थना करते हैं। सकाम से निष्काम होता है।

ठाकुर के पास जाते सब "नड़े भोला"— गरीब भक्त, रुपया नहीं पैसा नहीं। भक्तों को खूब हंसाते। एक दिन ठाकुर बोले, कितनी गाड़ियां आई हैं? लाटू सुनकर बोले, उन्नीस कुल। ठाकुर ने हंस कर उत्तर दिया, केवल इतनी ही, तब तो फिर और क्या हुआ रे? अनेक गाड़ी, अनेक घोड़े, अनेक भक्त हों तभी तो होता।

उनका अपरूप चरित्र, विचित्र आचरण। एक बार ठाकुर बलराम बाबू की बाड़ी से दक्षिणेश्वर जा रहे थे। पीछे-पीछे एक-नौका भरी स्त्री भक्त जा रही थी मां ठाकुरुण के पास। वे तब नौहबत में रहती थीं असूर्यंपश्या। स्त्री भक्तों ने मां के दर्शन करके ठाकुर के कमरे में जाकर उन्हें प्रणाम किया। ठाकुर को वह अच्छा नहीं लगा। फिर आई और एक स्त्री भक्त। ठाकुर ने उससे appeal (विनय) करके कहा, 'यह देखो, ये सब क्या करती हैं? किलबिल करके घर में प्रवेश कर रही हैं और ढिप-ढिप करके पेन्नाम (प्रणाम) कर रही हैं। मुझे यह सब अच्छा नहीं लगता।" उसके दौड़ कर जाकर कहने से सब भाग गईं।

कांचन, रुपये-पैसे को कहा काकविष्ठा। कामिनी-कांचन दोनों ही वही। बात सुनकर कौन जाएगा उनके निकट? कामिनी-कांचन ही संसार। ये दोनों ही त्यागो। तब फिर जाएं कैसे लोग? जभी उनके भक्त सब 'नड़े भोला'। ठाकुर के भक्तों को देखने से पहचाने जाते हैं।

उनकी देह जाने के पश्चात् मां चली गईं वृन्दावन में। एक बरस थीं वृन्दावन में। लौट के बलराम बाबू की बाड़ी में ठहरीं, देश जाएंगी। कई दिन पश्चात् रवाना हुईं पैदल ही। इतना पैसा नहीं कि गाड़ी या पालकी करके जा सकतीं। भक्त तो सब 'नड़े भोला'— worldly parlance. लौकिक वाणी में जिसको 'वेणाबोंण्ड लक्ष्मीछाड़ा'— गरीब कहते हैं। अकिंचन सब।

कैसे जायें उनके पास ऐश्वर्यशाली लोग, वे सर्वदा कहते हैं, ईश्वर सत्य, संसार अनित्य। ईश्वर दर्शन मनुष्य जीवन का सर्वश्रेष्ठ कर्त्तव्य। शरीर धारण करने पर सुख दुख सर्वदा लगा ही रहता है। दुख के हाथ

से निष्कृति नहीं। पाण्डवों को देखो। राज्यनाश, वनवास और फिर लड़के विनष्ट हुए। सर्वदा ऐसी बातें क्या अच्छी लगती हैं लोगों को ? कौन जाय सुनने ऐसो बातें ?

ठाकुर ने कहा था, वनवासकाल में राम-लक्ष्मण सीता को खोजते फिरते हैं वन वन में। रावण सीता को चुरा कर ले गया है इस बात का तब तक पता नहीं लगा था। एक दिन परिश्रान्त होकर नदी में स्नान करने गए। धनुष गाढकर रख गए जमीन पर। लौटकर देखा वह स्थान रक्ताक्त। नीचे नजर डालकर देखा एक 'कोला बैंग'—बड़ा मेंढक मुमूर्षु। राम तब उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे और बोले, सांप पकड़ने पर तो खूब चेंचाते हो तुम। अब क्यों चीत्कार नहीं करी बच्चे ? मेंढक ने उत्तर दिया, सांप पकड़ने पर, राम रक्षा करो, राम रक्षा करो, बोलकर चीत्कार करता हूँ। अब वे राम ही जब मारते हैं तब क्या बोलकर चीत्कार करूं ?

नीचे तीन तला पर मटको (श्री म का पौत्र अरुण) बंसी बजाते हैं। उसके सुमिष्ट स्वर ने श्री म के मन को आकर्षित कर लिया है। कुछ क्षण सुनकर भक्तों से कहते हैं, "आहा, कितनी बड़ी genius (प्रतिभा) से सुनकर बजाता है। किसी के पास से कभी भी सीखा नहीं। कोई बजाता है, सुनके आकर घर में बैठ कर वैसा ही वह बजा रहा है। अन्य तो हाथ हिला हिलु कर सीखता है। इसका यह सहजात गुण है। एक दिन एक स्थान पर गया था कौन सी पिक्चर देखने। वहां पर कॉनसर्ट में बंसी बज रही थी। वह बैठकर केवल उसे ही सुनकर घर आ गया। किसी भी सीन के ऊपर नजर नहीं। जिज्ञासा करने पर कहा था, अन्य कुछ देखने अथवा सुनने से मेरा मनोयोग जो नष्ट हो जाएगा। जभी घर लौट आया। यही तो उसकी गंधर्व प्रतिभा। बालक होने से क्या हुआ, यह तो जन्मगत संस्कार।

बड़े जितेन फिर रसभंग करके प्रश्न करते हैं।

बड़े जितेन (श्री म के प्रति)— गृहस्थ के लिए रुपया पैसा रोजगार और व्यवहार के संबंध में ठाकुर क्या उपदेश देते ?

श्री म— ठाकुर कहते, रुपया पैसा कमा सकते हो यदि उसके द्वारा देवसेवा, साधुभक्त और दरिद्रनारायण की सेवा हो। केवल कुटुम्ब सेवा के लिए होने से होता नहीं।

रुपये का प्रयोजन क्या? इसीलिए ना, इससे दालभात, पहनने का वस्त्र और रहने के लिए आश्रय लाभ होता है। वह होने से भक्त निश्चिन्त होकर भगधान को पुकार सकता है। रोजगार करके सारा ही अथवा lion's share (अधिक भाग) परिवार के लिए खर्च कर कर देने पर चलेगा नहीं। उन्होंने एकजन भक्त से यही बात कही थी।

श्री म ने पूर्व प्रसंग पुनः उठा लिया।

श्री म (सब के प्रति)— ठाकुर के भक्त जभी सब 'नड़े भोला' (निर्धन)। ये ईश्वर को चाहते हैं पहले। इनकी जीवनयात्रा किसी न किसी प्रकार हो ही जाती है।

(सहास्य) एक दिन ठाकुर बलराम बाबू के घर से आ रहे हैं। दक्षिणेश्वर लौटेंगे। एकजन गाड़ी बुलाने गया, कुछ अधिक समय हो गया। रास्ते पर घोड़े के पांव का शब्द आते ही भक्तगण बोल उठे, वही आ रही है गाड़ी। ठाकुर सुनकर बोले, दूर्र्र्, वह घोड़ा तो घुप् घुप् करके चल रहा है। हमारी गाड़ी आएगी छयार्र छयार्र शब्द करती हुई (सब का उच्च हास्य)।

विभीषण थे शुद्ध भक्त। जभी राम के उन्हें लंका का राजा बनाना चाहने पर वे राजी नहीं हुए। राम ने तब समझाकर कहा, "तुम्हारे राजा होने से बहुत लोगों का कल्याण होगा। तुम्हारा ऐश्वर्य देखकर वे मेरी पूजा करेंगे। कहेंगे, राम की सेवा करके विभीषण राजा हुए हैं। हम भी राम की पूजा करेंगे।" तब विभीषण राजा हुए।

अधिकांश लोग ही सकाम हैं। ईश्वर की पूजा करने से ऐश्वर्य लाभ होता हुआ देख कर ही तब उनको पुकारते हैं। वे भी भले। किन्तु शुद्ध भक्त दो चार जन। उनकी संख्या खूब ही कम। ठाकुर ने सारा जीवन वही शुद्ध भक्ति लेकर काट दिया— ऐश्वर्य का नाम मात्र भी

उनको स्पर्श नहीं कर सका— एकदम उलंग (मस्त-मलंग)। धोती तक भी तो देह पर रख नहीं सकते— सर्वदा मां मां मुख में— जैसे मां के अंक का शिशु।

रात्रि ग्यारह।

मॉर्टन स्कूल, कलकत्ता; 17 मई, 1924 ई०।
3रा ज्येष्ठ, 1331 (बं०) साल।
शनिवार, शुक्ला त्रयोदशी, 8 दण्ड 8 पल।

पंचदश अध्याय

दैवी आचरण

(1)

ग्रीष्मकाल। सकाल सात। मॉर्टन स्कूल के चारतला की छत पर से एक आहत "शालिक" पक्षी नीचे गिर गया है— वृष्टि के जल की पाइप द्वारा। श्री म निज कक्ष में थे, संवाद पाकर बाहर आकर सब देखा। पक्षी की दुर्दशा देखकर हृदय व्यथित। श्री म ने दुखित होकर बैरे पीताम्बर को धमकी दी— क्यों तुमने मुझ से पूछ कर नहीं खोला? (जगबन्धु और छोटे जितेन के प्रति) मजा मन्द नहीं हुआ— बाबू लोग शौक से पक्षी मारेंगे और हम इतना सब काण्ड करेंगे।

निकट की बाड़ी सुगन्धित तैल व्यवसायी एच. बोस की है। उसी घर के लड़कों ने बन्दूक से पक्षी को आहत किया। पक्षी उड़कर जा पड़ा मॉर्टन स्कूल की छत पर। श्री म ने इसे अति सयत्न एक पिंजरे में रख दिया। इन कई दिनों तक शास्त्रीय अतिथि-सेवा के भाव में अति श्रद्धा सहित परिचर्या चलती रही— औषध, पथ्य और पानीय द्वारा। आज प्रातः बैरे के पिंजरा खोलते मात्र ही वह पक्षी भय से बाहर निकल कर नाली के भीतर से नीचे गिर गया। उसको फिर मंगवाकर सेवा शुश्रूषा करने पर भी वह मर गया।

आज 18 मई, 1924 ई०, 8 वां ज्येष्ठ, 1331 (बं०) साल, रविवार, पूर्णिमा, 54 दण्ड 5 पल। चतुर्दशी 2 दण्ड 36 पल।

अपराह्न चार बजे से ही भक्त समागम हो रहा है। ललित भाटापाड़ा से आए हैं। तत्पश्चात् आए सुरपति। उसके हाथ में है एक बेल। दक्षिणेश्वर मन्दिर के खजांची योगेन ने भेजी है श्री म के लिए।

यह बेल है ठाकुर के तंत्रसाधन पीठ बेलतल के विल्ववृक्ष का फल। सामान्य होने पर भी अति पवित्र और अमूल्य। फिर आए भौमिक। अन्तेवासी ने सबको यत्न से बिठाया।

अब आए स्वामी निर्वेदानन्द, संग में कार्पोरेशन स्ट्रीट के एकजन शिक्षक भक्त। मनोरंजन, लक्ष्मण, डाक्टर बक्शी, विनय, बड़े जितेन, शुकलाल, छोटे रमेश, छोटे नलिनी, बलाई, मणि प्रभृति भक्तगण क्रमे क्रमे आकर उपस्थित हुए। जगबन्धु यहां पर ही रहते हैं। सब छत पर बैठे हैं बेंचों पर, कोई अथवा मादुर (चटाई) पर। श्री म स्वीय कक्ष में अर्गलबद्ध।

संध्या समागता। श्री म आकर मादुर पर बैठे पश्चिमास्य। उनके सम्मुख बैठे हैं स्वामी निर्वेदानन्द, पूर्वास्य। श्री म सस्नेह कुशल जिज्ञासा करते हैं। बैरे के हरिकेन लेकर आते ही श्री म हाथताली देकर कहते हैं— "हरिबोल, हरिबोल'।

श्री म - भक्तों के संग में ध्यान करते हैं। ऊपर आकाश उज्ज्वल करके पूर्णचन्द्र उदित है। उसकी स्निग्धोज्ज्वल किरणों में धरणी है निमज्जित। यही सुशीतल किरणजाल श्री म के मुखमण्डल पर पड़कर एक अलौकिक पवित्र आबहवा की सृष्टि कर रहा है। साधु और भक्तगण सकल हैं ईश - ध्यान में निमग्न, श्री म को घेर कर।

आज वैशाखी पूर्णिमा। श्री कृष्ण का फूल-दोल। कलिकातावासी कोई कोई फिर गन्धेश्वरी पूजा करते हैं। इसी पुण्य दिन ही भगवान बुद्धदेव ने जन्मग्रहण, सिद्धिलाभ और परिनिर्वाण लाभ किया। समस्त जगत् भर में बौद्ध भक्तगण जभी आनन्दोत्सव करते हैं आज।

ध्यानान्ते साधुभक्तगण मिष्टान्न और तरबूज प्रसाद पा रहे हैं। श्री म का मन आज जैसे आनन्द-समाधि में निमग्न। वे अविलम्ब मन का खाद्य "कथामृत" परिवेशन करने लगे।

श्री म (स्वामी निर्वेदानन्द के प्रति)— 'दूध' तो एक generic term (मौलिक शब्द) है, सब ही सुनते हैं। किन्तु इससे क्या शिक्षा मिलती है ? ठाकुर बोलते, किसी ने दूध सुना है, किसी ने दूध देखा है

और फिर किसी ने दूध पिया है— हृष्ट-पुष्ट हुआ है। एक दूध से ही इतना सब होता है।

ठाकुर मां से कहते हैं, "अच्छा मां मैंने जो उस को कहलवा भेजा है, 'मेरा ध्यान करने से ही होगा', मैंने क्या अन्याय किया है मां? मैं तो देख रहा हूँ सब ही तुम— मन, बुद्धि, चित्त, अंहकार सब तुम। मैं नहीं—सब मां।"

विजय कृष्ण गोस्वामी से बोले, प्रतिज्ञा करके कहता हूं, मां आई हैं, घर भरे लोगों के सामने।

एक दिन बोले, यहां पर आकर भी माला-बाई? 'यहां पर जो आएंगे उन्हें एकदम चैतन्य हो जाएगा।' माला जप क्यों करना? ईश्वर के उद्दीपन के लिए ही तो। किन्तु ठाकुर की यह एक-एक बात ही उद्दीपन कर देती है। उद्दीपन मानें दीप जला देना। उस पर हैं सशरीर भगवान सामने। उनका magnetic attraction (चुम्बकवत् अलौकिक आकर्षण) उपस्थित है। दूसरे चाहे न जानें, वे तो निज जानते हैं निज को— भगवान हैं इसी शरीर में अवतीर्ण।

तब भी जल गदला रहने से प्रतिबिम्ब पड़ता नहीं। और फिर मन भी तो सर्वदा चंचल रहता है। जभी ठाकुर भक्तों से कहते, निर्जन में ध्यान करो जाकर पंचवटी में, या बेततला में। तभी तो फिर मैं जो बोलता हूं उन सब बातों का अर्थ धारण कर सकेंगे।

जभी कर्मकाण्ड बड़ा कठिन। तो भी यदि ईश्वर साक्षात्कार करके आदेश दें कर्म करने के लिए तो फिर होता है। तब तो commissioned teacher (प्रत्यादिष्ट आचार्य)। तब और कोई भी गड़बड़ नहीं। वैसा न हो तो वही जो बंकिम बाबू से कहा था, तुम्हारी बात दो दिन सुनेंगे। उसके उपरान्त जैसे का तैसा। आदेश मिलने पर कर्म किया जाता है।

ठाकुर एक पद बोलते, "मन्दिरे तोर नाइको माधव, पदो शांक फूंके तुई करलि गोल।" "पदो" माने पद्मलोचन an unworthy person (एक अपदार्थ जन) के शंख फूंकते ही ग्राम के सब लोग

ग्राकर उपस्थित हो गए। सब ने सोचा, उस मन्दिर में माधव प्रतिष्ठित हुए हैं। सब ने देखा, भग्न मन्दिर में भीतर ग्रधपगला पद्मलोचन शंख फूंक रहा है, तब सब लोग वही बात कहते कहते चले गए। Unworthy person untimely (ग्रनुपयुक्त जन के ग्रसमय में) कहने से कोई काज तो होता ही नहीं—उल्टा खराब फल होता है। जैसे कहा करते ठाकुर, 'यदि छिलो रोगी बोसे बैद्यीते (ग्रनुपयुक्त) शेयाले एसे'— रोगी बैठा था वैद्य ने ग्राकर लिटा दिया। ऐसा हो काण्ड !

शिशिर बाबू, ग्रमृतबाजर पत्रिका के editor (सम्पादक) थे। वे एक सुन्दर हास्यकर गल्प सुनाते थे। एक तपस्वी ने कठोर तपस्या की। देवी ने तुष्ट होकर दर्शन देकर पूछा, तुम क्या चाहते हो बेटा ? तपस्वी बोला, मां, मैं भारत उद्धार चाहता हूँ। देवी नें उत्तर दिया, "तथास्तु वत्स ! तो भी थोड़ी ग्रपेक्षा करनी पड़ेगी। चार सौ वर्ष पश्चात् भारत स्वाधीन होगा।" भक्त ने ग्रार्तस्वर से उत्तर दिया, वह क्या मां तब तो मैं जो नहीं रहूगा (सबका उच्च हास्य)।

"ग्रामि" तो रहना ही चाहिए। इसका ही नाम संसार— बन्धन। इसी "मैं" को उनके चरणों में समर्पण कर देने से ही ग्रानन्द, मुक्ति। जभी ठाकुर बोलते, दास "मैं" होकर रहो संसार में। भगवान का दास, सन्तान होकर रहना।

भगवान दर्शन होने पर फिर भोग नहीं कर सकता संसार। सकाम होने पर क्रमे क्रमे भोगस्पृहा की निवृत्ति हो जाती है। देखो ना, ध्रुव नें राज्य लाभ कर लिया किन्तु भोग करने में स्पृहा रही नहीं। पश्चात्ताप हुग्रा था। भगवान राज्य-वर देकर ग्रन्तर्धान हो गए। कहते थे, हाय, योगीश्वरों को भी ग्रलभ्य जो भगवान, उनको पाकर भी विचित्र माया से मुग्ध होकर मैंने क्या कर लिया। भक्ति न मांगकर राज्य भोग लिया। फिर सर्वदा सत्संग लाभ का वर भी दिया था, जभी राज्यशासन सुदीर्घकाल करने पर भी संसार में ग्रासक्त हुए नहीं।

श्री म (सबे के प्रति) — ईश्वर दी एक जन को कर देते हैं लोक शिक्षक। वे जब बातें करते हैं तब जगत् कांपता है। देखो ना क्राइस्ट; निरक्षर, किन्तु जब बातें करते हैं तब जगत् कांपता है। तब बड़े बड़े डाक्टर लोग स्तम्भित हो गए। आपस में बातें करने लगे, हमने ऐसी ओजस्विनी वाणी कभी भी सुनी नहीं। तीस वर्ष तक निर्वाक्—सूत्रधर का काज करते रहे बाप के संग (रन्दा चलाने का अभिनय करके) ऐसा करके।

जॉन दा बैपटिस्ट का शिरच्छेद हो जाने पर क्राइस्ट बाहर निकले प्रचार के लिए, गुरु थे कि ना जॉन। मात्र तीन वर्ष प्रचार किया था। उसका जोर आज दो हजार वर्ष तक चल रहा है। भगवान की वाणी ऐसी तेजीयान्—अवतार की वाणी।

बरस बारह की वयस के समय बाप मां के संग जेरुसलम दर्शनों को गए थे। तब एक बार मात्र ईश्वरीय शक्ति प्रकाश की थी। दल से भागकर अकेले बड़े बड़े पण्डितों के संग शास्त्रार्थ व्याख्या की थी। बालक की बात सुनकर यहूदी पण्डितगण अतिशय विस्मयान्वित हुए थे। और एक बार उन्होंने मन्दिर में उपदेश दिया था। तब वे प्रचार के लिए बाहर निकले थे। पण्डितों ने उनकी बातें सुनकर कहा था, 'How came this man by this wisdom? Is this not the carpenter's son? (कहां से इस मनुष्य को यह बुद्धि मिली। यह बढई का बेटा नहीं है क्या?) पुरोहितों ने अपने कर्मचारियों से जिज्ञासा की, क्राइस्ट को पकड़कर क्यों नहीं लाए। उन्होंने उत्तर दिया, 'Never man spoke like this man.' (कभी भी इस मनुष्य की भांति कोई मनुष्य नहीं बोला।) लोग सब क्राइस्ट के पक्ष में थे। जभी पकड़ने का साहस नहीं किया। 'For he taught them as one having authority.' (क्योंकि उन्होंने उन्हें एक परम शक्ति का ज्ञान दिया था।) बढ़ई जोसेफ का किशोर पुत्र है आश्चर्य बालक। इधर निरक्षर, किन्तु कैसी ज्ञानगर्भ और शक्तिमान उसकी वाणी।

ऐसी गंभीर हृदयभेदी वाणी आज पर्यन्त किसी के मुख से कभी भी किसी ने सुनी नहीं–जैसे भगवान उनके कण्ठ में बैठकर बातें करते हैं।

वही एकबार मात्र मुख खोला था, तत्पश्चात् एकदम नीरव। तीस वर्ष छिपे रहे। ये सब दैवी लीला मनुष्य कैसे समझेगा ?

ऐसा जो उच्चकोटि भक्त पीटर, जिस को लक्ष्य करके बोलते, अपना धर्म-मन्दिर प्रतिष्ठित करूंगा इसी श्रद्धाशैल के ऊपर— 'and upon this rock, I wlll build my Church.' अन्य समय पर इसी महापुरुष को ही कहा था, दूर हो जाओ शैतान मेरे सामने से — 'get thee behind me satan.'

भगवान जिसके कण्ठ में बैठकर बातें करते हैं, जो लोग उनका आदेश पाते हैं, उनकी वाणी ही ऐसी शक्तिमान होती है। वज्रवत् कठोर और फिर कुसुमवत् कोमल इन महापुरुषों का स्वभाव। नीति के पास वज्रकठोर, अन्य समय करुणामय महापुरुषगण।

पीटर ने मना किया था कि ना "मैं ईश्वर की सन्तान", यह बात कहने से। कारण, स्क्राइबस् ऑफ फेरीसिसगणों (धर्मयाजकगण) ने आपत्ति की थी। क्राइस्ट ने बिल्कुल भी परवाह नहीं की। ये सत्य बात कहेंगे ही। इससे जो होना हो, हो।

दीक्षा के पश्चात् चालीस दिन wilderness (वन) में थे क्राइस्ट। उसी समय सब प्लान ठीक हो गया था 'फादर' (ईश्वर) के संग। "फादर" के आदेश से ही यह बात कहकर प्रचार करते थे — I am the son of man — मैं ईश्वर की सन्तान। "फादर" का और भी एक आदेश था—जगत् के कल्याण के लिए यीशु को क्रुशाविद्ध होकर प्राणत्याग करना होगा। ये दोनों आदेश ही अम्लान वदन से पालन किए थे। ईश्वर का आदेश पाकर इसी प्रकार प्रचण्ड शक्ति लाभ होती है।

श्री म (भक्तों के प्रति)— ठाकुर कहते, मां (ज्ञान की) राश ठेल देती हैं। इसका दृष्टान्त देकर एक दिन बोले, राजेन्द्र मित्तिर की बाड़ी जाऊंगा। अनेक बड़े बड़े लोग आएंगे वहां पर। जभी सोचा, केवल कुछ चुनी हुई बातें याद करके ले जाई जाएं, वे ही बोलूंगा वहां

पर। ओ मां, ज्यों ही पहुंचा, त्यों ही सब भूल गया। (सब का हास्य) ऐसा यह दैवी व्यापार!

एक दिन एकजन से ठाकुर बोले, थोड़ी डुबकी लगानी होती है, केवल ऊपर तैरेने से नहीं होता। बहुमूल्य माणिक अतल जल में रहता है। डुबकिया डुबकी लगाकर तब वे सब उठाता है। 'डुब डुब डुब रूप सायरे* आमार मन।' वह जन ब्रिडन स्क्वेयर में लेक्चर दे रहा था। यह समझता है लेक्चर देने से ही सब हो गया। ठाकुर न उससे हंसते हंसते पूछा, महाशय का ब्राह्म समाज में यातायात है निश्चय? उसने उत्तर दिया— जी हां, थोड़ा थोड़ा है। ठाकुर हंसकर फिर बोले, वह मैं देखने से ही समझ लेता हूं। (सकल का हास्य)।

पादरी लोग जो इतना लेक्चर देते हैं और कहते है, यह करो, वह करो, अब उनकी यह बात सुनता कौन है? फाउन्टेन (हृदय) में से जो निकलती नहीं वे सब बातें। वह दिक् एकदम शून्य। केवल बातों से चिउड़ा नहीं भीगता। खाली लेक्चर सुनता है कौन। जीवन द्वारा दिखाओ जो बोलते हो, सभी लोग सुनेंगे। ब्राह्म समाज में भी वैसा ही है — खाली लेक्चर।

ठाकुर बोले थे — एक बार नन्दन बागान ब्राह्म समाज में गया था। देखता हूं वेदी पर जो बैठा है वह कुछ लिखकर लाया है। बार बार उसे देखता है और (चक्षु दाएं और बाएं संचालन करके) ऐसे ऐसे करके कहता है। इस बात का क्या प्रभाव पड़ेगा श्रोताओं के ऊपर?

ठाकुर बोले थे, तीन प्रकार के ऋषि हैं— ब्रह्मर्षि, देवर्षि और राजर्षि। ब्रह्मर्षि शुकदेव, देवर्षि नारद और राजर्षि जनक। ब्रह्मर्षि के पास ग्रन्थ-श्रन्थ नहीं, सब ही मुख में।

बिन्दे दासी ठाकुर के संबंध में सुन्दर बोली थी, ना भाई, सब ही उनके मुख में। तब बराहनगर से इस बाग से उस बाग में टहलते टहलते दक्षिणेश्वर मन्दिर में गए थे। देखा, घर-भरा लोग बैठे हैं ठाकुर के पास। तत्पश्चात् घूम फिर कर आकर देखा कोई भी नहीं है। यही आध घण्टे के बीच ही यह सब हो गया। बिन्दे दासी बराण्डे में खड़ी

*सायरे= सागर में

थी। उससे जिज्ञासा की, अजी हां, साधु जी यहां पर हैं ? वे शायद अनेक ग्रन्थ व्रन्थ पढ़ते हैं ? तब वैसा ही भाव था कि ना, पुस्तक बिना पढ़े ज्ञान होता नहीं। ब्राह्म समाज के लेक्चर सुनने की खूब झोंक थी। वहां से ही ऐसा भाव पाया था, बिन्दे ने तब वह बात कही थी, ना भाई, सब ही उनके मुख में। ('ना बाबा, सबइ तांर मुखे !) आहा, कैसी पक्की बात !

ब्राह्म समाज में लेक्चर सुनता और सोचता जैसे ईश्वर बहु दूर हैं और कितने ऊंचे हैं। ओ मां, ठाकुर के पास जाकर देखा, ये ईश्वर के संग बातें करते हैं बिड़-बिड़ करके। लगता जैसे ईश्वर हमारे हाथ के पास हैं। लेक्चर और दर्शन में इतना अन्तर।

Wonderful man (अलौकिक पुरुष)। 'अलादीन और वन्डर फुल लैम्प' की कहानी में है काका (चाचा जी) कहते हैं, उसी सुरंग द्वारा जाकर लैम्प लाना होगा। ओ मां, वहां पर देखता है पेड़ पेड़ पर मणि-मुक्ता अजस्र फलों में हैं। झोली भर कर जितना ला सकता था लेकर आ गया। कितने फिर लाए जाएं। वैसा ऐश्वर्य ठाकुर का। कितना फिर लेगा एक जन व्यक्ति। 'कतो मणि पड़े आछे चित्तामणिर नाच दुयारे।'

बाग में टहलने जाकर श्री म नें लाभ की दुर्लभ वस्तु — श्रीरामकृष्ण। उसका ही क्या आभास-समूह पूर्वोक्त वाणी-समूह ?

श्री म (स्वामी निर्वेदान्द के प्रति) — आहा, कैसे सब भाव प्रवेश करवा रहे हैं ठाकुर। नरेन्द्र हमारी उस मोहल्ले की (ठाकुर) बाड़ी में टहलते हुए आए थे। कहते हैं ईश्वर ही जब सारवस्तु हैं, वे जैसा कहते हैं, तब तो उनके दर्शन न होने तक प्रायोपवेशन (fast unto death) करना ही उचित। राखाल ने कहा था, सब छोड़कर पश्चिम में किसी बाग में जाकर उनके साधन भजन में डूब जाऊं।

(सहास्य) नरेन्द्र तब fresh from the Brahma Samaj (टाटका ब्राह्म समाज से आया हुआ) — जभी ठाकुर से बोले, यह सब ईश्वरीय दर्शनादि hallucination (मन का भ्रम)। ब्राह्म समाज में सुना था। और भी सुना था, अधिक ईश्वर को पुकारने से पागल

हो जाओगे। ऐसी बातें वहां पर खूब होती थीं कि ना। ये सब बातें सुनकर ठाकुर चिन्तित हो उठे थे। नरेन्द्र की बातों में उन्हें खूब विश्वास था। शिशु का स्वभाव। शिशु जैसे सब बातें मां से पूछता है, वैसे ठाकुर ने जगदम्बा से जिज्ञासा की, मां यह सब क्या तो फिर 'मनेर बातिक' (मन का भ्रम) है? मां ने हंसकर उत्तर दिया, वह कैसे होता है बेटा, मैं जो तुम्हारे मुख से बातें करती हूँ। और तुम जो दर्शन करते हो सब ही तो मिलता जा रहा है मेरी बातों के संग और वास्तव के संग।

ठाकुर बोले थे, एक दिन "चाँदनी" में खड़ा हुआ था और तत्क्षण जगदम्बा ने आंख में अंगुली देकर दिखा दिया। क्या दिखा दिया? — यही कि जगदम्बा ही मनुष्य होकर टहल रही हैं। और दिखाया यह रूप भी (ठाकुर का रूप भी) वे स्वयं हैं। निज का कर्मत्याग कैसे हुआ था, वह भी ठाकुर ने एक दिन बताया था — बेलपत्ता तोड़ते हुए तनिक रेशा उखड़ा देखकर फिर तोड़ नहीं सका — देखा, जैसे रक्त निकल रहा है। और एक दिन फूल तोड़ते हुए देखा, एक एक फूल का वृक्ष एक एक तोड़ा—विराट शिव के ऊपर स्थापित। यह देखकर फूल और तोड़ना नहीं हुआ।

(2)

आज बुद्ध पूर्णिमा। आकाश को आलोकित करके चांद उदित हुआ है। श्री म का मन है प्रफुल्ल। वे बुद्ध विहार में भगवान बुद्धदेव के दर्शन और प्रणाम करने जाएंगे। इसलिए जगबन्धु, विनय, छोटे नलिनी, शुकलाल प्रभृति को पहले भेज दिया। वे डाक्टर बक्शी के संग मोटर में जाएंगे। भक्तगण — बेनेटोला में विराट गन्धेश्वरी की मूर्ति दर्शन करते हुए जाते हैं—जैसे दुर्गाप्रतिमा।

कॉलेज स्क्वेयर, बुद्ध विहार। फुटपाथ पर भक्तगण अपेक्षा करते हैं। श्री म कुछ क्षण परे मोटर में आ उपस्थित हुए— संग में स्वामी निर्वेदानन्द और डाक्टर बक्शी।

श्री म द्वितल पर चढ़ेंगे। गौरवें दरवान ने लोहे का कुंचित दरवाजा खोल दिया। श्री म म पांव में चटिजूता, तन्मय भाव। ऊपर चढ़ रहे हैं। भक्तों के कहने मे जूता नीचे उतार कर रख गए।

द्वितल की पूर्व दीवार के निकट मध्यस्थल पर एक सुन्दर वेदी है। इसके मध्य में भगवान बुद्ध के देहावशेष (relics) हैं। आज उसको अति सुन्दरतापूर्वक सजाया है पत्रपुष्पों से। और प्राचीन प्रथा अनुयायी—वेदी के पार्श्व में बहुत सी मोमबत्तियां जल रही हैं।

श्री म ने वेदीमूले भक्तिभरे भूमिष्ट होकर प्रणाम किया संगीगण सहित। तत्पश्चात् दीवाल पर अंकित बुद्ध लीला की चित्रावली दर्शन करते हैं और डाक्टर बक्शी लीला का विवरण पढ़कर सुनाते हैं। बुद्ध जननी मायादेवी के गर्भ में श्वेतहस्ती प्रवेश करता है और बुद्ध गृहत्याग करते हैं, बोधिद्रुम तले बुद्ध ध्यान-मग्न, निर्वाण लाभ। प्रथम प्रचार, परिनिर्वाण प्रभृति की चित्रावली। प्रथम प्रचार की छवि देखकर श्री म आनन्द से कहते हैं, "आहा, कैसा शांत भाव।" परिनिर्वाण देख कहते हैं, "आनन्द से कहा था, कुछ क्षण पूर्व, गाड़ी का पहिया टूट जाने पर उसको खेंचकर ले जाने से जैसी अवस्था होती है अब मेरी है वैसी अवस्था।"

दक्षिण और उत्तर की दीवालों की सब की सब छवियां देखकर पुन: वेदी के निकट आए। वेदी स्पर्श और प्रदक्षिण करके वेदीमूले बैठकर दो मिनिट ध्यान किया। तदुपरान्त नीचे उतर आए। नीचे के तल में हॉल में वक्तृता होती है। उसकी दीवालों पर हैं लीला चित्र। दक्षिण, पूर्व और उत्तर की सब छवियां देखकर बाहर होते हैं। उत्तर की दीवाल पर बाहर जाते समय दाएं हाथ को बुद्ध के साठ उपदेश प्रस्तर पर लिखित हैं—प्राणी-हिंसा मत करो, मिथ्या बातें मत बोलो, चोरी न करो, परस्त्री को मातावत् देखो इत्यादि। श्री म ने अन्तेवासी से कहा, "लो इन सबको मुखस्थ कर लो। हम फिर सुनेंगे।" अन्तेवासी और स्वामी निर्वेदानन्द उपदेश-समूह पढ़ते हैं। छोटे रमेश सम्मुख खड़े हुए हैं। श्री म ने [illegible]मे भी कहा, मुखस्थ कर लो तुम भी।

विहार के नीचे फुटपाथ पर श्री म दण्डायमान। श्री म के चारों ओर साधु भक्तगण— स्वामी निर्वेदानन्द, संगी मास्टर, सुरपति, डाक्टर, विनय, शुकलाल, मनोरंजन, छोटे जितेन, सुखेन्दु, छोटे रमेश, जगबन्धु प्रभृति। प्रथम तीन जनों ने विदा ली। श्री म ने भक्तों के संग कॉलेज स्क्वेयर में प्रवेश किया।

रात्रि प्राय: दस। शहर का कर्मकोलाहल अनेक कम हो गया है। स्क्वेयर में खूब अल्प लोग। ग्रीष्मकाल। पूर्णचन्द्र की किरणें जल में पड़कर चकमक कर रही हैं। वही आभा और फिर जल के चारों दिक् के पुष्प वितानों पर प्रतिफलित हो रही है। सुन्दर पुष्प और भी सुन्दर दिखते हैं।

पूर्वतीर के मध्य फाटक द्वारा प्रवेश करके श्री म उत्तर दिक् में चलते हैं, तत्पश्चात् पश्चिम में। शेष प्रान्त में उपस्थित होकर आंख से इंगित करके हिन्दू स्कूल और प्रेसिडेन्सी कॉलेज दिखलाकर बोले, "यहां पर और वहां पर पढ़ा करता था।" जगबन्धु ने जिज्ञासा की, "कहां पर, हिन्दू स्कूल में ?" श्री म ने उत्तर दिया, "ना। हिन्दू स्कूल के दो कमरों में प्रेसिडेन्सी कॉलेज की फर्स्ट इयर और सेकेण्ड इयर क्लास बैठती थी। यह बिल्डिंग हुई जब थर्ड इयर में पढ़ता था। प्राय: ही यहां पर (गोल-दीघि) आना होता।"

यहां पर मठ के एक भक्त ने आकर प्रणाम किया, महापुरुष से दीक्षित। भक्त के संग बातें करते करते पुन: पूर्वदिक् में चलते हैं। श्री म के दाएं हाथ जलाशय । इसके तीर पर बीच बीच में पुष्प-वितान। उसमें नाना प्रकार के सीजन फ्लावर। श्री म चलते हैं और उत्सुकता के साथ देखते हैं वही पुष्पराजि। उसके बीच बीच में घास के क्षुद्र लॉन। उस पर कोई लेटा हुआ है, कोई बैठा है। श्री म उसे देखते हैं आनन्दोत्फुल्ल लोचनों से। कहते हैं, Youthful light jollity (यौवन का तरल आनन्दोच्छ्वास)। यह सब भी देखना चाहिए तभी balance (चित्त की समता) ठीक रहती है। नहीं तो 'एक घेये' (एक सुरा) हो जाता है। माला (छिलका) छोड़ना जो नहीं। बेल का छिलका छोड़ देने से वजन में कम पड़ेगा—चलेगा कैसे ?

श्री म इस बार आकर खड़े हुए हैं — पूर्वतीर के उत्तरार्धांश के मध्यस्थल में। श्री म के सम्मुख जलाशय, तत्पश्चात् सेनेट के वराण्डे के अतिकाय पिलरसमूह। और पीछे हॉल और बुद्ध विहार—शिरोपरि उज्ज्वल चन्द्रमा। वे जैसे कुछ स्मरण करते हैं। कुछ क्षण परे व्यग्रभाव से बोले, 'हां', स्मरण आ गया। एक बार मैडिकल कॉलेज के बंगाली छात्रों और साहेब छात्रों में मारा-मारी हुई। बंगाली एक सौ और वे लोग पचास साठ जन। बंगाली लड़के दौड़े, पलायन करते हैं — उस पार विद्यासागर महाशय के स्टेच्यू के निकट। तब मैं आकर इनके मध्य पड़ा। अब क्या किया जाय, सोच कर खूब धीरे धीरे अन्यमनस्क भाव में चलने लगा। उन्होंने मुझे फिर कुछ नहीं कहा, ऐसा देखकर।

श्री म दक्षिणदिक् में चलते हैं पूर्व तीर से। ठीक मध्यस्थल पर खड़े हो गए — बड़ा फाटक पीछे, सम्मुख जलाशय। भक्तों से कहते हैं, "देखिए, उन्होंने कैसे सब बना दिया है जीवन धारण के लिए—जल, हवा जो जो दरकार सब।"

श्री म आनन्दे भरपूर। शिशु जैसे नूतन वस्तु पाकर आनन्दे नृत्य करता है श्री म का अन्तर भी आनन्दे नृत्य करता है। पुरातन सब को जैसे फिर नूतनभाव में देखते हैं। श्री म की वयस इकहत्तर। किन्तु वे जैसे यौवनानन्द में मग्न हैं।

आनन्द में श्री म दक्षिणदिक् में चलते हैं। भक्तों से कहते हैं, "देखिए, देखिए, कैसा सुन्दर फूल" (डेजी)। दक्षिण की फुरफुरे (शीतल मन्द) हवा प्रवाहित हो रही है। और टुक चले, फिर खड़े हो गए। बोले, "एक बात याद आई है। एक दिन यहां पर बैठा हूं सवेरे। मेरे सामने पक्षी स्नान करते हैं। तब कॉलेज में पढ़ता था। देखकर सोचता हूँ, आहा, उन्हें कितनी भावना है देखो! पक्षी स्नान करेंगे, उसके लिए पहले से ही यहां पर जल रखा हुआ है।"

गोलदीघि के दक्षिण प्रान्त में उपस्थित श्री म। बाएं हाथ में लता-वितान देखकर बोले, "यह क्या?" भक्त ने कहा, "यह मालियों का वासस्थान— लता से मंडित कुंज।"

पूर्व तीर पर से ही लौटकर बड़े फाटक द्वारा बाहर आकर बुद्ध विहार के सम्मुख फिर खड़े हो गए। भक्तगणों का खाना करके वे वे मोटर में चढ़कर बैठ गए। जगबन्धु, विनय और छोटे नलिनी ने मिर्जापुर स्ट्रीट द्वारा 50 नम्बर अमहर्स्ट स्ट्रीट में मॉर्टन स्कूल में प्रत्यावर्तन किया। सुखेन्दु गए बड़ा बाजार। और मनोरंजन और शुकलाल गए बेलेघाटा। रात्रि अब ग्यारह। सुस्निग्ध चन्द्रकर से महानगरी निमज्जित। इसी दिन बुद्धदेव को जन्म, निर्वाण और महा-निर्वाण लाभ हुआ।

(3)

मॉर्टन स्कूल के चारतल की छत। अब सकाल नौ। श्री म ने स्नान किया है। कपड़े छत के मध्यस्थल पर चेयर के ऊपर फैलाते हैं पूर्वास्य और कहते हैं, "धूप तो लगती नहीं।" आकाश मेघाच्छन्न। बार बार सूर्य दिखाई देता है बार बार मेघावृत। मणि, मान्ना, छोटे रमेश और जगबन्धु जल के टैंक के निकट खड़े हैं।

अपराह्न तीन। श्री म मॉर्टन स्कूल के द्वितल के लम्बे बराण्डे के पूर्व प्रान्त में बैठे हैं चेयर पर। श्री म के पीछे द्वार, उसके परे नीचे एच. बोस की बाड़ी का बाग है। बोस महाशय के लड़के शैलेन को बुलवा लिया है— वयस चौदह वर्ष। उसको डांट रहे हैं।

श्री म (कल्पित क्रोध से)— तुम शायद पक्षी मारते हो, क्यों मारते हो? कहो फिर नहीं मारोगे।

शलेन— Certainly (निश्चय) नहीं मारूंगा, यह बात नहीं कह सकता है?

श्री म (पार्श्ववर्ती शिक्षक के प्रति)— हमारे इसी स्कूल में पढ़ता है?

शिक्षक— जी हां। थर्ड क्लास, बी सैक्शन में पढ़ता है।

श्री म— (चक्षु ऊपर उठाकर, गर्जन करके)— और फिर पान चबाते हो! फेंक दो पान।

शैलेन— (नम्रभावे)— सर, उस दिन मैंने नहीं मारा। मेरे मामा के लड़के ने मारा था।

श्री म (तीव्र स्वरे)— तुम मारोगे नहीं, बोलो ।

शैलेन (पॉकेट में हाथ रखकर)— I will try my best. (मैं यथासाध्य चेष्टा करूंगा ।)

श्री म— अच्छा जाओ। (शैलेन के चले जाने पर, शिक्षक के प्रति) Attitude (भाव) बहुत भला नहीं है ।

उसी घर के लड़के बन्दूक द्वारा पक्षियों को आहत करते हैं। कई दिन हुए वे ही आहत पक्षी मॉर्टन की छत पर आकर पड़े थे। श्री म ने उनकी सेवा शुश्रूषा की है। श्री म को चिन्ता है, यह देखकर मोहल्ले के सब लड़के निष्ठुर हो जाएंगे। जभी इस घटना के पश्चात् ब्राह्म भक्त प्रिन्सिपल एस. राय के द्वारा बाड़ी की गृहिणी को जो कहलवाया था।

अब चार। योगेन आए हैं। वयस पचास। ये दक्षिणेश्वर मन्दिर के खजांची हैं। श्री म के कहने पर यह सेवाकार्य प्राप्त हुआ है। जभी बीच बीच में आकर सुख दुःख की बातें कहते हैं और उपदेश ग्रहण करते हैं। योगेन श्री म के दाएं हाथ बेंच पर बैठे हैं दक्षिणास्य। सामने दूसरे बेंच तर अन्तेवासी। कालीबाड़ी के लोगों के संबंध में नाना बातें कहते हैं। अब एक भक्त की बात होती है।

योगेन (श्री म के प्रति)— वह चक्षु मून्द करके "कथामृत" का पाठ सुनता है। कोई कुछ कहे तो कहता है, क्यों, मास्टर महाशय नहीं करते ? द्विजपद के संग 'लीग'— जोड़ है। ठाकुर के घर की चाबी द्विजपद को दे जाता है। ठाकुर घर में रात को अन्य जन को भी रखता है। धर्म-लेक्चर देता है।

श्री म (चिन्तित होकर)— बड़ी ही मुश्किल का व्यापार है, देखता हूँ। कब क्या हंगामा मचाये ! हमारा नाम करके सब करता है। किस दिन किस फसाद में डाल देगा। इधर फिर साधुसेवा नहीं करता आलस्य से। रामलाल दादा के असुख में इतनी खबर दी और हम नें भी जाने के लिए कहा, वह किसी तरह भी नहीं गया। कहा, मेरा असुख हुआ है। और यहां-वहां से लाकर खाता है। गदाधर आश्रम में लोग नहीं हैं। ललित महाराज ने जानै के लिए कहा, तो भी नहीं गया।

आप लोगों ने इतना सब कह कह कर अब सर्वनाश कर दिया है। धर्म कथा कहकर खाना, छिः ! दया करके खाने को दें, तब खाया जा सकता है।

जोगेन— खोका (जोगेन के पुत्र) को कहता है, अक्षयबाबू को तम्बाकू बना दो।

श्री म— क्यों ? वह निज नहीं कर सकता ?

जोगेन— वह क्या वैसा करता नहीं ? और फिर रंधन की बात हो तो कहता है, तुम लोग रांधो। तुम्हारा पकाया खाऊंगा।

श्री म चिन्तत, पीछे उनके नाम में कलंक हो।

श्री म (जोगेन के प्रति)— आप किरण बाबू (रिसीवर) से कहें और रामलाल दादा को, कि वह हमारा कोई नहीं हैं। हम कुछ नहीं जानते। हमने कहा भी नहीं वहां पर रहने के लिए। हमसे कहकर भी वहां पर नहीं गया। यहां पर कुछ दिन काज किया था। तत्पश्चात् गया डाक्टर बाबू (कार्तिक बक्शी) की बाड़ी। वहां पर एकजन substitute (अन्य जन) रखकर चला गया है।

जोगेन किरणबाबू और रामलाल दादा से यह बात कहने में संकोच करते हैं।

श्री म (जोगेन के प्रति)— हमारा नाम करके कहना-हमने कह दिया है।

जोगेन— मैंने पहले उसका भला कहा है। अब.........।

श्री म— ठीक तो। ऐसे कहना— पहले उस प्रकार जानता था। अब उन्होंने ऐसा कहा है। फिर भी यदि रहने दें तो दें। हम कुछ नहीं जानते।

जोगेन ने दक्षिणेश्वर मन्दिर के परिचालक, एक ब्रह्मचारी और किसी साधु के संबंध में अप्रिय विचार कहे थे। साधु-निन्दा श्री म को असहनीय। अत्यन्त विरक्त होकर बातें करते हैं।

श्री म (तीव्रस्वरे, जोगेन के प्रति)— उनका क्या स्वार्थ ? आपके कहने से ही आपकी बात मानूंगा ? उन्होंने जो कितना कष्ट, कितनी

लांछना सह करके उस काज (किरण दत्त को रिसीवर नियुक्त करवाना) को किया है, वह तो आप जानते नहीं। क्यों किया है ? इसलिए ना कि जिससे दक्षिणेश्वर कालीबाड़ी की रक्षा होती रहे। कितने बड़े काज में हाथ दिया है। साधु लोग भला बुरा कहें तो भी चुप करके रहना चाहिए।

जोगेन (अनुतप्त स्वरे)— मैंने अन्याय किया है विना जाने, मुझे क्षमा कीजिए।

श्री म (प्रसन्नभावे)— हमारे पास बीच बीच में आएं तो ही धात ठीक रहेगी। (स्मित हास्ये) देखा नहीं बेहाला (वायलिन) का कान मल मल कर ठीक करते हैं बेसुरा हो जाने पर। हां, बीच बीच में आने पर तब धात ठीक रहेगी।

और आप किरणबाबू और रामलाल दादा को बोलें जो मैंने कह दिया है। उनके कहने पर कल ही एक पोस्ट कार्ड लिखकर पता दें।

जोगेन— जी हां। और एक बात जिज्ञासा करने की है। अनुमति हो तो कहूँ।

श्री म— हां, बोलिए।

जोगेन— काली-बाड़ी के पुजारी और कर्मचारी लोग, देखता हूँ, पैसा प्रसाद और द्रव्यादि का अपव्यवहार और अपहरण करते हैं। मुझे क्या करना उचित ?

श्री म— आपका किरण बाबू को बताने से ही हुआ। कहें, महाशय कर्मचारी लोग ऐसा करते हैं। उनके जान लेने से ही हुआ— आपका दायित्व गया। आप नहीं जाएं इसमें। वैसा होने पर मार डालेंगे।

प्रणामान्ते योगेन का प्रस्थान।

अपराह्ण छः। बलाई मल्लिक आए हैं। ये एंड़ेदह की दास गदाधर की पाटबाड़ी के मालिक। दिन कई एक हुए श्री म ने अन्तेवासी को उन के पास भेजा। मल्लिक के प्रणाम करने पर अन्तेवासी ने श्री म के साथ उनका परिचय करवा दिया।

तत्पश्चात् आए बालियाटि के ज़मीदार हरिविलास, एक उड़िया भक्त और बड़े अमूल्य। श्री म सब को लेकर चारतल की छत पर जा कर मादुर पर बैठ गए। अब कथोपकथन होता है।

बलाई मल्लिक— आप कृपा करके पाटबाड़ी में चलिए। वहां पर एक कक्ष आप को दे दूंगा सर्वदा के लिए। जब खुशी हो जाकर रहेंगे। वही बाड़ी हमारी पैतृक सम्पत्ति। वहां पर नित्यानन्द प्रभु के शिष्य दास गदाधर तपस्या किया करते थे। वहां पर ही देह गई। वहां पर ही है उनकी समाधि।

श्री म— ये सब बाड़ी घर किसने बनाए हैं?

बलाई— हमारे पूर्व पुरुषों ने। अम्बिका कालना के भगवानदास बाबा जी के आदेश से यह सब हुआ है। मैंने सुना है, मेरा जन्म होने पर, पश्चात् मुझको भगवान के चरणों में दान कर दिया था घर के लोगों ने।

श्री म (विस्मय से)— ओ! आपको dedicate (ईश्वर में समर्पण) कर दिया था बाप मां ने। जभी आप ऐसे हैं। यहूदियों में थी यह प्रथा। क्राइस्ट को जेहोबा के मन्दिर में ले जाकर dedicate (ईश्वर में समर्पण) कर दिया था ज़ोसेफ और मेरी ने।

आपकी ठाकुरबाड़ी तो खूब स्थान है। एक तो गंगा तीर, उस पर फिर महापुरुष का पीठस्थान। उसके ऊपर और भी, ठाकुर का जाना-आना था। दरवाजे के ऊपर जो चैतन्य संकीर्तन की छवि है, उसे ही देखने जाते। विजयकृष्ण गोस्वामी को एक दिन उसे ही दिखाने ले गए हैं। ऐसा स्थान और है नहीं। पास ही है, कहना हो तो दक्षिणेश्वर की कालीबाड़ी, वर्तमान जगत् का महापीठ। भगवान ने अवतीर्ण होकर भक्तों के संग तीन वर्ष तक नरलीला की है वहां पर। आप उसी ठाकुर बाड़ी के ऊपर नजर रखें।

तब भी थोड़ा ऐश्वर्य है। उसके बिना हुए फिर आजकल चलता नहीं।

बलाई— अनेक समय मन में होता है उत्तर की ओर एक

पर्णकुटीर बनाकर रहूं। इतना सब— टेबल, चेयर, फरनीचर भला नहीं लगता।

श्री म (आनन्दे)— यह देखिए, वह सब भला लगता नहीं। ठाकुर ने बताई थी एक अति गुह्य कथा। आप लोग भक्त लोग हैं तभी कहने में दोष नहीं। ये सब बातें जिस-तिस के पास कही नहीं जातीं। कहा था, निर्जने गोपने नंगा होकर उनको पुकारेगा। अर्थात् पृथ्वी का कुछ भी लेगा नहीं।

यतक्षण निश्वास ततोक्षण sense-world (बाह्य जगत्) के संग contact (संबंध)। इसीलिए चक्षु मूंदकर ध्यान करना। चक्षु खोल कर ध्यान होता है। किन्तु चक्षु को मूंद लेने पर यहां का कुछ भी दिखता नहीं।

ईशान मुखुज्ये ने गंगा के किनारे पर घर किया था। कारण, पुरश्चरण करेंगे। सुनकर ठाकुर ने कहा था, यह क्या अजी हीन बुद्धि का बात ! ईश्वर को पुकारेगा, उसे भी फिर लोग जान सकेंगे ? साईनबोर्ड लगाकर पुकारना ! सुनकर चिन्तित हो गए। ईश्वर को पुकारना चाहिए निर्जने गोपेने।

बलाई, हरिबिलास प्रभृति ने प्रणाम करके विदा ली।

अब रात्रि आठ। शुकलाल, बड़े जितेन, विनय, जगबन्धु, बड़े अमूल्य, छोटे रमेश, रमणी, गदाधर, छोटे जितेन, भौमिक प्रभृति बैठे हैं। सब ही मादुर पर बैठे हैं, श्री म भी मादुर पर बैठे हैं क्षणिक परे ही बेलुड़ मठ से स्वामी अमलानन्द आए। उनके साथ मठ की बातें होती हैं। मठ में गो-सेवा के लिए एक नौका चरी खरीदी गई है। मठ में नूतन कूप खनन हुआ है, ये सब बातें। और फिर वृन्दावन सेवाश्रम के एक संन्यासी (मनसा) ने सर्पाघात से प्राण त्याग किए हैं, यह बात भी हुई। रात्रि अधिक होने से सभा भंग हो गई।

श्री म छत पर बठे कुछ काल एकाकी। तत्पश्चात् जगबन्धु, विनय, छोटे जितेन और गदाधर को बुलवा लिया।

एक जन ब्रह्मचारी दक्षिणेश्वर मन्दिर में कुछ काल से वास करते

हैं। कई भक्तों ने उसके नाम में श्री म के निकट शिकायत की है। श्री म उसका तिरस्कार करते हैं।

श्री म (ब्रह्मचारी के प्रति)—अकृतज्ञ जन भला नहीं। जोगेन बाबुओं ने तुम्हारा कितना उपकार किया है। तुम्हारा उनको कुछ कहना शोभा नहीं देता।

ब्रह्मचारी— वहां पर दस जन खाते हैं। वे लोग दान करते हैं। मैं भी खाता हूँ।

श्री म (विरक्ति सहित)— किसने तुम्हारा परिचय करवा दिया। है? उन्होंने ही कर्त्ताओं के संग में तुम्हारा परिचय करवा दिया है अब तुम्हारे मुख से यह बात कहना ठीक नहीं। अकृतज्ञ का मुख दर्शन करते नहीं, ठाकुर ने कहा था।

मॉर्टन स्कूल, कलकत्ता।
19 मई, 1924 ई०, शनिवार।
5 वां ज्येष्ठ, 1331 (बं०) साल, कृष्णा प्रतिपदा; 50 दण्ड 40 पल।

षोड़श अध्याय

सद्गुरु लाभ होने से निश्चिन्त

(1)

मॉर्टन स्कूल। द्वितल का बैठकखाना। श्री म चारतला से नीचे उतर आए हैं। कीटदष्ट "कथामृत" के कितने सारे फरमें अन्तवासी को देकर बोले, "अच्छे अच्छे छांटकर अलग करने होंगे।" अब प्रातः सात। ग्रीष्मकाल। आज 25 मई, 1924 ई०, बंगला 11 वां ज्येष्ठ, 1331 साल। रविवार, कृष्णा सप्तमी तिथि, 20 दण्ड 48 पल।

श्री म ने स्नानादि समापन करके द्वितल के गृह में प्रवेश किया। दक्षिण दिक् में पूर्व द्वार के पास बेंच पर बैठे हैं उत्तरास्य। गृह में विनय, लक्ष्मण, जगबन्धु और मणि मात्रा हैं। मणि हैं विख्यात इतिहास लेखक कैलाश मात्रा के पुत्र। सम्प्रति विपद् में पड़े हैं। अर्थाभावजनित दुश्चिन्ता से उनके मस्तिक में गड़बड़ हुई है। उन्होंने मॉर्टन स्कूल में आश्रय लिया है। स्कूल अब ग्रीष्म के लिए बन्द है।

श्री म अन्तेवासी के साथ बातें कहते हैं अपना जीवन चरित— लक्ष्य मणि मात्रा।

श्री म (अन्तेवासी के प्रति)— मेरा बार बार कर्म जाता और तब नेत्रों में सरसों के फूल देखा करता। विवाह करने से यही मुश्किल है। जिन्होंने विवाह नहीं किया उन्हें ये सब हंमामा करना नहीं पड़ता। ठाकुर का तब असुख। मैं था तब भी विद्यासगर महाशय के श्याम बाजार स्कूल का हैडमास्टर। उनके असुख के लिए सर्वदा काशीपुर यातयात करना होता था। तभी स्कूल का काज वैसा देख नहीं पाया। उससे result (फल) लेशमात्र अन्य रकम हुआ। विद्यासागर महाशय

मुझसे बोले, इस बार वहां पर अधिक आना जाना करते रहे तभी फल वैसा भला नहीं हुआ। यह बात सुनकर उनको एक खूब कड़ी चिट्ठी दी। तत्पश्चात् मैंने क्रमशः resign (पदत्याग) कर दिया।

चाकरी जब गई तब एक दिन तीन घण्टे अर्ध-उन्मादी-वत् पायचारी करता रहा, ठाकुर-बाड़ी के दो तला के रास्ते के ऊपर के बराण्डे में। चिन्ता थी बच्चों को खिलाऊंगा क्या ? अवश्य अधिक दिन बैठा रहना पड़ा नहीं। पन्द्रह दिन के मध्य ही अन्य एक काज मिल गया। हिन्दू स्कूल के एक टीचर छुट्टी पर थे। हैडमास्टर ने मुझे बुलवा कर वही काज दे दिया। और बोले, तुम्हारी यह पोस्ट permanent (स्थाई) हो सकती है।

तब भी मन में दारुण उत्कण्ठा। और एक दिन उसी प्रकार अनमना होकर उसी वराण्डे में ही क्षुधिता सिंहनी की न्याईं द्रुत पदक्षेप से जैसे दौड़ता हूँ। तब नीचे से एक जन ने नाम लेकर पुकारा। जाकर देखा, घोड़ा-गाड़ी लेकर एक जन आया है। उसके हाथ में एक चिट्ठी है। पढ़कर देखा, सुरेन बैनर्जी महाशय ने अनुरोध करके भेजा है, इसी गाड़ी में ही जाने के लिए। उनके पास जाने पर वे बोले, "मैंने सुना है कि आपने काम छोड़ दिया है। तो फिर हमारे यहां पर काम कीजिए।" तब से रिपन कॉलेज में लग गया। कई वर्ष था वहां पर। किन्तु हिन्दू स्कूल resignation (पदत्याग पत्र) देना भूल गया। हैडमास्टर ने एक को भेज कर कहलवाया, एक formal resignation (लिखित त्याग पत्र) दे दो।

ऐसा चार पांच बार हुआ है। 'अन्न-चिन्ता चमत्कारा, कालिदास होय बुद्धिहारा।' एक एक बार चाकरी छोड़ी है और दारुण चिंता में पड़ा हूँ। ऐसा काण्ड !

ठाकुर ने तभी एक भक्त (श्री श्री मां ठाकुरानी) से कहा था, यह रहा तुम्हारा मिट्टी का घर। साग भात रांधकर खाओगी और सारा दिन हरिनाम करोगी। घर तो किन्तु निज का होना चाहिए। साग भाग ही कितने लोग खा सकते हैं ? जभी मां ठाकुरुण ने कामारपुकुर के उस घर को ही सर्वदा रखा हुआ था।

झामापुकुर के राजा दिगम्बर मित्र सामान्य अवस्था से बड़े हुए थे। बालकों को स्कूल भेजते पैदल। पुस्तकें एक हाथ में और छाता एक हाथ में। एक जन संग जाता पहुंचाने। पांच गाड़ियां घर में। किन्तु बालकों को उन पर चढ़ने नहीं देंगे। पैदल चलना सीखें। क्यों? इसीलिए ना, बचपन में अभ्यास कर लेने पर पीछे भी उसी प्रकार कर सकेंगे प्रयोजन होने पर।

चाल बढाते नहीं। चाल को ठीक ही रखना चाहिए। विद्यासागर महाशय का भी यही मत था। उन्होंने अपनी चाल ठीक रखी थी सर्वदा। तालतला की चटी और धोती, चादर — इसको छोड़ा नहीं। आहार सरल और घरबाड़ी सादी साधारण। इतना रुपया कमाते, किन्तु अपना प्रयोजन अति सरल और सामान्य। मोटा भात, मोटा कपड़ा, यही नीति चिरजीवन पालन करते रहे। किन्तु अपने उपार्जन का रुपया सब गरीब दुखियों में बांट देते। पढ़ने के समय निज हाथ से भात रांधकर केवल मात्र नून छू-छूकर वही भात खाते दिन में भाइयों के संग। रात्रि में खाते एक टुक अम्बल के साथ भात।

डी. गुप्त के घर इतने सब चाकर नौकर, किन्तु लड़के कंधे पर सुराही (अभिनय करके) ऐसे करके जल चढाते तीन तले पर। निज कक्ष में निज झाड़ू देते।

जभी जब भले दिन हों गृहियों को तब provision (संचय) करना चाहिए — provision against rainy days (दुर्दिन के लिए)। जिनका अकेला शरीर— संन्यास जीवन, उनका 'जो हो कपाल में' बोलना चलता है। किन्तु जिनके लड़के बच्चे हुए हैं उन्हें अवश्य संचय करना चाहिए। ठाकुर कहते, पक्षी और दरवेश संचय करेंगे नहीं। किन्तु पक्षी के बच्चा होने पर उसको भी संचय करना पड़ता है। अत एव झमेला है गृहस्थाश्रम में। तभी ठाकुर छोकरों से कहते, विवाह मत करो। ठाकुर का और भी एक महावाक्य यह है, "लक्ष्मीछाड़ा होआर चाइते कृपण होआ भालो।' (अपव्ययी होने की अपेक्षा कृपण होना अच्छा।)

अन्तेवासी बातें भी सुनते हैं और कथामृत के अच्छे अच्छे फरमें भी छांटते जाते हैं। श्री म उनको पुकार कर पुनः कहते हैं, "सुनते हो जगवन्धु बाबू, ठाकुर कहते. 'लक्ष्मीछाड़ा होग्रार चाइते कृपण होग्रा भालो।' रुपया पैसा खूब cautiously (सावधानी से) व्यय करना।"

विनय और लक्ष्मण चले गए। मणि अव्यवस्थित चित्त, उठकर वराण्डे में चले गए। मणि की अमितव्ययता के संबंध में बातें होती हैं।

श्री म (जगबन्धु के प्रति)— हाथ में पड़ते ही रुपया उड़ाता है। अभ्यास भला नहीं। विचारहीन। देखिए ना कैसा लोग है। उसके बारह वर्ष के लड़के को पाल रहा है उसका साला। समस्त परिवार ही साले के पास है। लड़के को शायद मामा ने कुछ कहा था तिरस्कार करके। वह बात फिर कान में गई। कहता था, समस्त परिवार को ले आएगा। उसके ही खड़े होने का स्थान नहीं हैं। मस्तिष्क की ऐसी अवस्था! उन्हें लाने पर रक्षा कहां? हमने तभी कहा, वे वहां ही रहें। अब लाना उचित नहीं। लाकर उनको भी महाविपद् में डालेगा। आत्मीय कुटुम्ब क्यों? इसीलिए ना, विपद् में सहायक होंगे वे।

विपद् में पड़ने पर मन में होता है, ये शायद मेरी सहायता करेंगे। अन्य समय लगता है, ये सामान्य जन, क्या उपकार कर सकते हैं? Hope against hope, निराशा में आशा।

आप इसको कोई कर्म खोज दीजिए। कर्म में रहने पर मन बैठेगा। मणिबाबू का भार आपके ऊपर रहा। उसका स्नान, नहलाना, खिलाना सब देखिएगा। विपद् में पड़कर मस्तिष्क बिगड़ गया है। भक्तों के यत्न करने से चंगा हो जाएगा।

आप लोग जो स्वयं पका कर खाते हैं, यह अच्छा है। दाल-भात होने से ही हुआ। विद्यासागर महाशय के नाति परेशबाबू कहते हैं, संथाल लोग केवल भात भी नहीं पाते खाने के लिए। जभी दाल-भात क्या कम? हिन्दू कॉलेज के प्रिन्सिपल थे विद्यासागर महाशय। हठात् काज छोड़ दिया। बन्धुओं ने पूछा, चलेगा कैसे? उन्होंने उत्तर दिया, "मैं ब्राह्मण हूं। तीन मुठ्ठी चावल तीन घर से भिक्षा करके लाऊंगा।

उसे ही उबाल कर नमक के साथ खाऊंगा। तो भी अन्य की गुलामी और फिर नहीं करूंगा।"

अब ग्रीष्म की छुट्टिएं हैं। आप लोग इस ओर को एक सुन्दर एक आश्रम की भांति बना लें। इसी कमरे में पका कर खा सकते हैं।

वसुमती साहित्य मन्दिर में आज रात्रि में उत्सव है। बेलुड़ मठ के साधुगण वहां पर भोजन करेंगे। मॉर्टन स्कूल में भी निमंत्रण है। श्री म निज जा नहीं सकेंगे— भक्तों को भेज रहे हैं। अन्तेवासी से कहा, आप ये कई बातें सुनिए। प्रथम, सतीशबाबू से कहें, मेरा शरीर weak (दुर्बल) है। जभी इस crowd (भीड़) में खाना खूब कष्टकर है। द्वितीय, जभी हमको भेजा है। तृतीय, यहां पर जो लोग सर्वदा आते हैं उन सबको भी कह कर ले जाइए। चतुर्थ, सतीश बाबू से कहकर ठाकुर के गले की एक माला लाएं और सामान्य थोड़ा प्रसाद। पंचम, कम से कम एक unused (अव्यवहृत) माला लाएं। षष्ठ, और उसको (श्री म के द्वितीय पौत्र अजय को) संग में ले जाएं। बोलिए तो क्या क्या कहा? अन्तेवासी नें पुनराय ये छःओं आदेश आवृत्ति किए।

विनय, मनोरंजन, अजय, गदाधर, जगबन्धु प्रभृति श्री म के बदले निमंत्रण रक्षा करने के लिए चल पड़े।

वसुमती साहित्य मन्दिर में सुविस्तृत छत पर विराट आयोजन है। बेलुड़ मठ के शताधिक साधु आए हैं। स्वामी धीरानन्द की सुव्यवस्था में समग्र कार्य सुचारुरूप से सम्पन्न हो गया। भक्त सतीश मुखर्जी की आन्तरिक भक्तिश्रद्धा से और इतने साधु भक्तों के समागम से छत तो मानो महातीर्थक्षेत्र में परिणत हो गई। उस पर प्रसाद का अति प्रचुर आयोजन। महानन्द से सब ने प्रसाद पाया। रात्रि बारह बजे भक्तों ने मॉर्टन स्कूल में प्रत्यावर्तन किया। श्री म उनकी अपेक्षा में बैठे हैं। भक्तों ने श्री म के हाथ में एक सुगन्धि पुष्पों की मोटी गुथी हुई माला और प्रसाद दिया। श्री म युक्त करों से मस्तक पर धारण किए रहे। तत्पश्चात् उत्सव का समुदय विवरण हुआ। क्या क्या भोग हुआ था, साधु कौन कौन आए थे, किसके तत्त्वावधान में हुआ था, इत्यादि। श्री म उत्सवानन्द में भरपूर हैं।

भक्तों ने सर्वशेष एक दु:संवाद भी परिवेशन किया। वे लोग उसी उत्सव क्षेत्र में ही सुनकर आए हैं, आशु बाबू* ने शरीर त्याग किया है। श्री म आर्तनाद के स्वर में बोले, "कहते क्या हो? कहां यह सर्वनाश हुआ? ईश्वर ने उनके लिए इतनी सुविधा कर दी थी। चीफ जस्टिस होकर अवसर प्राप्त किया था। तब भी इस बूढ़ी वयस में एक मुकद्दमा ले लिया, यह सर्वनाश हुआ। असहाय अवस्था में ही यह महाप्राण गया।"

श्री म का उत्सवानन्द हठात् कुछ काल के लिए शोकसागर में निमज्जित हो गया, बंगाल के इस उज्ज्वल मणि के अन्तर्धान से। आकाश भरा चांद का आलोक जैसे अन्धकार में परिणत हो गया। श्री म छत पर एकाकी द्रुतपद से विचरण करने लगे।

(2)

मॉर्टन स्कूल। सकाल आठ। श्री म द्वितल के वराण्डे में पूर्व प्रान्त में चेयर पर पश्चिमास्य बैठे हैं। यहां पर पालि-क्लास होती है। श्री म के पास बेंच पर बैठे जगबन्धु, विनय और मणि मान्ना। आशुतोष मुखर्जी के शरीर त्याग की बातें होती हैं। गत रात्रि को यही दु:संवाद सुनने की अवधि से श्री म वही बात ही चिन्ता कर रहे हैं और शोक प्रकाश कर रहे हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)— भगवान ने इतनी सुविधा कर दी, तब भी वैसा किया। कितनी सुविधा, विचार करके देखिए ना! लड़के लायक। मास में दो तीन हजार रुपये आय की व्यवस्था है। तब भी पैसा। अनेक कष्ट से बनाया है कि ना पैसा! जभी पैसा देखने से फिर छोड़ने की इच्छा नहीं हुई। Contentment (सन्तोष) बड़ा ही आवश्यक। आशु बाबू का गुरु था नहीं ना, होता तो वे ही भेद बता

*आशुतोष मुखर्जी

देते । यहां का यह सब तो कुछ भी नहीं है, वही बतला देते हैं गुरु। गीता में है ,'आत्मानं नावसादयेत् ।'

आहा, देश का कैसा नुकसान हुआ ! कितनी शक्ति, कितनी विद्या, कितनी बुद्धि ! मान भी अथवा फिर कितना, हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस हो गए थे कि ना ! यूनिवर्सिटी का तो प्राण ही कहें तो ठीक, जन्मदाता। और फिर हृदय भी खूब । सुना जाता है, उनके संग जो काज करते उन सब के घरों की सब ख़बर रखते । गरीब हो तो गोपने सहायता करते लोग भेजकर। बड़ी क्षति हुई देश की ।

वेद में है नारद की कथा। जितनी भांति की विद्याएं हैं भूतत्त्व, नृतत्त्व प्रभृति सकल तत्त्व में सुपण्डित नारद । आजकल की भाषा में कहें तो, जितने प्रकार की 'logy' अर्थात् विद्याएं हैं सबों में मास्टर नारद । किन्तु चित्त में शांति नहीं । जभी ऋषि सनत्कुमार के निकट गए शांति के लिए। ऋषि बोले, वत्स सर्वविद्या लाभ तो चाहे कर लिया है, किन्तु उसका कर्मज्ञान नहीं हुआ, मूलतत्त्व का बोध नहीं हुआ । शब्द ज्ञान लाभ किया है मात्र। सकल विद्या के मूल में है ब्रह्मविद्या । इसी का लाभ होने पर ही शांति । तत्पश्चात् ऋषि की कृपा से नारद को शांति लाभ हुआ ब्रह्मज्ञान से ।

ऐसा ही काण्ड। गुरु बिन संसार में और आश्रय नहीं। गुरु ही बोल देते हैं, ईश्वर सत्य संसार अनित्य । जभी उनको पकड़ कर संसार करने पर फिर दुःख नहीं। सद्गुरु पावे भेद बतावे। हम धन्य ! अल्प वयस में ही गुरु-लाभ हुआ था । गुरु का ऋण-शोध होता नहीं। अहेतुक कृपा सिन्धु गुरु ! हमारे गुण से क्या वे आकृष्ट हुए हैं ? ना, वैसा नहीं। यह उनकी अहेतुक कृपा । दोष गुण विचार करने से कोई भी खड़ा हो सकता है उनके पास ? वे थे शुद्धमपापविद्धम् ।' उनकी तुलना वे निज ।

श्री म कुछ सोचते हैं। पुनराय बातें चलती है ।

श्री म (भक्तों के प्रति)— एक दिन ठाकुर का आहार हो गया था, थाल में कुछ भात था । मुझ से कहा, कुकुर को दे आओ यह सारा ।

मैं भात लेकर जा रहा हूँ और बिचार कर रहा हूं, यह अमृत कुकुर अकेला क्यों खाएगा ? जभी मैंने भी खा लिया। फिर थाल को मांजता हूं गोल वराण्डे के पास। ठाकुर देखकर बोले, "बेश बेश।" यह खूब भला। सब प्रकार का अभ्यास होना चाहिए। पकाना, बासन मांजना; कपड़े धोना, घर द्वार झाड़ देना— यह सब जानना उचित। कब कहां किस अवस्था में रहना पड़े ! सोचो, विदेश में रहते हो। तब कौन पका कर देगा ? सीख रखना खूब भला। इन सब विषयों में जो पराधीन है उसका ब्रह्मज्ञान होता नहीं।

आहा, कैसी सब बातें ! गुरु विना कौन बताएगा इस मुक्ति का संधान। मुक्ति माने सर्व विषयों में मुक्ति। केवल अविद्या के पाश से ही मुक्ति नहीं। Preliminary (प्राथमिक) मुक्ति ये सब। देह धारण के लिए अपर की सहायता न लेना। लेनी हो भी तो जितनी कम हो। संन्यासी तो निजी काज निज करेगा ही। गृहाश्रम में जो हैं वे भी निजी काज करेंगे। सर्व विषयों में independent (स्वाधीन)। केवल ईश्वर पर dependent (निर्भरशील)। यह व्यवस्था जो ईश्वर का आनन्द पाना चाहते हैं, शांति चाहते हैं केवल उनके लिए है। जो संसार का आनन्द पाना चाहते हैं, उनके लिए नहीं।

किस प्रकार भक्त लोग सर्व विषय में निजी पांव के ऊपर खड़े हो सकें, सर्वदा ठाकुर वही चिन्ता करते और वही शिक्षा देते। उनके पास अन्तरंगगण जो जाते उनके प्रत्येक के लिए पृथक् पृथक् शिक्षा देते। सबके लिए एक नियम नहीं लगता। किन्तु देह धारण के संबंध में सब के लिए ही यही व्यवस्था— निजी काज निज करना।

इधर तो बोले, ईश्वर सत्य, संसार अनित्य। किन्तु व्यवहारिक विषय में कैसा लक्ष्य, देखो। जब तक देह त्याग न हो तब तक यह सब लोक-व्यवहार मिथ्या कहने से चलेगा कैसे ? शास्त्र और गुरुवाक्य में विश्वास मिथ्या कहने से चलेगा कैसे ? शास्त्र और गुरुवाक्य में विश्वास करके, संसार मिथ्या मन मन में जान कर यह सब करने से 'अनपेक्ष' और 'दक्ष' होता है। दृष्टि रहेगी केवल सत्य में— ईश्वर में। उनमें मन

आगे रखकर तब फिर सर्व विषय में पारदर्शी होना। उनको पहले अपना बनाना चाहिए।

गुरु के अधीन होकर सर्व विषय में पारदर्शी होने से शीघ्र हो जाता है। व्यवहारिक विषय में जो मन दक्ष, संस्कृत, इसी मन का ही पीछे ईश्वर में मोड़ फिरा देना। जभी तो कहते, जो नून का हिसाब कर सकता है, वह मिश्री का हिसाब कर सकता है। अनलस अतन्द्रित मन का प्रयोजन।

कितनी चिन्ता करते ठाकुर भक्तों को तैयार करने के लिए! अविद्या की force (शक्ति) के भीतर से कैसे विद्या की force (शक्ति) के "आण्डरे" (भीतर) आ सकते हैं भक्तगण, इसके लिए ही सर्वदा भावना रहती ठाकुर को।

एक बार एक जन भक्त से बोले, तुम यहां वालों के लिए एक छोटी दरी लाओ। जानते हैं भक्त अन्य द्वारा खरीदवाएगा। जभी संग संग बोल दिया, निज जाकर खरीदोगे। क्यों इस प्रकार कहा? भक्तों के कल्याण के लिए। उनको क्या प्रयोजन उस वस्तु में? कितने लोग कितनी वस्तुएं देना चाहते, किन्तु वे ग्रहण करते नहीं? भविष्यत् में भक्तों को चिन्ता की खुराक मिलेगी इस घटना से। सोचेंगे हमने उनकी यत्किंचित् सेवा का अधिकार पाया था। भक्त लोग अभी तो जानते नहीं, वे कौन हैं, किसकी सेवा करते हैं।

ठाकुर सब प्रकार की शिक्षा देते, ईश्वरीय और फिर संसारिक सर्व विषय की। एक दिन मैंने दीवे की बत्ती बढ़ा दी थी, देखकर ठाकुर बोले, आग में हाथ (दाएं हाथ का अंगूठा और तर्जनी अंगुली कई बार आग के ऊपर संयोग और वियोग करके) को ऐसे ऐसे कर लो। तो फिर हाथ शुद्ध हो गया।

सद्गुरु लाभ होने पर मनुष्य निश्चिन्त। वे सब करवा लेंगे। ईश्वर ही गुरु हैं। और फिर वे ही अवतार होकर आते हैं। आकर सब शिक्षा देते हैं। ईश्वर दर्शन के पश्चात् कोई आदेश पाते हैं, तब वे ही गुरु का काज कर सकते हैं। ठाकुर कहते, जिन्होंने काशी दर्शन किया है, काशी का संवाद केवल वे ही बतला सकते हैं।

अपराह्न साढ़े पांच । श्री म दोतल के बराण्डे के पूर्व प्रान्त में उपविष्ट हैं। प्रातः यहां पर ही ईश्वरीय कथा हुई थी। द्वितल को भक्तों ने एक आश्रम की भांति कर लिया है। इसलिए श्री म समय का अधिक भाग यहां पर ही रहते हैं। आरामबाग के एक जन भक्त आए हैं। बड़े अमूल्य, जगबन्धु, गदाधर, श्री म के पौत्र अरुण और अजय प्रभृति भी श्री म के पास बैठे हैं। अजय गतरात भक्तों के साथ बसुमती साहित्य मन्दिर के उत्सव में गया था। वयस में किशोर है।

श्री म (अजय के प्रति) — कल तुमने साधुओं को नमस्कार किया था तो ? सतीश बाबू को भी किया था ?

अजय–जी हां। किन्तु सब के पद-स्पर्श करके करना नहीं हुआ।

श्री म—हाथ जोड़ कर किया था तो ? वह होने से ही हुआ। इतने लोगों को एक संग एक बार नमस्कार करने से ही होता है।

नमस्कार क्यों करना ? क्योंकि, भीतर भगवान हैं कि ना। तभी उनको नमस्कार करना। यह भी पूजा होती है उनकी। गीता में है, "नमस्यन्तश्च मां भक्त्या"। वेद में है, ऋषिगण कहते हैं, "युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिः"।

एक दिन एक लड़के भक्त को देख कर ठाकुर बोले, तुझे देखकर पूजा करने की इच्छा होती है। फूल नहीं थे, होते तो उसकी पूजा करता। बोले थे, फिर मन में भी पूजा होती है। सर्वत्र ही ब्रह्म दर्शन करते हैं कि ना ठाकुर–वेद का सत्य "सर्वं खल्विदं ब्रह्म"। बालक शुद्धात्मा। उसमें अधिक प्रकाश ब्रह्म-नारायण का। जभी ऐसी बात कही। इससे इसी भक्त का अपने ऊपर श्रद्धा विश्वास बढ़ेगा। मन में होगा, मेरे हृदय में भगवान निवास करते हैं। उनकी ही ठाकुर ने पूजा करनी चाही थी। ऐसी श्रद्धा न हो, निज के ऊपर निजी विश्वास न रहे तो सब व्यर्थ है। हजार गुण भी निष्फल होते हैं। ठाकुर की इस बात से, उस समय के और भविष्यत् के भक्तगण सीखेंगे कि मनुष्य में भी भगवान की पूजा होती है। यदि मिट्टी की, काठ की, पत्थर की, पीतल की अथवा सोने रूपे की प्रतिमा में भगवान की पूजा हो सकती है तो फिर जीवन्त मनुष्य प्रतिमा में क्यों नहीं होगी ? उस पर

फिर निष्पाप शुद्धात्मा में !

ठाकुर कहते, मन मन में पूजा करना और भी अच्छा है। वह पूजा हो सकती है साधन पथ पर थोड़ा अग्रसर होने से। प्रथम है बाह्य पूजा की आवश्यकता। इसमें भी फिर विपद् है, इस बाह्य पूजा में। कर्मकर्त्ता का अभिमान बढ़ सकता है। इसीलिए जो करना, अन्तर में उनके शरणागत होकर करने से ये दोष नहीं होते।

गतरात्रि श्री म ने आशुतोष मुखर्जी के शरीर-त्याग का संवाद पाया था। तदवधि बीच बीच में अनमने कुछ भावते हैं, जैसे मर्माहत। कभी कभी आशु प्रतिमा के दो एक गुणों का उल्लेख करते हैं। आज प्रभात में संवादपत्र देखना चाहते थे। तभी बड़े जितेन ने एक पर्चा "इंग्लिश मैन,' भ्रातुष्पुत्र हेमेन्द्र के हाथ भेज दिया है। एकजन भक्त पढ़कर सुनाते हैं। सम्पादक ने आशुबाबू की प्रतिभा की अतिशय सुख्याति की है। आशुबाबू को "बंगाल टाइगर" कहा है एक स्थल पर। श्री म को वह ठीक नहीं लगा। बोले, "यह हमें अच्छा लगा नहीं। 'टाइगर' कहने की अपेक्षा 'लायन' कहना भला है।" बीच बीच में आशुबाबू गुणकीर्तन करते हैं और बीच बीच में कहते हैं, "आहा, कैसा जीवन व्यर्थ में गया। कितनी बढ़िया प्रतिभा, कितना मूल्यवान जीवन।"

श्री म (भक्तों के प्रति) — महामाया सब भुला देती हैं। उनके संग चालाकी चलती नहीं। जभी ठाकुर स्वयं ईश्वरावतार होकर सर्वदा प्रार्थना करते, "अपनी भुवनमोहिनी माया में मुग्ध करो ना मां।" आंखों के सामने देखते थे कि ना, कैसा काण्ड चलता है अघटन-घटन-पटीयसी महामाया का। जभी लोक शिक्षा के लिए यह प्रार्थना करते थे।

जो जितना ईश्वर के निकट है वह उतना ही अधिक देख पाता है माया का यह ताज्जब काण्ड। सब धोखा लगा देती हैं। सत्य को मिथ्या और मिथ्या को सत्य कहकर बोध करवा देती हैं। कैसे इस मनुष्य की क्षुद्र बुद्धि ठीक रह सकती है ? सब उलट पलट कर देती हैं।

जभी सर्वदा शरणागत होकर प्रार्थना करनी सिखा दी थी। गीता में भी वही है। "मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते"। प्रार्थना करने पर मां प्रसन्न होती हैं। जभी सर्वदा प्रार्थना करने के अतिरिक्त हमारे लिये अन्य उपाय नहीं।

अनन्त काण्ड महामाया का। मनुष्य की बुद्धि जितनी बढ़ी ही हो— अति क्षुद्र है। इसी आकाश की ओर एकबार ताककर देखिए ना आप लोग, कैसा अवाक् काण्ड चलता है। इन अनन्त तारागणों में एक की भी खबर मनुष्य आज पर्यन्त पा सका है कोई ? (मोहन के प्रति) सुना है टेलिस्कोप में आजकल तारों की फोटोग्राफ ली जाती है। मेरी वह देखने की इच्छा होती है। सुना है सेन्ट जेवियर कॉलेज में फोटो ली जाती है। जाइए न आप एक दिन। देखकर आकर हमें बताइएगा। ये सब देखने से ईश्वर कितना बड़ा है, उसका एक आभास मिल जाता है। उससे शीघ्र हो जाता है काज। विश्वास होने से ही सब हुआ।

आने जाने से मनुष्य का कुटुम्ब होता है। आना जाना करने से आलाप होता है। मिशनरी खूब भले लोग हैं। ललित महाराज बिशप कॉलेज में जाते हैं। वे भी आते हैं गदाधर आश्रम में। भारी सुन्दर व्यवहार उनका। हम कभीकभी उनके संग रंग-रस करते— "आसुन, बसुन" बंगला में बोलकर। मेरी वह फोटो देखने की बहुत इच्छा है।

संध्या अतीत हो गई है। श्री म ठनठनिया में मां काली के सम्मुख युक्त करे वीरासन पर बैठे हैं, ध्यान कर रहे हैं। श्री म के दोनों पार्श्वे जगबन्धु, बड़े अमूल्य, गदाधर और आरामबाग का भक्त हैं।

अब रात्रि आठ। श्री म मॉर्टन स्कूल की छत पर बैठे हैं चेयर पर उत्तरास्य। बड़े जितेन, विनय, मनोरंजन, डाक्टर बक्शी, जगबन्धु प्रभृति नित्यकार भगक्तगण श्री म के सामने तीनों ओर बैठे हैं बेंचों पर। श्री म पुनः आशुबाबू का गुणकीर्तन करते हैं।

श्री म (भक्तों के प्रति)— अमूल्य जीवन ही गया। गुरु होते तो वह काज लेने में बाधा देते। कहते, तुम्हें अब और ये सब काज शोभा नहीं देते। अब भगवान का नाम करो। और करना ही ह [illegible] निष्काम करो खाली। गुरु ने हम लोगों से कह दिया था, बेटा, तुम यहां वाले

भोग करने नहीं आए । तुम लोग ब्रह्मानन्द के अधिकारी । उसी ओर लक्ष्य रखो। और जीवन धारण के लिए दाल भात की व्यवस्था करो। बस । तब फिर सत्संग करो, ईश्वर चिन्ता करो। यह ही तो हुई भारतीय संस्कृति—ऋषिजीवन । इतने रुपये पैसे का प्रयोजन क्या ? वह सब करेंगे अन्य लोग। उनकी श्रेणी अलग ! एक दिन नरेन्द्र आए, सिर पर टेढ़ी मांग। ठाकुर ने प्यार से निकट बुलाकर सिर पर हाथ फेरने के बहाने से वह टेढ़ी मांग भग्न कर दी । बोले, बेटा तुम लोग मां के जन हो । तुम लोगों का अन्य काज । यह सब तुम्हारे लिए नहीं है। तुम लोगों को देखकर लोग शिक्षा लेंगे। धन जन मन प्राण सब के द्वारा तुम लोग ईश्वर को प्यार करो।

सद्गुरु लाभ होने से बच गया। नहीं तो कर्म बढ़ जाता है। तभी जन्म-मरण बढ़ जाता है। गुरुकृपा से पर्याप्त होश रहती है। तो भी फिर एक एक बार आती जाती है। सन्ध्या के समय, देखिए ना, हठात् चला गया ठनठने में मां के पास। कैसे उसी समय में एक वैराग्य हो गया। और फिर जो था वही। एक ढेला मारा। थोड़ी देर जल दिखाई दिया। और फिर जो था वही— नाचते नाचते काही ने आकर सब ढक दिया। जगत् में देखते हैं मनुष्य, सब अनित्य। आंख के सामने सब मरते हैं। तब बाड़ी घर सब पड़ा रहता है। तब भी चैतन्य होता नहीं। तप्त तवे पर जलबिन्दुवत् तनिक चैतन्य होते ही झट फिर ढक गया। जब बकरा बली होता है तब आर्त्तनाद से अन्य बकरे भी थोड़ा आंख उठाकर देखते हैं और फिर घास खाते हैं, सब भूल गए। मनुष्य की भी यही अवस्था। क्या करेगा मनुष्य ? महामाया के हाथ में सब पुतलियां। जभी ठाकुर ने सिखा दिया था, अपनी भुवनमोहिनी माया में मुग्ध करो ना मां। "भ्राम्यन् सर्वभूतानि यंत्रारूढ़ानि मायया।"

बड़े जितेन—आप लोगों को छू नही सकती। माया के अंक में रहते हैं।

श्री म— ना, सब ही को भुलाती है। उसके संग चालाकी नहीं

चलती। देखते ही नहीं, ठाकुर स्वयं बोलते हैं, 'भुलाइयो न मां, भुंलाइयो ना।' क्राइस्ट ने भी कहा था. 'and lead us not into temptation', इसका अर्थ भी वही— भुलाइयो ना पितः, हम लोगों को भुलाइयो ना। ऋषिलोग भी सर्वदा प्रार्थना करते हैं, 'रुद्र यत्ते दक्षिणं मुखं तेन मां पाहि नित्यम्।' इन सब से समझ में आता है कि सब को ही भुलाती हैं। हां, तब भी वे स्वयं जिसको पकड़े रखते हैं उसकी बात भिन्न है। जैसे ठाकुर। वे कहते, मां जिसको पकड़े रहती हैं उसका पांव बेताल नहीं पड़ता।

शरीर धारण करने पर चौबीस घण्टे इसी धोखे में रहना पड़ता है। जभी चौबीस घण्टे प्रार्थना आवश्यक।

(3)

अपराह्न सात। ग्रीष्म काल; 27 मई, 1924 ई०। श्री म ठनठने के मन्दिरों में मां काली के सम्मुख बैठे हैं। पास जगबन्धु, अक्षय, पटना का एक लड़का, पीछे मनोरंजन। अक्षय के संग दैवात् रास्ते में मेल हुआ। कुछ काल श्री म ध्यान करते हैं। अब मां का चरणामृत लेकर उठ खड़े हुए। तत्पश्चात् शिव मन्दिर में प्रणाम करके लौटते है। संग में भक्तगण।

रात्रि साढ़े आठ। मॉर्टन स्कूल के द्वितल का गृह। फर्श पर मादुर बिछी हुई है। श्री म आकर मादुर पर बैठ गए पूर्वास्य। तीन ओर भक्तगण बैठे हैं— बड़े जितेन, छोटे जितेन, शुकलाल, अक्षय, बलाई मणि जगबन्धु; विनय प्रभृति। विक्रमपुर के भक्त आए हैं। थोड़ा पीछे पीछे विनय प्रणाम करके उठ गए। वे घर जा रहे हैं गोयाड़ी कृष्णनगर। जगबन्धु संग में गए। कुछ दूर उनको अग्रसर करके आ गए। अब तक ईश्वरीय बातें हुई थीं। आशुबाबू के त्याग की बात भी हुई। अब श्री म निज गान गते हैं। स्वर खूब मधुर— आसावरी रागिनी।

गान : प्रभु मै गुलाम, मैं गुलाम तेरा ।
तू दिवान, तू दिवान तू दिवान मेरा ॥
दो रोटी, एक लंगोटी तेरे पास मैं पाया ।
भक्ति भाव दे आरोग, नाम तेरा गाया ।
तू दीवान मेहरबान नाम तेरा मीराँ,
अब की बार दे दीदार मेहर कर फकीराँ ।
तू दीवान मेहरबान नाम तेरा बारेया,
दास कबीर शरणे आया चरण लागे तारेया ॥

श्री म (भक्तों के प्रति)— इसी गान को नरेन्द्र ने गाया था काशीपुर में ठाकुर के चक्षुओं से जल गिरने लगा। आह, कैसा मिष्टि गला नरेन्द्र का! ठाकुर का गला भी मिष्टि था। इन दो जनों का गाना सुनकर अन्य गाना और अच्छा नहीं लगता। जैसे मिष्टि वैसा ही गुरुगंभीर, वैसा ही उसका आकर्षण। मन को खींच ले जाकर एकदम ऊपर उठा देता है। सांप जैसे सपेरे की बीन सुनकर फण उठा कर स्थिर होकर सुनता है, वैसे ही उन (दोनों) का गाना मन को जगा देता, एकाग्र कर देता। तत्पश्चात् एकदम ही ईश्वर के संग योग कर देता। ऐसा गाना और सुनाई नहीं देता, और सुनूंगा भी नहीं। ठाकुर शेष समय में फिर गाना नहीं गा सकते थे प्राय: एक वर्ष। भक्तगण गाते और नरेन्द्र। नरेन्द्र ही अधिक गाते। ठाकुर सुनते। ठाकुर के गले में अन्त में छिद्र हो गया। अकेले बाग में पड़े रहते। दिन में कभी कोई कोई जाता। अन्तिम दिनों में जो सेवा करते वे रहते। ठाकुर के गले से बड़ा कटोरा रक्त गिरता–heart (हृदय) का सब रक्त। शरीर तो एकदम skeleton (कंकालमात्र) हो गया। ऐसा कष्ट निज भोग करके दिखा गए हैं humanity (मानवसमाज) को, देह धारण करने पर दुःख कष्ट होगा ही होगा— छुटकारा नहीं।

ठाकुर के शरीर को इतना कष्ट, किन्तु एक सैकेण्ड के लिए भी भूले नहीं ईश्वर को। कितना प्यार होने से ऐसा होता है ? ज्योंहि एक

बात होती, या गाना होता, जो कोई भी ईश्वरीय विषय चाहे क्यों न हो झट धप् करके जसे जल उठता ईश्वरीय भाव। जैसे दियासलाई जरा सी रगड़ पाकर ही जल उठती है। तब मन देह में नही, ईश्वर में निमग्न। 'मां मां' कहकर बाह्यज्ञान शून्य हो जाते। ईश्वर जब मनुष्य शरीर लेकर आते हैं केवल तब ही यह अवस्था संभव है। अन्य जन के पक्ष में असंभव। महामाया सर्वदा भुलवा देती हैं। केवल मायाधीश के पक्ष में ही संभव माया में रहेते हुए भी सम्पूर्ण स्वतंत्र होना। जैसे सांप के मुख में विष, किन्तु स्वयं निर्लेप, विषमुक्त।

भक्तों, महापुरुषों ने दुःख में पड़कर कितने गाने गाए हैं। 'पड़िये भवसागरे डूबे तरी।' 'माता तुमि थाकते आमार जागा घरे चुरि।' इत्यादि और फिर वैसी विपद् में रहकर भी गाने में होशियार-वाणी सुनाते हैं— दुर्गा नाम भूलो ना, भूलो ना रे मन।

विपद् में सब भुलवा देते हैं। देहज्ञान जाना नहीं चाहता। जभी जैसे भक्तगण प्राणभर कर appeal (प्रार्थना) करते हैं मनको, और humanity in infirmity (विपदग्रस्त मानव समाज) को। कहते हैं, भगवान को भूलो मत। प्राणपण से उनको पकड़े रहो। उनको छोड़ देने पर फिर रक्षा नहीं है। शरीर भी जाएगा, मन भी जाएगा-तो सर्वनाश। उनको पकड़े रहने से मनको तो अन्ततः बचा सकेगा। शरीर जाता है तो जाय। फिर शरीर तो जाएगा ही एक दिन। मन उन में रहने से शरीर का कष्ट भी इतना बोध होता नहीं।

श्री म मत्त होकर गाते हैं, संग भक्तों ने भी योगदान दिया।

गान : श्री दुर्गा नाम भूलो ना, भूलोना भूलो ना (रे मन)
श्री दुर्गास्मरणे समुद्रमन्थने, विषपाने विश्वनाथ मलोना।
यद्यपि कखन विपद घटे, श्री दुर्गा स्मरण करिओ संकटे
ताराय दिये भार सुरथ राजार, लक्ष्य असिघाते प्राण गलो ना॥
विभु नामे एक राजार, छेले, यात्रा करे छिलो श्री दुर्गा बोले।
आसिबार काले समुद्रेर जले, डुबे छिलो तबु मरण होलोना॥

गाना थमा। श्री म नीरव। पुनः कथाप्रसंग चला।

श्री म (अक्षय के प्रति)— बड़े मेंढक ने कैसी पक्की बात ही कही है— राम, जब तुम ही मारो तब किस से कहूँ, रक्षा करो। अन्य के मारने के समय तो चिल्लाता हूँ, राम रक्षा करो, राम रक्षा करो पुकार कर।

सब ही वे। और फिर सब को ही उन्होंने बनाया है। उनकी जो इच्छा, वही होता है। चुप करके सहे जाना भला। सहना भी क्या सहज? फिर भी चेष्टा करना। उनकी इच्छा होने पर सहने की शक्ति भी आ जाती है।

एकजन भक्त (श्री म) के हाथ पर बिच्छू ने काटा था। कैसी यंत्रणा! असह्य वेदना! ज्योंहि ठाकुर के असुख की बात स्मरण हुई— उनकी असह्य यंत्रणा की बात, त्योंहि मैजिक की भांति instantaneously (तत्क्षणात्) बिच्छू के डंक की दारुण वेदना अन्तर्हित हो गई।

एक जन भक्त (श्री म) केवल कई दिन मात्र से ही ठाकुर के निकट आना जाना करने लगे हैं। एक दिन साहस करके ठाकुर से बोले, यह सब ही (संसार) जब अनित्य, तब ये सब (परिवार स्त्री) फिर क्या? यह सब भी मिथ्या। और अपना शरीर भी तो मिथ्या। संसार ज्वाला से जर्जरित होकर ठाकुर के निकट गए हैं। ठाकुर भक्त का मनोभाव— शरीर त्याग करने का इंगित समझ उनको अभय देते हैं। बोले, तुम्हारी बला, क्यों जाओगे शरीर त्याग करने? हजार गांठों वाली एक रस्सी जादूगर ने दस हजार लोगों के सामने फेंक दी। कोई एक गांठ तक भी खोल सका नहीं। तब जादूगर ने ऐसे ऐसे हाथ हिला कर सब की सब गांठें खोल डालीं। जभी बाइबल में है, For with God nothing shall be impossible. (भगवान के लिए असाध्य कुछ भी नहीं।)

तत्पश्चात् ही बोले, तुम्हारा तो गुरुलाभ हुआ है। भावना क्या? इसका अर्थ, गुरुलाभ होने पर संसार की उत्ताल तरंग कुछ भी कर सकती नहीं। गुरु रक्षा करते हैं, नहीं तो धंस जाता है अतल जल में। गुरु माने ईश्वर।

ठाकुर दक्षिणेश्वर में रहते थे। भक्त लोग उनके पास गए थे। घर प्रत्यावर्तन करना चाहते थे। झट ठाकुर बोले, तुम आज रह जाओ। यदि कहा जाता, घर में सुख विसुख है, तो वे उत्तर देते, वह चाहे हो तो हो। यदि वैसो विपद् घटेगी तो मोहल्ले के लोग देखेंगे।

यह बात सुनकर लोग कहेंगे, कैसा निष्ठुर आचरण! किन्तु ठाकुर इधर वालों को इतना नहीं देखते थे। किस प्रकार अन्त का भला होगा, अनन्तकाल के लिए सुखी होगा, वही पहले देखते। किस प्रकार मृत्यु को जय कर सकता है, कैसे अमृतत्व लाभ हो, उसकी चिन्ता पहले करते।

एक बार एक भक्त ने रात्रि नौ के पश्चात् रवाना होना था— कलकत्ता जाना था। घोर अन्धकार। पैदल जाना होगा सारा रास्ता, ठाकुर अति चिन्तित हुए। Next meeting में इसके पश्चात् मेल होने पर पूछा, "तुम उस दिन भली भांति पहुंच गए थे तो? मुझको बड़ी चिन्ता हुई थी।" भक्त ने उत्तर दिया, जी कोई भी कष्ट नहीं हुआ जाते हुए। वह होगा क्यों? आपके यहां से जो गया था। गेट से निकलते ही देखी, एक गाड़ी। छः पैसे को सवारी में एकदम ले गया बीडन स्ट्रीट। ठाकुर ने सुनकर एक धमकी दी। बोले, तुम्हारी यह कैसी हीन बुद्धि की बात है। ईश्वर क्या 'लाओ कुमड़ा' फल देते हैं? वे तो अमृतत्व हाथ में लिए बैठे हैं, भक्तों को देंगे इसीलिए।

गिरीशबाबू को भी एक धमक दी थी। गिरीशबाबू ने कहा ने था, महाशय आप का चरणामृत पाकर मेरा चाकर ठीक हो गया— छः दिन का ज्वर चला गया। तुरन्त एक धमक। बोले, छीः कैसी हीन बुद्धि की बात! असुख हटाने के लिए उन्होंने औषध की है, डाक्टर वैद्य बनाए हैं। उनसे हटाओ। ईश्वर से मांगना चाहिए केवल अमृतत्व।

उनकी महामाया हमें किस दुरवस्था में रखे हुए है, देखिये ना। हम संसार में किस भाव से रहते हैं। एक, जीव दुखों के मुख में है। तब भी समझ नहीं सकता अपनी ऐसी संकटजनक अवस्था। इस मृत्यु के कराल वदन में खूब आनन्द आह्लाद करते हैं। एक जन और एक को खाने जाता है। वह भी जो और के मुख में है, एवं यही विश्व संसार जो मृत्यु के

विनाश ग्रास में है यह समझने नहीं देती उनकी महामाया। आशुबाबू की मृत्यु से केवल यही छवि ही मन में उठ रही है।

सब भुला देती हैं वे। उनकी कृपा होने पर कुछ रक्षा। जभी देवतागण भी महामाया का स्तव करते हैं, 'मां, तुम्हारी माया में विश्व सम्मोहित।' — 'सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्।' वे समझ पाए थे यह precarious condition दुरवस्था। जभी उसके पश्चात् ही बोलते हैं, त्वं वै प्रसन्नो भुवि मुक्तिहेतुः? अर्थात् उनके प्रसन्न होने से ही इस उत्कट मायाजाल से मुक्त हो सकता है जीव। देवतागण भी सर्वदा प्रार्थना करते हैं, मां हमारी रक्षा करो इस भ्रान्ति के हाथ से।

अगले दिन सवेरे श्री म ने अन्तेवासी को खाने के लिये एक आम और मधु दिया। श्री म प्रातः से ही सारा दिन संवाद पत्र से आशुबाबू का जीवन चरित पाठ, आलोचना और चिन्ता कर रहे हैं। संध्या के पूर्व पौने सात बजे ठनठने की कालीमाता को प्रणाम करके ट्राम में चढ़े। अन्तेवासी भी चढ़े, किन्तु उसको उतार दिता। श्री म अकेले भवानीपुर जाते हैं। हरीशपार्क में शोकसभा में आशु प्रतिभा का गुणकीर्तन सुनेंगे। गदाधर आश्रम में प्रथम गए। फिर हरीशपार्क की सभा से आशुबाबू की बाड़ी होकर मॉर्टन स्कूल लौटे रात्रि साढ़े दस बजे। भक्तगण — छोटे जितेन, बलाई, डाक्टर बक्शी, छोटे रमेश, बड़े जितेन, मोटा सुधीर, रमणी, जगबन्धु प्रभृति द्वितल के वराण्डे में प्रतीक्षा करते हैं। स्टुडेन्ट्स होम के प्रीति चैतन्य अनेकक्षण अपेक्षा करके चले गये।

मॉर्टन स्कूल, कलकत्ता।
28 मई, 1924 ई०, बुधवार।
14 वां ज्येष्ठ, 1331 (बं०) साल, कृष्णा दशमी।

॥ श्री म दर्शन —— सच्ची मां ॥

'श्री म दर्शन' घर में रहती, नित्य प्रति वह हम से कहती ।
बच्चो सुन लो बात हमारी, कथामृत है 'मां' हमारी ॥१॥

ठाकुर मां हैं मुझ को प्यारे, इनके बालक अजब न्यारे ।
जो जन इनकी सेवा करता, निश्चय ही भवसागर तरता ॥२॥

पहले जल्दी जल्दी पढ़ लो, पीछे बैठ रोमंथन कर लो ।
ठाकुर चिन्तन मुझ को प्यारा, मां संकीर्तन भेद हमारा ॥३॥

तीन चित्र हैं इसमें लखते, प्रेमी योगी भोगी बसते ।
तीन शरीर का रूप दिखाती, अमृत का संधान बताती ॥४॥

अलग अलग इन सबको देखो, एक घटि में सब रंग पेखो ।
जो थे राम जो थे कृष्ण, अब वे ही हुए रामकृष्ण ॥५॥

हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, मेरे गुणों की करें बड़ाई ।
गीता बाइबिल चण्डी कुरान, रामायण महाभारत वेद पुराण ॥६॥

गुरु ग्रन्थ गायत्री कथामृत, साधु संग प्रसाद चरणामृत ।
सब के सब ही मीठे लगते, रामकृष्ण के चित्र जब अंकते ॥७॥

नाना गीत नाना कविताएं, नाना चित्र नाना बतिकाएं ।
यह 'श्री म दर्शन' हमें सुझाती, गोपन धन की राशि ठेलाती ॥८॥

आओ बच्चो पढ़ें पढ़ाएं, गुरुजनों से प्रीत लगाएं ।
उनके चरणों में सब ज्ञान, इन में दे दो मन औ प्राण ॥९॥

एक धन्य भारत में आए, दो धन्य मनुष्य तन पाए।
तीन धन्य ठाकुर संग आए, चार धन्य इस मां को पाए ॥१०॥

पांच धन्य गुरु सुयोग दिलाए, छः धन्य मन प्राण जगाए।
पहले बुद्धि को समझा लो, इसके चित्रों से सुलझा लो ॥११॥

उलझे हुए का काम न होगा, सुलझा जो वही धन्य होगा।
स्थल देह से पार न होगा, सूक्ष्म देह भी भार ही होगा ॥१२॥

यों तो शास्त्र पढ़ें पढ़ावें, उनमें बालू चीनी पावें।
इसमें बालू का नाम नहीं है, अमर मिश्री का ढेर यहीं है ॥१३॥

धर्म धर्म सब ही चिल्लाते, धर्म का असली भेद न पाते।
'जन्म मृत्यु में संग जो रहता, अब भी संग है' धर्म बताता ॥१४॥

'आगे ईश्वर' धर्म कराता, 'परे सब' यह भेद बताता।
आओ बच्चो गीत सुनाएं, 'श्री म दर्शन' गीत लो गाएं ॥१५॥

वृद्ध को बालक गीत बनाता, परमहंस तब नाम दिलाता।
'श्री म दर्शन' संग में रखो, बनो, दिखाओ, मेवा चखो ॥१६॥

— एक भक्त

लेखक की प्रकाशित ग्रन्थावली

1. श्री म दर्शन (बंगला)—भाग 1 से 16.
2. श्री म दर्शन (हिन्दी)—भाग 1 से 4.
3. अंग्रेजी संस्करण—'M.'—The Apostle and the Evangelist—Part 1 to 4.
4. Sri Sri Ramakrishna Kathamrita Centenary Memorial.
5. A Short Life of Sri 'M'.

प्राप्ति-स्थान:—

1. श्री रामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट, 579, सैक्टर 18-बी, चण्डीगढ़—160018.
2. डा० इन्द्र सांघी, 400—एन, पहला ब्लाक, राजाजी नगर, बंगलोर—560010.
3. श्रीमती पद्मा गाडी, R—899, न्यू राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली—110060.
4. श्री बी० दे, 'ठाकुर-बाड़ी', 549—फ्लैट 21, महानगर Ext., लखनऊ-226006.
5. डा० एन. आर. भारद्वाज, 63/10, गोपाल कालोनी, रोहतक—124001. (हरियाणा)
6. श्री रामप्रकाश मंगल, 'रामकृष्ण कुटीर', सत्यसाई सदन, मोहल्ला कठानियां, जीन्द—126102. (हरियाणा)
7. सेठ रामभजन अग्रवाल, डी.सी.एम. होलसेल स्टॉकिस्ट, भिवानी (हरियाणा)
8. श्री दीनानाथ गुप्ता, (Retd. Manager, State Bank of Patiala) Commercial Manager, Super Auto Electricals, Plot 9 J, Sector 6, Faridabad.
9. सेठ हीरालाल, चरखी दादरी (हरियाणा).

लेखक परिचय

(1893-1975)

स्वामी नित्यात्मानन्द जी श्री श्री रामकृष्ण परमहंस देव जी के संन्यासी भक्त थे। उन्होंने श्री रामकृष्ण मठ और मिशन के द्वितीय अध्यक्ष स्वामी शिवानन्द जी महाराज से दीक्षा तथा संन्यास प्राप्त किया और अनेक समय कलकत्ता, मद्रास और देओघर विद्यापीठ की शाखाओं में सेवाव्रती रहे। उन्हें अल्प आयु से ही श्री श्री रामकृष्णदेव के अन्यतम अन्तरंग पार्षद-सन्तान तथा जगत्-विख्यात "श्री श्री रामकृष्ण कथामृत" के सुप्रसिद्ध लेखक आचार्य श्री म (महेन्द्रनाथ गुप्त) के श्रीचरणों में निवास करने का सुयोग लाभ हुआ।

स्वामी नित्यात्मानन्द जी ने श्री म के श्रीचरणों में बहुत वर्ष बैठकर उनके उपदेश डायरियों में लिखे। 1922 से 1932 तक की ये डायरियां मूल बंगला में 16 भागों में छप चुकी हैं। यह ग्रन्थमाला श्री म के उपदेशों का अलौकिक आध्यात्मिक और शिक्षाप्रद ज्योति-स्तम्भ है। श्री स्वामी नित्यात्मानन्द जी महाराज ने हिमालय में श्री गंगा जी के किनारे ऋषिकेश में 20 वर्ष कड़ी मेहनत और कठिन तपस्या करके वर्तमान तथा भावी पीढ़ियों के लिए अनन्त ज्ञान भण्डार प्रदान किया है।

स्वामी नित्यात्मानन्द जी ने 12 जुलाई, 1975 ई० को श्री श्री रामकृष्ण परमहंस देव जी के श्रीचरणों में महासमाधि-लाभ किया।